विश्व मानवता की ओर

अनुवादक

मनोहर प्रभाकर

विश्व मानवता की ओर

(विश्वबंधु रवीन्द्रनाथ टैगोर की कृति 'टुवर्ड्ज दी यूनिवर्सल मैन' का राजस्थानी भाषा में अनुवाद)

अनुवादक

मनोहर प्रभाकर

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)

उदयपुर

विश्व मानवता की ओर

(विश्वबंधु रवीन्द्रनाथ टैगोर की कृति 'टुवर्ड्ज दी यूनिवर्सल मैन' का राजस्थानी भाषा में अनुवाद)

अनुवादक

मनोहर प्रभाकर

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम)

उदयपुर

प्रकाशकीय

महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर का साहित्य, काल और देश की सीमाओं से परे सार्वकालिक और सार्वभौमिक है। वे जीवन के उन मूलभूत शाश्वत तत्त्वों के अन्वेषी और उद्घाटक हैं जो मानव मात्र को एकता के रेशमी तारों मे ग्रथित करते हैं। यही कारण है कि उनकी बहुरंगी कृतियां मूलतः 'विश्व मानवता' के स्वर को ही उद्घाटित करती हैं।

राजस्थान साहित्य अकादमी ने महाकवि की अनेक कृतियों के राजस्थानी अनुवाद अद्यावधि प्रकाशित किये हैं। इसी श्रृंखला में अब प्रस्तुत है उनकी अमर कृति 'टुवर्ड्ज़ दी यूनिवर्सल मैन' का राजस्थानी रूपान्तर—विश्व मानवता की ओर।

आशा है राजस्थानी भाषा-भाषी विद्वद्जन इस अनुवाद का स्वागत करेंगे।

राजेन्द्र शर्मा
निदेशक
राजस्थान साहित्य अकादमी (संगम),
उदयपुर

अनुक्रम

भूमिका

प्रतिभासाली व्यक्ति रै प्रकट होवण रो लेखो कोई कदे भी नहीं दे सकै क्यूं के प्रतिभासाली व्यक्ति साधारण नियम रै अपवाद ज्यूं हुया करै है। प्रतिभासाली व्यक्ति रो अेक काम यो भी हुवै के वो समाज रै चेतन अर अर्ध चेतन मन में उठण वाळा भावां अर विचारां नैं प्रगट करै। इण भांत प्रतिभासाली व्यक्ति अर उणरा लोगां में अेक सम्बन्ध स्थापित हुवै। उण सम्बन्ध सूं बा प्रशंसा अर अचभैरी भावना भी समझ मे आवै जिको सूं आश्चर्य री पहली चमक खतम होतां ही, लोग प्रतिभासाली व्यक्ति रो अभिनन्दन करै। उणारी कथनी अर करणी में लोग उण भावनावां अर मनसावां नैं मूरतवत देखै जिको नैं वै मन्दी-मन्दी महसूस तो करी है पण प्रगट नहीं कर पाया। इण सम्बन्ध सूं प्रतिभासाली व्यक्ति नैं भी फायदो हुवै। वो साधारण आदमी रै मन में उठणवाळी अणपकी भावनावां अर अनिश्चित मनसावां सूं सगती अर जोस ग्रहण करै। ठाकुर दोनूं तरियां ही प्रतिभा रा प्रतिरूप है। उणां रै अनोखेपण में कोई सन्देह कोनी। वारी जड भी उण लोगा रै जीवण में खूब गहरी चली गई है जिका नैं वै प्यार कर्यो अर जिका खातर वै जिया।

चोखै बखत अर स्थान पर जन्म लेवण रो ठाकुर रो सौभाग हो। पिच्छम रा विचार भारतीय जीवण रै सांत सागर नैं जगा दियो हो अर नई जाग्रति आवै देसनै झकझोर रही ही। इणरै सुरुपोत रै असर सूं देसी आदमियां री आंख्यां चकरागी ही अर कुछ सुरु सुरु रा सुधारक तो इतरा प्रभावित हुया के वै कदे-कदे तो पिच्छम री आंख मींच र ही नकल करण लाग गया। आज आपा वां री कुछेक जादतियां री हसी भलै ही उडावां पर वै लोग पिच्छम रा विचारा नैं खुलै दिल अर हिम्मत सूं जे नही अपणाता तो भारतीय सांस्कृतिक जागृति इतरी तेजी सूं अर इतरी असरदार नहीं हो पाती। सामाजिक निस्चलता री ताकतां सगळै ही घणी तकड़ी होवै। भारत में तो घणी पुराणी परम्परावां सूं अै ताकता और भी जोरदार हा। रूढ़ियां रा इण गढां नै इसा मिनखां रो दळ ही तोड़ सकै हो जिका नये विचारां रा दीवाना सा होवै।

पण या सुरु सुरु री नासमझ तारीफ जादा दिना तक कोनी टिक पाई। पिच्छम रा गांवां सूं उमामोड़ा लोग पिच्छम रै साहित्य, वेदान्त अर धर्म रो गहरो अध्ययन करण लाग्या। बढ़ते ग्यान सूं वांरी समझ भी और गहरी पूगी जिण सूं गुण-अौगुण रो बेरो पड्यो। सार्थै-सार्थै पूरब रा गुणा री जाणकारी अर ऊणा रै प्रति आदर मं

भूमिक

प्रतिभासाली व्यक्ति रै प्रकट होवण रो लेखो कोई कदे भी नहीं दे सकै क्यूं के प्रतिभासाली व्यक्ति साधारण नियम रै अपवाद ज्यूं हुया करै है। प्रतिभासाली व्यक्ति रो अेक काम यो भी हुवै के वो समाज रै चेतन अर अर्ध चेतन मन में उठण वाळा भावां अर विचारां नै प्रगट करै। इण भांत प्रतिभासाली व्यक्ति अर उणारा लोगां मे अेक सम्बन्ध स्थापित हुवै। उण सम्बन्ध सूं बा प्रशंसा अर अचभंरी भावना भी समझ में आवै जिकी सूं आस्चर्य री पहली चमक खतम होता ही, लोग प्रतिभाशाली व्यक्ति रो अभिनन्दन करै। उणरी कथनी अर करणी में लोग उण भावनावां अर मनसावां नै मूरतवत देखै जिकी नै बै मन्दी-मन्दी महसूस तो करी है पण प्रगट नहीं कर पाया। इण सम्बन्ध सूं प्रतिभासाली व्यक्ति नैं भी फायदो हुवै। बो साधारण आदमी रै मन में *उठणवाळी अणपकी भावनावां अर अनिश्चित मनसावां सूं सगती अर जोश ग्रहण* करै। ठाकुर दोनूं तरियां हो प्रतिभा रा प्रतिरूप है। उणा रै अनोखेपण में कोई सन्देह कोनी। बांरी जड भी उण लोगां रै जीवण मे खूब गहरी चली गई है जिका नै बै प्यार कर्‌यो अर जिका खातर बै जिया।

चोखै बखत अर स्थान पर जन्म लेवण रो ठाकुर रो सौभाग हो। पिच्छम रा विचार भारतीय जीवण रै सांत सागर नैं जगा दियो हो अर नई जाग्रति आवै देसनै झकझोर रही हो। इणरै सुरुपोत रै असर सूं देसी आदमियों री आंख्यां चकरागी ही अर कुछ सुरु सुरु रा सुधारक तो इतणा प्रभावित हुया के बै कदे-कदे तो पिच्छम री आंख मीच र ही नकल करण लाग गया। आज आपा बां री कुछेक जादतियां री हंसी भले ही उडावां पर बै लोग पिच्छम रा विचारां नैं खुलै दिल अर हिम्मत सूं जे नहीं अपणाता तो भारतीय सांस्कृतिक जागृति इतणी तेजी सूं अर इतणी असरदार नहीं हो पाती। सामाजिक निश्चलता री ताकतां सगळै ही घणी तकड़ी होवै। भारत मे तो घणी पुराणी परम्परावां सूं अै ताकतां और भी जोरदार ही। रूढ़ियां रा इण गढां नैं इसा मिनखां रो दळ ही तोड़ सकै हो जिका नये विचारा रा दीवाना सा होवै।

पण या सुरु सुरु री नासमझ तारीफ जादा दिनां तक कोनी टिक पाई। पिच्छम रा गांवां सूं उमायोडा लोग पिच्छम रै साहित्य, वेदान्त अर धर्म रो गहरो अध्ययन करण लाग्या। बढते ज्ञान सूं बांरी समझ भी और गहरी पूगी जिण सूं गुण-औगुण रो बेरो पड्यो। सार्थ-सार्थ पूरब रा गुणां री जाणकारी अर ऊणा रै प्रति आदर मे

मी बढोतरी हुई । सर विलियम जोन्स जिसा पिच्छम रा विद्वान आपणी बापोती रा कई भारी खजाना हूंढ निकालणै में आपणी मदद करी ।

राजा राममोहनराय अरबी अर संस्कृत पढणो सुरु कर्यो हो पण जल्दी ही पिच्छम रा विचारां रो गहरो अध्ययन करण लागग्या । पूरब अर पिच्छम रा दोनूं धर्मां में पारंगत होणै सूं बै हेलो मार र या बात कह सक्या के जीवण अर अस्तित्व रा ऊंचै सूं ऊंचा सिद्धान्त पहलो पूरब में ही गढ्या गया । बै ब्रह्मसमाज री थापना करी अर या बात साबित कर दी के पिच्छम रा विचारां रो मेळ भारत री पुराणी परम्परावां सू बिठायो जा सकै । या कोई अनोखी बात कोनी के भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागृति में ब्रह्मसमाज रै सदस्यां रो नाम बांरी बहोत थोड़ी संख्या नैं देखतां घणो बडो है ।

राजा राममोहन राय जिको काम हिन्दुवां खातर कर सक्या बो ही काम मुसलमानां खातर सर सैयद अहमदखां करणै री कोशीस करी, पण बानैं पूरी सफलता कोनी मिली । पिच्छम रै ज्ञान प्रकास में इस्लाम री सिक्षावां रो नयो मतलब निकालणै री बांरी कोसीस पूरब अर पिच्छम रा गुणां रो मेळ बिठाणै री अेक और मिसाल है । इण आंतरा ही दूजा आन्दोलन पंजाब में आर्य समाज अर पिच्छम तथा दिखण भारत मे प्रार्थना समाज रा हा । आं री छोटी-मोटी भीतरी बातो में फर्क भले ही हो पण आं सगळां री कोशीस अेक ही, अर बा ही पुराणै धर्मां री सिक्षावां अर आज रै विज्ञान री खोजां रो मेळ बिठाणो । इण भांत ठाकुर रै जनम रै बखत पिच्छम खातर उछाह रो वेग सन्तुलित ज्ञान नैं जगां दे रयो हो । इण वेग सूं लायोड़ा आदर्स हाल सक्रिय अर तकड़ा हा, पण साथै ही भारत री खुद री बापोती रा गुणां री पिछाण भी बढ़ती जा रही है ।

खाली बखत ही नहीं जगां भी मौकैसिर ही । भारत री दूजी जगां वां री बजाय पिच्छम रै प्रभाव नैं बंगाल जादा जल्दी अर जादा साफ महसूस कर्यो हो । बंगाल में भी कलकत्ते में जीवण री हलचल घणी जोर पर ही । इण सहर रै मांय अर आस-पास खाली विण ज्यारा अर जुद्ध वीर ही कोनी आया, पण सासक, पादरी अर आ सूं भी महत्वपूर्ण बै विनम्र आया जिका जनमजात सिक्षक हा । अर अै लोग खाली ब्रिटेन सूं ही नहीं पण पुर्तगाल, हालेण्ड, फ्रांस अर यूरोप री दूजी जगावा सूं भी आया । रूस उण दिनां घणों दूर अर अलग्गो हो, पण फेर भी कलकत्ते रै रगमंच रा सुरुपोत रा मुखियावां मे अेक रूसी नाम भी मिलै । इण भांत भारत की पानां पर पूरब अर पिच्छम रो मिलण ठाकुर खातर तथ्य अर आदर्स दोनू ही हो । ठाकुर रै परिवार री हालत भी वां री प्रतिभा नैं विगसाणै में मदद करी । पूरबी बगाल सूं निकळ कर यो परिवार आखरी मुगल जमानै में घणो धनवान अर समृद्धिसाली हो गयो हो । राज सूं मेल-जोल रै कारण धन अर संस्कृति तो वां नैं मिली पण पुराण पथी लोग बेराजी हो गया । इण सुरुपोत रै बखत री जादा जाणकारी म्हारै कनै कोनी, पण, ईस्ट इण्डिया कम्पनी जदताईं जड़ जमाई, ठाकुर परिवार कलकत्ते री नई रईसी रा सिरमौड़ा में गिण्यो जावण लाग्यो । ठाकुर रा दादा, जिका नैं लोग वां रै रहणै रै सानदार ढंग रै

कारण राजा द्वारकानाथ कहता, पिच्छमी सिक्षा रै प्रचार खातर राममोहनराय रै धर्म जुद्ध मे वा रा कट्टर हिमायती हा। लोग कवै है के ठाकुर रा बाप नित दिन गै उपनिसदा अर हाफिज रा पाठ करता। आपरी पवित्रता अर धार्मिकता रै कारण वे महर्सि बाजता अर राममोहनराय रै मर्‌या पछै ब्रह्मसमाज रा सबसूं मोटा नेता बणग्या। उपनिसदा री अर इस्लाम री परम्परावां मे घणो गहरो उतर कर भी ठाकुर परिवार पिच्छमी सिक्षा अर पिच्छमी जीवण रै ढग रा आगीवाण मे सूं हो।

ठाकुर परिवार री इण अजीब स्थिति सूं जीवण रै प्रति ठाकुर रै उण दृष्टिकोण नै समझणं में मदद मिलै जिण मे परम्परावां अर नये प्रयोगा री सामजस्य हो। ठाकुर रै जनम सूं पैलां ही इण परिवार में घणा लायक आदमियां री तीन पीढ़ियां हो चुकी ही। धन अर नाम सूं सरनाम इण परिवार की जब भी ब्राह्मण में एक निरवाळी ही जगां ही। ठाकुर परिवार रै भलै जीवणं सूं ब्राह्मणां समाज नाराज होतो हो अर ब्याह सम्बन्ध सूं तो जात बारै ही निकळणो पड़तो हो। पण, आपरी दौलत अर बुद्धि नै जाणता हुयां ठाकुर परिवार उण वखत रा घणखरा सामाजिक बधणां री परवाह कोनी करी। उण वखत रा रीत रिवाजां रै खिलाफ भी ठाकुर रा दादा ब्रिटेन गया। ठाकुर रा बाप भी ब्रह्म धर्म रा अगुवा होणै सूं पुराण पंथ रै प्रति विद्रोह रा मोटा नायक हा। ठाकुर रा बडा भाई सत्येन्द्रनाथ पहला भारतीय हा जिका इण्डियन सिविल सर्विस में सफल हुया, अर सत्येन्द्रनाथ री स्त्री लुगायां री पोसाक मे एक नई फैसन चलाई जिकी धीरै-धीरै बगाल सूं भारत रा वहोत सा दूजा भागा में फैलगी।

आज इत्ता दिना बाद आपां पुराण पथी हिन्दू समाज री उण भावना नै नहीं समझ सकां जिकी राममोहनराय रै ब्रह्मधर्म री व्याख्या सुण र उण रै मन में उपजी। सदियां सूं हिन्दू धर्म पर बारै सूं ही हमला होता रया—पहला इस्लाम रा अर फेर इसाई धर्म रा। मध्यजुग रा संतां ही कोसीसा भी जादातर धर्म इस्लाम रै प्रजातान्त्रिक अर अद्वैतवादी प्रभाव रो नतीजो हो। पण मध्यजुग रा वै संत हिन्दू धर्म रा अनेक विस्वासा नै छिटकार्‌या नहीं। हिन्दू देवमन्दिर रा देवतावा नै बा रै मता मे भी जल्दी ही जगां मिलगी। राममोहनराय इण बौद्धिक भ्रमां सूं कदे भी राजीनामो नहीं कर्‌यो बा रै अद्वैतवाद सूं इस्लाम रा कट्टर सूं कट्टर अनुयायी भी राजी हो सकै हा। बां रै द्रिढ अद्वैतवाद अर कर्मकाड नै छिटकारणं री बात सूं इस्लाम रा पैलड़ा दिनां री या यूरोप मे प्यूरीटन आन्दोलन री याद आजावै। पुराणपथियां नै घोर जादा चिड़ाणं री बात तो या हा के राममोहनराय आपरी बातां नै साबित करण सारू उपनिसदा अर दूजा हिन्दू धर्म रा ग्रन्थां रो हवालो देता महर्सि भी बां ही तरियां ही उपनिसदां रा भगत हा अर अनेक देवतावां या किणी रूप मे भी मूरत पूजा रा घोर विरोधी भी हा।

इण भात ठाकुर रो जनम इसै परिवार में हुयो जिण मे गहरी धार्मिक भावनावां होता हुयो भी मूरतपूजा अर कर्मकाण्ड रो जजाल कोनी हो। ठाकुर, बिना कोई दिमागी रुकावटा रै, भारत री पुराणी परम्परावा नै अपणाई, अर वै सस्कृत

साहित्य तथा उण में गूंथ्योड़ा धार्मिक अर सांस्कृतिक आरसां सूं घणा प्रभावित हुया। आपरै परिवार रै इतिहास सूं वै मध्य जुग रा जीवण रा तरीकां सूं परिचित हुया अर मुगल राज में पणप्योड़ी सम्पूर्ण संस्कृति नै बिना संसै रै अपणा सक्या। इण दोनों बातां में वै उण वखत रा दूजा ब्राह्मण जमींदारां सूं ज्यादा कोनी हा, पण पारिवारिक पृष्ठ भूमि रै कारण वे आज री दुनियां री नई धारावा रै प्रति सचेत न होणै सूं घणखरां सूं न्यारा हा।

पिच्छम रा गुणां में ठाकुर न्याणै अर सद्भानुभूति रै ढंग सूं समझ्या हा, पण वै वांनै यांत्रिक ढंग सूं अपणाणै पर वाली बुरायां री तीखो बोध भी वांनै हो। वै आपरी दूरंदेसी सूं साफ-साफ बता दी ही के सुभावीक अर कुदरती गुणां नै बिदेसी सभ्यता रै सांचै में ठूंस देणै सूं काईं नुकसान हुवै, पण साथ ही वै कठै सूं भी आयोड़ा गुणां रा तत्वां रा स्वागत करणै अर वांनै अपणाणै खातर भी सदा त्यार हा। प्राचीन अर मध्य जुग री परम्परावां में ढळ्योड़ो अर भारतीय जागृति रो अगुवो वांरो परिवार पुराणी समृद्ध वापौती नै छोड़्यां बिना भी नवैं जुग री सनकार भेली। आ पारिवारिक पृष्ठ भूमि वां री भारतीय वापौती री समृद्धि अर पिच्छम रा विचारां नै अपणाणैं री वां री तत्परता नै समझणैं में मदद करै। इण में ही ठाकुर री उण अनोखी सामरथ रो सन्देस छिप्योड़ो है जिण सूं वै आपरा सब कामां में परम्परा अर प्रयोग रो मेळ बिठायो।

एक और कारण भी है जिण सूं ठाकुर सोगा भेळा हो सक्या। सुरु जवानी रा दिनां में वांरा बाप परिवार री जायदाद री देखभाळ करणै रो काम वांनै सूंप्यो। घणा लोगां नै यो अचम्भो भी हुयो कै महर्षि आपरै सबसूं छोटे लड़कै नै, जिकै नै लोग कवि अर स्वप्न द्रष्टा कहता, परिवार री दौलत री रुखवाळी सूंपी। ठाकुर जल्दी ही आ बात साबित कर दी के बारा बात एक कवि में जायदाद रो प्रबन्धक बणण री समझदारी ही हती। इण में आपणी दृष्टि री बात तो आ है के इण कारण ठाकुर नै बरसां तांई पूरबी बंगाल रा गांवां में रहणो पड़्यो। इण मर्म रा घणकरा दिन वै पदमा नदी में डेरा बोट में बितावता जिकै सूं वै बहुत नै [illegible] अर बंगाल रा गांव वाटां रै घणा नेड़ा आया। इण बरसां में जिको अंचल रै जिनारो उण री जड़ जमी रै आदिम अर प्राचीन इतिहास तांई पूगेड़ी ही। आ सभ्यता मध्यजुग में विगसयोड़ी शहरी सभ्यता सूं कीं भांत गहरी अर अंचल में पूगोड़ी है। इण भांत ठाकुर उण दुनिया में प्रवेश कर सक्या, जिण री कोई जाणकारी कलकत्ता शहर जिस्या लोगां नै कोनी हुवै, अर [illegible] देसका रा कई सूंडा सूं घूंडा बातां री बाड़ भी ले आया।

अंचल री एकता रै [illegible] ठाकुर री सबसूं बड़ी [illegible] है। [illegible] री आ [illegible] री [illegible] [illegible] [illegible] नै [illegible] कदी। इण सूं आ कोई अनोखी [illegible] [illegible] अंचल में कोई दिखावट नहीं [illegible]। दुनियांभरी नहीं है [illegible] रै दूजोड़ै रै [illegible] नई [illegible] [illegible] रो प्रयोग हुयो। [illegible] [illegible] आ बड़ी है [illegible] री [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर जीवन सूं [illegible]

सम्बन्ध वानी ध्यान देवण री कोई जरूरत नहीं। हाथी दांत री बुर्ज कलात्मक कोसीसां री प्रतीक बणी। इण सम्प्रदाय रा अनुयायियां कई के कवि अर कलाकार ही सबसूं पहला अर प्रमुख स्वप्न द्रस्टा है। सुरु जवानी में तो ठाकुर इण आदर्स कानी खिच्या हा। पण परिवार री जायदाद री देखभाल करणें रै प्रसंग में वै आम आदमी रै दुख-सुख नैं नेड़ै सूं देख्यो। इण नैं देख्यां पछै जीवण सूं न्यारी कला रै विचार नैं अपणाणो वां खातर असम्भव सो हो। सौन्दर्य री गैल वै पकड़ी पण जीवण नैं स्पष्ट करणें खातर हो। साथै ही वै या बात भी कही के सौन्दर्य री अन्तर्भावना रै बिना जीवण री कोई सोभा कोनी। ठाकुर खातर कवि रो धर्म मिनख रो धर्म भी हो।

ठाकुर रै जीवण अर साहित्य नैं विचारवां वखत वां री अनोखी बहुमुखी प्रतिभा सूं बार-बार चकित होणो पड़ै। मूल रूप में वै कवि जरूर हा पण वांरी रुचि काव्य तक ही सीमित कोनी ही। रचनावां री खाली गिणती ही करां तो भी बहोत थोड़ा लेखक वांरी बरोबरी करै। वांरी रचनावां में बहुसंख्यक लघु कथावां, उपन्यास, नाटकीय कृतियां अर भांत-भांत रा विसयां पर लिख्योड़ा निबन्धां रै सिवाय एक हजार सूं बेसी कवितावां अर दो हजार सूं ऊपर गीत भी है। गुणां मे भी वै इतणा ऊंचा पूग्या है जठै महान आत्मा वाला लोग भी थोड़ा ही पूग सकै।

वां री अनेक भांत रै साहित्यिक काम घणो अनोखो है, पण व्यापक सूं व्यापक अर्थ में भी साहित्य वांरी सगती रो नमेड़ नहीं ले पायो। वै घणे ऊंचे दरजे रा संगीतकार भी हा। सत्तर बरस री उमर में वै चित्रकला सुरू करी अर फेर भी दस बरसां में ही तीन हजार नेड़ा चितराम बणा गेरया। वां में सूं कई तो असाधारण रूप सूं चोखा हा। इण रै अलावा वै धर्म अर सिक्षा सम्बन्धी विचार राजनैतिक अर सामाजिक सुधार तथा नैतिक पुनरुत्थान अर अर्थशास्त्र रै सम्बन्ध में नामी देण दी। इण सब खेतां में वांरी सफलतावां इतणी महान है के वै उणां नैं भारत रा एक बड़ै सूं बड़ा सपूत बणा दिया जिण रै कनै आखै मिनख समाज नैं देवण सारू अक सन्देसो है। वांरी रचनावां रै इण संग्रह रो लक्ष वांरी प्रतिभा रा कम प्रसिद्ध पहलुवा कानी दुनिया रो ध्यान खींचणो है।

सिक्षा विद् रै रूप मे ठाकुर री चर्चा सूं आपां सुरु करां। सिक्षा पर वांरा विचार मुख्य रूप मे वां रै निजी अनुभव सूं उपज्योड़ा है। नौकरां री निगराणी मे सहर में बेरड़ोड़ो जीवण बिताणें सूं वै टाबरां खातर खुली जंगा अर आजादी री जरूरत नैं घणो महसूस करता हा। सिक्षा विसयां में वांरी रुचि कोनी ही वां पर जोर देवण सूं, अर निज रै काम री प्रधानता सूं, वै जिकी स्कूलां में पढ्या बठै रा तरीका रा सख्त विरोधी हो गया। वै या भी घरणैं आप महसूस करी के जिकी सिक्षा वां नैं दी जाणी खातर ही वा आपणै सामाजिक जीवण अर सांस्कृतिक परम्परा सूं न्यारी ही। वां रा बाप पहली बार वांनैं जद हिमालय पहाड़ दिखायो तो वै प्रकृति नैं देखर जितणा खुस अर चकित हुया उण रै वर्णन वै कर्‌यो है। इण सूं वां नैं या विस्वास हो गयो के टाबर रै स्वस्थ विकास सारू वारता दबावां सूं छुटी अर प्रकृति सूं

निरन्तर अर निकट संपर्क री दो सर्ता है । वें सिक्षा री भेक इसी तरीको निकालणे री खोज सुरू करी जिण में टाबर री रुचियां रो पूरो ध्यान राख्यो जावे, जिको देस री परम्परा अर इतिहास सूं ही सड़पो हुवें अर जिण में प्रकृति रें निकट अर निरन्तर मार्क री जरूरत नैं मानता दी जावें ।

सिक्षा रा हेर फेर इण बिसय पर बां रें पहलें बड़ें निबन्ध रें रूप में ही महत्वपूर्ण नहीं है, पण इण खातर भी के उण में मिनख रें व्यक्तित्व रें सर्वतोमुखी विकास सारू मातभासा रें अध्ययन री सर्त पर जोर दियो गयो है । इण भांत सिक्षा रें क्षेत्र में बें क्रांतिकारी बण्या, पण इण अर्थ में ही के वें मौजूदा तेरीकें में भुलायोड़ा या बिदर्योड़ा कीमती तत्वां नें पाछा लावण री कोसीस करी । बां में या देखण री सूझ अर समझदारी ही के परम्परा सूं दो टूक सम्बन्ध तोड़ण वाली क्रांति आखर में खुद हार जावें । क्रान्ति नें सफल बणाणें वास्तें भुलायेड़ा गुणां नें स्रोजूं खोजर, बदळतें जमानें री जरूरता रें मुजब बानें फेरूं ढालणा चाहीजें ।

या बात ठाकुर रें बिस्वासां री भेक अग बणगी के सिक्षा सूं प्रकृति रें साहचर्य में टाबर रें व्यक्तित्व रें विकास होणो चाहीजें । बांरी धारणा ही के व्यक्तित्व री पूर्णता जद ही हो सकें जद प्रकृति सूं तालमेल बिठार टाबर रें चरित्र रें विकास करयो जावें । प्रकृति री भांत-भांत री चमकीलें सौन्दर्य अचेतन रूप सूं टाबर रें मन में गहरी उतर जाणी चाहीजें । सांझ री साति, प्रभात री आस, चमकता तारां री सौन्दर्य अर उगतें सूरज री लाली टाबर रें व्यक्तित्व मे रस जाणी चाहीजें । कुदरत री दुनियां मे होवण वाली भिड़त अर विरोध सूं ठाकुर अणजाण कोनी हा, पण बांरो पक्को विस्वास हो के यें भिड़तां अर विरोध खतम हो । आखर एक बड़ी तान में समा जावें । ज्यूं टाबर नें बाहरी दुनियां री एकताल को भान हुसी ज्यूं ही भीतरी सुभाव में भी एक ताल आसी ।

ठाकुर रें सिक्षा सम्बन्धी आदर्स मे संकीर्णता नें कोई जगा कोनी ही । मिनख सुभाव रें कोई भी पक्ष नें दबावण में बांरो विस्वास नहीं हो । वें मानता हा के सगळी बातां रो एक सग में विकास करणें सूं ही पूर्ण व्यक्तित्व बण सकें । साची सिक्षा सूं दिमाग, भावनावां अर इच्छावां-रो विकास होणो चाहीजें अर प्रकृति सूं एकतानता तथा अध्ययन रा अनेक बिसया में सन्तुलन भी बणणी चाहीजें ।

सिक्षा री समस्या मांय रें निबन्ध में वें कयो के अें बाता कोई रिहायसी स्कूल मे ही पूरी हो सकें । बठें ही टाबरा नें प्रकृति रें गहरें अर नित्य सम्पर्क में लाया जा सकें । सार्थें ही लगनशील अध्यापकां रें निजी संपर्क सूं राष्ट्रीय परम्परावां भी बां में भरी जा सकें । इण आदर्सां नें मूरतरूप करण सारू अर टाबर रें व्यक्तित्व रा सगळा अंगां नैं एक सग मे विगसाणें रें कार्यक्रम बणाणें सारू ठाकुर साति निकेतन में खुद री स्कूल सुरू करी ।

ठाकुर री मानता ही के टाबर रो सबसूं चोखो विकास अनेक भांत री गति विधियां सूं ही हो सके। बै अनेक बार जोर देर या बात कही के टाबर नें चुपचाप बैठ्ये रहणें खातर मजबूर कर देणें सूं बडो उण खातर दूजी कोई निर्दयता कोनी टाबर सुभाव सूं सक्रिय हुवै, इण खातर ठाकुर री स्कूल सुरुपोत सूं ही क्रियासीलता नें सिक्षा रै आवश्यक अंग रै रूप में बरतणी चालू करी। ठाकुर रा सिक्षा सम्बन्धी विचारां नें दूजा सिक्षा सास्त्रियां भी मान्या है, अर बांरी चलायोडी अनेक नई रीतां आम सिक्षाक्रम में सामिल होगी है, पण बांरी खास देण तो एकलय सतुलन अर व्यक्तित्व रै चौमुखै विकास पर दिया गया जोर ही हो। बारै मुजब आरसी रै साच तक पूगण सारु सौन्दर्य रै सबध नैतिकता सूं अर नैतिकता मे सौन्दर्य की आत्मा रो प्रवेस होणो लाजमी है। इण भांत वां रै सिक्षा रै आदर्श में सत्य सुन्दर अर सिव का तीनूं गुणां रो सयोग हुयो।

आजाद भारत में प्रारम्भिक सिक्षा री पद्धति रूप मे मानी गई बुनियादी सिक्षा री कई घणी महत्वपूर्ण बातां ठाकुर रा विचारां अर कामां सूं ली गई है। बै बारूं बार जोर देर या बात कही के स्कूल नें लोगां रै सामाजिक अर आर्थिक जीवण सूं एकदम अलग नहीं करणी चाहीजै। कवि री पाठशाला जाव रै बिच में बै कयो के भारत रा पुराणा आश्रमा री तरियां विद्यार्थियां नें घरु काम-काज अर पढ़ाई लिखाई रो मेल बिठाणो चाहीजै। इण भांत बुनियादी शिक्षा रै आवश्यक अंगां रै रूप मे कला-कौसल पर दियो गयो जोर ठाकुर रै सिद्धान्त मे समायोड़ो है, पण बै अनिवार्य कताई पर दिये गये जोर नें सायद नहीं मानता, जिकै री हिमायत आज कई जादा हठ धर्मी लोग कर रया है। दिनचर्या सुं लाग्यो रहणें री बजाय आजादी अर स्वेच्छा नें बै जादा महत्वपूर्ण मानता हा। आ कोई अनोखी बात कोनी के बुनियादी सिक्षा रा पक्ष-पाती जद-जद ठाकुर रै मार्ग सूं न्यारा हुया तो बै प्राय सदा गलती करी।

ठाकुर इण आदर्शां री कोरी बात ही नही करी पण बांनें साम्प्रत अर निस्चित रूप देवण सारु कार्यक्रम भी बणाया। अचेतन रूप सूं ग्रहण करणें पर ही सिक्षा जादा असर कर सकै—इण मानता रै कारण ही ठाकुर माता भासा नें सिक्षा रै माध्यम बणाणें पर जोर दियो। घणी समृद्ध होणें पर भी परदेसी भसा रा सम्पर्क अर उणरी वातावरण न्यारा ही हुवै। अै सब टाबर रा अपरिचित होणें सू उण रै दिमाग पर जोर देवै। टाबर जद परदेसी भासा में कोई चीज सुणै तो उणरो दिमाग भासा अर विसय रै बीच भटक जावै पण मातभासा में जद कोई चीज बताई जावे तो ध्यान बट नही पावै। ठाकुर आ बात कही के भारतीय विद्यार्थी बारली दुनियां रा दिमागी, नैतिक अर सांस्कृतिक विसाल स्रोतां सूं खूब ग्रहण करै पण पहला आपरी भासा, परम्परा अर संस्कृति रो पक्को आधार बणा लेवै।

व्यक्ति की सान मे विस्वास रखणें सूं या बात सुभावीक ही के ठाकुर अध्यापक रै व्यक्तित्व पर सबसूं जादा ध्यान देता। सिक्षा री समस्या में बै कही है के असली

अध्यापक नै ढूंढ निकालणो पहलो काम है। यो काम हुयां पछै, पाठ्यक्रम रो चुणाव, पढ़ाई रा तरीका अर छात्रां रो अनुसासन-सगळा आसानी सूं तैय हो जावै। अध्यापक री जीती-जागती मिसाल उणरा विचारां अर उणरै ज्ञान सूं भी जादा महत्वपूर्ण है। खाली पांडित्य नै वै बोझो मानता, पण विस्वासां रै थानणै में वो ही पांडित्य अणगिणत पीढियां नै प्रकास अर गर्मी दे सकै, वै कहता हा के विद्या सीखणै रो क्रम तो सदा चालतो ही रैवै अर उण रो असली रूप तद प्रगट होवै जद अध्यापक अर छात्र रै दिमागां रो मिलण हुवै। सिक्षा री तुलना वै दीये सूं दीयो जलाणै सूं करता हा अर कहता हा के असली गुरु जगतै दीये री तरियां है। ज्यूं ही गुरु पढ़ाणो बन्द करै यो दीयो बुझ जावै।

व्यक्तिगत कोसिस अर आजादी पर दिये गये जोर सूं ही या बात समझ में आवै के टाकुर कड़ा नियमां में विस्वास कदूं कोनी करता हा। भारतीय आदर्सां अर परम्परावां रा भगत होतां थकां भी वै आ बात मानी के विज्ञान रै प्रभाव रै कारण वां आदर्सां में फेर बदळ करणै री जरूरत है। वै नई पद्धतियां नै मानण नै सदा त्यार रहता अर कहता के परिवर्तन तो जीवण रो नियम है। इण वास्तै वै आपरै उपदेसां री नकल करणवाळां नै भी बढ़ावो नहीं देता अर वांनै सिखाता के परिवर्तन सूं ही आपणा रा गुणां नै बचायो राख्यो जा सकै। वै कहता के हर देस हर जाति री आपरी निजी संस्कृति अर न्यारी जरूरतां होवै। इण वास्तै हर जुग अर हर समाज नै आपरी जरूरतां मुजब पुराणा आदर्सां नै नया रूप देवणा चाहीजै। भांत-भांत रा लोगां अर वांरी सभ्यतावां रै बड़ै सम्पर्क रो यो नतीजो है के उण अनेक तरीकां नै जादा निष्ठा अर समता सागै जिणा सूं वै भांत आपरी समस्यावां नै सुळझाई है। समस्यावां रा ऐ हल कुछ जुग का सूं स्थानीय हो सकै पण इणांरो असर सर्वव्यापी है। सिक्षा रो मिसण ई टाकुर या बात कही के भारत नै आपरी अनेक भांत री भासावां अर लोगां सूं अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण रै विकास में एक बड़ो पार्ट अदा करणो है।

'भारतीय सभ्यता रो केन्द्र' राष्ट्रीयता अर अन्तर्राष्ट्रीयता रै समन्वय रै रूप में टाकुर रा सिक्षा सम्बन्धी विचारां रो एक बहोत बड़ो महत्वपूर्ण अंग है। सांति निकेतन में स्कूल री थापना सूं पहलां वांरी रचनावां में मुख्य बात मातभासा में सिक्षा देवण रै महत्व री ही। स्कूल री थापना रै बाद, वै एक इसी विद्यापीठ स्थापित करणै री कल्पना करवा लागा जठै प्रकृति रै निकट रहता थकां भारतीय राष्ट्रीय परम्परा री रक्षा करी जावै। ज्यूं ज्यूं वांरो अनुभव अर अनुभूति बढ़ी, वै विश्वभारती नाम रै अन्तर्राष्ट्रीय विश्व विद्यालय री थापना करण लाग्या, जठै पूरब अर पिच्छम रा गुणां रै मेळ सूं, [illegible] रै पूर्ण विकास रै आधार पर, एक साचै विश्वप्रेम अर मानवतावादी दृष्टिकोण रो विकास करणो चावै।

अब म्हां आपणा धार्मिक विचारां नै दी गई टाकुर री देन री चर्चा करां। वै [illegible] धार्मिक [illegible] करता जिको यो विकास प्राचीन

भारत में हो चुक्यो हो । भारतवासियां री पीढ़ियां नै इण सूं जिको रोजगार, सुरक्षा अर सन्तोस मिल्यो हो उणरी चर्चा वै बड़ी आत्मतुस्टि सूं करता । या बात अभारतीय पाठक री समझ में सायद नहीं आवै क्यूं के वो भारत रै ग्रामीण जीवण री दरिद्रता अर दुख री बातां अनेक बार सुण चुक्यो है । ठाकुर भी भारतीय गांवां री सीमित आर्थिक स्थिति सूं अणजाण कोनी हा । पण वांरो विस्वास हो के सादा दिनां में खेती अर छोटा उद्योग धन्धां रै मेल सूं लोगां री जरूरतां पूरी होती ही ।

आपां नै या भी याद राखणी है के भारतीय गांव अर यूरोप अर अमरीका रै गांव में घणी बातां में फरक है । अठै हर परिवार आपरै ही खेत में कोनी रैवै । भारतीय गांव आम तौर सूं एक ठौड बस्योड़ा कई परिवारां रो एक समूह है जिणारा खेत दूर-दूर ताईं फैल्योड़ा है । भारत रो ग्रामीण समाज इण भांत एक दूसरै सूं नेड़ै भिड़ेयेड़ो अर यूरोप रै गांव सूं आम तौर पर जादा बडो भी है । अठै चार-पांच हजार री बस्ती रा गांव तो घणा ही है, अर कठै-कठै दस हजार तक री बस्ती रा गांव भी मिलै । प्रायः, अर खास तौर सूं उतराधं अर उतराधं आधूणो भारत में, गावां रै चारूं मेर चहारदीवारी भी होवै, अर वै कुछेक बातां में छोटै कस्बां या नगरां सूं मिलता-जुलता हुवै । खेती अर उद्योग री चतुराई सूं मेल करणै सूं, अर आबादी जादा-बड़ी होणै रै कारण, भारतीय गांव, मौजूदा जमानै रै पहलां ताईं, आत्मनिर्भर अर सन्तुष्ट समाज रो घर हो ।

प्राचीन भारत रा गावां री तारीफ करता हुया भी ठाकुर या देखी के बदलतै जमानै में वांरी आर्थिक नीति रो आधार खतम होग्यो अर वै आपरै मूल रूप में जादा दिनां नहीं टिक सकै । यूरोप री औद्योगिक क्रांति सूं गांवां री आर्थिक नीति रा तौर-तरीका पुराणा पड़ग्या । मसीनां रै बढतै उपयोग सूं बढतै उत्पादन खातर बड़ा बाजारां री जरूरत हुई । ठाकुर या बात मानी के बाहरी सभ्य दुनियां रै साथै चालणै खातर आपां नै नयै सूं नया तरीका अपणाणा है अर जमानै रै साथै कदम धरणा है ।

ठाकुर कोई सुधार विरोधी कोनी हा । वै भारतीय अर्थ नीति में मसीन रै प्रवेस रो स्वागत कर्‌यो । अनेक औसरां पर वै या बात कही के जूनी यन्त्रकला सू चिपक्या रहणै सूं भारत रै साचै स्वार्थ री पूर्ति नहीं हो सकै । हस्तकला रै गुणां नै वै मान्या अर खुलै दिल सूं या बात स्वीकार करी के कई फूटरी सूं फूटरी चीजां आदमी री महनत अर बुद्धि सू ही पैदा होवै । साथै ही वै या बात भी मानी के समाज रा सगळा लोगां नै जरूरी सामान अर सेवा देणी है तो वा मसीनां नै जादा सूं जादा काम मे लेणी पड़सी । मसीन ही आदमी नै रोजीना री महनत अर पिसाई सू छुटकारो दिरायो है । इण वास्तै मसीन नै बिना कोई दिमागी रुकावट रै अपणा लेणी चाहीजै, पण *इण नै आदमी रो दास बणार काम मे लेणी चाहीजै, मालक बणार नहीं ।*

ठाकुर जाणता हा के मसीन नै अपणाणै सूं अर सुधरी यन्त्रकला रै प्रचार सू थोड़ा दिनां वास्तै बेरोजगारी खड़ी हो सकै । 'रहक रिता' में वै संकेत कर्‌यो है के

कानी जाणों रुकैलो। ठाकुर रा आर्थिक विचारां री अेक और बात भी बताणी जोग है। सहकारी आन्दोलन में बां रो मोटो विस्वास हो, अर वै सचमुच भारत रा पहला अर मोटा सूं मोटा सहयोगियां में सूं अेक हा। 'सहकारिता' नांव रै निबन्ध में वै कई बार पैला कयोड़ै खाली उणी बात नै ही दुराई है के गांव रा लोग न्यारै-न्यारै ढंग सूं गरीब भले ही हो, पण बहोत सा गांव आपरा साधनां नै भेळा करै तो वै इसा काम कर सकै जिका न्यारा-न्यारा करणै परै बां री औकात सूं परै है। क्रियासीलता अर निस्चित उपायां मे ठाकुर रै विस्वास सूं या बात समझ मे आवै के वै, हर कदम पर राज री सहायता अर सहारै री बाट देख्यां विना, स्वेच्छा सूं ही सामाजिक अर आर्थिक पुनर्निर्माण रा उपायां नै अपणाणैं सारू, आपरा देसवासियां नै क्यूं उकसाता हा।

ठाकुर, सांति-निकेतन रै चौगिर्दै गांवां में, गांव रै आर्थिक, सामाजिक अर सांस्कृतिक जावण रै पुनर्निर्माण रो कार्य-क्रम चलाणै री कोसीस करी। यो कहणो कोई अतिसयोक्ति कोनी के भारतीय कृसि अर ग्रामीण अर्थनीति पाछला तीन हजार बरसां में वहोत थोड़ी ही बदळ पाई है। सदियां बाद, ठाकुर रै ग्रामीण पुनर्निर्माण रै कार्य-क्रम मे ही, कृसि रा तरीकां सों कायापलट करणै अर ग्रामीण अर्थनीति अर वित्त री नयो *तरीको खड़यो करणै रो पहलो चेतन प्रयास दीखै। पिछली सदी रै आखरी दसक में ही* ठाकुर या बात कह दी ही के जद ताईं गांवां रा लोगां मे स्वेच्छा सूं काम करणै री अर आत्मसम्मान री भावना पाछी नहीं आ जावै तद ताईं देस रै आर्थिक पुनरुत्थान या राजनैतिक स्वतन्त्रता री वात ही करणी बेकार है। सांति-निकेतन में, अर बाद में श्री एमहर्स्ट रै सहयोग सूं श्री निकेतन में बां रा कार्य-क्रमां रो लक्ष्य ग्रामीण भारत रा लोगां री लाज अर सगती नै पाछी लावणी ही हो। बां री कोसीसां रा स्थूल परिणाम चाहे बडा मत हो, अर ठाकुर रो विस्वास भी छोटी सुरुआतां में ही हो, पण बां रै प्रयोगां रो महत्व उण ग्राम जागृति रै कारण है जिको उण क्षेत्र रा लोगां मे आई। जन सिक्षा अर ग्रामीण स्वास्थ्य रा कार्यक्रमां में खास तौर सूं लोगा री घणी रुचि ही, जिण तरफ सूं पहलां लोग उदासीन अर आळसी हा। गावां री पुनरुत्थान स्वाधीन भारत खातर एक घणो मोटो काम है। इण विसय री प्रेरणा अर कार्य-क्रम ठाकुर रा विचारां अर अनुभवां रा घणा रिणी है। आपणं आर्थिक जीवण रै पुनरुत्थान सारू ठाकुर परम्परा अर प्रयोग रै मेळ री जरूरत समझता। व्यक्ति री स्वतन्त्रता अर सान नैं बणाई राखणै रा उपाय बरतता हुया वै पिच्छम रै विग्यान री नई सूं नई यन्त्रकळा नं काम में लेणी चाहता हा। आपरो आर्थिक ढांचे में वै खेती अर उद्योग नैं इण तरिया मिलाणैं री सोची जिण सूं गाव अर सहर रै सहकार मे फायदो हुवै। इण सब कामा में वै सक्रिय एकता रै इसै दरसण सूं प्रभावित हा जिण रो उद्देस्य भारत रै समृद्ध अर पेचीदै समाज रा घटक, नाना प्रकार रा तत्वां मे सन्तुलन अर एकता लावणो रो हो।

राजनीति मे भी ठाकुर भारत अर पिच्छम रा सोवणा सूं सोवणा तत्वां रो मेळ विठावण री कोसीस करी। बारो विस्वास हो के श्रद्धा या एक दूजै खातर आदर

भाव रै बिना दान नै देवणियां अर लेवणियां दोनां रो नुकसाण हुवै । यूरोप री यात्रा बां खातर तीर्थ यात्रा सी ही । विदाई सूं पैहलां 'उण आदर री भावना रो साफ संकेत देवै, जिकी सूं, ब्रिटेन अर भारत में विरोध करावणै वाळी तकड़ी राजनैतिक खानमातो रै होता हुयां भी, ठाकुर पिच्छम रा गुणां तक पूग्या ।' 'बदळतो जमानो' में बै बताई है के कयां पिच्छम रै प्रभाव सूं बाहरी बन्धण पड़नै पर भी, सत्ता रै प्रति आपणो दृष्टिकोण एक दम बदळग्यो है, अर कयां बुराई नै राजी-राजी मान लेवण री आदत सूं, जिकी आपणी पुराणी राष्ट्रीय कमजोरियां में सूं एक रही है, सायद सदा खातर छुटकारो मिलग्यो है ।

ठाकुर पिच्छम रै प्रजातन्त्र रै विचार नै बिना हिचकिचाट रै स्वीकार कर्‌यो पण इण में बै सामाजिक स्वेच्छा अर सामाजिक दायित्व रा भारतीय विचारां नै भी जोड़ दिया । बै बतायो के प्राचीन अर उदय जुग रै भारत में राजा लोग धन अर राज री ताकत दे सकता हा, पण धनी सूं धनी अर ताकतवर सूं ताकतवर आदमी भी जद तांई सन्तुष्ट कोनी होता तद तांई बांरी बात बांनै नहीं मानती । इण बात सूं समाज कल्याण री बहोत सी गतिविधियां राज री ताकत सूं न्यारी होगी, अर समाज रा लोगां में पहल करणै अर दान देणै री भावना नै बढावो मिल्यो । ठाकुर इण बात पर जोर देता हा के भारतवासियां नै, सदा राज कानी देख्यां बिना ही, आपूं आप राष्ट्रनिर्माण-कारी सेवावां देणी चाहीजै । इण बात री जड़ उण आदर भाव में है जिको बै प्राचीन भारत री सामाजिक दायित्व री परम्परा रै प्रति राखता । व्यक्तिगत पहल करणैरी इच्छा में प्रचलित पिच्छमी विस्वास सूं भी या मेळ खाती ही । बांरो सम्पूर्ण राजनैतिक दृष्टिकोण उण सिद्धान्त रै अनुरूप हो जिण रै मुजब वो ही सासण सगलां सूं चोखो है जिको कम सूं कम सासण करै । जद बै या बात कही, के समाज री मोटी-मोटी सेवावां, राज रै नियन्त्रित संचालण री बजाय व्यक्तियां अर व्यक्ति समूहां रै खुलै सहयोग सूं चलाई जाणी चाहीजै तो बै सायद पिच्छमी दुनियां री महान अर उदार परम्परा सूं प्रभावित हो रही कही ।

राज अर समाज रो भेद ठाकुर रै विचारां में स्वाभाविक रूप सूं है । बांरो विस्वास हो के राज रा कामां में परिमित कर'र समाज नै सूंप देणै सूं ही तरक्की हो सकै । इण भांत बै जीवण रै हर क्षेत्र में स्वायत्त सासण रा पक्का हिमायती हा। व्यक्ति री पूर्णता उण रै सर्वसत्ता-सपन्न होणै में ही है । समाज भी जद ही फळै-फूलै जद आपरै भलै री जिम्मेवारी वो खुद लेवै । इण वास्तै बै सत्ता रो विकेन्द्रीकरण चाहता अर कहता के राज नै सामाजिक जीवण रा बां पहलुवां में ही दखल देणी चाहीजै जिका व्यक्ति या व्यक्ति-समूहां सूं नहीं सम्भळ सकै । एक सब्द में कयो जावै तो राजनीति सूं बांरो मतळब एक इसै विकेन्द्रित अर संयुक्त राज रो ही हो जिण में स्थानीय इकाइयां धीरै-धीरै जादा महत्वपूर्ण भाग लेती रेवै ।

आर्थिक अर राजनैतिक दोनूं कामां में व्यक्ति रै भाग नै ऊंचो बढाणै खातर ठाकुर सर्वसत्ता-संपन्नता रै सिद्धान्त रो विस्तार कर्‌यो । स्वदेसी समाज रै प्रकासण

सूं पहलां भी वैं बतादी ही के आपणी राजनैतिक गुलामी आपणी भीतरी कमजोरी रो बाहरी लक्षण मर है। बांरी धारणा ही के खाली राजनैतिक कार्यक्रम सूं भारत री आजादी नहीं लाई जा सकै, क्यूं के यो खाली बाहरी लक्षणां रो इलाज करसी। जद व्यक्ति आत्मनिर्भर होकर त्याग, नैतिक उद्देश्य अर कळात्मक अन्तर्दृष्टि रो विकास कर लेवैलो, तद भारत तुरन्त ही आजाद हो जावैलो। वैं कहता हा के उण बखत री घणखरी राजनीति अवास्तविक अर कोरी आन्दोलनात्मक ही, थोड़ा अंग्रेजी पढ़्या-लिख्या लोग आपस में वतळा लेता हा अर आजादी रैं राष्ट्रीय जुद्ध में जनता रैं सहयोग री बात ही कोनी करता हा। विदेसी भासा रो माध्यम होणैं सूं जे सिक्षा असंतोसजनक रही तो उणी कारण सू राजनैतिक काम और भी असंतोसजनक रयो। वैं घोषणा करी के जे लोगां कनै इसैं ढंग सूं पूग्या जावैं जिण सूं वैं समझ सकैं तो वैं घणैं उछाह सूं सहयोग देवैं।

'सभापति गे भासण' रो खास महत्व है क्यूं के बो ही एक औसर हो जद ठाकुर कोई राजनैतिक सभा री अध्यक्षता करी। इण रैं अलावा यो ही पहलो मौको हो जद एक राजनैतिक सभा रो भारतीय अध्यक्ष आपरा भारतीय दर्सकां सू एक भारतीय भासा मे बात करी। इण भासण मे ठाकुर आपरैं राजनैतिक कार्यक्रम री रूपरेखा बताई अर कयो के आपां नैं आर्थिक आत्मनिर्भरता अर सामाजिक स्वतन्त्रता खातर काम करणो चाहीजे।

भारतरी गुलामी री जड़ा व्यक्ति री उपेक्षा में अर इसैं सामाजिक तरीकैं नैं अपणाणैं में है जिण सूं उणरा लाखां टाबर अपमाण अर निरादर रो जीवण बितावै है। वैं बार-बार जोर देर आ बात कही के जद ताईं भारतीय आपसी बरोबरी नहीं बरतैं तद ताईं दूजा देसां रा लोगां सूं बरोबरी मांगणी बेकार है।

ठाकुर भारतीय राष्ट्रवाद रैं सिद्धान्त नैं मान्यो, पण जिकी बात में वैं घणखरा राष्ट्रीय नेतावां सूं न्यारा हा बा बांरी आ चेतना ही के स्वतन्त्रता अंग्रेजां री भर्त्सना सूं नही पण पुरुसार्थ अर स्वयसेवा रा निस्चित गुण पैदा करणैं सूं मिलैली। दमनकारक राजनैतिक, आर्थिक अर सांस्कृतिक परिस्थितियां सूं उकसाया जाणैं पर भी ठाकुर अंग्रेजां रैं प्रति विद्वेस सूं निरवाळा हा। ब्रिटेन अर भारत का घणा दूसित सम्बन्ध होतां हुयां भी अर ब्रिटिस उपाया री निन्दा करतां बखत भी वैं ब्रिटिस गुणां नैं मानण खातर सदा तत्पर रहता। भारत मे अंग्रेजां री भर्त्सना रो बांरो आधार बांरा मान्योड़ा वैं सिद्धान्त आदर्स हा जिका रो उपदेस खुद ब्रिटेन वाळा देता हा। पिच्छम रैं प्रति जद वैं बिलकुल निस्छळ दीखता हा, जिण निस्छळता रो जिक्र वैं 'सभ्यता रो सकट' मे घणो साफ कर्‌यो है, तद भी वैं पिच्छम रा आधा सूं आधा प्रतिनिधियां री मानवता मे आप रैं विस्वास री घोसणा करी। इण वास्तै वैं पिच्छमी दुनियां रैं विचारां, कामां अर उद्देस्यां रा आधा सूं आधा तत्वां पर आपरो ध्यान टिका सकता हा, अर इण बात री घणी जोरदार कोसीस बारंबार करता हा के बांरा लोग

वां गुणां नै संरावै अर आत्मसात करै। या कोई अचम्भै री बात कोनी के ठाकुर सा रै जमानै रा सबसूं बडा अन्तरराष्ट्रीय लोगां में सूं एक हा। वै हर राष्ट्र रो आप किस्मत खुद बणाणै रो अधिकार मान्यो, पण यो भी कह्यो के राष्ट्रीय दावां मानवी दायित्वां री नींव मे दखल नहीं देणी चाहीजै। आपरै लोगां रो आदमी परम्परावां रो अनादर मानवता रै प्रति एक महान पाप है। ठाकुर उण आतंकवा राष्ट्रीयता री आप'र निंदा करी जिणसूं राष्ट्रां नै अर्ध देवतावां री सी मर्या मिलगी। वै घोसणा करी के राष्ट्र अर राष्ट्रराज री अंधपूजा में आदमी रै विनाश बीज छिप्या है।

ठाकुर भारतीय अर पिच्छमी संस्कृति रा सार तत्वां नै मान्या, पण वा परम्परा या करणी में जिकी संकुचित अर प्रतिक्रियावादी वातां समझी, वांरी निन्दा करी। जद-जद वै जरूरी समझी देसवासियां, अर विदेसियां दोनां नै ही खुलकर वै खरी खोटी-खरी सुणाई। महात्मा गांधी खातर वां रै दिल में घणो स्नेह अर सराहणा ही पण महात्मा गांधी रा विचारां अर कामां मे जिका नकारात्मक अर प्रतिक्रियात्म तत्व हा वांरी खरैई सूं खरैई सब्दां में आलोचना करण सूं भी वै दब्या नहीं। 'स ... री पुकार' में अर फेर 'सुराजसाधन' में वै महात्मा जी री कई मूढ धारणावां ... खण्डन करी अर या घोसणा करी के महात्माजी जिको कार्यक्रम बतायो उण रो ... उण सिद्धान्तां रै ही खिलाफ है जिण नै वै खुद विग्यापित करया है।

ठाकुर पेसेवर राजनीतिज्ञ तो कोनी हा, पण राष्ट्रीय भगड़ै रै हर नाजु बखत पर भारतीय लोगां रा दुखां सूं प्रभावित होर वै राजनीति रै क्षेत्र मे कुछ न कु योग देता था कर बैठता। सन १९०५ मे वै स्वदेसी आन्दोलन रा धारण अर प्रवत बण्या। सन १९१९ में भी वै जलियांवाळा बाग रा अत्याचारां रै खिलाफ आवा उठाई। पण, सरकार रा राजनैतिक कामां री बुरी सूं बुरी निन्दा करणै पर भी अंग्रेजा खातर वांरै दिल में जिको आदर हो, वो कम नहीं हुयो। वै चाहता हा भारतीय राजनैतिक कार्य विदेसी सरकार रै खिलाफ मांग मीचर करी गई प्रतिक्रि मात्र न रहकर राष्ट्रीय पुनरुत्थान रो एक निश्चित कार्यक्रम बण जावै। १९०५ स्वदेसी आन्दोलन रा दिनां मे, अर फेर १९२० रै असहयोग आन्दोलन रै पूरै वेग बखत भी, वै जद या महसूस करी के राष्ट्रीय राजनैतिक कार्यक्रम री कई बा निर्माणात्मक री बजाय विध्वंसात्मक है, तो वांरी कड़ी निन्दा करणै में भी वै हिचकिचाया।

ठाकुर व्यक्ति री [illegible] मे अर सगळा मानखी री स्वतन्त्रता अर [illegible] करी [illegible] रा मूल्यां में विश्वास करता हा। '[illegible]' मे वै धारो उण [illegible] विचार नै [illegible] के समाज री सम्पन्नता मे भारत री शान [illegible] भिन्नता मे [illegible] सिद्धान्त नै [illegible] मे ही है। वै [illegible] के भिन्नता तो खुद मे ही [illegible] है [illegible] सूं [illegible] बणै। वांरो विस्वास हो के भारतीय जीवण मे [illegible]

धर्म अर संस्कृतियां री जिकी भिन्नतावां मिलै वांरै पीछै प्रभु री काई इच्छा जरूर है।

बै घोसणा करी के भारतीय अेकता, सदा री तरिया, भिन्नता में एकता होणी चाहीजै जिण मे हर भासा, हर धर्म अर हर सस्कृति नैं आपरी वाजबी जगां मिलैं। या आसानी सूं देखी जा सकै के या बात आज री दुनियां रा दूजा रास्ट्रां पर कितणी जादा लागू होवैं।

आज रै भारत री राजनैतिक चेतना पर ठाकुर रा आदर्सा रो प्रभाव कई तरह सूं देख्यो जा सकै। आय सूं भारत एक गणराज्य वणणो पसंद कियो है जिण में हर इकाई नैं पूरै स्वराज्य री गारटी दी गई है। वांरी आवाज ही सायद पहली या अकेली आवाज न हुवै, पण वा निस्चित रूप सूं ही बडी आग्रहपूर्ण आवाज ही, जिण सूं बैं जाति, संप्रदाय, धर्म, भासा अर लिंग रै भेद-भाव सूं दूर, सगळा भारतीय नागरिकां री बरोबरी री माग करी। बाहरी तौर पर, विभिन्न रास्ट्रां रा विभिन्न राजनैतिक विस्वासां रै प्रति आदर भाव, अर यो आग्रह के वांरी एकता वारी भिन्नता नैं दवा कर लाणं री बजाय एक पद्धति मे वांरी जगां नैं मानकर लाणो चाहीजै, ठाकुर रै दर्सण रा तत्काळ परिणाम है। बै घोसणा करी के जद भी कोई देस मे कोई व्यक्ति या समाज रै व्यक्तित्व नैं दबाणं री कोसीस करी जावै तो सारो देस दुख पावै। वयां ही जद कोई रास्ट्र या रास्ट्र-समूह नैं आत्म विकास री खुलो अर पूरो अधिकार नहीं दियो जावै तो सारो ससार दुख पावै। 'हिन्दू विस्वविद्यालय' प्रकट रूप सूं सिक्षा री समस्या सूं सबधित है, पण यो भी ठाकुर रै उण विस्वास री पुनरुक्ति है के भारत री मुगती उण रा भांत-भांत रा लोगां री एकरूपता मे नहीं कर एकता में है।

या कोई अचंभै री बात कोनी के व्यक्तियां अर व्यक्ति-समूहा रै आत्म प्रकटीकरण रै गुण मे विस्वास करणं सूं ठाकुर आपणा उण रास्ट्रीय नेतावां में सूं एक होग्या जिका सब धर्मां, जातियां अर सम्प्रदायां नैं बरोबर मान देवण वाळै धर्म निरपेक्ष राज री जरूरत बताई। ठाकुर रा विस्वास हो के जठै-कठै भी व्यक्तियां अर व्यक्ति समूहां रै गौरव नैं मान देवण रो सिद्धात काम में लियो गयो है, बठै परिणाम मे सब सबधित लोगां नैं मोकळो लाभ हुयो है। इण सिद्धाता री पाळण नहीं करणं सूं निश्चित रूप सूं गरीबी आई है अर अत में रास्ट्रीय सस्कृति अर समृद्धि रो अत हुयो है। वांरी धारणा ही के आज री दुनिया मे मिनख समाज री मुगती रो एक ही रस्तो है अर बो है सगळां रै प्रति आपसी आदर भाव सू रास्ट्रा री भिन्नतावां नैं मानणो।

भिन्नता रै बीच मिनख री एकता नैं ढूंढण री खोज में ठाकुर दुनियां रा दूर सूं दूर कूणा री जात्रा करी। बुद्ध रै बखत मे भारतीय बौद्धिक विस्तार रै महान काल रै बाद भारतवासी अपणं आप मे संकुचित होवण लागग्या। मध्यजुग मे पिच्छमी एसिया सू अर बाद मे आज रै जुग मे यूरोप सूं सम्पर्क प्रकट हयो है। ईसवी सन रै एक हजार बरस बाद इण सम्पर्का में भारत प्राय देवण वाळो न होकर लेवण वाळो

हो रयो है। भारतवासियां री मार्गदर्शक भावना रो यो पतन बौद्धिक अर नैतिक क्षय रा पहला पखवाड़ा में सूं है जिण रै कारण धार्मिक अर राजनैतिक स्तरां पर बै हार गया सदियां ताईं भारतवासी भारत सूं बारै गया ही कोनी। घणकरा लोगां नैं समुद्र पार जाणैं सूं व्यक्तिगत कळक अर सामाजिक बहिस्कार रो डर हो।

आज रै वखत मे ठाकुर ही पहला महान भारतवासी हा जिका कोई भी गुरत या खास सैक्षणिक, आर्थिक, राजनैतिक या धार्मिक उद्देस्य रै बिना ही, दूजा देसां रा लोगां सूं दोस्ती करणैं अर पाछा सम्बन्ध बणाणैं खातर सांस्कृतिक जात्रा पर निकळ्या। या भी ध्यान दणैं लायक बात है के बारी जात्रावां पिच्छम री दुनियां ताईं ही सीमित कोनी ही। वै सद्भावना रा दूत बणर चीन अर जापान, लंका अर मलय, इंडोनेसिया अर बर्मा, थाईलैंड अर हिन्दचीन, ईरान अर अफगानिस्तान अर उतराधी तथा दिखणाधी अमरीका में भी गया। इण रीत सूं भी वै भारतीय लोगां रै बौद्धिक दृस्टिकोण अर भावनात्मक सम्पर्कां रो विस्तार करणे में मदद करी। करीब दो सौ बरसां ताईं भारतवासी दुनियां नैं पिच्छम अर मुख्य रूप सूं अंग्रेजी चस्मैं सूं देखता रया हा। ठाकुर आपणा पूरबी, पिच्छमी, उतराधा अर दिखणाधा पाडोसियां री महान देणां नैं साफतौर सूं आपणैं सामनैं राख'र सतुलन नैं पाछो बणावण में आपणी मदद करी।

आज रो इतिहास ठाकुर रै विस्वास नैं भरपूर प्रमाणित कर दियो है। विग्यान अर सिल्प कळा-सास्त्र न्यारी-न्यारी आर्थिक अर राजनैतिक पद्धतियां नैं एक दूजी रै निकट सम्पर्क में ले आया है। विभिन्न धार्मिक अर आदर्सात्मक समूह जिका पहला भौगोलिक रूप सूं न्यारा-न्यारा कर दिया हा, आज एक दूजे रै घणा नैड़ै है। जे दुनिया नैं द्वेस री आग मे बळर भस्म नही होणो है तो आंनैं एक दूजे सूं मिलर चालणो सीख लेणो चाहीजै। जे इण आपसी भेदां मे झगड़ो हुवण दियो जावै तो इसा नतीजा जरूर निकळसी जिका सगळां खातर विनासकारी हुवै। ठाकुर या बात सिखाई के इण भेदां नैं दबाणैं री बजाय एक बड़े दायरै में आंनैं उचित जगां दी जाणी चाहीजै। बै विभिन्न रास्ट्रां अर आदर्सां में मुकाबलै री बजाय सहयोग री भावना चाहता क्यूं के बां रै मुजब आत्मनिर्भरता री बजाय पारस्परिक निर्भरता ही आज रै जुग री समस्यावां रो हल निकाळ सकै।

(५)

सिक्षा, समाज, अर्थसास्त्र अर राजनीति रै बारै में ठाकुर रा विस्वास बांरी गहरी धार्मिक श्रद्धा सूं चोखैर रयोड़ा हा। बांरा बाप उपनिसदां रा अर सूफी रहस्यवाद रा एकाग्र विद्यार्थी हा अर बांसूं ही ठाकुर जीवण री एकता री गहरी भावना ग्रहण करी। वै लिख्यो है के एक दिन जद व टाबर ही हा, प्रकृति अर पुरुष रै भेद रै स्पस्ट बंधण री अनुभूति बानैं चाणचुकैं ही हुई। इण घटना सूं बांरो एक महान गीत उपज्यो, पण इण सूं भी ज्यादा बानैं सुरु जवानी में ही जीवण रो एक मार्गदर्शक सिद्धांत मिलग्यो।

ठाकुर रै सामैं असलियत रो एक इसो द्रिस्य हो जिण में सत्य, सुन्दर अर शिव रा महान गुण भरया हा। सिक्षा सम्बन्धी बांरो कार्यक्रम, जिण में बै प्रकृति अर पुरुस रै सामंजस्य पर जोर दियो, प्राणीमात्र में व्याप्त एकता री बारी चेतनता पर आधारित हो। अर्थसास्त्र अर राजनीति में व्यक्ति रै प्रति बांरी सम्मान-भावना उण चेतनता पर आधारित ही के सगळा व्यक्ति आखर एक ही ब्रह्म रा अंस है। राजनीति रै क्षेत्र में लोगां रै सहयोग पर बै जिको जोर दियो, उण रो आधार विभिन्न द्रस्टिकोणा सारू बांरो आदर भी बितणो ही है जितणो बांरी या भावना के सगळा आदमी एक ही परमात्मा रा टाबर है। बांरो बिस्वास हो के भगड़ा-टंटा जद ही खड़या हुवै जद आपां आपणै वर्ग रा स्वार्थां पर जरूरत सूं जादा जोर देवां। 'फिरकाई' में बै बतायो के विस्वैक्य री चेतनता तक *उठणै सूं ही वर्ग स्वार्थां नै बांरी उचित जगावां मिलै। बांरो विस्वास* हो के धर्म ही जीवण रो सबसूं ऊंचो गुण है क्यूं के यो प्राणी मात्र खातर प्यार अर एकता री बात पर जोर देवै।

जीवण री एकता री इण गहरी भावना सूं ही धर्म रै प्रति ठाकुर रो द्रिस्टिकोण सुभाव सूं ही वर्गवादी न होकर सर्ववादी हुयो। बै बिना कोई दिमागी रुकावटां रै जीवण नै पूरण रूप में स्वीकार करयो, अर मानव प्रकृति रा जरूरी उपकरणा में सूं कोई नै भी छोडण नै त्यार नहीं हुया। बै बारंबार घोसणा करी के बैराग्य मे बांरो बिलकुल भी विस्वास कोनी। बांरै विचार में व्यक्ति नै मुगती जद ही मिलसी जद बो आपरा साथियां रै प्रति आपरी अनेकानेक जिम्मेवारियां नै स्वीकार करसी। भावनावां अर कळात्मक अनुभूतियां नै दबाणै री कोसीस सूं जबर्दस्त प्रतिक्रियावां होसी जिकी सायद आपणै अस्तित्व री जड़ां नै ही हिला गेरै। जीवण री खुसियां अर चिंतावां नै स्वीकार करकै नित्य कर्म पूरा करणै में आपां नै आत्मतोस मानणो चाहीजै। आपणा सब गुणां रै समन्वित विकास सूं ही सम्पूर्ण व्यक्तित्व बण सकै। समाज भी जद ही सही अर्थ में प्रगतिसील होसी जद घणखरा मिनख आपरै निजी जीवण में सामंजस्य ले आवै।

व्यक्ति रै विकास पर जोर देवण सूं ठाकुर खातर या बात अनिवार्य ही के बै धार्मिक विचारां रा सब्दां री बजाय बांरी आत्मा पर जादा जोर देता। बारंबार बै या बात कही के धार्मिक जीवण में कर्मकांड री आपरी जगां जरूर है, पण बांरी सार्थकता बिस्वासां री असलियत अर सचाई पर निर्भर करै। करतार री इच्छा सूं कर्म उण रीत रो एक सानदार अध्ययन है जिण सूं आदमी, कानून री भावना री बजाय उणरा सब्दां नै पकड़र, आपरी आत्मा नै खो देवै। या ही बात रीत-रिवाजां अर परम्परावां, आर्थिक, सामाजिक अर राजनैतिक मामलां अर सबसूं जादा धर्म पर भी लागू होवै। दुनियां री कोई भी चीज चिरस्थायी कोनी, अर इण वास्तै धार्मिक विचार भी बदळता रहणा चाहीजै। मूळ रूप में जिको एक तत्काळ अलौकिक अनुभव हो, उण नै आकृतियां अर कर्मकांड सूं जकड़णै रै प्रयत्न रो नांव ही धार्मिक मत है। मूळ प्रेरणा

आ. साची बात है के इण गीत में भारत रै भूगोल अर प्रकृति-चित्रां रा संदर्भ आया पड़्या है, पण इण स्थानीय रंग में आखी मिनख जात सारू एक गहरी भावना अन्तर्निहित है, जिकी इण गीत नै राष्ट्रगीत री बजाय एक धार्मिक स्तोत्र बणा दियो है। इण गीत रो प्रारम्भ ठाकुर दुनियां रा सगळा लोगां रै हिरदै-स्वामी री स्तुति सूं करयो है, अर उण अमर सारथी रा गुण गाया हैं जिको इतिहासां री उथळ-पुथळ मे आदमी नै मारग दिखायो। वै खाली भारत रो ही नहीं पूरब, पिच्छम, उत्तर, दिखण सगळां री ही कल्याण चावै, अर सचमुच मे यो गीत खाली भारतवासियां सारू ही नहीं आखी मिनख जात सारू लिख्योड़ो है। भारत रै इण राष्ट्रगीत मे ठाकुर रै उण विस्व रै आदर्स री झलक मिलै जिण में सब मिनखां में दोस्ती अर सहयोग अर सब लोगां में आपसी श्रद्धा अर आदर भाव हावै। वै इसी दुनियां रै प्रयास अर सहकारी पुनर्निर्माण रो गीत गायो जिण में हर व्यक्ति नै सभ्य संसार रै सभ्य आदमी रा अधिकार अर उणरै गौरव री गारंटी दी जासी। एक सबद में यूं कयो जा सकै कै यो स्तोत्र विस्वमानव कानी बढता कदमां में ठाकुर रै विस्वासां रो सार-संग्रह है।

उपसंहार रूप मे कोई पूछ सकै के आज री दुनिया में ठाकुर री काई विसेसता है? वै प्रारम्भिक रूप मे न तो राजनीतिग्य हा अर न समाज सुधारक या सिक्षा-सास्त्री हा, पण इण पोथी रा निबन्ध बतासी के इण खेत्रां मे सूं हरेक में वांरी देण महत्वपूर्ण रही। मूळ रूप में वै एक कवि अर लेखक हा, अर कळाकारां री तरियां ही वां कनै आपरा लोगां अर आपरै जमानै खातर ही नहीं सगळां लोगां अर सगळा जमानां खातर, एक संदेसो हो। इण सब बातां सूं ऊपर, अर इणां रै खातर ही, वै एक बहोत मोटा राष्ट्रीय अर विस्वमानव हा, जिणां री विस्वभावना री निरंतर चेस्टावां आज रै जमानै री जरूरी समस्यावां रै हल रो मारग बतावै।

'गीतांजळी' री सादगी अर सचाई सूं यूरोप में आंधी सी सरणाई। यो एक मानवी स्वर हो जिको मिनख नै मौत अर विनास री धमकी देवणिया झगड़ा-टंटा रै बीच सूं उठ्यो। ठाकुर रो यो संदेस जुदा सूं थकी-मांदी मानवता रै हिरदै रा तार झणकार दिया। पहलै महाजुद्ध में अर उण रै तुरत बाद रा बरसां में भी पिच्छम रा लोग एक पीर अर रिसी रै रूप मे वांरी जयजयकार करी। पण, भगतो री सीव ताई पूग्योड़ी वांरी प्रसंसा रो जुग खतम हुयां पछै पिच्छम री दुनियां में वांरी ख्याति मन्दी पड़ण लग गयी। कई लोग कयो के वांरी कवितावां इतरी सूक्ष्म अर भावानी है के आम हिरदै रा लोगां अर सुणावां री मांग पूरी नहीं कर सकै। दूजा वरग मे भावुकता रो एक खिचाव महसूस करयो जिको सुरू-सुरू में आकर्सक होतां थकां भी जल्दी ही स्वाद नै नीरस कर देवै। वांरा भासणां अर निबंधां रै बारै मे लोग कयो के कुदेक कल्पनावां अर सुदरा भावनावां रै सिवाय वै जरूरत सूं ज्यादा उपदेसात्मक अर नीरस तथा पुनरुक्ति पूर्ण अर अनर्गल है। ठाकुर रा कै आधुनिक निदक कयो के वांरी कवितावां में गहराई अर

वेग री कमी है, अर बांरा निबंध, मानव रै उत्थान री प्रबळ इच्छा होतां थकां भी, प्राछन्न, अस्पस्ट, लांबा अर सर्कसून्य है ।

कवि रै रूप में ठाकुर री स्थिति संदेह सूं इतणी परै है के बांरै आलोचकां री निन्दावां पर चर्चा करणो भी जरूरी कोनी । कुछ भी हो, या पोथी तो खाली बां रा निबंधां सूं ही मतळब राखै, अर या पाठकां रै ही परखणै री बात है के ग्रै आलोचनावां कठै ताईं सही है । पण, एक बात तो सीधी ही मानली जा सकै । इण में सूं घणखरा निबंध मूर्छा में बेचेत देसवासियां नैं जगाणै खातर उद्‌बोधन रै रूप में लिख्योड़ा है । ग्रै निबन्ध उण आदमी रा वीरकृत्य है, जिको एकलो ही आपरा लोगां री मध्यजुग री सी मनोवृत्ति नैं, एक ही पीढी में, आधुनिक द्रिस्टीकोण में बदळणै री कोसीस करै हो । इण सूं बांरी आलंकारिता अर पुनरुक्ति दोस री बात समझ में आवै । ग्रै गुण भारत अर बांरै अनेक समकालीन लेखकां री रचनावां में भी मिलै । घृणा अर द्वेस सूं बिलकुल दूर रहणै सूं बै और लोगां सूं निरवाळा अर अनूठा दीखै ।

आपां प्राय: भूल जावां के ठाकुर रो घणखरो वयस्क जीवण भारत में धूर्त अर बिगसतै राष्ट्रवाद रै खिंचावपूर्ण वातावरण में बीत्यो । अंग्रेजां रै आणै सूं एक इसी क्रांति रो चक्कर चाल पड़यो जिको देस रा पुराणा सामाजिक अर धार्मिक बिस्वासां रै प्रति विद्रोह ताईं ही सीमित कोनी रयो । जल्दी ही यो अंग्रेजां रै आर्थिक सोसण अर राजनैतिक आधिपत्य रै प्रति विद्रोह रो रूप ले लियो । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस री थापना सन् १८८५ में हुई, जद ठाकुर चौवीस बरसरा ही हा । मूळ रूप में भारतीयां खातर नागरिक आजादी अर जनसेवावां में आदा भाग मांगण खातर ही कांग्रेस री सुरुआत करी गई ही, पण इण सदी रै अंत ताईं इणरो रूप राष्ट्रीय आजादी खातर लड़ण वाळै-जुद्ध में जुटयोड़ै संगठन रो सो होग्यो हो । बीसवीं सदी रै पहलै चरण में एक इसो आतंकवादी संप्रदाय सामनैं आयो जिको राजनैतिक हत्यावां रै जरियै आजादी लेणी चाहतो हो । सारो वातावरण वासना अर द्वेस सूं भरग्यो हो । इसी उथल-पुथल रै बीच में भी ठाकुर रो द्रिस्टीकोण सत्य पर टिक्योड़ो निरवाळो अर मानवीय रह सक्यो, जिको बांरी आध्यात्मिक संपदा रो सबूत है ।

आपांनैं आ भी याद राखणो है के भारतीय राष्ट्रवाद सुरू सूं ही हिंदू जागरण सूं घणो लो मिल्योड़ो है । जिका आतंकवादी भारतीय समाज में क्रांति लावण री चेस्टा करी, बै आर्य-धर्म आदी संप्रदाय सूं भी प्रभावित हा । आजाद भारत री बात करतां थकां भी घणखरा मुखपोत रा राजनैतिक नेता हिन्दू धर्म रै प्रभाव में बिगस्योड़ै दर्सन अर संस्कृति रा संदर्भ में ही सोचता हा । बै अंग्रेजां री लायोड़ी बातां रो ही नहीं बल्कि इस्लाम संस्कृति रो भी विरोध करता हा, जिकी हिन्दू-मुसळमानां री जुड़वां कोसीस सूं एक हजार बरसां में बणी ही । आ भी साची बात है के भारत री बात करतां थकां भी ई राजनैतिक नेता आपरै प्रदेस या जाति री बात ही ज्यादा सोचता हा । इण

निबंधां रा पाठक ध्यान सूं देखसी के ठाकुर री रुचि भी प्रायः बंगाल अर बंगालियां पर ही केन्द्रित दीसती ही । कई आलोचक तो या धारणा तक बणाली है के करीब सन् १९०८ ताईं ठाकुर भारत री बजाय बंगाल री जादा चिंता करता हा, अर बंगाल में भी वांरी सहानुभूति उण लोगां खातर जादा ही जिका हिंदू धर्म नैं मानता हा ।

उण बखत रा दूजा नेतावां रैं बारें मे चाहे कुछ भी कयो जावै, पण ठाकुर नैं इतणो संकुचित बताणो ठीक कोनी । इतणें गहरें अर शुद्ध-स्तरीय अद्वैतवाद रैं वातावरण मे पळणें सूं आपरी पारिवारिक पृष्टभूमि रैं कारण मुसळमान अर ईसाई देसवासियां रैं खातर वांरै दिल मे निश्चित रूप सूं सहानुभूति ही । वांरी सुरूपोत री रचनावां में भारतीय संस्कृति री बहोत बडी भिन्नता री चेतना अर सगळा कीमती गुणां रो सामंजस्यपूर्ण संयोग मिलै । असल में वै उण थोड़ा भारतीयां मे सूं हा जिका सुरू सूं ही इण बात पर जोर दियो के भारत आपरैं संयुक्त जीवण रैं कोई भी तत्व नैं दबाकर नहीं, एक बडी समग्रता मे बांरै समुचित विकास अर संयोग सूं ही महान बण सकै । बंगाल रैं बारें में वांरी चिंता नैं यूं समझाई जा सकै के सगळा निर्माणात्मक काम खुदरैं आस-पास सूं ही सुरू करणा चाहीजै । वै बारंबार इण बात पर जोर दियो के राजनैतिक अर सामाजिक कार्यकर्तावां नैं आपरैं निजी पड़ोस पर ही ध्यान केन्द्रित करणो चाहीजै । वै कया करता हा के जिके कार्यक्रम री कल्पना वै करी ही उणनैं जे एक गांव भी पूरो कर लेवै, तो वो उण दीवें रो काम करसी जिण सूं चारू कूंटां में प्रकाश फैलसी ।

बंगाल रै बारें में ठाकुर री चिन्ता रो दूजो कारण उण घटें में है जिको भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण रा सुरूपोत रा दिनां मे बंगाल अदा कर्‌यो हो । पिच्छम रो प्रभाव सबसूं पहला अर सबसूं साफ भारत रैं पूरबी प्रदेस मे ही मालूम दियो । साहित्यिक ही नहीं, राजनैतिक पुनर्जागरण री सुरूआत भी बंगाल में ही हुई । एक और दूसरो कारण सायद श्यूह रचणें सूं हो सबंध राखै । ठाकुर सायद यो अनुभव कर्‌यो के वै बंगाल री परिस्थितियां पर जादा अधिकार पूर्वक लिख सकै, अर भारत रैं दूजा भागां रा लोगां री बजाय बंगालियां री भर्त्सना जादा जोरदार ढंग सूं कर सकै । ठाकुर एक बंगाली कवि रैं रूप मे रचना सुरू करी होसी, जिको आपरी बोली मे प्रधान रूप सूं सौन्दर्य री खोज करणें में ही व्यस्त हो । पण, परिवार री जायदाद रो प्रबंध करणें री अनुशासन-भावना सूं वै जल्दी ही जाण गया के कवि नैं आपरी हाथीदांत री बुर्ज मे सूं निकळणो पड़सी अर आपरा साथियां रा सुख-दुख बटाणा पड़सी । इण सूं सामाजिक, धार्मिक अर राजनैतिक समस्यावां में वांरी रुचि बढती गई । कवि री कल्पना दृष्टि सूं वै देख्यो के एक सामंजस्यपूर्ण समाज री रचना जद ही हो सकै जद उणरा सदस्यां रो व्यक्तित्व समन्वित हुवै । शिक्षा री तरफ वांरो ध्यान गयो अर वै एक इसो तरीको निकाळणें री चेष्टा करी जिण मे प्रकृति अर समाज रैं सामंजस्य मे व्यक्ति नैं जादा सूं जादा आत्मविकास रो मौको दियो जावै ।

ज्यूं-ज्यूं ठाकुर री कल्पना अर अनुभूति बढी, वं ज्यादा-ज्यादा इण बात नै महसूस करी के आपरी निजी संस्कृति सुरंत आकर्षण करणवाळी होणै पर भी, उण नै आपरी जगां सही अर्थ में विस्वव्यापी अर मानवीय संस्कृति रै ज्यादा विस्तृत सयोग में बणा लेणी चाहीजै। बंगाल रै बटवारै रै बाद जिका आतंकवादी कांड हुया उण सूं वांनै भरोसो होग्यो के भारतीय आजादी तक पूगण रा कोई छोटा रस्ता कोनी। वं आ बात भी जाणी के न्यारी-न्यारी भारतीय जातियां विदेसियां खातर घृणा रै आधार पर या कोरै स्वार्थ रै आधार पर ही एक नहीं करी जा सकै। इसा संगठण सायद थोड़ी दूर काम दे जावै, पण स्थायी एकता रा संबंध नहीं दे सकै। इण वास्तै समान आदर्शां रै प्रति वांरी निष्ठा सूं ही वै परस्पर बांध्या जा सकै। वं हिंसा री निंदा करी, पण अहिंसा रै आदर्स मे स्रद्धा रै कारण नहीं, बल्कि इण विचार रै कारण के इसा तरीका निस्चित रूप सूं इतिहास नै प्रभाव सून्य करणै रा है।

आप रै दीर्घ अर सफळ जीवण भर ठाकुर इसै द्रिस्टिकोण नै बणावणरी निरंतर चेस्टा करता रया जिको सही अर्थ में विस्वव्यापी अर मानवीय हुवै। वं उपनिषदां वर्णित हिन्दुत्व रै आदर्स सूं गहरा प्रभावित हा, पण वांरो रास्ट्रवाद सुरू सूं भारतीय जीवण री बहुतायत अर भिन्नता, तथा सगळा तत्वां नै खुलै अर पूरै विकास रो मौसर देवण री जरूरत समझली ही। समै पाकर वं आ भी जाणली के आधुनिक विज्ञान अर सिल्पसास्त्र सूं एकीकृत इण संसार में खाली रास्ट्रवाद ही पर्याप्त कोनी। वं आ घोसणा करी के लोगां अर देसां री आजादी री बजाय वांरी पारस्परिक निर्भरता ही वर्तमान अर भविस्य रै जीवण अर उणरी प्रगति रो सिद्धांत होणो चाहीजै।

सारी दुनियां मे बढती चिन्तावा रै इण क्रम में ठाकुर आ बात भी महसूस करी के जे भारत नै विस्वव्यापी मानवीयता में कोई देण देणी है तो उण नै इण समस्यावां रै प्रति अेक निस्चित अर क्रियात्मक द्रिस्टिकोण अपणाणो चाहीजै। वांरै मुजब विरोध नहीं स्वीकृति ही जीवण रो आधारभूत सिद्धांत है पण सागै ही जीवण री आ मांग भी है के जिकी चीज निस्प्राण है, उणरो त्याग करणो चाहीजै। वै भारतीय जीवण अर व्यवहार री उण बातां री आलोचना करण मे कदै ही नहीं चूक्या जिकी दुर्बळ अर प्रतिक्रियावादी ही। पिच्छमी सभ्यता री दुर्बळता रा लक्षणां नै भी वं आप्त करण नै त्यार नहीं हा। जे एक कानी वं पूरब रै आळस अर अंधविस्वासां री निन्दा करी, तो दूजै कानी पिच्छम रै अतिसयोक्तिपूर्ण रास्ट्रवाद अर भौतिक चीजां री चिन्ता री बुराई करी। मुरूपोत में वांरो यो पक्को विस्वास हो के एक नई अर साची मानवीय सभ्यता रो स्रोत यूरोप रै हिरदै सूं फूटैलो। जिको आपरी निबन्ध वं लिख्यो उण में वं बडै दुख सूं आ बात स्वीकार करी के पच्छिम मे वांरो विस्वास डिग गयो है। इण सूं ठाकुर रा कई पिच्छमी आलोचकां रो जीव दुख्यो है। पण वै भूलै है के ठाकुर आपरी आलोचनावां में आपरा भारतीय साथियां अर दोस्तां नै भी टाळ्या नहीं है। महात्मा गांधी री घणी तारीफ करतां हुयां भी खास मुद्दां पर वांरी तीखी आलोचना

करणैं सूं बैं चूक्या कोनी। पिच्छम री धणी तारीफ करणैं पर भी बैं उण ग्रतिसयोक्ति-पूर्ण स्थिति री निंदा करणैं सूं नहीं चूक्या जिकी भौतिक धन ग्रर रास्ट्रीय गौरव नैं बै दे राखी ही।

पण ठाकुर मिनख में ग्रापरो विस्वास कदै ही कोनी खोयो। महात्मा री ग्रालोचना करतां बखत भी, बै मानव प्राणी रै रूप में बांरी महानता नैं मानी। पिच्छम रै प्रति ग्रापरी निरासा नैं प्रकट करता बखत भी बै उण विसाल हिरदै वाळा पिच्छमी लोगां री चर्चा गौरव ग्रर कृतज्ञता सूं करी जिकां नैं बै जाणता हा ग्रर दोस्त रूप मे मानता हा। बै ही विचार बांरा निबधां में मी है। मिनख जाति री एकता, साच री काया-पलट करणैं री सगती, सब ढंग री दळबंदी ग्रर प्रांतीयता री बुराइयां, एक कानी तो सम्प्रदायवाद, ग्रात्म-पार्थक्य, संकीर्णता ग्रर ग्रात्मकेन्द्रीयता, ग्रर दूजै कानी ग्रालंकारिता, स्फीति, ग्रात्मालोचन री कमी, ग्रनुत्तरदायी क्रोध रै बहाना सूं सचाई नैं छिपाणैं री बात, ग्रर सब सूं ऊपर दूजां रै जीवण-स्तर ग्रर गुणां री भद्दी नकल करणैं री दास भावना। इण ग्रध्ययन रो उपसंघार ग्रापां उण वसीयत सूं कर सकां हां जिकी बै ग्रापरै ग्राखरी निबध में दुनियां खातर छोडग्या है। "ग्रर फेर भी मौजूदा हार नैं ग्राखरी मानकर मैं मिनख मे मोटो विस्वास खोणैं रो भयंकर पाप नही करूंला। इण प्रळय रो ग्रंत ग्रत हो जावै, ग्रर एक बार फेर ग्राकास साफ ग्रर सांत हो जावै, तो मैं इतिहास रै मोड़ री बाट देखूंला। सायद यो नयो प्रभात इण क्षितिज सूं ही ग्रासी, पूरब सूं ही जठै सूरज उठै है, ग्रर फेर, ग्रपराजित ग्रादमी ग्रापरी खोई बापोती नैं पाछी जीतण सारू सरी बाधावां नैं पार करतो विजय रै मारग नैं ढूंढसी।"

—हुमायूं कबीर

सिक्षा रो हेर-फेर

मिनख जिंदगी री कोरी जरूरतां सूं ही संतोष कोनी कर सकै, अर वै आपरी जरूरतां सूं थोड़ा वध्योड़ा अर थोड़ा खुला भी है। औसत आदमी साढ़ै तीन हाथ लांबो ही है, पण वो जिके मकान में रैवै वो उणसूं घणो लांबो है, अर उण में हिरण डोलण री मोकळी जगा है, जिको तन्दुरुस्ती अर आराम खातर घणी जरूरी है। या ही बात सिक्षा पर भी इतणी ही लागू हुवै। स्कूल री पढाई खातर टाबर ने जिकी पोथियां जरूर चाहीजै, वांरै अलावा भी उण नै आपरी पसंद री और पोथियां पढ़णं री भी छूट होणी चाहीजै। जे उण ने या छूट नहीं दी जावै, तो उण रो मानसिक विकास [illegible] जाणै री सम्भावना है, अर वो पूरो मिनख बणं जद ताई उणरो टाबर रो सो ही दिमा[illegible] बण्यो रह सकै।

बदकिस्मती सूं इण देस में टाबर नैं आपरै खातर बहोत थोड़ो वखत मिलै [illegible] कमसूं कम समै में उण नैं एक विदेसी भासा सीखणी पड़ै कई परीक्षावां पास करणी पड़ै, अर नौकरी रै वास्तै लियाकत हासिल करणी पड़ै। इण तरियां, जी तोड़ फुरती सूं थोड़ीसी पाठ्यपुस्तकां नै रट लेणं रै सिवाय वो कांई कर सकै? उण रा मां-बाप अर गुरु लोग मनोरंजन री कांई पोथी पढ़र उण नै आपरो कीमती वखत बरबाद कोनी करण देवै, अर ज्यों ही वे उण रै हाथ में इसी कोई पोथी देख लेवै तो फट खोस लेवै।

आ[illegible] किस्मत रै कारण ही बंगाली टाबर नैं व्याकरण, कोस अर भूगोल री कमजोर खुराक पर जीणो पड़ै। क्लास में बैंच पर पतळी टांग लटकायां बैठ्यो वो टाबर दुनियां रो [illegible] टाबर लखावै। इण उमर में जद दूजां देसां रा टाबरां री [illegible] [illegible] है, तो उण नै आपरे गुरु री बेंतां री चोट [illegible] पड़ै अर ऊपर सूं [illegible] भी खाणी पड़ै।

[illegible] कोई भी आदमी रा [illegible] री नास कर देवै अर [illegible] मनोरंजन री कमी सूं ही बंगाली टाबर [illegible] विकास [illegible] पूरो विकास करया बिना ही [illegible] दो। इण सूं [illegible] में सूं घणां लोगां रै विस्वविद्यालय री [illegible] पोथियां [illegible] पर भी [illegible] लोगां रा [illegible] न [illegible] न [illegible], न तो [illegible] कोई [illegible] न [illegible] सूं [illegible] अर न [illegible] सूं ऊपर [illegible]

उण नैं वणा ही सका । मरदां री तरियां तो आपां न बोल सकां, न सोच सकां अर न काम ही कर सकां, अर आपणें दिमाग री दरिद्रता नैं आपां जरूरत सूं जादा बोलर अर दंभ तथा अहंकार सूं ढकणै री चेष्टा करां । आ बात खास तौर सूं उण आनन्द बिना री सिक्षा रैं कारण है जिकी बाळपणैं सूं ही आपणां टाबरां नैं मिलै, जिण में कुछेक पाठ्यपुस्तकां नैं रटर वे कुछेक विसयां रो काम चलाऊ ग्यान कर लेवैं, पंडित किण रा ही नहीं वणैं । मिनखां नैं भूख मिटाणै खातर तो हवा री नहीं भोजन री जरूरत है पण उण भोजन नैं ठीक सिर पचाणैं वास्तै हवा री भी जरूरत है । इण तरैं ही एक पाठ्यपुस्तक सूं पचाणैं सारू टाबर नैं मनोरंजन री भी कई पोथियां चाहीजै। जद कोई टाबर खाली आनन्द रैं वास्तैं ही कोई चीज पढ़ैं, तो पढ़णैं री उणरी लियाकत अणदेखी ही बढ़ैं, अर उण री समझणैं, ग्रहण करणैं अर वणाई राखणैं री ताकतां भी एक आसान अर कुदरती तरीकै सूं ज्यादा मजबूत वणती जावैं ।

आपणी पहली मुसकल तो भासा री है । अंग्रेजी अर आपणी मातभासा में व्याकरण अर वाक्य रचना संबंधी घणो फरक होणैं रे कारण अंग्रेजी आपणैं वास्ते एक बिलकुल विदेसी भासा है । अर फेर विसयवस्तु संबंधी मुसकल है, जिकी सूं अंग्रेजी री पोथी आपणैं खातर दूणी विदेसी वण जावै । उणमे लिख्योड़ै जीवण सूं एकदम अपरिचित होणैं सूं, आपां उण पोथी नैं समझै बिना ही रटणै रैं अलावा और कुछ नहीं कर सकां - जिणरो नतीजो विसो ही हुवै जिसो भोजन नैं बिना चव्यां ही गिटणैं रो हुवै । मान लेवो के अंग्रेजी री एक टावरां री पाठ्यपुस्तक में घास सुखाणैं री एक कहाणी है । अर इसी ही एक दूसरी कहाणी चाली अर कंटी रैं झगड़ै री है जिको नरफरी गिडिया वणातां वखत वा मेंर हुयो । आं कहाणियां में इसी घटनावां रो जिकर है जिकी अंग्रेजी टाबरां रो परिचित है, अर बांनैं ही चोखी लागणैं अर जादा आनन्द देणैंवाळी है । पण वां कहाणियां सूं अब आपणा टाबरां रा दिमागां में न तो कोई पुराणी यादा ही ताजो हुवै, अर न वांरी आख्यां आगे कोई तसवीरा ई ऊपड़े । आं पोथिया नैं पढ़ता वखत आपणा टाबरां री अन्धेरे में टटोळणैं री सी गत हुवै ।

एक और मुसकल इण बात री है कि जिका लोग आपणी निचली स्कूलां में पढ़ावै है बानैं आपरै कामरी ठीक सिर सिक्षा कोनी मिल पाई । वा में सूं कई तो दसवीं पास है, अर कई वा भी पास कोनी, अर मगळा मे ही अंग्रेजी भासा अर साहित्य तथा अंग्रेजी जीवण अर विचारां रैं ठीक सिर ध्यान री कमी है । फेर भी यांही अध्यापकां सूं अंग्रेजी रैं ग्यान रो परिचय करणो पड़ै । ऐ लोग न तो चोखी अंग्रेजी जाणैं अर न चोखी वगला ही, अर एक मात्र काम जिको वे कर सकै वो गलत पढ़ाणैं रो ही है।

असल में इण गरीब लोगां नैं भी आपां दोस नहीं दे सकां । मान लो जो मनै 'दी होर्स इज ए नोबुल एनीमल'–घोड़ो एक शानदार जानवर है — इण वाक्य नैं बंगला में लिखणो है । मैं इण नैं कियां बणास्यूं ? एक साथ ही मैं दो भासावां रै प्रति ईमानदार कियां रह सकूं ? मैं इयां लिखस्यूं काई के घोड़ो एक 'महान' जानवर–'ऊंचै दर्जे रो जानवर', 'घणो चोखो जानवर' है, या और काई लिखस्यूं ? 'नोबुल' रै वास्ते बंगाल्यां रो कोई भी सबद म्हारै विचार मे सही कोनी बैठे । पण, आखर में मैं शायद सीधी ठगी पर उतर आस्यूं । सो असल में तो अध्यापक मैं भी कोई दोस कोनी दे सकूं, जे आखर मे वो भी क्षमा देवण लाग जावै ।

नतीजो यो हुवै के टाबर क्यूं भी कोनी सीख सकै । जे बगना टाळ और कोई भासा वो नहीं सीखतो होतो, तो वो कमसूं कम रामायण अर महाभारत नैं बांचणो अर समझणो तो सीख जातो । जे वो स्कूल में ही नहीं भेज्यो जातो तो वो आपरो सगळो बखत खेल खेलणै में रूंखां पर चढणै मे, नदी तळावां में तिरणैं, फूल तोड़णैं अर खेतां अर जंगळां में हजार तरह रा नुकसान करणैं मे बितातो । इण कामां में वो आपरी जवानी री उमगां नैं चोखी तरियां सतुस्ट कर लेतो, अर खुसमिजाज अर स्वस्थ सरीर रो विकास करतो । पण अंग्रेजी रैं साथैं उळझणैं में, वो न तो उण नैं ही सीख सकै अर न आनन्द ही ले सकै, न तो साहित्य रैं काल्पनिक ससार में घुसणैं री ही लियाकत करैं, अर न कुदरत रैं असली ससार मे पग धरणै रो ही बखत पावै ।

मिनख दो ससारां मे रेवै, एक तो उण रैं माय ही है, अर दूजो बारै । ऐ ससार उणनैं जीवण, तनदुरुस्ती अर ताकत देवैं, अर रूप रग गंध, गति अर संगीत अर प्यार अर आनन्द री लहरां निरन्तर हिड़ाता उणनै हरदम फूतनो राखैं । आपणा टाबर आपरा दो देसागे तरियां आ दोनूं ससारां सूं ही देस निकाळो दियोड़ा है अर हथकड़ी बेड़ी घाल्यां परदेस में कैद कर्‌योड़ा है । परमात्मा मा–बापा रा हिरदां नैं प्यार सूं इण वास्ते भरया है के टाबर उण नैं धापर पीलेवैं, अर वो मावां री छातियां मुलायम इण वास्ते बणाई है के टाबर वां पर आराम कर लेवैं । टाबरो रा छोटा-छोटा डील ही है, पण घर री समूची साली जगां भी बांरै खेल वास्ते काफी कोनी । अर अ पां आपणैं लड़कां अर लड़कियां रो बचपण कठै बितावां हां ? एक परदेसी भासा रैं व्याकरणा अर कोसां में, अर स्कूल रैं काम री उण तग कैद मे, जिको उदास अर आनन्द रहित है, तथा निस्चळ अर अनत है ।

मिनखरी अमर रा बरस सास्ळ री कड़ियां ज्यूं है, अर इण नामी तथ्य नैं कैर सूं कहणो कुछ फायदो सो है के बचपणो कम–कम सूं पूरै मिनख रूप में बदै। बामरी दुनिया में जिको आयो – आयो ही है, उण पूरै मिनख रे वास्ते कई मानसिक गुण रिपकुल जरूरी है । पण जे गुण तुरन्त नहीं मिल सकै, आंरो विकास करणो पड़ै। आपरा हाथ–पगा री तरियां आपणा मानसिक गुण भी, जीवण री हर स्थिति मैं,

जिको काम बांसूं–लियो जावै उण रै मुरब ही बढ़ता रेवै। वे कोई तैयार माल री तरियां कोनी जिको जद जरूरत हुवै दुकानां सूं खरीद लियो जावै

जीवण रा कर्तव्य पूरा करणैं वास्ते विचार अर कल्पना री ताकत आपा खातर बिलकुल जरूरी है। जे आपा असली आदमियां री तरियां रहणा चावा तो आ दोनूं ताकता बिना आपणो काम कोनी चाल सकै। अर जे टाबर पणैं मे ही ओरो अभ्यास नही गेरो, तो बडा हुयां पछै आं नैं पायो नही जा सकै।

पण, सिक्षारो आपणो मौजूदा तरीको इण अभ्यास रो मौको कोनी देवै। आपांनैं टाबरपणैं रा घणा सारा बरस तो एक विदेसी भासा मैं सीखणैं मे ही बीताणा पड़ै, जिकी इसा लोग सिखावै जो सिखाणैं रै लायक ही नही। अंग्रेजी भासा नैं सीखणैं रो काम घणो मुसकल है पण अंग्रेजी विचारां अर भावां सूं जाण पिछाण करणी तो ओर भी ज्यादा मुसकल है, जिण में घणो सारो बखत लागै जिकै सूं विचार करणैं री आपणी योग्यता, खरच रो रस्तो नहीं मिलणैं रै कारण, निस्क्रिय हो जावै।

बिना विचारैं पढणो इसो ही है जिसो कुछ भी बणाये बिना इमारत रै सामान नैं भेळो करतो जाणो। जद आपां गारैं, चूने अर ईंटां, कड़ियां अर सहतीरां री एक घणो ऊंचो ठिग लगा लेवां, तो चाण चूकी विश्वविद्यालय सूं एक तिमजले मकान पर छत गेरणरो हुकम मिलै। उण वखत आपां तुरत उण ढिग रै ऊपर चढ़ जावां, अर निरन्तर दो बरसां तांई उण मैं कूटता रैंवा, जद ताई वो समतल नहीं हो जावै, अर मकान री चपटी छात सूं मिलतो जुलतो सो नही दिखण लाग जावै। पण इण ढिग नैं मकान कैयो जा सकै काईं ? इण में हवा अर चानणो माणैं री मोरियां है काईं ? कोई भी आदमी आपरी सारी जिंदगी खातर इणनैं आपरो घर बणा सकै काई ? इण मे व्यवस्था, सुन्दरता अर समरसता है काईं ?

इण मे कोई सक कोनी के आपणैं देसमें दिमाग री इमारत खडी करणैं वास्तै अब घणो सारो मसालो भेळो करयोड़ो है। आपणैं इतिहास मे कदै भी भेळा हुयेड़े मसाले सूं यूं कितणा ही गुणा ज्यादा है। पण आपां नैं या सोचणैं री गलती नहीं करणी चाहिजे के भेळो करणो सीखणैं सूं आपा बणाणो भी सीख लियो है। एक ही समय मे धीरे-धीरे सग्रै अर निर्माण रा काम चालता रेवै जद ही चोखा नतीजा हुवै।

इण रो मतळब यो हुयो के जे मैं म्हारै लड़के नैं मोट्यार जवान बणाणो चाहूं मनैं यो ध्यान राखणो चाहीजै के वो बचपण सूं ही मोट्यार री तरियां बढै। नहीं तो वो सदा ही टाबर बण्यो रेसी। उण नैं बता दियो जाणा चाहीजे के वो याददास्त पर ही पूरो भरोसो नहीं करै, अर उण नैं अपणैं आप सोचणैं पर आपरी कल्पना नै काम मे लेवणः रा काफी मोका दिया जाणा चाहीजै। चोखी फसल लेणैं

वास्तै सेत नै ओराणो अर बीजो रै अनाचा उग मैं पाणी देणो भी जरूरी है, अर खास तौर सूं चावळ नो बोवणी नीवरोडी घरती में ही ठीक रवै। चावळ री खेती मे खास मौके पर बरसा बिलकुल जरूरी है, पर बिना बखत बरसाणी सबसूं ज्यादा जरूरत रेवै उण बखत वा नहीं मिलै तो फसल रो नाम हो जावै। जद वो मौको निकळ जावै तो भरपूर बरसा भी फसल नै उबार कोनी सकै। अवस्था अर किशोर अवस्था ही वै मौका है जद आदमी रै बड़णे लायक साहित्य री उमेरसा बिलकुल जरूरी है। उण उसंजना सूं उण रै दिमाग अर दिल री कनळी कूंपळां हवा अर पानणो मे तेजी सू बढसी, पर नदरूनी अर साहन में बड़ी हो जासी। पण जे मौको ऐसा अर गये जमाने रा व्याकरणी पर शब्द कोम में पड़णे में को दियो जासी तो दिल अर दिमाग पण बिगरया ही रह जासी। जं यूरोप रै साहित्य रा सब सूं जोर दार सत्य, अनोखी धारणावां, अर महान विचार भी उण आदमी पर बाकी सारे जीवण भर बरसाया जावै, तो भी बो वांरी मांयली आत्मा नै ग्रहण नहीं कर सकै।

आपणी जिन्दगी मे भो सुम मौको आनन्द बिनारी शिक्षा में खोयो जावणो है। बाळपणें सूं किसोर अवस्था ताईं, अर फेर किसोर अवस्था सूं मोट्यार अवस्था ताईं, आपां सुरसत रा मजूरिया हां, जिका आपणी दोनड़ी कमरा पर सब्दां रो भार ढोवां। आखर जद ताईं आपां अंग्रेजी विचारां रै राज मे बड़ा पावा तो मालम देवै के आपणो जी बठै सोरो कोनी, के आपां किया न कियां वां विचारां नै समझ तो लेवां, पण आपणी घणी मांयली प्रकृति में वांनै घोळ को सकानी, के आपां वांनै आपणा भासणां अर लेखां में तो काम मे ले सका, पण आपणें जीवण रा व्यावहारिक मामला में काम में को ले सकानीं।

इण भांत आपणें जीवण रा पैलड़ा बीस या बाईस साल तो अंग्रेजी री पोथियां सूं विचारां नै चुगणें मे ही बीतै। पण वै विचार कद भी आपणें जीवण में रासायनिक ढग सूं एकजी कोनी करया जावै। नताजो यो हुवै के आपणा दिमाग ऊटपटांग सा दीवण लागै। जिका रै कुछेक वै विचार तो गूंद लगायोड़ा कागदा रा टुकड़ां ज्यूं चिप्या रेवै, अर दूजा बखत-बखत पर फाट'र न्यारा होग्या। यूरोप रै ढण ग्यान रो लेप करके, जिकै रो आपणें मांयलै जीवण सूं कोई सबन्ध कोनी, आपां बां जगळियां री तरियां घमण्ड सूं अकड'र चाला, जिका आपरी चामड़ी री कुदरती चमक अर फूटरापै नै रंग मांडणा बिगा'र खराब कर लेवै। जगळी लोगा रा मुखिया इण बात नै महसूस कोनी करै के यूरोप रा कपड़ा पहरयां अर बठै रा सस्ता काच रा मणियां री सजावट करयां बै कितणा कोजा लागै। आपां भी या बात कोनी समझां के आपां नै जिका अंग्रेजी सबद आवै वांनै भटाभट बोल'र आपां अणजाण मैं ही कितणा उपहास रा पात्र बण जावां, अर कुछेक ऊंचा सूं ऊंचा अंग्रेजी विचारां रो जावक गलत उपयोग करके वांरो सत्यानास कर देवां। जं आपां कोई नै आपणें

कामो हाँसतो देखां, तो आपां और भी जोर दे'र बोल कर तुरन्त अपणे आपनें ठीक साबित करणे री चेस्टा करां।

क्यूं के आपणी सिक्षा रो आपणें जीवण सूं कोई भी सम्बन्ध कोनी, इण वास्तें जिको पोथियां आपां पढ़ां बां में न तो आपणा घरां रा साफ चित्राम मांड्योडा है अर न आपणें समाज रा आदसों री तारीफ ही बां में है। आपणें जीवण रा नितकर्म बां पानां मे कोनी मिले, अर न बठै आपां नें इसो कोई आदमी या जिनस ही मिलै जिण नें आपां आपणो मित्र या सगो सम्बन्धी मान सकां। आपणा जमीन आसमान, आपणा सुबै-साम, आपणा खेत अर आपणी नदियां भी बठै कोनी। इसी हालतां में सिक्षा अर जीवण रो मेळ कदे भी कोनी बैठ सकै। बीच री बाड रै कारण बां नें न्यारा-न्यारा ही रहणा पड़े। आपणी सिक्षा री तुलना उण जगां पर पड़ी बरखा सूं करी जा सकै जिकी आपणी जड़ां सू घणी दूर है। बिचली जमी री रुकावट रै कारण इतणी घणी झाल नही पूग सकै जिकी सूं आपणी तिस बुझ पावै।

इण देस मे सिक्षा अर जीवण रै बीच जिकी रुकावट है उण नें असल में पार नही करी जा सकै, जिकै सूं बांरो मेल मिलणो घणो मुसकल है। जादातर नतीजो दोनां रो बैर बढ़णे रो ही हुवै। जिकी चीज आपां स्कूल अर कालेज में पढ़ां उण रै प्रति एक आधारभूत अरुचि अर अविस्वास आपणें में बढतो जावै, क्यूं के आपणें चारूमेर रै जीवण री हालतां सूं हर छोटे सूं छोटे रूप मे भी उण रो विरोध है। आपां या सोचण लाग जावां के आपां झूठी बाता सीख रया हां, अर यूरोप री सारी सभ्यता भी झूठ पर ही खड़ी है, जद के भारत री सभ्यता रो समूचो आधार साचो है। अर आपणी सिक्षा आपां नें लुभावणी झूठ रै देस कानी चलारी है। यूरोप री विद्या क्यूं घणखरो बार आपां रै काम नीं आवै, इण रो असली कारण,उण विद्या री कोई कमी में ढूंढणे री जरूरत कोनी। उण रो कारण तो आपणें जीवण री प्रतिकूल स्थितियां मे ही है। फेर भी आपां कैवा के यूरोप री विद्या आपणें काम री कोनी क्यूं के बा चीज उण रै स्वभाव में ही कोनी। इण विद्या सू जितणी जादा नफरत आपां करां उतणो ही कम फायदा इण सूं मिलै। अर इण भात आपणी सिक्षा अर आपणें जीवण री दुस्मणी जोर पकड़ती जावै। ज्यूं ज्यूं अै दोनूं न्यारा खिचता जावै, आपणा दिल एक तरै रो रगमंच बण जावै जठै बै नाटक रा दो पात्रां री तरियां एक दूसरै नें चिड़ावै अर खरी-खोटी सुणावै।

सिक्षा अर जीवण रो मेळ किंयां करायो जावै, या आज रै दिन आपणा सबसूं जोरदार समस्या है। यो मेळ बंगला भासा अर साहित्य सूं ही हो सकै। आपां सगळा जाणां के बकिमचन्द्र चटर्जी रो छापो 'बंगदर्सन' बंगाल रै आकास मे नये प्रभात री तरियां उग्यो। काई कारण हो के इण सूं समूचे सिक्षित वर्ग नें इतणो गहरो सन्तोष मिल्यो? इण मे इसी कोई साची बात छती काई जिकी हालआई अंग्रेजी

कोई भी कूणं सूं मामले पर विचार करां, आपां नै या बात मालूम देवै के आपणा विचार अर आपणी भासा एकरस कोनी। इण आधार भूत बेमेळ रै कारण ही आपां न तो आपणाँ पगां पर खड्या हो सका, न चावां सो ले सकां अर न आपणी कोसीसां में सफळ हो सकां। एक बार मैं एक गरीब आदमी री कहाणी पढी ही जिको सरदी खातर गरम कपड़ा अर गरमी खातर ठण्डा कपड़ा आपरै वास्तै खरीदणा चावै हो। इण वास्तै जो कुछ भीख उण नै मिलती उण नै बचाया करतो। पण बो गरमी खातर ठण्डा कपड़ा खरीदण ताईं पूरा पीसा तद ताईं नहीं बचा पातो जद ताईं गरमी बीत नीं जाती। हर साल यूं ही बीतती गई, अर आखर एक दिन परमात्मा उण पर दया करके एक बरदान मांगण रो कैयो। बो बोल्या "मैं तो बस यो ही मांगूं के किस्मत री या हेर-फेर खतम हो जावै, जिकै सूं मनै फेर कदे गरमी में सरदी रा कपड़ा अर सरदी में गरमी रा कपड़ा नहीं मिलै।'

आपां भी या ही चावां के परमात्मा आपणी सिक्षा रा हेर फेर खतम कर देवै, अर आपां नै सरदी मे सरदी रा कपड़ा अर गरमी में गरम कपड़ा बगसै। परमात्मा आपणै सामैं जरूरत री हर चीज मेली है, पण आपां ठीक वखत पर ठीक चीज नै कोनी ले सकां। अर यो ही कारण है के आपां इण कहाणी रै मगतै जिया रैवां। इण वास्तै आपां भगवान सूं अरज करां के बो भूखा हुवां जद आपां नै भोजन देवै, अर ठण्ड महसूस करां जद कपड़ा देवै। आपां या प्रार्थना करां के बो आपणी भासा रो आपणै विचार सूं, अर आपणी सिक्षा रो आपणै जीवण सूं मेळ करा देवै।

तो पीणं रं पाणी अर तन्दुरुस्ती रो जिम्मो भी राज रो ही है। शिक्षा देवण वास्तं भी अफसरां रं बारणं पर हां दीन बणर झुकणो पड़े। जिको रूंख कदे आपरा फूल खुद खिलातो हो, आज आपरा सूखा अग उठार आकास सूं मदद री अरज करं। जे उण री बिनती सुण भी ली जावं तो इसा दिखावटी फूल करमो भी कांई ?

अंग्रेजी विचारां मे जिण नै स्टेट-राज कैवं, बो ही आपणं देस में सरकार या गोरमिट कयो जातो। या सरकार पुराणं भारत में राजा री हुकूमत रं रूप में ही। पण आज रा अंग्रेजी राज मे अर आपणी पुराणी राजा री हुकूमत में फरक है। इगलैंड देस रा सारा कल्याण रा कामां रो जिम्मो राज नै सूंपै, जद के भारत मे थोडी हद ताई ही यो जिम्मा दियो जातो।

या बात कोनी के राजा उण लोगां नै महारो अर इनाम नहीं देतो, जिका जनता नै धार्मिक अर दुनियादारी री शिक्षा मुफत मे देता, पण वो इसा काम आसक रूप मे ही करतो। असली जिम्मेदारी तो परवाळा रीज ही। जे राजा आपरी मदद नीं देतो, या चाणचुकी कोई अराजकता फैल जाती, तो धार्मिक अर दुनियादारी री शिक्षा रं काम में कोई बड़ी बाधा कोनी पड़ सकती ही। या बात भी कोनी के राजा कोई सळाव कोनी सुदरातो हो, पण समाज रं कांई दूजं भागवान आदमी सूं बेसी उण रो काम कोनी हो। जे एकलो राजा ही लापरवाह हो जातो तो देस रा जळामय सूख कोनी जाता।

इगलैंड मे लोग आप आपरी सुख-सुविधावां नं भोगणे में अर आप रा मनचाया काम करणं में आजाद है। समाज री जिम्मेवारियां रो बोझ बां पर कोनी, क्यूं के बै सगळी राज री है। भारत में राजा नै लोगां सू जादा आजादी ही, जद के लोग समाज री जिम्मेवारियां सूं बंध्योड़ा हा। राजा चाये लड़ाई में गयो हुवै या सिकार मे, चाये बो आपरा कर्तव्य करतो हुवं या लाला मोज-मजा में वखत बितातो हुवै, नैतिक द्रिस्टि सूं बो आपरा ही कामां रो जिम्मेवार हो। लोग समाज हित रा कामां मे उण रं भरोसं कदे ही कोनी रैया। सामाजिक कर्तव्य तो उळटा खास तौर सूं समाज रा लोगां रं ही जिमै करया जाता।

इण रो नतीजो यो हुयो के धर्म' सबद सूं आपां जिको मतळब लेवां, बो आपरा समूचं सामाजिक ढाचं रं मांय पैठग्यो। हर आदमी नै अपणं आप पर काबू करण रो अनुशासन सीखणो पड़तो, अर हर आदमी नं ही सामाजिक जिम्मेवारियां रो पवित्र सहिता नं मानणी पड़ती।

न्यारी-न्यारी सभ्यतावां री खास ताकत न्यारा-न्यारा रूपां मे समाई रैवे। देस रो दिल उणी ठौड़ रैवै जठै लोगां रो कल्याण केंद्रित हुवै। उण ठौड पर दियोड़ी भटको समूचं देस लागर घायल हुवै। इंगलैंड में राज रो पलटणो देस री बरबादी ही

सुदेसी समाज

आपणें देस में राजा लड़ाई लड़ता, देस री रक्षा करता अर न्याय करता, पण बाकी रा सारा काम पाणी सूं लगा'र विद्या देणें ताईं रा, समाज ही करतो, ऐ इतरै बढ़िया ढग सूं करण जाता के सदियां ताईं बार-बार पलटता राज भी न तो आपर्णे आध्यात्मिक जीवण रो नास कर र आपां नै जानवरां री कूण में गेर सक्या, अर न आपणें समाज नै छिरळ-भिडळ करकै आपां नै अनाथ ही बणा सक्या।

राजावां में लो लड़ाई-झगड़ां रो कोई अन्त ही कोनी हो, पण आपणा बाबा रा झुरमटां री साफ जगां में अर आमां रा बागां री छायां में मन्दर अर धरमसाळा बणती गई, तळाव खुदता गया, गांव री पाठशाळा रो गुरु पाटी-पहाड़ा पढातो रैयो। गीता-भागोत रा पाठ कदे भी बन्द कोनी होया, जग्यरा मडपां में रामायण बचती रैयो अर किसनजी रा पदां री राग सूं चौपाळां गूंजती रैयी। आपणो देहाती समाज बारली मदद रै भरोसै कदे ही कोनी रैयो, अर न इण रै समृद्ध ढांचै नैं कदे बारले हमलै सूं नुकसाण ही पूग्यो।

आज आपां नैं देस में पाणी री तगी री सिकायत करणी पड़ै, या कोई विसेस महत्व री बात कोनी। तगी रो खास कारण तो आपणो यो साचो प्रकलोन है के समाज अपणें आप मे रुचि लेणो बन्द कर दी अर उण रो सारो ध्यान बारणें लागग्यो।

जद गांव रैं पसवाड़ै कर बैण वाळी नदी आपरो पुराणो मारग बदळ लेवै तो पीणें रो पाणी अर खेता, तन्दुरस्ती अर ब्योपार सगळा खतम हो जावै। बाग-बगीचा उजड़ जावै, अर बीत्यै वैभव रा खडहर आपरी सिहतो नींवां रा कोजरां में बड़-पीपळां नै सरण देवै, अर उल्लुवां अर चमगादड़ां रा घर बणैं।

मिनख रैं दिमाग रो बहाव भी नदी रैं बहाव सूं कम महत्व री चीज कोनी। दिमाग री धार, बगाल रा ठण्डी छायां वाळा गावां मे सुख-सान्ति अर निरोगता बणाई राखणें री सदा कोसीस करी, पण आज बगाल रो दिमाग भरमायोड़ो है। यो ही कारण है के मरम्मत करणियां लोगां री कमी सूं बठै रा मन्दर-देवरा पड़-पड़र खंडहर बणरृया है, कादो निकाळणा वाळा लोगां रै अभाव में बठै रा ओड़ा गन्दा होरृया है, अर भावनावां रा महल हमी खुसी रा उच्छवां बिना सूना पड़ग्या है। आज

तो पीएं रै पाणी अर तन्दुरस्ती रो जिम्मो भी राज रो ही है। सिक्षा देवण वास्तै भी अफसरां रै बारणां पर ही दीन बणर मुकणो पडै। जिको रूंख कदे आपरा फूल खुद खिलातो हो, आज आपरा सूखा अग उठार आकास सूं मदद री अरज करै। जे उण री बिनती सुण भी ली जावै तो इसा दिखावटी फूल करसी भी कांई ?

अंग्रेजी विचारां मे जिण नै स्टेट-राज कैवै, बो ही आपणे देस में सरकार या गोरमिंट कयो जातो। या सरकार पुराणै भारत मे राजा री हुकूमत रै रूप में ही। पण आज रा अंग्रेजी राज मे अर आपणी पुराणी राजा री हुकूमत में फरक है। इगलैंड देस रा सारा कल्याण रा कामां रो जिम्मो राज नै सूंपै, जद के भारत मे थोडी हद ताई ही यो जिम्मो दियो जातो।

या बात कोनी के राजा उण लोगां नै म्हारो अर इनाम नहीं देतो, जिका जनता नै धार्मिक अर दुनियादारी री सिक्षा मुफत मे देता, पण बो इसा काम खासक रूप मे ही करतो। असली जिम्मेवारी तो घरवाळां रीज ही। जे राजा आपरी मदद नी देतो, या चाणचुकी कोई अराजकता फैल जाती, तो धार्मिक अर दुनियादारी री सिक्षा रै काम मे कोई बड़ी बाधा कोनी पड़ सकती ही। या बात भी कोनी के राजा कोई तळाव कोनी खुदवातो हो, पण समाज रै कांई दूजै भागवान आदमी सूं बेसी उण रो काम कोनी हो। जे एकलो राजा ही लापरवाह हो जातो तो देस रा जळासय सूख कोनी जाता।

इगलैंड मे लोग आप-आपरी सुख-सुविधावां नै भोगणै में अर आप रा मनचाया काम करणै में आजाद है। समाज री जिम्मेवारियां रो बोझ वां पर कोनी, क्यूं के बै सगळी राज री है। भारत में राजा नै लोगां सूं जादा आजादी ही, जद के लोग समाज री जिम्मेवारियां सूं बंध्योड़ा हा। राजा चावे लडाई में गयो हुवै या सिकार मे, चाये बो आपरा कर्तव्य करतो हुवै या खाली मोज-मजां में बखत बितातो हुवै, नैतिक द्रिस्टि सूं बो आपरा ही कामां रो जिम्मेवार हो। लोग समाज हित रा कामां में उण रै भरोसै कदे ही कोनी रैया। सामाजिक कर्तव्य तो उळटा खास तौर सूं समाज रा लोगां रै ही जिम्मै करया जाता।

इण रो नतीजो यो हुयो के धर्म' सबद सू आपां जिको मतलब लेवां, बो आपणा समूचै सामाजिक ढांचै रै मांय पैरग्यो। हर आदमी नै अपणै आप पर काबू करण रो अनुसासन सीखणो पडतो, अर हर आदमी नै ही सामाजिक जिम्मेवारियां री पवित्र संहिता नै मानणी पड़ती।

न्यारी-न्यारी सभ्यतावां री खास ताकत न्यारा-न्यारा रूपां मे समाई रैवै। देस रो दिल उणी ठोड रैवै जठै लोगां रो कल्याण केंद्रित हुवै। उण ठौड पर दियोड़ो भटको समूचै देस खातर घातक हुवै। इंगलैंड में राज रो पलटणो देस री बरबादी ही

हो सकै, या ही कारण है कै बठै राजनीति एक गम्भीर चीज है। आपणै देस में रातरो तद ही है जद समाज आपण हो जावै। यो ही कारण है के आपां राजनीतिक आजादी वास्ते जान लड़ा देणं री कदै ही परवाह कोनी करी, जद के सामाजिक प्रत में हर तरह सूं बचाई राखी है। इंगलैंड, फ्रांस नै आराम देणं सूं लगा र मोटा धार्मिक सिक्षा ताईं, हर काम वास्ते राज रै भरोसै है, जद कै आपणो देस मोटी कर्तव्य-भावना रै भरोसै रेवै। इण वास्तै इंगलैंड नै आपरै राज नै जीतो राखर जीणो पड़ै अर आपां आपणी सामाजिक चेतना नै बणाई राखर जीवां।

स्वाभाविक बात है के इंगलैंड आपरै राज नै जागरूक अर सक्रिय बणायं राखणं में हर दम लाग्यो रैवै। अर अंग्रेजी स्कूलां में पढ्योड़ा आपा लोग इण नतीजे पर पूग्या हा के राज नैं धोखा देर हर हालत में सावचेत राखणं री जिम्मो आम जनता रो है। पतो नहीं आपां कियां या बात भूलग्या के दूजै आदमी रै डील पर दूरबी बांधणं सूं आपा आपणी बीमारियां रो इलाज कोनी कर सकां।

अठै एक सवाल उठ सकै के जनता रै कामां रो जिम्मो जनता री ही कोई संस्था नै देणो ठीक है या 'सरकार' नांव री संस्था नैं। मैं जोर देर या बात कैवणी चावूं के या बहस कोई वाद-विवाद सभा रै ही काम री है, आपां रै वास्ते तो फिलहाल ठीक कोनी। आपां नै या बात समझ लेणी है के अंग्रेजी राज री नींव लोगां री मदमाजना पर खड़ी है, जिकी हालणी मुसकल है, अर इण 'राज' रो विकास एक कुदरती तरीकै सूं हुयो है। आपा उण स्थिति ताईं कोई दलीलां सूं ही पूग सकां, चायं वै किसणी ही चोखी सूं चोखी हो। आज तो या हर हालत में आपणी पूग सूं घणी दूर है।

आपणं देस री सरकार रो आपणं समाज सूं कोई भी संबंध कोनी, अरन आपणं समाजिक ढांचै मे उण री कोई जगह ही है, जिकै सूं आपां जिकी भी चीज सरकार सूं चावां उण नै आपणी एक-न-एक आजादी रै मोल पर खरीदणी पड़ै। समाज जिका जिम्मा सरकार नैं सूंप देवै वां में आपणं आप नै बेकार कर लेवै। या बात आपणं खातर स्वाभाविक कोनी। आपा अनेक देसां अर अनेक राजावां रै नीचै गुलाम रैया हां, पण आपणो समाज आपरी जिम्मेवारी हमेसा निभाई है, अर कदे भी कोई नै आपरै छोटै या बड़ै काम मे दखल देणं री इजाजत कोनी दी। इण वास्तै देस सूं राज-तेज विदा हुया पछै भी समाज रो गौरव बच्यो रैयो।

आज आपां चला-चलार एक-एक करकै आपणी वै सारी जिम्मेवारियां सरकार नै सूंपता जा रया हां, जिकी कदे समाज री ही : आपणं समाज में वखत वखत पर कई नई जातियां आई अर आपरै खातर खास नियम अर रीत-रिवाज बणाया, पण वै हिंदू समाज री ही अंग बणी रयी, अर हिन्दू कदै भी वानै कोई दोस कोनी दियो। पण अब हर चीज अंग्रेजां रै करड़ै कानून सूं बंधी पड़ी है, अर उण सूं थोड़ो भी टळणो

आपणे आपनै अहिन्दू बताणो है। आपणे समाज रो वो मांयलै सूं भी मांयलो भाग, जिण नै घणी सूं घणी सावधानी सूं बरसां ताईं रुखाळता आया हां, आखर बारलै हमलै साम्ह उघड़ग्यो है, जिणरो नतीजो है आज री घबराहट। डां ठौड़ है जठै सतरो है, पीणे रै पाणी री तंगी मे नहीं।

(२)

पुराणे बखत मे जिण आदमी राजदरबार मे घणो आदर पाता, अर राजा जिणा री राय लेतो, उण बात सूं ही राजी कोनी हो जाता। आपरै खुद रै समाज सूं मिलण आळी इज्जत री ही वै जादा कदर करता। आपरा बिना नावां रा गावां री झूंपड़ियां रै द्वारै विनीत भाव सूं वै उण पुरस्कार नै उडीकता, जिको बादसाह री दिल्ली रै भी बस री चीज कोनी हो। राजा रै दियोड़ै ऊंचै सूं ऊंचै खिताब सूं भी बेसी जनता री दियोड़ी साबासी गिणी जाती ही।

क्यूं के आपा नै उण तर रै आदर री अब और कामना कोनी, इण वास्तै आपां आपणा देसवासियां खातर मेहनत करणी बन्द कर दी। राज रो आसीरवाद अर दानदिखणा आपणै खातर घणा जरूरी होग्या है। पाणी री कमी दूर करणै वास्तै भी राज नै ही आपां नै जोम बधाणो पड़सी। आपा अंग्रेजां री गुलामी मे आपणी आत्मा अडाणै मेलदी है, जियां अंग्रेजी दूकानां मे आपां आपणी रुचि रो सोदो भी कर लियो है।

मनै जाण पड़ै के सायद मनै गळत समझ लियो जावै। म्हारो यो मतळब कोनी के आपणे मे सूं हरेक आप री जलमभोम रै ही चिपक्यो रैवै, अर ग्यान सम्मान अर दौलत कमावण खातर उण नै, गांव सूं बारै निकलण री जरूरत ही कोनी। आपां नै उण ताकतां रा गुण-मेहसान मानणा ही पड़सी जिकी बंगाल रा लोगां नै बौबर ब रै ले जावै, बांरै काम रै क्षेत्र रो विस्तार करकै अर बांरी छिप्योड़ी लियाकतां नै जगावै अर बारा दिमागां नै बडा बणावै। पण, वो बखत आग्यो है के आपा आपणा लोगां नै याद दिरा देवां के घर अर बारै रो कुदरती रिस्तो बिगड़णो नहीं चाहीजै। कमाई खातर बारै जरूर जाणो चाहीजै पण कमार पाछो भी आणो चाहीजै। बारी ताकतां चावे बारै लागी रैवै, पैण दिल घर कानी ही रैणो चाहीजै जिकी चीज बारै सीखां, उण नै घर मे काम मे लेणी जरूरी है। पण अभी तो आपां घर अर बारै री, रिस्तेदार अर अजनबी री, स्थिति नै बिलकुल उळटी कर राखी हां।

आपणे कामां रा असंगति री एक चोखो दिस्टांत आपणी प्रान्तीय परिसद है। या परिसद देस नै एक सन्देसो देवण खातर भेळी होवै, पण जिकी भाषा इण में बोली जावै बा विदेसी है। आपां अंग्रेजी जाणण आळा लोगां री ही चिन्ता करता

दीसी। जनता पर आपरी मीच आपां एक इसी बाड़ मांडी कर ली है जिकी नै आंघी कोनी आ सकै।

जे परिसद नै देस पर कोई जोरदार असर जमाणो है, तो इयां आगै बढ़णो चाहीजै, इण पर विचार करो। अंग्रेजी तरीकै सूं कोई बैठक करणै रै बजाय आपां नै भारतीय ढंग सूं एक मूंठो मेळो मांडणो चाहीजै। लोकनाटकां अर लोक गीतां रै इसी बडै जमाव खातर समूचै देस सूं लोग खींच्या आसी, अर बठै सबसूं चोखा गायकां, नाटक करणियां अर भासण देवणियां नै इनाम दिया जावै। देस री खेती री पैदावार रो दिखावो बठै करयो जावै, अर तन्दुरस्ती रा नियम 'म्याइड री लालटैणां जिसी चीजां री मदद सूं खोलर समझाया जावै। सबसूं बडो बात तो आ होसी के देस हित रा सवालां पर आगं जो कुछ फैंसलो चावां उण री चरचा सीधी-सादी भासा में करां जिण में अमीर अर गरीब सगळा बरोबर भाग ले सकसी।

आपणा घणाखरा लोग गावां म ही रैवै। जद गाव वारली दुनिया रै आखा बडै जंगम री धड़कण महसूस करणी चावै, तो उण रो सबसूं चोखो तरीको मेळो मांडणो रो ही है।

इण मेळां सूं ही आपां बारली दुनिया नै आपणी घरां में देख सकस्यां। इसा जलसां रै बीच गांव नै आपरो संकीर्ण रूढिवाद भुला देणो चाहीजै, क्यूं के अै मौका तो देणै रा होसी। ज्यूं बरखा रुत में आकास रै बळ सूं तळाव भर जावै जियां ही मेळो एक इसो बगत बणासी जद गाव रै दिल में बडी दुनियां रा विचार भर जासी।

अै मेळा आपणै देस खातर सबसूं ज्यादा स्वाभाविक है। जद आपणा लोगां नै औपचारिक बैठक खातर बुलाया जावै तो बै सक सन्देह रै बोझ सूं दब जावै, अर जल्दी ही आपरै मन री बात कैवै कोनी। पण जिका मेळै मे भेळा होवै बांरा दिल पैलां सूं ही खुल्या रैवै। हळ अर खुरपा मेलनै छोडर बै छुट्टी मनावण खातर ही आवै। बो बखत है जद लोगां रै कनै बैठ्यो जावै अर बो ही मौको है जद देस री आतमा कानी पूग्यो जावै।

बंगाल भर मे साल रै न्यारै-न्यारै बखत पर मेळा भरै। आपां नै इसा मेळां री एक टीप उतारणी चाहीजै अर इण मुजब द भाजै मांय सूं आपणा देसवासियां नै पिछाणबा जाणो चाहीजै।

जे पढ्या-लिख्या लोग आप-आप रै कानी रा मेळां नै नयो जीवण अर आदर्स देवण रो जिम्मो ले लेवै, जे इण मेळां रै मार्फत बै हिन्दू मुसलमानां नै नेड़ा लावै, अर ओछळी राजनीति नै छोडर लोगां री असली जरूरतां—स्कूलां, सड़कां पाणी रा

तळावां, गोबर अर दूजी इसी चीजां रो निरचै करै, तो जद ही देस में सचमुच नई हलचल भरै।

काम करणवाळा लोगां रै उण दळ खातर खरचो कोई चिन्ता री बात कोनी रहसी, जिका बंगाल रा देहातां में घूम-घूमर गीत, पुराणां री कथावां रा पाठ, अर लालटैणां सूं तसवीरां दिखाणै रो बंदोबस्त करै। जमींदारां नै थोड़ो हिस्सो देर वै इण काम नै पीसै-टकै रै ढंग सूं भी फायदैमंद बणा सकै। सेस मुनाफै नै देस सेवा रै काम में लगाणै सूं काम करण वाळा वां लोगां अर जनता रै बीच गाढी दोस्ती बण सकसी। इण तरीकै सूं जिकी सेवा करी जा सकै उण री कोई मत कोनी। क्यूं के या याद राखणै री बात है के आपणा लोग आदू बखत सूं ही मेळा-खेळां रै मारफत साहित्य रो मजो लेता, अर धरम नैं अपणैं आपमें लीन करता आया है।

थोड़ा दिनां सूं आपणा जमींदार एक न एक कारण सूं सहरां कानी चालण लाग्या है। वारा छोरा-छोरियां रा ब्यावां में हुवण वाळा जलसां में जादातर गाणा-बजाणा, नाटक अर दूजा आमोद-प्रमोद सहर रा धनी दोस्तां खातर ही हुवै, जद के *बिचारा करसां रै पांती तो बफाउर लगान देणो ही आवै। वे गरीब लोग मोठ गे* मिठाया रो खरच तो उठावै, पण सायद एक कोवो भी वां नै चाखण नैं नीं मिलै। इण भांत बंगाल रा गांवां रो खुसी सूखती जारी है अर वा साहित्यिक संस्कृति जिकी *कदे इसा सगळा मौकां री एक खास चीज हुया करती अर मरद, लुगायां अर टाबरां रा* मन बरोबर बहलाया करती, आज लोगां सूं घणी अळगी चली गई है। जे आपणा मोट्योडा मेळां रो क्रम गांवां रा फळसां पर साहित्य अर खुसी री धार पाछी ले आणै में *सफळ हो जावै, तो इण हरियाळै देस रो दिल धीरे-धीरे उजाड़ होणै सूं बच जावै।*

जिका जळासय आपां नैं कदे पीणै रो पाणी अर तन्दुरुस्ती देता हा, वै आज मांड दिया गया, अर-वां में पाणी रो कमी ही नीं है, वां सूं रोग अर मोत भी फैले है। इणी तरै देस में आज भी अणगिणत घणखरा मेळा लोकप्रिय सिक्षारा माध्यम *होणा तो बंद हो गया, अर भ्रष्टाचार रै महसूल रा ठळाव बण्या हुआ है।* इण बेईमानी अर गिरावट नैं नहीं रोक सकणै रै कारण आपां अपणैं आप नैं पाप अर सरम सूं ढक राखा हां।

(३)

आदमी-आदमी रै बीच निजी रिस्तो बणाणै री भारत री निरंतर चेस्टा रही है। दूर रा रिस्तैदारां सूं भी सम्बन्ध बणायो राखणो पड़ै, टाबर बड़ा हुयां पछै भी *मायप रा बंध ढीला कोनी हुवै, अर आपणा भाईचारै रा रिस्तां में, पाड़ोसी अर गांव* रा दूजा घणा लोग भी आ जावै, चायै वै कोई जात या स्थिति रा हो। गुरु अर सिरोज

रा, पावणां अर साधुवां रा, जमींदार अर करसां रा भी रिस्ता है। जिका कोई सास्त्रां रा बतायोड़ा रिस्ता कोनी, दिलां रा रिस्ता है। कई बाप रै समान है तो कई बेटां रै समान, कई भाया रै समान है तो कई दोस्तां रै। ज्यूं ही म्हारो कोई आदमी रै नेड़ा आयो, म्हारो उण सूं काईं न कोई रिस्तो बणालेवां। इण तरै म्हारा विनय नै मसीन री ज्यूं समझ र या आपणो मतळब सिद्ध करणै रै औजार रै रूप में देखणै री आदत कोनी घाली। इण रा भला-बुरा दोनूं पख हो सकै। कुछ भी हो, आपणै देस रो यो ही तरीको रैयो है, इतणों ही नहीं यो समूचै पूरब रो ही तरीको रैयो है।

यो है आपणो सुभाव। दिलरी रिस्तेदारी सूं पवित्र करयां पछै ही म्हारा काम री रिस्तेदारी मानां। इण कारण ही म्हां नै बधीक जिम्मेवारियां भी माननी चाहिजै। जरूरत रा रिस्तां री एक सीमा हुवै, वै दफतर में ही बणै अर बठै ही खतम हो जावै। जै मालक अर नोकर मे और कोई रिस्तो नहीं हुवै, तो बांरो सबध काम निकालणै अर तनखा देणै रै बाद खतम हो जावै। पण ज्यूं ही म्हां मानवी रिस्तै नै मान लेवां, आपणी लाचारियां निजी सुख-दुख ताईं बढ जावै, जिया नोकर रै लड़कै या लड़की रो ब्याव अर गमी रा मौका भी।

एक और आधुनिक द्रिष्टांत लेवो। राजासाही अर ढाका री प्रांतीय परिषद में मैं मौजूद हो। या कहणै री तो जरूरत हो कोनी के म्हां इण परिसदां नै एक गभीर चीज समझा, पण जिकी बात सूं मनै अचम्भो हुयो बा या ही के बठै आवभगत रो दिखावो काम रै जोस सूं भी ज्यादा हो। पूरी जनेत रो सो काम हो। भोजन, मनोरंजन, अर सुख-सुविधा री मांग इतणी हद ज्यादा ही के बांसूं परिसद नै बुलावणियां पर बुरी तरियां खरच पड़यो हुसी।

जे वै लोग या बात कह देता तो कोई हरज कोनी हो के, थे लोग अठै म्हारै पर कोई महरबानी करणनै कोनी आया देस री सेवा करण नै आया हो। म्है थांनै इतणो चोखो भोजन, सरबत ठंडायां, रैणै री जगा अर सवारी क्यूं देवां?" पण आपणै सुभाव में ही या बात कोनी के म्हां कठोर जिम्मेवारी रै नांव पर इसी कोई बात कैवां। म्हां जिम्मेवारियां में भी निजी रिस्ता लगा देणा चावां। अर इण तरै परिसद में हुयोड़ै काम रो तो असर कम हुयो, पण बारी कियोड़ी महमानदारी रो असर बेसी हुयो। पच्छिम रै ढंग रै आचरण वाळी अै परिसदां भारत रै दिल नै काटर कोनी फैंक सकी। याही बात आपणी राष्ट्रीय कांग्रेस रै साथै है। कांग्रेस मे भी बो ही पख महमानदारी रो जिको असली राष्ट्रीय है, हमेसा तेजी पर रैवे, जद के उण री असली काम तीन दिन रै सालाना अधिवेसन रै साथै ही खतम हो जावै अर बाकी साल भर उण में जिंदगी रो लेस ही बाकी रैवै।

या बात साफ है के भारत रा लोग गमीर काम-काज रै बीच भी मानखी स्नेह बिना कोनी रह सकै। इण बात पूं देस भर मे भाई-चप कर मजनवी, बड़ै घर छाटं, गिरस्थ घर पावणों रै बीच रै नर्जोकी सम्बन्ध नै समझ्यो जा सकै। यो ही कारण है के कोई भी बारलै आदमी नै कदे भी गावरी स्कूल, धरमसाळा, मदर घर तळाव री दे.भाळ या निसहाय प्राणी घर बीमारा री सार-सभाळ री चिंता कोनी रैयी।

कोई भी देस खातर या स्वाभाविक बात है के उण री सारी दिलचस्पी इसी जगावा पर लागी रैवै जठै सूं उण नै जादा सूं जादा फायदा मिलै। आपा इण बात री तो निंदा करां के देसरी दौलत अनेक रस्ता सू बारै जारी है, पण जे देसरी आतमा भी बारै जारी हुवै अर, आपणै देस सू दूर फायदैमद सम्बन्ध विदेसी हाकमां रा हाला में जाता हुवै, तो या बात आपणी दौलत रै बारै जाणै सू काई कम अफसोस री हुसी ?

(४)

जोस रै पहलै उफाण मे तो घणा साहसी लोग ढेरों फूल खिलावै, पण अ खर में घणाखरा ही फळै कोनी। इण रो खास कारण समूह री भावना री कमी ही है। जिम्मेवारी री अेक ढोली-ढाली भावना आपणा कामां सूं खिसकर खो जावै।

आपणो समाज इण तरीकै सूं और कोनी आगे बण्यो रह सकै क्यू के जिको बारलो ताकतां इण पर हावी होणी चावै, बै सगठित अर ठाडी है। स्कूलां सू लगार हाट बाजार ताई री आपणी हर चीज पर बै कब्जो कर लियो है अर ठोस अर भावनात्मक दोनू रूपां में प्रगट हो र वै एक जूट हुई राज करै है। जे समाज नै अपणै आप री रक्षा करणी है, तो इण नै सगठित ताकत रै पाण खड्यो हुया सरसी। इण रो सबसू चोखो तरीको एक मजबूत अर आपणो आदमी नै मुखियो बणाणै अर उण नै प्रतिनिधि मान र उण रै चारूं मेर एकठा होणों रो है। उण रै हुकम मे चालणै सूं स्वाभिमान री कोई हाण कोनी क्यूं के बो खुद आजादी री हीं मूरत होसी।

समाज रो इसो मुखियो कदे चोखो अर कदे न्याऊ भी हो सकै, पण जे समाज सदा जागरुक अर सावचेत रैवै ता कोई भी मुखिया उण रो कोई पुख्ता नुकसाण कोनी कर सकै। सही बात तो या है के समाज नै सावचेत राखण रो एक व्यावहारिक तरीको इसै मुखियै नै बणाणो ही है। जे समाज कोई खास मिनख मे आपरी एकता नै मूरत वंत देखै तो बो समाज कदेही कोनी हार सकै।

समाज रै हर आदमी नै आपरी मरजी सूं देसरै वास्तै नित अभ्यास रै रूप मे कुछ बचार न्यारो मेल देणो चाहिजै। इण रै सिवाय इसै राष्ट्रीय समाज सारू सारी

खुद आपरी ताकत रो बेविसवास मतना करो, या बात निस्चै जाणा लेवो के वा महान घड़ी आगी है। या भी पक्की मत समझो के भारत मे मेळ करावणवाळी ताकत सदा काम करयो है। बुरां सूं बुरा दिनां में भी भारत आपरै बचाव रो मारग ढूंढ्यो है अर यो ही कारण है के आज ताईं भारत जिंदो है। इसैं भारत मे म्हारो विस्वास है। आज इण बखत भी यो भारत आपरी पुराणी परपरावां अर नयं जमानैं रै बीच धीरै-धीरै निस्चित रूप सूं एक अनोखी अनुकूलता बणा रयो है। आपणैं मे सू हरेक नैं सावचेती सूं इण में हाथ बटाणो चाहीजै, अर बात-बात मे एक दूजै सू असहयोग करणैं रो विरोधी भावनावां, या जाबक मूरखता, नहीं आवण देणी चाहीजै।

बारली दुनिया सू हिन्दू समाज रो विरोध कोई नई चीज कोनी ज्यू ही आर्य लोग भारत मे बडया, वै अठै रा ठेठ आदिवासियां सूं बुरी तरियां झगड़ै मे फसग्या। इण झगड़ै मे आर्य जीत तो गया, पण आदिवासी लोगां नैं आस्ट्रेलिया या अमरीका री तरियां निकाळ र देस सूं बारै कोनी कर सक्या। आर्यां री बस्तियां सूं भी वां नैं निकाळया कोनी जा सक्या। रीति-रिवाज अर सस्क्रति मे बडा फर्क रहणैं पर भी समाज री धर्म सत्ता मे वां नैं एक निस्चित जगा दी गई। वां री बजै सूं आर्यां रो समाज अनेक भांत सूं समृद्ध हुयो।

बाद मे थोड़ूं इण समाज नैं रूढिवाद नैं झड़क देणैं री जरूरत हुई। बौद्ध जमानै मे भारत घणा विदेसी लोगां र नजीकी सम्पर्क में आयो, जिका इण नयै धर्म सू खिच र अठै आया। मेळ री ताकतां झगड़ै री ताकतां सूं ज्यादा मजबूत हुया करै क्यूंके मेळ रै बखत सगळा एकजूट रैवै। या ही बात बौद्ध जमाने में भी हुई। आखै एसिया में धार्मिक भावना री जिकी बाढ उण बखत आई, उण सूं अनेक देसां रा रीत-रिवाज अर नेम-आचार भारत में बहर आया, अर उणा नैं कोई भी रोक नीं सक्यो।

इण घोर रोळ-गदोळ रै बीच भी समन्वय करणरी भारत री प्रतिभा इण रो साथ कोनी छोड्यो। एक बार थोड़ूं भारत आपरी बर अर पावणां सूं मिल्योड़ी चीजां नैं भेळी करी, अर समाज नैं फेर सूं बणाणो सरू कियो। इण सूं वो पैला सूं भी ज्यादा समृद्ध हुयो।

इण लांबी चौडी अनेकता पर हरजगां भारत आपरी एकता री मोहर-छाप लगादी। आज घणा लोग पूछै: "अपणैं आप रो विरोध करण वाळै इण सम्प्रदायवादी हिन्दु धर्म अर समाज में वा एकता कठैसी है?" यो एक करड़ो सवाल है। यो उतणो ही कठण काम है जितणो कोई बडै घेरै रो बीच ढूंढणो, पण बीच तो कठै न कठै हुवै ही है। एक छोटै सै गोळै री गोळाई रो आभास करणो तो आसान है, पण जिका गोळ घरतो नैं भी टुकड़ां में देखै, उण नैं चपटी ही समझै, इण भांत ही क्यू के हिंदु समाज अपणैं आप में कई विरोधी अनेकतावां भेळी करली है, इण वास्तै मेळरा बब

क्याय जिसा खुसी रा मौका पर कुछ भाग रै रूप में भी धन भेळो करणो चाहीजै। जे सही ढंग सूं इसी लागी लगाई जावै तो पीसैरी कदे ही तगी कोनी रैवै।

भारत में मरजो सूं दियोड़ा दानां सूं ही बड़ा-बड़ा मदर अर मठ खड़्या हुया है। तो फेर कांई समाज नैं भी उणी ढंग सूं बणायो राखणो समव कोनी, अर खास तौर सूं उण बखत जद के आपांरा चोखा कामां सूं इण नैं मदुआनमंद लोगां सूं और दान भी मिल सकसी ?

अब ताईं मैं बंगाल री ही बात करो। जे आपां बंगाल में समाज रो एक मुखियो चुणणैं में सफळ हुया अर आपणी सामाजिक आजादी नैं ऊजळी अर पुख्ता बणा पाया, तो सेम भारत भी आपणी देखा-देखी करसी। पर जे भारत रो हर प्रदेस अपणैं आप में एक स्पष्ट एकता महसूस करै, तो हरेक रै वास्तै दूजा सूं सहयोग करणो आसान होसी एकता रो नियम एक बार सिद्ध हुयां पछै विस्तार करतो जावै, पण एकला न्यारी-न्यारी इकाइयां नैं एक पर एक मेल र ढेर करणैं सूं कोनी हुवै।

(५)

इण विषय रा दो आखर इण जरूरत नैं साफ कर देसी के आपां नैं आपणी सगळी स्वाभाविक ताकतां नैं एक ठौड़ भेळी कर र महसूस करणी चाहीजै, अर इसो कोई तरीको निकाळणो चाहीजै जिकै सूं वां नैं उणी ठौड़ सूं बरतो जा सकै। सुणोतै रै ख्यान सूं या और कोई कारण सूं सरकार बंग भग करणो चावै, पण आपां डरां हां के इण सूं प्रदेस कमजोर बणसी। इण रै विरोध में आपां घणा ही रो-कूक किया पण जे आपां असफळ हो जावां, तो कांई हर चीज खतम हो जासी ? बंग-भंग सूं उठ सकणै वाळी बुराइयां रो कांई-कांई इलाज कोनी बचसी ?

"रोग रा कीड़ा डील में नहीं बड़ पावै तो घणी चोखी बात है, पण जे बड़ जावै तो रोग नैं रोकणैं अर निरोगता नैं पाछो लावण खातर डील में कोई दूजो ताकत कोनी काईं ? जे आपां आपणैं समाज में एक मजबूत अर स्पस्ट तरीकै सूं इसी ताकत बणा लेवां, तो कोई भी बारली ताकत बंगाल नैं कमजोर कोनी कर सकै। उण ताकत रो काम हर घाव नैं पूरणो, एकता रा बंध कसणा, अर अचेतन नैं चेतन करणो होसी।

आज तो एक विदेसी राजा चोखा कामां रै इनाम रूप में आपां नैं उपाधियां बांटै, पण असली इज्जत तो तद मिलसी जद आपणैं देस रा लोग आपां नैं आसीस देवै। जे आपां समाज नैं इनाम बगसण री ताकत नहीं देवांला तो आपां पणैं आपनै एक साथ संतोस सूं वंचित राखस्यां। आपणैं देस में जरासी तू-तूं, मैं-मैं सूं ही हिन्दू-मुसळमानां में झगड़ो हो जावै। जे समाज में कोई नैं इसा झगड़ा सलटावणै, विरोधी हितां रो मेळ बिठाणैं अर सान्ति अर सद्भावना बणाणैं रो अधिकार नहीं दियो जासी तो समाज इसा बखेड़ां सूं घणो घणो कमजोर हुयो जासी।

खुद आपरी ताकत रो वेविसवास मतना करो, या बात निस्चै जाण लेवो के वा महान घड़ी आगी है। या भी पक्की मत समझो के भारत मे मेळ कराणेवाळी ताकत सदा काम कर्यो है। बुरां सूं बुरा दिनां में भी भारत आपरै बचाव रो मारग ढूंढ्यो है अर यो ही कारण है के आज ताईं भारत जिंदो है। इसं भारत में म्हांरो विसवास है। आज इण बखत भी यो भारत आपरी पुराणी परंपरावां अर नयै जमानै रै बीच धीरै-धीरै निस्चित रूप सूं एक अनोखी अनुकूलता बणा रयो है। आपणैं में सू हरेक नैं सावचेती सूं इण में हाथ बटाणो चाहीजै, अर बात-बात मे एक दूजै सूं असहयोग करणैं री विद्रोही भावनावां, या जाबक मूरखता, नहीं आवण देणी चाहीजै।

बारली दुनिया सूं हिन्दू समाज रो विरोध कोई नई चीज कोनी ज्यूं ही आर्य लोग भारत मे बड्या, वैं अठै रा ठेठ आदिवासियां सूं बुरी तरियां झगड़ै मे फसग्या। इण झगड़ै मे आर्य जीत तो गया, पण आदिवासी लोगां नैं आस्ट्रेलिया या अमरीका री तरियां निकाळ र देस सूं बारै कोनी कर सक्या। आर्यां री बस्तियां सूं भी वां नैं निकाळ्या कोनी जा सक्या। रीति-रिवाज अर संस्कृति मे बड़ा फर्क रहणैं पर भी समाज री धर्म सत्ता मे वांनैं एक निस्चित जगा दी गई। वारी वजै सूं आर्यां रो समाज अनेक भांत सूं समृद्ध हुयो।

बाद में आजूं इण समाज नैं रूढिवाद नैं झड़क देणैं री जरूरत हुई। बौद्ध जमानै में भारत घणा विदेसी लोगां र नजीकी सम्पर्क में आयो, जिका इण नयै धर्म सूं खिच र अठै आया। मेळ री ताकतां झगड़ै री ताकतां सूं ज्यादा मजबूत हुया वरै बयूं के मेळ रैं बखत सगळा एकजूट रैवें। या ही बात बौद्ध जमाने में भी हुई। अर्सं एसिया मे धार्मिक भावना री जिकी बाढ उण बखत आई, उण सूं अनेक देसां रा रीत-रिवाज अर नेम-आचार भारत में बहर आया, अर उणां नैं कोई भी रोक नीं सक्यो।

इण घोर रोळ-गदोळ रैं बीच भी समन्वय करणारी भारत री प्रतिभा इण रो साथ कोनी छोड्यो। एक वार आजूं भारत आपरी वर अर पावणां सूं मिल्योड़ी चीजा नैं भेळी करी, अर समाज नैं फेर सूं बणाणो सरू कियो। इण सूं बो पैला सूं भी ज्यादा समृद्ध हुयो।

इण लांबी चौड़ी अनेकता पर हरजगा भारत आपरी एकता री मोहर-छाप लगादी। आज घणा लोग पूछैः "आपणैं आप री विरोध करण वाळै इण सम्प्रदायवादी हिन्दु धर्म अर समाज में वा एकता कठैसी है?' यो एक करड़ो सवाल है। यो उतणो ही कठण काम है जितणो कोई बडे घेरै रो बीच ढूंढणो, पण बीच तो कठै न कठै हुवे ही है। एक छोटे सं गोळै री गोळाई रो आभास करणो तो आसान है, पण जिका गोळ धरती नैं भी टुकड़ां में देखै, उण नैं चपटी ही समझै, इण भांत ही बयूं के हिंदु समाज आपणैं आप में कई विरोधी अनेकतावां भेळी करली है, इण वास्तै मेळरा बड

इण रै ढांचे में घणा पूंछा दिराग्या । इण मेळ नैं आगळी सूं बणाणो ता मुसकल
पण माफ दीसण वाळी भिन्नतावां रै बीच भी इण री निश्चित मौजूदगी नैं आपां महसू
कर सकां ।

बाद में भारत नैं मुसळमानां रा हमला रो सामनो करणो पड़्यो । इण बारल
लड़ाकू तरह सूं समझौतो करण रो काम भी करीब तुरंत ही चालू होग्यो । हिन्दू अ
मुसळमानां रै बीच एक इसी भाम जगां बणाई गई जठै दोनूं जातां रै बीच री सीं
दिनूंदिन धुंधळी होती गई । नानक, कबीर रा, अर वैस्णव सम्प्रदाय रै निचलै दरजै र
मानणवाळा इण बात रा दिस्टांत है ।

आपणा पढ़्या लिख्या लोग धार्मिक आचारां अर रीत-रिवाजां रै हजार
बार टूट-टूट र बणणं री घटणावां रो कोई बेरो कोनी राखै । जे वै इण बात रो
धिगं राखता, तो वांनैं ठा पड़तो के आज भी समन्वय अर मेळ रो यो गुप्त पण सक्रिय
काम चालू है ।

आखर में, स ल रा बरसां में, ताकतवर एक ओर धर्म आपरा न्यारा बिसवास,
रीत-रिवाज, परंपरा अर सिक्षा रा तरीका लेर भारत में आयो । इण तरै दुनियां री चारूं
बडी जातां, हिन्दू, बौद्ध, मुसळमान अर ईसाई, चारूं बडा धरमां री छत्रछाया में अठै
भेळी है । यूं जाण पड़ै विधाता भारत भोम पर एक बिसाळ सामाजिक समन्वय री
घणी बडी प्रयोगसाळा खोलदी है ।

अठै मनैं या बात मानणी पड़सी के बौद्ध जमानै में जिकी घबराहट अर उथळ-
पुथळ हुई, बा बाद में आवण-वाळै हिन्दू समाज में एक डर-सो छोडगी । कोई भी नयै
काम अर फेर-बदळ नैं लोग गहरै सक-सदेह री नजर सूं देखण लाग्या । इसै लगातार
आतंक री हालत में समाज कोई तरक्की कोनी कर सकै, अर बारै सूं आवणवाळी
ललकार नैं भी कोनी रोक सकै जिकी जात आपरी रक्षा करणै में ही सारी ताकत
खतम कर देवै बा धामानी सूं गतिसील कोनी हो सकै । स्थायी गुणां रै साथै-साथै कई
सक्रिय अर वेगवान गुण भी बणाया राखणा चाहीजै, नहीं तो समाज आपरै ही रूढिवाद
में फंस जावै अर जीवतो ही मर जावै ।

बौद्धां रै बाद रा हिंदू समाज बारला प्रभावां सूं आपरो बचाव करण तांई, अर
जो कुछ आपरो निजी रूप बच्यो, उण नैं बणायो राखण तांई, निरथंक नियमां री एक
वाड़ सी बणाली, जिणरो नतीजो यो हुयो के भारत रै गौरव री जगां हाथां सूं
निकळगी ।

कदे भारत री जगां दुनियां रै सिरै ही । धर्म, दर्शण अर विग्यान रा क्षेत्रां में उण रै आध्यात्मिक साहस रो कोई प्रन ही कोनी हो, पर उणरी ताकता नया राजा पर कब्जो करना दूर-दूर ताईं पसरगा । गुरु रो बो पद जिको भारत इण तरै सूं लियो, आज कोनी रयो। आज बो उण नैं सिष भावसूं रैणा पड़सी । इणरो कारण यो है के उणरी आतमा में डर रो प्रवेस होग्यो ।

घातक रै कारण आपां ग्यान अर जळ रा बड़ा समंदरां री यात्रावां सूं डरै लागा । आखै विस्व रा होतां थकां भी आपां आपणैं आपनै एक बस्ती में घेर दिया । समाज री डरपोक अर जनाना ताकतां, जिकी खाली बैठी करणो अर उण पर मग्न होणो ही जाणै, आपणी मरदाना हिम्मत नैं बेकार करदी । ग्यान रै क्षेत्र में भी आपा परंपरावा सूं बन्धोड़ा अर नपुंसक बणायोड़ा हां । बौद्धिक लेण देण रो जिको धंधो भारत सरू कर्यो हो, जिको दिनूंदिन बढ़तो संसार नैं समिद्ध कर्यो, बो आज जनानी ड्योढ्यां री जतनांरी मजूसा में ढक्यो पड्यो है । बठै बो ठायों पड्यो तो रह सकै पण बढ़ नीं सकै अर जिको चीज एक बार खो जावै, बा सावांणी ही खो जावै ।

आपां गरू रो आसण खो दियो है । राजासाही आपणैं केसरी सबसूं बड़ी दौलत कदे ही कोनी रैयो । लोगां रा दिलां में या कदे ही कोनी रमी, अर इण कारण ही इण री गैर मौजूदगी कोई घातक बात कोनी । देस री असली आत्मा ब्राह्मणत्व, ग्यान, धर्म अर तपस्या रै ऊंचे सिंघासण पर बिराजमान ही । जद सूं तपस्या री जगां कर्मकांड लेली, अर जद सूं बामण, जिकै रो काम आपरी साधना सूं समाज नैं भू चो उठाणै रो हो, आपरो निस्चित कर्म छोड र समाज रै फळनै पर चौकीदार री जगां आ बैठ्यो आपा दुनियां नैं कुछ देवणरो काम रोक दियो, अर जो कुछ आपणो हो, उण नैं घणो बिक्रित अर बेकार बणा दियो ।

आपां नैं या बात जाण लेणी चाहीजै के हर देस मानवता रो एक अग है, अर हर देस नैं इण सवाल रो जवाब देणो चाहीजै । मिनख नैं देवण वास्तै थांरै कनै काईं है, अर उणरी खुसी वास्तै काईं-काईं नग तरीका थे ढूंढ्या है । ज्यूं ही कोई देस इसी खोज करणवाळी सजीव ताकत नैं खो देवै, तो बो विस्वमानव रै सरीर सूं लटकतै सकबो मार्योड़ै अगरी तरियां जड़ भार रूप बण जावै । कोरो जिंदो रैणो ही कोई बड़ी ताकत कोनी ।

भारत कदे भी न तो नये राज री कामना करी अर न ब्योपार री सुरक्षा पर झगड़ो कर्यो । चीन, जापान अर तिब्बत, जिका आज यूरोप रो प्रगति रै मार्ग आपरा बारणा-मोरी जड़ण वास्तै बेकळ है, भारत नैं आपरो आध्यात्मिक गुरु बणा र आपरा घरां में उणरी घणी आवभगत करी ।

भारत कदे ई आपरी सेना लूट-मार वास्तै वारै कोनी भेजी, अर सांन्ति अर सद्भावना रा संदेस ले जावण खातर ही लोगां नैं भेज्या। जिकी सोभा उण नैं मिली वा उण री तपस्या रो ही फळ ही जिकी राजासाही री सान सौकत सूं ज्यादा बडी चीज है।

उण सोभा रै हुट्यां पछै आपां आपणो नाचीज सामान लेर एक कूणै में कुड़र बैठग्या। उण वखत अंग्रेजां नैं आणो पड़ग्यो। बांरै हमलै सूं आपां जिकी बाड़ घणी सावधांनी सूं आपणी कुनामदी अर भगोड़ी जात रै चारूं मेर खड़ी कर राखी ही, कई ठौड़ां सूं टूटगी, अर बा बारली दुनिया, जिण सूं आपां डरता हा, अर इण कारण दूर राख मेली ही, फटकारै सूं मांय आ पड़ी। इण नैं पाछी कुण धकेलती? ज्यूं-ज्यूं आपणी भींतां पड़ी, आपां नैं दो बातां री ठा हुई : एक तो आपां महसूस कर्‌यो के कदे आपां रै कब्जे में भी कितणी अनोखी ताकतां ही, अर दूजी आ के उणां नैं खो र आपां कितणा घापर कमजोर होग्या।

आज तो आपां आ भी समझां के अपणां आपनै कठैई दूर छिपायो राखणो अपणं आपनै बचायो राखणै रो कोई तरीको कोनी। अपणं आप रै बचाव रो सबसूं खरो तरीको आपरी मांयली ताकतां नैं वकसाणं रो ही है। अब तांई आपां आपणी निश्चियता नैं नहीं छोडी, अंग्रेज आपणी आत्मावां नैं गुलामी में जकड़ जकड़ी राखसी। कूणं में बैठर आपणा नुकसाणां नैं कोसणं रो कोई नतीजो कोनी निकळै। अंग्रेजां री नकल करणी अर नकली भेस धारण करनैं अपणै आपनैं बचाणं री कोसीस करणी कोरी अपणं आपनैं ठगणो है। न तो आपां कदे असली अंग्रेज बण सकां, अर न नकली अंग्रेज बणर वां नैं ठग ही सकां।

आपणी बुद्धि, भावनावां अर इच्छावां री इण तरै री गिरावट नैं रोकणं रो एक मात्र तरीको, सावचेती, सक्रियता अर आपरी पूरी ताकतसूं आपणं असली रूप में आणो ही है।

जिकी ताकतां आपरी मांय ठाडै में बंद पड़ी है, विदेसी हमलै रै जोर सूं खुल पड़ी, क्यूंके आज री दुनिया नैं उण बेसकीमती उपहारां री बुरी तरियां जरूरत है जिकां नैं भारत रा ऊंचा रिसी लोग आपरै आत्मानुशासन सूं कमाया। विधाता वां उपहारां नैं कालूं कोनी जाबण देसी। यो ही कारण है के मर्म घड़ण पर वो आपां में इण दुख री भावना सूं जगा दिया है।

(•)

भारत री सबसूं दूसरी धर्म धारां में एक नै, अर अनेकता में एकता नै ढूंढणो रो है। भारत न तो भिन्नता नैं झगड़ै री चीज मानै अर न हर अजनबी में दुस्मण री हैज करै। इण वास्तै वो न तो किसी री तिरस्कार करै, न किसी रो नास करै, अर बजाय वारै एक विसाल सामाजिक व्यवस्था में बणी ढूंढणं री चेस्टा करै। वो हर

मारग नैं मानै ग्रर जठै भी महानता दीखै उण न पिछाणैं ।

क्यूं के भारत कनै मेळ कराणैं री या प्रतिभा है, इण वास्तै हवाई दुसमणा सूं ग्रापां नैं डरणैं री कोई जरूरत कोनी । हर नयै भगड़ै मे ग्राखरी नतीजो ग्रापणै विस्तार रो ही हासी । भारत भोम पर ग्रापसरी मे भगड़ता हिंदू ग्रर बौद्ध मुसळमान ग्रर इसाई कदेही खपै कोनी । ग्रठै बांनैं एकरूपता मिलसी । बा एकरूपता हिंदुवां रै मिवाय री कोनी हुवै, उळटी खास तरै री हिन्दु ढगरी ही हुवै । ग्रर दूजा ग्रनेक ग्रग सो चाहे कितणा ही सार्वभोमी हो जावो, दिल तो भारत रो ही दिल रैसी ।

ग्रापां नैं या बात याद राखणी चाहीजै के विधाता रो यो विधान ग्रर ग्रापणो उद्देश्य पक्को रैसी, ग्रापणी भैंप जाती रैसी ग्रर ग्रापां भारत री साची ग्रर ग्रमर तारत नैं ढूंढ लेस्यां । ग्रापां नैं या भी जरूर याद राखणी चाहीजै के ग्रापां नैं सदा खातर यूरोप रा चेला बणर विद्या कोनी सीखणी पड़सी । ग्यान री देवी, सुरसती, हर कळा ग्रर विग्यान नैं ग्रापणैं खातर सहस्र कमळ री तरियां विगसासी —१६०४

दौलत मोटा मिनखां रो भार है,
कल्याण जीवण री पूरणता ।
—रवीन्द्रनाथ टैगोर

सिक्षारी समस्या

इण देस मे जिण नै आपां आज पाठसाळा कैवां, बा असल में एक कारखानो है, अर गुरुलोग उण कारखानै रा अ ग । दिनूगै साढ़ो दस बजतां ही घंटी बजा र यो कारखानो खोल्यो जावै । ज्यूं गुरु लोग बोलणो सरू करै कारखानै री मसीनां भी काम सरू कर देवै । सामरै चार बज्यां जद गुरु लोग बोलणो बंद करै, कारखाना भी बंद हो जावै, अर छोरा मसीनां री वण्योड़ी विद्या रा कुछेक पाना लेर घर चल्या जावै । बाद मे इण विद्या री जाच परीक्षावां में करी जावै अर उण पर 'लेबल' छाप लगादी जावै ।

कारखानै रो एक फायदो तो यो है के बठै ठीक आर्डर मुजब माल बण सकै । एक बिसेस बात या भी है के माल पर छाप लगाणी सोरी है, क्यूं क न्यारी-न्यारी मसीनां सूं बणणवाळा माला मे कोई जादा फर्क कोनी ।

पण आदमी-आदमी मे तो घणों फर्क हुवै । इतणो ही नहीं, एक ही आदमी में भी न्यारा-न्यारा दिना मे फर्क हुवै ।

अर फेर मसीनां सूं बा चीज थोड़ी ही मिल सकै जिकी मिनखां सूं मिल सकै । मसीन आपणैं सामी कोई चीज मेल तो सकै, पण आपां नै दे कोनी सकै । दीवो चासणैं सारू तेल तो मसीन दे सकै, पण मसीन दीवो चास कोनी सकै ।

यूरोप रै लड़कै रै मानसिक विकास में स्कूल रो हाथ बहोत थोड़ो है । जादा हाथ तो उण देस रै जीवण रो है जिण में वो बडो हुवै । यूरोप री सिक्षा, जीवण सूं अळगी रहणैं री बात तो दूर, इण रो एक पूरक अंग है । बा सिक्षा समाज में ही उगै, विकसै अर विचरै, अर लोगां री रात-दिन री बातां, विचारां, अर कामां पर आपरी छाप छोडै बठै री स्कूल तो उण संस्कृति रो एक माध्यम है जिण नै बठै रो समाज अनेक लोगां रा अनेक भांत रा कामां सूं इतिहास रै लांबै अरसै में प्राप्त करी है ।

पण आपणैं देसरी स्कूलां समाज सूं एक सी होणैं री बात तो दूर, उण पर बारै सूं थोप्योड़ी है । बा रो पाठ्यक्रम नीरस, रूखो है, जिण नै सीखणो दोरो है, अर सीख्यां पछै जिको बेकार है । दस सूं चार बज्यां ताईं जिका पाठां नैं टाबर रटै अर जिण देस में बै रैवै-आं दोनां में कोई भी समानता अर समझौतो कोनी । असल में तो जो कुछ बै स्कूल में पढ़ै अर जो कुछ बारा मा-बाप अर रिस्तैदार घरां में बातां करै, बां दोनां में घणो विरोध है, आपणी स्कूलां मसीन रा आदमी बणाणंवाळा

शिक्षा नैं ठीक रूप मे कोनी राख सकां। किण समाज री चीज़ है उण रै बारै इण नैं कदे भी नहीं देख सकणैं रै कारण, आपां वो तरीको नहीं ढूंढ पावां जिकै सूं भारत री अंग्रेजी शिक्षा रो भारतीय जीवण सूं मेळजोळ बैठायो जा सकै। या बात होणैं पर भी यो सबसूं मोटो सवाल है के अंग्रेजी स्कूलां या कालेजां में पढ़ाई जावण वाळी पोथियां अर बठै रा कानूनां री चर्चा कर'णी बखत नैं खराब करणो है।

यो विचार आपणां ह्याडो में रमग्यो के सभा-सोसाइटी खड़ी करणैं अर कमेटियां बणा लेणैं सूं ही आपां कोई भी चीज प्राप्त कर सकां। इण बात में आपां नैं निस्चितियां री तरियां हां जिका यो बिसवास करै के आप कानी सूं आपरी चरखी घुमाणैं वास्तै कोई लामा नैं भाड़ै पर राख र वै सुरग में सुख पा सकै। पण बरसां पहला विग्यान री एक संस्था खड़ी करकै आपां बरसां ताई सोचता रैवा के आपणैं देस री विग्यान में कोई रुचि कोनी। विग्यान री संस्था खड़ी कर देणो ही जाणैं लोगां री विग्यान में रुचि वणादेणी है। यो विचार के विग्यान री संस्था खड़ी होतां ही देस में हजारां वैग्यानिक पैदा हुवण लाग जासी, इण बात नैं बतावै के आज रै जमानै में भी मशीन-पूजा पर आपणो कितणो बिसवास है।

खास काम तो लोगां री रुचि बणाणैं रो है। जद वा बण जासी आपणो महनत पूरी सफळ हो जासी। काई बात है के पुराणा भारतवासी जिकी शिक्षा लेता उण में पूरी रुचि राखता? इण सवाल पर गंभीरता सूं विचार करणैं री जरूरत है। मनैं ठा है के कई लोग विदेसी विश्वविद्यालयां रा पचांगां नैं इतणी महनत सूं देखै जिण सूं यूं मालूम पड़ै जाणैं वै उण मे बेसुमार रस लेता हुवै। मैं बांरो मजो किरकिरो नीं करणो चावूं। स्कूलां में पढाया जावण वाळा विसयां पर विचार करणो निस्चै ही महत्वपूर्ण है, पण टाबरां री रुचि बांरै काम में पूरी तरियां कियां बणाई जा सकै, यो सवाल भी उतणो ही महत्वपूर्ण है।

परंपरा सूं बेरो लागै के प्राचीन भारत रा गुरु आसमां में रहता। आसम किसा क हा, इण री कोई साफ तसवीर आपांरै सामीं कोनी। पण एक बात निस्चित है के गुरु लोग गिरस्थी हा अर सिस्य लोग बांरै सागै परवार रा सदस्यां री तरियां रहता। यो विचार के गुरु अर सिस्यां नैं साथै-साथै रहणो चाहीजै, आज ताई चल्यो आयो है, अर पुराणैं ढंग री हिंदू विद्या पढाणवाळा आपणा गुरुकुळा अर ब्रह्मचर्यासमां में आज भी कठै कठै पाई जावै है। इण विद्यालयां री अेक झलक सूं ही बेरो लागै कै अै पोथी रै ग्यान नैं ही सिक्षारो सबसूं महत्वपूर्ण अंग कोनी समझै। सांस्क्रित री एक वातावरण बांरै चाऊमेर बण्योड़ो है अर गुरु लोग आपरै काम में मगन सूं जुट्योड़ा है। वै एक सीधो-सादो जीवण बितावै, अर कोई भी भौतिक स्वार्थ या ऐस-आराम

बांरै दिमाग नैं विचलित कोनी करै। जिकी चीज बै सीखै उण नैं आपरी प्रकिति में एकरस करण वास्तै बांरै कनै घणो वखत अर घणा मौका है। मैं बतादेणी चावूं के यूरोप री बडी-बडी ग्यान-पीठां में भी यो ही विचार पायो जावै।

प्राचीन भारत में यो घणो जरूरी समझ्यो जातो के विद्यार्थी आपरै गुरु रै घर मे रैवै अर ब्रह्मचर्य रो पाळण करै।

ब्रह्मचर्य नैं कठोर तपस्या रै संकीर्ण अर्थ मे नहीं लेणो चाहीजै। समाज रै बीच पळण वाळा टाबर घणा लोगां अर घणासारा कामां रै प्रभाव सूं पथभ्रष्ट हो जावै, अर उणरो कुदरती विकास रुक जावै। उत्तेजना सूं उण री भावनावां, जिकी हाल पकणेरी हालत में भी नी हुवै, उकसादी जावै, जिण सूं सारीरिक अर मानसिक ताकत रो घणो दुरुपयोग हुवै। मणचकी प्रकिति री इसी हर चीज सूं रक्षा करणै री जरूरत है जिकी इण पर उळटो असर करै। ब्रह्मचर्य रो लक्ष्य कच्ची उमर में इच्छावां रै पैदा होणै अर बांरी अहितकर पूर्ति नैं रोक र अनुसासन री मदद सूं बढते आदमी री रक्षा करणं रो है।

असल में तो टाबर प्रकिति रै अनुसासन में रहणै मे ही राजी है। इण अनुसासन सूं असली आजादी नैं पूरी तरियां विकसित करणै अर उण रो मजो चाखणै मे मदद मिलै, अर या बांरा डीला नैं बांरा अकुंरित होवता दिमागां री ताकत सूं जगमगा देवै।

आज कल ब्रह्मचर्य री जगां स्कूलां री नैतिक सिक्षा लेली है। टाबरां रा मां-बाप हर कोई बहाने सूं नैतिक सिक्षा दिरवाणी चावै। पण यो तो मसीन रो सो ढंगो है, जियां कोई उमग नं नित विरायतं री गुटकी दी जावे या टाबरां रा हाड बध णै वास्तै कोई निस्चित खुराक दी जावे, अर इण में कई मुस्कलां भी है या चीज सायद टाबरां खातर आकर्सक कोनी बणाई जा सकै। कै तो इण सूं बांरै तकलीफ हुवे कै या बांरै सिरा पर सूं हो निकळ जावं, अर इण सूं बै अपणै आपनै कटघरं मे खड्या अपराधी सा समझण लाग जावे। नैतिक सिक्षा नैं मैं समै अर मह्नत री जाबक बरबादी समझूं, अर मनै घणो डर लागे कै भला आदमी भी इण तरफ इतणो ध्यान देवै। या जितणी विरोध रै लायक है उतणी ही फालतू भी है। मैं दूजी असी कोई चीज कोनी सोच सकूं जिकी समाज म इण सूं ज्यादा नुकसान पुचाती हुवै।

जिकी दुनिया मे झूठ अर छळ-कपट सू रातदिन आपणो स्तर नीचो खिचनो जावै, या उमेद करणी नाजायज है के स्कूल में दस सूं चार बजे ताई घिस्या-पिट्या उपदेसां री तोता-रटत करणै सूं हर चीज ठीक हो जासी। नीति रा उपदेसा सूं उण भेषां रा कपट अर अहकार पनपे, अर काचा दिमागां री ताजगी अर स्वाभाविकता रो

नाग हुवै ।

ब्रह्मचर्य कोरी सिक्षा देवण री बजाय सावल देवें, अर नैतिकता नैं जीवण रो ऊपरी आभूषण मानणे री बजाय जरूरी अंग समझै जिको आदमी इण रो पाळण करै, जो धर्म नैं कोई विदेसी चीज समझणै री बजाय जण नैं अपनानो सूं अर दोस्त री जिसी स्वीकार करै अर आप रै दिन रै नैड़ो राखै । टाबर रै दिमाग अर चरित्र नैं बणाणै वास्ते नैतिक सिक्षा नहीं, मित्र री सी सला अर हितकर वातावरण री जरूरत है ।

ब्रह्मचर्य रो पालण करणै रै अलावा बाळक नैं प्रकृति रै बीचोबीच भी रहणो चाहीजै । सहर आपणा कुदरती घर कोनी, वैं तो भौतिक जरूरतां री पूर्ति वास्तै ही बणाया गया है । विधाता री मरजी या कदे ही कोनी ही के आपां सहरां में जन्मां अर ईंट भाटां री गोद में पळां । सहर कुदरत री छाती सूं आपां नैं खोस लावैं अर आपनै भूखी भट्टियां मे गेरकर खतम कर देवैं । जिका लोग सहरां में बसै अर कामां में उळझ्या रैवे, वैं कुदरत सूं भटक जाणे अर विसाल विस्व सूं दिन पर दिन घणी दूर निकळ जाणे पर भी यो अनुभव कोनी करै के बांरै जीवण सूं कोई चीज गायब होगी ।

पण अब ताईं आपां बढता अर सीखता रैवां, अर कामां रै भवर में पूरी तरियां फंस नी जावां, कुदरत री मदद आपणै वास्तै लाजमी है । रूंख अर नदियां लीलो असमान अर मोवणा द्रिस्य आपणै वास्तै ठीक इतणा ही जरूरी है जितणा बैंच अर ब्लेकबोर्ड, पोथियां अर परीक्षावां ।

पुराणै जमाने सूं ही भारतीय दिमाग कुदरत रै नजीक अर लगातार संपर्क में रह र विकसित हुयो है, अर पसु तथा वनस्पति जगत सूं एकाकार होणै री भावना भारतीय आत्मा में जन्मजात रयी है । प्राचीन भारत रा आस्रमवासी टाबर यूं पाठ पढ्या करता जिको परमात्मा अगन अर जळ में, रूंखां अर पौधां में बसै, दुनियां अर विस्व में जिको व्याप्त है, उणने म्हे बारंबार नमस्कार करां ।

धरती जळ हवा, अर अगन रा व्यापक तत्व ही पूर्णता रा अंग है, अर विस्व आत्मा में समायोड़ा है - योग्य ज्ञान सहर री स्कूल में कोनी मिल सकै । सहर री स्कूल तो एक कारखानो है, जिको आपां नैं या ही बात सिखा सकै है के दुनियां नैं एक मशीन री ज्यों ही समझो ।

दुनियांदार लोग इण तरै रै विचार नैं गुपत विद्या या थोथो कह र टाळ देसी । पण इण बात सूं तो वै भी इनकार कोनी कर सके के लीलो असमान अर हवा, रूंख अर फूल टाबर रै दिमाग अर डील रै ठीकसर बढणै खातर लाजमी है । आपां जद मोटियार जवान हो जावां, अर सहरां री भीड़-भाड़ में, दफतरां रा कामां में उळझ जावां, कुदरत रै नजीकी सपर्क में कोनी रह सकां । इण वास्तै या और भी ज्यादा जरूरी है के आपां बचपणै मे कुदरत रै असर में रैवां, जद कै आपणा दिमाग ताजा अर सीखणै ए

उसुक रैवे, अर आपणी इन्द्रियां में जोस रैवे । आपां पूरा मोटियार तो जद ही बण सका हां जद धरती अर जळ, अकास अर हुवा मा रा बोवां री तरियां आपणो पाळण-पोसण करै । इण व स्तै टाबरां नैं उण-उण खुले असमान रै नीचे खेलण देवो, जिकै प्रदेश बादळां रै खेल रो मैदान है बानैं 'भूमा'-परमात्मा-सूं दूर मत ले जावण देवो । सूरज री ऊजळी आग लियां सूं खुलतो दिन रो ताळो, अर तारां छाई रात रै अंधारै मे डूबती सांझरी सात मोभा बा नै देखण देवो । साल री छः रितुआं रै रूप में कुदरत जिको छं अंगां रो सगीतमय नाटक दिखावै वो भी बानैं देखण देवो । बानैं बिजळी री कड़क सुणनै देवो, अर बरसणें सूं पैलां बणराय पर अंधारो करती काळी घटावां नैं देखण देवो । बरखा बोत्यां पछैरा ओस सू भीगा लीला कचनार खेतां नैं, दूर खितिज ताईं घान सूं उफणता अर हुवा में लहराता देखण देवो ।

बढण रा दिना मे दिमाग रै वास्तै आजादी लाजमी है, अर कुदरत इण नै खुले दिल सूं देवै । जे टाबर नैं साढै नौ अर दस बजें रै बीच झटपट भोजन करणो पड़ै, अर पुलिस थाणां पर हाजर हुवण वाळे जरायम पेसा आदमी री तरियां स्कूल मे जार हाजर हाणो पड़ै, तो उण टाबरां रो विकास सही ढंग सूं होणो असमव है । सिक्षा रै चौफेर चौभींतो बणार, किवाड़ जड़ र, उण पर चोकीदार बिठार आपां टाबरां नैं किसाक सतावां हां । इण दुनियां में आणैं सू पैलां जे टाबर बीजगणित रा सवाल अर इतिहास री तिथियां नीं सीख सकै तो दोष कुण रो ? अर इण कारण ही काईं, आपांनैं बारो हुवा अर रोसणी अर खेल कूद री आजादी खोस लेवणी चाहीजै अर बारी सिक्षा नैं हर तरह सू एक सजा रो रूप देदेणो चाहीजै ? टाबर जन्म सूं नासमझ इण वास्तै पैदा हुवै के बै धीरै-धीरै ग्यान प्राप्त करता बढा होणै रो मजो ले सकै । सिक्षा नैं आनन्द री चीज बणाणैं री लियाकत तो आपणैं में नी हो सके, पण स्कूलां नैं जेळखाना बणाणै री कूरता होणी तो जरूरी कोनी । परमात्मारी मरजी टाबरां नैं कुदरत री आजादी मे सिक्षा देवण री ही, पण आपां उणरी मरजी नैं पूरी नहीं कर र अपणैं आपरो नुकसाण कर रया हां, इण वास्तै टाबरां पर दया करके आपां नैं जेळखाने री भींतां तोड़ देणी चाहीजै । टाबरां ने करड़ी मेहनत रै सागै कैद री आ सजा अब और इण कारण सूं ही नीं दी जाणी चाहीजै के जनमणं सूं पैला ही बै पढ़त क्यूं कोनी बण्या ।

म्हारो कहणो यो है के आपां नै प्राचीन भारती री सिक्षा रा सिद्धांत अपणाणा चाहीजै । छात्रां अर गुरुवां नैं कुदरती वातावरण में भेळा रैणा चाहीजै, अर ब्रह्मचर्य गो पाळण करतां थापरी पढ़ाई पूरी करणी चाहीजै । आपणी परिस्थितियां कई जमाना रै साथ होर चाये कितणी ही बदळगी हुवै पण मानव स्वभाव सास्वत सत्यां पर खड़्या इण सिद्धांत रो महत्व तो आज भी बिसो रो बिसो ही है ।

रए फेर भे विदेसी तरीकां री नकल करणै पर आपां इतणा उतारू रैवां के आपां न बिनामू फर्नीचर भी बणाणो पड़ै। जिकी चीजां साचाणी फालतू है, बानै ज्यूं-ज्यूं आपां रणी जरूरी समझता जावां, त्यूं-त्यूं आपणी ताकत बेकार जाती जावै।

आपणै देस कनै बै साधन कोनी जिका भागवान यूरोप वाळां कनै है, अर जिकी चीजां यूरोपवाळा खातर मस्ती है, बै ही आपणै वास्तै महंगी है। समाज-हित रो कोई काम जिको आपां हाथ मे लेवां, उण री योजना बणाती बगत, मकान पर फर्नीचर जिसी सरूपोतरी चीजां पर ही सारो ध्यान लगा देवां, अर चाये बै कितणी ही फालतू हुवो, बांरी कीमत आदि रै बारै में सोचता-सोचता परेसान हो जावां। आपणै मे मा रहणै री हिम्मत क्यूं कोनी हुवै के म्हे कच्चै झूंपड़ै मे ही काम सरू कर देस्यां अर धरतियां बैठर ही सभा कर लेस्यां ? इण सूं आपणै काम री अच्छाई में जरा भी असर पड्यां बिना ही आपणी आधी महनत बच जासी। जिसी हालत म ज री है, उण में जे आपां यूरोप रा उण देसां रै आदर्स पर लांबी चौड़ी योजनावां नै बणावां, जिकां कनै अनत साधन है अर जठै धन भूफ्ण्यो पड़ै है, तो आपां सरम सी महसूस करां अर आपणै मन में संतोस कोनी हुवै। इण रो नतीजो यो हुवै के सरूपोतरी चीजां जुटाणै मे ही आपणा माड़ा-मोटा साधन खतम हो जावै, अर हाथ में लियोड़ै काम रै वास्तै बहोत थोड़ी ताकत बाकी बचै।

जद आपणै टाबरां नै खाली बरतै रो एक टुकड़ो अर लिखण वास्तै कारी जमीं री ही जरूरत हो, उण बखत आपणै देस मे स्कूलां री कोई टोटो कोनी हो। आज पट्टी-बरतां रा म वार तो लाग रया है, पण स्कूलां बहोत थोड़ी दीखै। जरूरी चीजां रै मुकाबलै मे गैरजरूरी चीजां पर जादा ध्यान देणै रो यो रिवाज जिंदगी रै हर क्षेत्र में दीखण लागग्यो है। आपणा बडका समाज रै दिखावै री परवा तो कम करता अर समाज रा कर्तव्यां री जादा, पण आपां ठीक उलटी बात करां। बै सजावट रै सामान नै सभ्यता रो नीं, दौलत रो भंग मानता। बां दिनां सभ्यता रा रखवाळा रा घरां मे सजावटी सामान बहोत थोड़ो हो, पण बै देस नै एक इसो सतोल दियो जिणमू निर्धनता भी एक आदर री चीज बणगी। बचपणै मे ही जे आपां सादै जीवण रो आदर्स सीख लेवां तो थोडा बहोत गुण तो ले ही लेवां, जियां जमीं पर बैठणो, सादा गाभा पैरणा, सादो खाणो खाणो, अर कम सूं कम महनत सूं जादा सूं जादा काम कर लेणो। मैं कोई छोटा-मोटा गुण कोनी है, आनै लेवण खातर भी घणी सारी महनत करणी पड़ै।

सादगी, कुदरती ढग पर सान्ति सम्य आदमी री निसाणियां है, अर आ तो य, दम जंगळी मिनखरी। साचनो बडपण आपरी खुद री ही कुदरती चमक सूं

अगमगावै अर सादगी रै बीच में इण रो बटूं भी नीं दिखै । या एक सीधी-साधी साची बात है, पण इणनैं हर सभव तरीकै सूं आपणां टाबरां मैं भली भांत समझाणी है, अर बारै सुभाव में उतारणी है यैं इणनैं कोई नैतिक उपदेस रै रूप में नीं सीखै, क्यूं के इण सू बानैं कोई फायदो नी हो सकै, पण आपरी स्कूल में क्याकू अेर दौलत वळै सादे जीवण रै प्रत्यक्ष उदाहरण सूं नफरत करण लाग जासी, अर जकी पर बैठ्यां नैं आंधी बात मानसी । इण सूं भो बुरी बात या होसी के वे आपरा बडकां नैं ही नफरत करण लाग जासी अर प्राचीन भारत रै संदेसै रो मतळब भी गळत ही समझसी ।

या बात मानतां हुयां भी के आपां बारली चीजां रै बिना ही, चायै वांरो आकरसण कितणो ही हुवै काम चला लेस्यां, अर मांयले गुण पर ही सारो ध्यान लगा देस्यां, एक और सवाल यो उठै के आपणै बस रा साधन आपणै कामरै वास्तै घणा होसी काईं ? स्कूल री नींव लगावणियां रै रूप में आपणो पहलो जिम्मो इण बत रो बदोबस्त करणो होवणो चाहीजै के पढाई रो काम गुरुवां रै हाथ में रैवै । पण गुरु अ वै कठै सूं ? गुरू साईं दे र थोडा ही घड्या जा सकै, अर न छापां में मांग कढा र स्कूल मास्टरां री तरियां ही लिया जा सकै ।

इण सवाल पर मैं मानूं के आपां नै बीत गैल ही कोट छाटणो चाहीजै । या कल्पना करणी कोरी मूरखता ही होसी के आपां कोई याज्ञवल्क्य ही ढूंढस्यां, क्यूंके आपांनैं गुरु री घणी बडी जरूरत है । पण आपां नै या बात भी याद राखणी चाहीजै के मौजूदा हालता में आपणै देस रो घणखरो ग्यान बेकार पडी पूंजी री तरियां फालतू पड्यो है, क्यूंके उण रो पूरो फायदो उठाणैंरी कोई कोसिस ही कोनी करी जावै । लिफाफां पर डाक री टिकटां चिपकाणै वास्तै जे आपां पाणी री भरी बाळटी नैं काम में लेवां, तो घणखरो पाणी फालतू रह जावै, पण जे नहाणै रै काम में लेवां तो सारी बाळटी काम में आ जावै । इण सूं ठा पड़ै के पाणी री बाळटी रो मोल उण नै काम में लेवण रै तरीकै रै सागै वधै-घटै आज रो स्कूल मास्टर जिको काम करै उण मे उण रै दिमाग अर मन रो बहोत थोड़ो सो अस काम करै । थोड़ै सै दिमाग सूं चूडीवाळो भी यो काम कर सकै जे उण रै एक बैन रो टुकड़ो और बाध दियो जावै । पण जे उणी स्कूल मास्टर नैं गुरु रो काम सूंप दियो जावै तो बो टाबरां री सेवामें आपरो सारो दिमाग अर मन लगा देसी । या तो साची बात है के बो आपरी लियाकत सू देसो कोनी दे सकै पण कम देतां भी उण नैं सरम आसी । सौदो करण वास्तै दो जणां री जरूरत हुवै अर आपां जे सौदो करणो चावां तो आपां नैं सब सूं चोखी चीज री ही मांग करणी चाहीजै आज तो आपणै देस री मानसिक अर आध्यात्मिक ताकतां रो बहोत मोटो

भाग स्कूल म स्टरां रै रूप मे काम आवै है, पण जे देस सारै मन सूं इण बात नै चावै तो गुरवां रै रूप में इण ताकतां रो घणो सारो भाग काम में आ सकै।

आज रा आर्थिक साधन अध्यापक नै छात्र ढूंढणै खातर मजबूर करै, पण कुदरत री व्यवस्था रै मुजब तो छात्रां नै अध्यापक री खोज होणी चाहीजै। आज तो अध्यापक एक व्योपारी है जिको ग्राहकां री तलाश मे सिक्षा रो खूमचो लियां फिरै। उण रै बिक्री रै माल में स्नेह, सरधा, भगती या और कोई भावना री उमेद कोनी। आपरै माल री बिक्री करयां पछै अर तनखा रै रूप में उण रा दाम चुकयां पछै उण नैं छात्रां सूं कोई लेणो-देणो कोनी। पण आज री प्रतिकूल हालत में भी आपणै देस में अनुभवी कुछेक अध्यापक इसा है जिका आपरी मौजली लियाकत रै पाण आर्थिक विचारां सूं ऊपर उठ सकै है, अर इसो अध्यापक ही गुरु बण्यां पछै या बात महसूस करसी के आपरै जीवण सूं छात्रां रै जीवण मे प्राण फूंकणो, आपरै ग्यान सू बांरा दीवा चासणो अर आपरै स्नेह सूं बानै राजी राखणै सूं बो आपरै वास्तै ही जस कमासी। आपरा छात्रां नैं इसी चीजां देणै सू जिकी न खरीदी-बेची जा सकै अर मोल-तोल सूं परै री है, बो बांसूं एक इसी सरधा ले सकसी, जिकी मार-पीट रो डर दिखार कोनी ली जा सकै, अर धार्मिक कही जा सकै। इतणी गहरी तथा कुदरती कही जा सकै इतणी असली हुवै। पेट भराई खातर उण नैं तनखा तो जरूर लेणी पडसी, पण जो कुछ उणनैं दियो जासी उण सूं बहोत जादा दे र बो आपरै पद नैं एक खासियत दे सकसी। टाबरां नैं पढाई वास्तै घरां सूं दूर भेजणा चोखी बात है कांई इसा ठेठ सवाला पर जिक पाठकां रा विचार म्हांसू मेळ कोनी खावै बानैं इण जरा-जरा सी बातां री चर्चा बेकार लाग सकै।

इण सवाल पर मनैं पैलां तो या बात कहणी चाहीजै के आज जिण नै आमतौर पर सिक्षा कंयी जावै उण रै वास्तै तो मां-बापा नै सबसूं नेडै री कोई स्कूल मे टाबर नैं भेज देणै, अर हो सकै तो कोई मास्टर नैं घरां पढाणै वास्तै लगा लेणै रै अलावा और कुछ भी करणै री कोई जरूरत कोनी। इण भात री सिक्षा रो एक मात्र *उद्देश्य टाबर नैं पीसा कमाणै रै लायक बणाणै मे मदद करणो हो है,* अर *इसी सिक्षा* जियां मे पैला भी कह चुक्यो हू, सिक्षा रै नांव सूं कंवण जोगा भी कोनी।

दुनिया मे भात-भात रा घणा करणियां लोग बसै, जिका तरै-तरै रै वातावरण अर-हैसियत रा घरां मे रंवै, अर जिका रै ठेठ बचपण सूं ही खास-खास लखणां वाळा टाबर हुवै आपरा धन्धा रै कारण बडो होस्या रा मिनखां रा न्यारा-न्यारा सुभ व हुवै जिकै सूं वै न्यारा-न्यारा फिरका मे बट जावै। पण जीवण री देहळी पर ही मा-*बापां रै सचै मे ढळ जाणो टाबर रै वास्तै कोई चोखी बात कोनी।*

कोई भागवान रै टाबर री मिजाज घणो लेशी । बो ग्रारै सार्य इसी काई खास चीज ले र कोनी जनमें जिकी मूं गरीब रै टाबर मूं उण नै न्यारो मोळखयो जा सकै जिण तरीकै सूं उण रो लालण-पालण हुवै उण सूं ही उण री भागवानी रो बेरो पटै ।

इण वास्तै उण रा मा-बापां रो पहलो जिम्मो यो है के बै उण री साधारण मानवता रो निर्माण करै । इतणो काम करयां रासणो चाहीजै जितणो घणो जरूरी समझ्यो जावै । पण होवै ठीक इण सूं उलटी बात है मिनख रै जायै री दयां रहणो घर करणो पूरी तरियां सीखणे सूं पैला ही टाबर नै मागवान घर रै छोरै री जियां रहणो घर करणो सिखायो जावै । इण रो नतीजो यो हुवै कै बचपण रा कई कामल अनुभवां सूं बो कोरो रह जावै, घर एक सीमित सी भावना लेकर ही बडो हुवै । इण बात में तो, हाथ पग होतां हुयां भी उण नैं उण रा मा-बाप अपंग बणा देवै, क्यूंकै बै खुद पग रहते हुयां पींजरै रै पखेरू री तरियां रवै । उण नैं पगां न चाल र गाडी में बैठणो च होवै । हळकै सूं हळको भार भी बो खुद नीं उठावै, कुळी रै सिर पर मेलै । कोई भी काम खुद नीं करै घर नौकर सूं ही काम लेवै । घणां मलो-चगो होण पर भी बै लकवो मारयोड़ै री तरियां रैवै । उण नैं ग्रै सारा काम इण वास्तै करणा चाहीजै के न करयां लोग काई सोचसी, इण कारण नीं के उण रै कोई ग्रंग मे कमर है : नतीजो यो हुवै के ग्रासान सूं ग्रासान काम भी उण वास्तै मुसकल बण जावै, घर सवसूं कुदरती चीज भी उण नैं सरमनाक दीसण लागै । ग्रापरै सामाजिक दायरै री मानवता रै मुजब उण रा मा-बाप उण नैं इतणा फालतू रीत-रिवाजां सूं जकड़ देवै के उण री मिनख-पणैरी कुदरत भी मारी जावै । इसा मा-बाप ही जिका घान रै खेतां में घास रा बीज बोवै टाबरां रा सबसूं चोखा रखाळा है, काई ग्रा बात ग्रापां कहणो चावां ?

बडो घोस्या रा लोगां नैं तो ग्रमीरी री मकड़ री ऐम कारणै सूं ग्रापां कोनी रोक सकां, पण जे टाबरां री ग्रसली रुचि नैं ग्रापां पिछाण सकां, तो बांनैं इण तरियां पथभ्रष्ट नहीं होवण देणा चाहीजै । टाबर घरती नैं घर इण रै धूल-कूड़ै नैं प्यार करै, सूरज हवा घर बरखा नैं प्यार करै । कपड़ा लादणो वां नैं चोखो कोनी लागै । सबसूं खुस उण बखत रैवै जद ग्रापरी इन्द्रियां सूं दुनियां रो ग्राभास करै । ग्रापरै कुदरती रूप में रहतां थकां बांनैं रच मात्र भी सरम कोनी लागै ।

ग्रापणा घणा सा छोरा-छोरी ग्राज ग्रापणै देस में रैवणियां यूरोपवाळां री तरियां रहवा जावै । बांरी देखमाळ करणै वास्तै दायां रैवै । बंगला नैं भूल र वै बरावरो हिंदी सीखै । बांरी वा लाड करदी गई है जिकी सूं सगळा टाबर ग्रापरी जनम-ठौड़ सूं दुःख रैवै घर जीवण री कुराक लेता रैवै । यूरोप रै समाज तांई भी बांरी पूग

कोनी। बै जगळ सूं उपाड़ र यूरोप रै गमलै में लगायोड़ै पौधे री तरियां है। बडी उमर रै बंगाली नै जे यूरोप रा तरीका चोखा लागै तो बां नै अपणाणैं री उण नै छूट है, पण बंगाली मा-बाप आपरा टाबरां नैं यूरोप रै ढग सूं पाळणैं-पोसणैं री जरूरत क्यूं समझै ? मैं एक बार पिच्छमी ढग सूं पळ्योड़ै एक लड़कै नैं, देसी ढगरी पोसाक पहर कर आयोड़ा आपरा रिस्तेदारां नैं देख र, यूं चिल्लातां सुण्यो—'माम्मा, माम्मा, देखो, घणा सारा बाबु लोग आरया है।' इण सूं बेसी गिरावट री मैं कल्पना भी कोनी कर सकूं। इसा टाबर जद बडा होसी तो बगाली समाज रै लायक कोनी रहसी, अर यूरोप रै समाज में भी न खप सकणैं रै कारण, बै जात बारै कर्‌योड़ां री जियां ही रहसी।

साची बात तो या है के बां मा बापां नैं इण बात री कोई जाणकारी कोनी हो के बै आपरै टाबर नैं गळत तरीकै सूं पाळ रया हा। आपरा दोस नी दिखणै रै कारण ही लोगां नै यो बेरो कोनी पटै के बै दूजां रो कितणो नुकसाण कर रया है। यो ही कारण है के बै आपरा टाबरां नैं घरां सूं दूर पढण वास्तै नीं भेजणा चावै क्यूं के बारा घर बुरा व्यसनां, अंधविसवासां अर पूर्वाग्रहां रा अड्‌डा ही हुवै। आ बात निस्चै जाणनी चाहीजै के जिका मा-बाप आपरा टाबरां नैं साचा मिनख बणाणा चावै, बै उणां नैं इसी स्कूलां में भेजणो आपरो फरज समझै, जठै बै कुदरत रै घणा नैड़ा, अर ब्रह्मचर्य रो पाळण करता थका, गुरुवां रै भेळा रैवै।

भ्रूण अर बीज बखत ताईं गर्भ अर धरती रै मांय नैं एकांत मे पनपै, अर रात-दिन आपरै आस-पास सूं पोसण पावै, जद ताईं हवा अर रोसणी मे बारै आवण खातर बां में काफी ताकत नीं बण जावै। कुदरत बां नैं अनुकूल हालत में राखै, अर इण बातरी सावधानी बरतै के बारली ताकतां बां नैं छेड़ नीं पावै।

बचपण में मिनखरो दिमाग भ्रूण री-सी अवस्था में ही रैवै। इण वास्तै स्कूल रा टाबरां नैं इसी परिस्थिति में रहणो चाहीजै जिण में बारली ताकतां बां नैं छेड़ नी सकै। चेतन अर अचेतन दोनूं रूपां मे ग्यान नैं ग्रहण करता थका ताकत प्राप्त करणो ही बांरो एक मात्र लक्ष्य होणो चाहीजै, अर बांरो वातावरण भी इण उद्देश्य रै मुजब ही बणाणो चाहीजै। —१९०६

दीमक सोचै आदमी कितणो मूरख है के
बो आपरी पोथियां नैं खावै कोनी।

—रवीन्द्र नाथ टैगोर

पछै कांई ?

चीतारो आपरी मनपसंद लीकां नैं मन-चाया रंगां सूं इण तरै सूं रंगै के वै लीकां न्यारी न दीसर एक चितराम रै रूप में दीसै। यो चितराम उण चीतारै रै हिवड़ै री उपज हुवै। इणी तरै सूं भारत आपरै विचारां नैं मुक्ती रा आदर्शां री खोज में इण भांत मोड़्या के वै एक निश्चित लक्ष पर जा पूग्या। उण रै मुजब जिन्दगी मांय ही मांय नी बढणी चाईजै पण उण नैं ऊंचै विचारां तांई भी पूगणो चाईजै ज्यूं के फूल धीरै-धीरै फळ बण जावै। चीतारै री लीकां आपरी सीमा रै बंधण सूं आकार में सुन्दरता रै लोक कानी ले जावै जिको निस्सीम तत्व रो प्रकट रूप है। भारत रो लक्ष जीवण री धार नैं सींव अर किनारां रै मांय ही मांय बढाता हुया अनन्त समुन्दर में पुगा देवण रो रैयो है। इण लेख रो मनस्या वां सिद्धान्तां अर तरीकां रै बारै में विचार करण रो है, जिकां नैं बरतण री सीख कोई बखत भारत आपरा टाबरां नैं दी ही।

मिनख अपवित्र है, ससार झूठो है अर बैराग रै कठिण मारग में ही मुक्ति है—इसी ही मानता मध्यकाळ में यूरोप री ही। आज रो यूरोप जीवण री कुदरती इच्छावां अर समाज रै धेय तथा आध्यात्मिक जीवण रो इच्छावां अर उण रै उपदेसां रै बीच हमेसा रो बखेड़ो मानणो भूल समझै है। उण रै मुजब ससार रै आयावीपणै पर घणो जोर देणो आपरी खुद री स्थिति रै नैतिक कारण नैं कमजोर करणो है। जीवण री दौड़ रै मैदान में पूरी तेजी सूं दौड़तां-दौड़तां मर पड़नो ही सानदार मौत है।

आ बात तो मानणी पड़सी के यूरोप आपरै विस्वासां नैं जीवण सूं जोड़ कर संसार री लिणमगुन्ता नैं अर मौतरै भूंडै रूप रै विचार नैं नीं मान र थोड़ी ताकत तो जरूर पाई है। वै लोग विज्ञान री इण कैवत रै मुजब सघर्ष री सीख लेवै के सबसूं लायक मिनख ही जीवता बचैला। यूं मालूम पड़ै के यूरोप इणनै ही जीवण रो सार समझै। जीवण रै इसै दरसण रो भलां ही कांई व्यावहारिक मोल हुवै, पण आ बात तो पक्की है के संसार सूं आपणा रिस्ता अटूट कोनी।

कुदरत आपरै जीवण सम्बन्धी उद्देश्य सूं आपां मे मौत रो मान नीं राखर जीवण में मजबूत विस्वास पैदा करयो है। पण परम पद रै नैड़ो है जो भी बिखर जावै। मोटी सूं मोटी सफळता सून्य में रळ जावै। मोटै ताकतवर राजनै छोटा छोटा

होकर बढ़ता बीत लेवै । आपां नैं इण साची बात सूं दुख भला ही हुवो, पण साच तो साच ही है । इण वास्तै आपां नैं जीवण रै विछोवड़ै मौत रै रिस्तै सूं ही सारा कामां में भाकणा चाईजै ।

पण कोरा इण वास्तै ही के एक दिन सारा नासवान रिस्ता खतम हो ज्यासी, आपा बांनैं तुच्छ नी समझ सकां । जे कोई इण बात सूं ही के ससार रा सारा संबंध एक दिन खतम हो ज्यासी आपां बांनैं मानण सूं इनकार करदेवां, तो आपां नैं इण बात रो हरजानो भी चुकाणो पड़सी। कोरी इण दलील सूं के रेल गाडी रैवण रो कोई पक्को घर थोड़ो ही है, आपां उण रो भाडो देवण सूं नट नी सकां । सांचा बधणा नैं-भला ही बै थोड़ै दिनां रा ही हो—मानणसूं इनकार करणो बांरी जड़ांनैं ज्यादा मजबूत अर थीडी बणाणो है ।

इण वास्तै ही प्रवृति अर निवृति रा भावनावां नैं आपसरी मे चोखी तरियां रळा देणो है, जिकै सूं बै आपां नैं परम पद ताई पुगा सकै । प्रवृति आपां नैं साच रै सागै रूपरा दरसण कराणै वाळी सकती है । निवृति आपां नैं साचरी उण अनंत स्वतंत्रता रा दरसण करावै जिकी आदर्स री चीज है । चालती बखत जद पग धरती माथै पड़ै तो उण नैं आपां प्रवृति कह सकां । अर जद दूजो पग ऊचो उठै तो उणनैं निवृति रो नाम दे सकां । बधण अर छुटकारै रो मेळ ही इण सृष्टि रा साच है । भारत री विचारधारा रै मुजब सिव साच रो पुरस रूप है, अर सिवा प्रवृति रै बधणा रो नारी रूप है। दोनां रै मेळ मे ही पूर्णता रो बास है ।

इण दोनूं विरोधी चीजा मे मेळ कराणै खातर मिनख नैं भलीभांत समझणो पड़सी । आपां उण नैं कोई खास काम रो ही नीं समझ लेवा । दरअसल नैं बळीतै रै रूप में ही देखणो उण नैं पूरी तरै सूं जाणनो नीं है । मिनख नैं कोरो देस रै खाळै रै रूप मे, या देस रै कमाऊ पूतरै रूप में देखणो उण नैं सिपाही या बाणियै रै रूप मे देखणो हो है, अर उणरी हुसियारी नैं होज मिनखपणै रो माप मानणो है । इसी सकुचित नजर नुकसान करणवाळी अर उण मिनखां नैं थोथा बणावणवाळी है जिकां नैं आपां जस जीतण वाळा देखणा चावा । एक जूनै सस्कृत रै स्लोक रो उलथो इण भांत है—

होम द्यो—

कुटुम्ब रै वास्तै एक व्यक्ति नैं,
जात रै वास्त पूरै कुटुम्ब नैं,
देस रै वास्तै पूरी जात नैं,
अर आत्मा रै वास्तै ससारनैं ।

जावे। उणा री नजर में काम करणो ही लक्ष कोनी हो, वांरो लक्ष तो सगळै कामां रै अंत तांई पूगणो हो। बां नै इण बात में कोई भरम कोनी हो के आत्मा रो उद्धार ही मिनख री सबसूं बडो तलास है।

यूरोप लगातार उण स्वतन्त्रता रा हरजस गातो रयो है जिण रै मुजब हरेक नैं कोई भी चीज प्राप्त करणी, उण नैं भोगणी अर कोई भी काम करणरी आजादी होवणी चाईजं। आ स्वतन्त्रता भी कोई छोटी-मोटी बात कोनी। पण आपणा संतानैं इण सूं ही संतोस कोनी हुयो। वै फेर भी ओ प्रस्न पूछयो के इण रै पछै कांई। बा खातर आ आजादी ही आखरी चीज कोनी ही क्यूं के वै लोग कर्म अर इच्छा सूं भी आजाद होवण री चेस्टा करता हा।

आजादी लेवण रै मारग मे मिनख नैं आपरी इच्छावां पर काबू राखणो चाईजं, जिण सूं बो उण री ताकत नैं बिखरणै अर फालतू जाणै सूं बचा सकै, अर जिकै सूं उण में बो वेग आ सकै जिको बधण में ही मिलै। जिका लोग कोरै राजनैतिक धरातळ पर ही आजादी चावै बानैं धीरै-धीरै आपरै विचारां अर कामा री आजादी नैं काट-छाट र उण सांकड़ी हद तक घटा लेणी चाईजै जिकी राजनैतिक आजादी नैं सुरक्षित बणाणैं वास्तै जरूरी है, अर जिण सूं घणखरी बार आत्मा री आजादी खतम हो जावै। ब्रिटेन रा सिपाही कांई आजाद मिनख है? वै कोरी जीती जागती बन्दूकां ही कोनी कांई? अर बठै री खाना अर कारखानां मे पसीनो बहावणियां मजूर उण मसीनां रा कोरा पुरजा ही कोनी कांई, जिणां मे वै काम करै अर बादसाहत रै नक्सै नैं लाल रंग सुं रगणैं वास्तै आपरो खून देवै। किता क अंगरेज बारी राजनैतिक आजादी में साचो भाग लेवै। यूरोप भलै ही मिनख रै अधिकारां रा उपदेस दिया हो अर बां खातर चेस्टा भी करी हो, पण दुनियां मे इसी दूजी कुणसी ठौड़ है जठै रो मिनख यूरोप सूं जादा गुलाम है।

ओ सवाल आपां नै उण हीज जगां ले जा र पुगावै जठै के दोखता हुया भी साच नी लागै अर जिको मैं पैली आपनैं कयो है। आजादी अनुसासन रा बधण अर व्यक्तिगत इच्छावां रै बळिदान सूं ही प्राप्त हो सकै। स्वतन्त्रता बो फायदो है जिको आत्म-सयम रो पूजतो धन लगायां सूं ही मिल सकै।

भारत री खोज रो मुख्य धेय व्यक्तिवाद हो, पण बो इण तरै रो ओछो नीं हो, क्यूंके बो आदमी नैं आत्म-मोक्ष कानी ले जावतो हो। यूरोप री स्वतन्त्रता रो धेय आपां रै सामनैं मसीनां रै बधण रै रूप म आवै। भारत री स्वतंत्रता रो धेय जीवण रा रोजीनां रा बरतणै रा सख्त नियमा रो रूप लियो।

"अरे मिनख तूं इण ससार में काम करतां हुवां सो बरस जीवण री आसा राख। काम करणं रै सिवाय कोई दूसरो रस्तो थारै वास्तै खुल्यो कोनी।"

कामकाज सूं भर्योड़ो जीवण होज होणहार री इच्छा पूरी कर सकै। जद सांसारिक जीवण पूर्णता नै प्राप्त हो जावै तो काम काज रा बंधण ढीला हो फेर न्यारा आ पड़ै। जीवण नै जीवण रा अंत रा दरसण करण में मदद देवण नै ईसोपनिषद् कयो है के :— "इण ससार में जो क्यूं भी है उण रै चौगिरद भगवान छोड़्यो है। भगवान जो कुछ आपां नै देवै उण नै माणो अर दूजा रै धन री चावना मत करो।"

ससार रो जहर उण बखत ही खतम हुवैलो जिण बखत आपां नै ओ बेरो पड़ जावै के संसार में जो कुछ है उण सब पर भगवान रो आवरण है। उण बखत इण री सुद्रता मिट जावैली अर इण रा बंधण आपां नै फांस नीं सकैला। एक बार जद आपां सगळा आनन्द भगवान रो वरदान मानकर ग्रहण कर लेवां तो छीना-झपटी खातर कोई जगां नीं बचैली। काम अर आणद री इण परमात्मा सूं जुड़्योड़ी भावना रो रुठाव भारत रै सामाजिक ढांचे री जड़ां मे है। इण भात ही भारत आत्मा नै मुगत करणै री चेस्टा करी।

यूरोप मे जिन्दगी दो टुकड़ां मे बंटियोड़ी है। एक सीधी लीक मैं उण सीमा तक लम्बो करणो होज है जठै पूगतां-पूगतां थक र कूंची पटक देवो। सीधो लीक नैं इण तरैं सूं लम्बो करण सूं कोई चितराम नीं बण सकै, न उण रो कोई रूप ही हुवै अर उण रो कोई मतळब भी नी हुवै। मेहनत एक तरीको जरूर है। ओ कोई अंत नी है। मेहनत सूं फायदो जरूर हुवै, फळ जरूर मिलै। तो भी यूरोप आदमी रै सामनै कोई पक्को धेय नीं धर्यो है,जिको मेहनत सूं मिल सकै। धन अर ज्ञान प्राप्त करण री कोई सीमा नीं है, पण यूरोप रो समाज लगातार प्राप्ती ऊपर होज जोर देवै। अर ओ भूल जावै के मनुस्यतारी सबसूं ऊंची भलाई जिको एक आदमी कर सकैलो अपणं आप रै जीवण नै पूर्ण बणाणं री ही है। इण तरै सूं उणां रै धेय रो अंत बीच में ही आजावै। वै कोरो उण रो पीछो ही करै अर उण नैं प्रास नीं कर सकै।

आपां भी ओ होज कैवां के इच्छा रो अन्त नीं हुवै। आ तो ज्यूं-ज्यूं प्र ति हुवै, त्यूं-त्यूं बढै। पुराणै जमानै रो भारत इण बात रो ओ जवाब देवतो हो के इण कायदै सूं एक बात छूट्याड़ी है। प्राप्ति करतां करतां प्राप्ति रो एक अंत भी पाया करै। ओ ससार कोरो इण तरैं सूं ही नी बणियो है के इच्छा रो कोई अंत होज नी आवै। जिण तरैं सूं इच्छा रो गीत गावतां गावतां बीच मे रुकणो खारो लागै, उण होज तरै सू उण री पूर्णता भी आनन्द-दायक हुवै।

दद इच्छा कमजोर हो जावै, तो म्हारी उण नैं म्हारणी ईजाद करयोड़ै तरीकै सूं पाछी ताकतवर करण री कोसीस करां । जद इन्द्रियां कमजोर पड़ जावै म्हां उणां नैं पाछी ताकतवर बणावण री कोसीस करां । जद म्हारी री पकड़ ढीली हो जावै उण बखत तक भी म्हां चीजां माथै कब्जो राखण री कोसीस करां । म्हां जीवण रा सबेरै अर दोपहर रै घमाघम वाळी सारै जीवण नैं भूलणै री कोसीस करां । अर जद इण री उमर म्हां रै माथै म्हारनै पड़ै, म्हां उण बखत निरास हो ज्यावां । म्हां जिण चीज सूं किणी भी तरै सूं नीं बच सकां, उण नैं भी कुदरती मानण सूं इनकार करां अर उण चीज नैं भी आदर समेत नीं आवण द्यां, जिको नैं आवणो होज है । म्हां उण चीज रै आवण रै मोकै तक बाट जोवां के सायद वा म्हारा हनै रम जावै । आवदोई फळरो नाको कमजोर पड़ ज्याया करै । उण रा गुद्दो नरम पड़ जावै । पण उण रो बीज आगलै जनम रो सामनो करण सारू मजबूत हा जावै । म्हां री उमर रै साथ जिका दीसता नुकसाण हुवै, वणां रै साथै-साथै आत्मिक फायदा भी हुया करै अर इण वास्तै अै फायदा उण री अनुमानित कोसीस ऊपर निर्भर करै, अर इण हीज कारण सूं अनुशासनहीण आदमी जिन्दगी नैं उण बखत भी छोडण सूं इनकार कर देवै के जिण बखत उण रो सरीर कमजोर पड़जावै, पग धुजण लाग जावै अर मरियां पछै भी वो आपरी इच्छा नैं संसार रा कामां में लगावणी चावै । संसार रो इतो मोह त्यागणो, म्हां रै देस मे भी गरब री बात समझण लाग गया है । पण इण में मनै तो कोई गरब हाळी चीज नीं लागै । म्हां नै त्याग करणो चाईजै अर प्राप्ति करणो चाईजै । ओ हीज आध्यात्मिक संसार रो साच है । फूल नैं फळीजण रै वास्तै आपरी पांखड़ियां नैं खतम करणी पड़ै, दरसल रै पुनरजनम रै वास्तै फळ नैं भी पड़णो पड़ै । बाबर रै सरीर नैं भी दिमाग रै विकास खातर गरभ रो आसरो छोडणो पड़ै । पछै ओ आपरै छोटै दायरै सूं बारै निकळै, जिकै सू उण रा सम्बन्ध बधै । इण रै पछै सरीर रो पतन आवै । अनुभव वाळै मिनख नैं उण बखत जिन्दगी रै वास्तै इण छोटै जीवण नैं छोड देवणो चाईजै छोड़तो बखत आपरै भेळो करयोड़ै धन रो दान कर देवणो चाईजै, अर आपरै जीव नैं अनन्त जीवण सूं जोड़ लेवणो चाईजै । इण सूं जद सरीर रै पतन रो आखरो पल आवै, तो आतमा नैं ओ सम्बन्ध विच्छेद साधारण लागै अर आतमा इण सरीर नैं अन त मे पुनरजनम लेवण री इच्छा लेयर सोरो-सोरो छोड सकै । एक मिनख सूं जात जात सूं संसार अर संसार सूं अनन्त—इण हीज तरै सूं आतमा रो विकास हुवै ।

इण बात नैं ध्यान में राखतां हुयां म्हांरा रै देस रा लोग जीवण र पैलै भाग मे कोरी पोथियां पढ़ण रो हो नीं कैयो, पण वै इण बखत ब्रह्मचर्य रो पाळण अर

अनुशासन रो पाळण भी राख्यो जिण सूं के एक पवके चरित्र वाळै मिनख र वस्तं मांग अर त्याग दोनूं आसान हो जाता। जिन्दगी परमात्मा री प्राप्ति रै वास्तै करण वाळी तीरथ जात्रा है। जीवण आत्मा रै तप रूपी करण रो वचन है। इण निवेदन सूं कदेई आदर सूं अर कदेई सावधानी सूं कमतरन करणो पड़ै अर उण वक्त आ बात चेलां नै शुरू सूं ही ध्यान में राखणी पड़ती ही।

शरीर री बारली अर मांयली ताकत री समन्वय आपै ही होवतो रैवै। पण मिनख रो दिमाग इण काम में विघ्न डाळै क्यूं के बो हाल ताई भी तरै-तरै रा प्रयोग करणा चावै अर जद तक सांसारिक नियमां सूं उण रो सम्बन्ध नीं हो जावै, उण वखत तक उण आदमी रै मांयं तरै-तरै री तकलीफां आ सकै। मिसाल रै तौर पर—पेट तो भरीजग्यो हुवै पण नियत नीं भरीजै। इण वास्तै बो पेट अर जीभ मार्थ दबाव गेरकर अर उणां रै पुराणै समन्वय नै पीछै सरका कर तकलीफ रो कारण पैदा कर देवै।

जद एक वार दिमाग वास्तविक जरूरत सूं आगै निकळ जावै तो आ जरूरी नीं है के बो कोई भी सीमा माथै रुकै। जिण तरै सूं घी गेरया सूं आग और भड़कै, उणीज तरियां सूं भोग भोगियां पछै इच्छा और तीव्र हुवै। इण वास्तै दिमाग नै शुरू सूं ही कुदरती बधण में राखण री कोसीस करणी चाईजै। इण रो मतलब ओ हुयो के आपां इच्छावां नै जचै ज्यूं बधण देवांला तो वै परमात्मा अर सांच सूं सम्बन्ध तोड़णो सीखा सकै है।

शिक्षा रै इण अर्थ रै पछै सांसारिक जीवण रो वखत आवै। आगै रो लिखिया मनु आ बात कयी है के संसार सूं अळगा रैयनै खुद रो सुधार नीं हो सकै।—तो इ रै कामां नै अक्कल सूं करियां होज हुवैलो। इण रो सार ओ है के जीवण नै अच्छी सूं बितायां बिना पूर्ण नीं हो सकै अर बिना सोच्यां समझ्यां उपदेश मानणो भी अनुशासन नीं है। ओ तो कोरी रीत नै मानणो है जिको सिर्फ अज्ञानी रो काम है।

जद इच्छा खुद रै माथै संयम करणो सीख जावै तो काम सोरो हुवै। उण वखत होज गिरस्थ-आश्रम आत्मोन्नति रै मारग रो रोड़ो नीं रैयनै मनख कल्याण रो केन्द्र बण जावै। जद आदमी निस्वार्थ भाव सूं काम करण लाग जा उण वखत उण री जिम्मेवारियां भी उण री आत्मा री स्वतन्त्रता में कमी नीं ला सकै।

जिन्दगी रो दूजो आश्रम : इण तरै सूं पछै जिण वखत शरीर री ताकत में क होवण लागजावै, उण वखत ओ समझ लेणो चाईजै के अन्त नेड़ो आ रयो है। नौकरी का

रो इच्छा वाळै चाकर नै जिण तरै सूं नोकरी खतम हुवण रो समाचार खारो लागै, उण तरै सूं इण नै नीं लेवणो चाईजै, पण्वी वधण रै समाचार ज्यूं लेवणो चाईजै। सरीर री ताकत दिखावण रा पर सावधान इन्द्रयां पर तीव्र इच्छावां रा अखाडा अब लारै छोड देणा चाईजै। धान कट चुक्यो है, भेळा हो चुक्यो है, अर सांझ पड चुकी है — इण रो मतळब ओ है के अब काम खतम कराकर घर चालण रो वखत आ चुक्या है जठै के आपां नै सान्ति मिलैली। क्यूं के आपा इण सुख रै घर रै वास्तै आखी 'जिन्दगी भर कोसीस भी तो करी ही। उण खुसी सूं हीज आपां आया हां अर उण खुसी सूं हीज आपां पाछा जावाला। नीं तो किण वास्तै आपा मेहनत कर र पसीन बहायो है ?

गरभ सूं बारै आयां पछै टाबर नै थोडा दिन मा रै नेडा रैवणा पडै जद तक के उण नै उण नवै वातावरण रो अभ्यास नीं हो जावै। जीवण री तीसरी अवस्था में इण ही तरै सूं आदमी संसार नै छोडणं पर भी ससार सूं सम्बन्ध राखै। आ ससार नै आपरो भेळो करयोडो ग्यान देवतो रैवै। जिण तरै सू पक कर पड्योडा फळ लोगां नै भोजन देवै जद ताई क उण र बीज नै आछो जीवण सुरू करण सारू रेत नी मिल जावै। इण रै ग्यान रो मेह सगळा रै माथै बरसै क्यूं के बा निस्वार्थ अर त्याग रै वायुमण्डळ मे होकर आवै।

पछै आखिर एक दिन इसो भी आवै जद कै इण तरै रा स्वतन्त्र सम्बन्ध भी खतम हो जावणा चाईजै। अर इण तरै सूं संसार सूं मुगत हुयोडी आत्मा, परमात्मा सूं साक्षात्कार करण वास्तै तैयार हो जावै। इण तरै सूं ही आदमी, पग-पग माथै मौत सूं नी डर कर अर अंत मे उण सूं हार नी मानकर वास्तविक जीवण जिता सकै।

इण च्यार तरै रा मारग सूं भारत रा आदमा ब्रह्माण्ड रै सुर मे सुर मिलाकर गीत गाया जिण सूं के अतृप्त इच्छावां विनास रै मारग माथै नी जाय कर परमात्मा सूं लौ लगाई।

. देस-भक्ति, उदारता या और कोई बडै नांव रो चाये जिको रस्तो आपां पकडा, बै आपां नै पूर्ण तांई नी पुगा सकै पर आपा नै काम करतो बेळा इण तरै सूं मझधार में एकाएक छोड देवै के आपां रै काना मे पछै कांई, पछै कांई री आवाज जोर जोर सू गूंजण लाग जावै।

अब सवाल यो पैदा हुवै के एक देस रा सगळा लोगां नै इण तरै रै जीवण मे ढाळणो कठै तक सम्भव है। मैं इण बात रो ओ जवाब देवूं हूँ के जिण वखत दियै री बाती अगै तो लोग सवै के पूरो दीयो बळ रयो है। जीवण रो ध्येय भी थोडा इण्या-

गिण्या ऊंची आत्मा वाळां में हीज वहाण रा होय चमकै। जे कोई देस रै कां रै ध्येय नै महसूस करण में थोड़ा-सा लोग सफळ हो ज्यावै, तो वो आपरो उण देस रा सारा लोगां रो है। जे कदेई भारत में कोई दिन इण तरै रो आई के इण र ज्यूं लोग दूजां चीजां सूं सोच अर भलाई नै ऊंची समझै अर आपरै सुख रै जीवण नै इण रै सूं बितावण लागै, तो बै सगळा रा ताकत अर सगळा री कोसीस नै नयो मोड़ दे देवै।

एक इण तरै रो भी वखत हो, जिण वखत पुराणै भारत रा बड़ा दार्शनिक आपरो जीवण परमात्मा सूं लौ लगाकर परमार्थ में इण तरै सूं बितावता के उणांरि आत्मा कोरै धरम में ही लौ लाग्योड़ी रैती उण वखत एकली मैत्रेयी ही नी कैयो के, "मैं उण चीज रो काई करूं जिको मनै अमर कोनी" पण सारो देस उण रै सारै आवाज लगा र आ बात कैई। जे आपां आ समझां के आपां रै देस में आ आवाज पूरी तरियां सूं खतम हो चुकी है, तो आपां नै परदेसी रै सामनै हारणै सिवाय और क्यूं ही रास्तो नीं है। मर्‌योड़ी चीज नै पाछी जिवावण री कोसीस करण सूं तो पां हीज चोखी रैसी।

पण आ तो एक इण तरै री चीज है जिकी आसा मान नी सकां। गारै सूं आपां रो कितणो ही पतन हुयोड़ो दीसतो हुवै, पण फेर भी आपां में थोड़ो सो जीवण बचो है, जिको परमात्मा रै अलावा कोई दूजी चीज नै सब सूं मोटो फायदो नीं मानै। आज भी जद कदेई कोई ऊंची आत्मा ऊंची बात बतावै, तो सारा लोग संसार री तुच्छ बातां सूं ऊपर उठ कर उण रो जवाब देवै। जिण वखत आपां धन रै देवता कुबेर री भक्ती करण में आपस में होड लगावां उण वखत भी आपां री सच्ची आत्मा रो मरण नीं हुवै।

आजकल आपणै जलसां में सहनाइयां रै सागै प दंसी ढग रो पीतळ रो बाजो भी मंगावां अर दोनुवां रै बाजणै सूं खूब हाको हुवै, पण इण सारै हाकै रै बावजूद भी भारतीय बाजै री धुन समझदार रै कानां में जरूर पड़ै। लोगां रै घरां में परदेसी ढग रा ढोल अर बाजा धनवानां रै गरब अर फैसन री चीज बण गई है, पण कानां नै फोड़ण वाळो ओ हाको भी आपां री आत्मा रै एकान्त में घुस कर आपां रै मन नै जिकी खुसी है उण नै कम नीं कर सकै। आपां चाये जिते जोर सूं भलाई यूरोप रै राजकाज समाज री रीतियां अर व्योपार रा तरीका रा गुण गावां, पण बै आपां री जरूरतां नै पूरी नीं कर सकै। बै आपां रै मन में जिको उच्चता रो आदर्स आज भी जीवतो है उणनै दुख देवै अर आपांरी आत्मा उणां रै विरोध में बोलै।

आपां बजार में भेळी हुयोड़ी भीड़ नीं हां जिकी एक दूजै नै गंवारी री तरियां

धक्का देवै, छोटी बातां पर लड़ै अर खूब बढ़ाय चढ़ाय कर अपणी आपरी बड़ाई करै। भो तो कोरो नकल अर पाखंड करणो है। इण में कोई स्वान अर नम्रता नीं है। भापां रै मायं लोगां नैं विस्वास करावण वाळै समै रो असर भायो उण रै पैली आपां रै मांय नैं एक महानता ही जिण रै ऊपर सादा जीवण अर गरीबी रो असर नीं हुवतो। बो भापा रो इण तरै रो बखत हो जिको अपमान अर संसार रै परिवर्तन सूं भापां री रक्षा करतो। उण रक्षक रै चलै जावण सूं बचाव रै वास्तै झूठ अर धोखे री ओट लेवणी पड़ी। महानता एक ऊपरली अर दिखावै री चीज होगी है। आपां नैं इण रै साज सामान वास्तै परदेसी दुकानां में भटकणो पड़्यो पण वै पूरी तरै सूं भेळी नीं हो सकी। उणां रै लारै भागणै में जिकी फालतू, उत्तेजना मिलै उणनै आपां खुसी समझ बैठ्या हां। पण बा आपां नै परदेसी रो पक्को गुलाम बणा दियो है।

पण भो भी आपां री आतमा नैं पूरा तरियां सूं नीं रंग सक्यो है। अर इणी वास्तै भा इतणी दिखावै री चीज बण्योड़ी है। अर आपां इण रा पूरी तरै सूं अभ्यासी नीं होवण रै कारण अबोध अर अनाड़ी री तरियां अठीनै बठीनै हाथ मारां।

मन्नै हाल भी भो विस्वास है के जे कोई सांचा मिनख आपां रै मांयं भा बात कैवण लाग जावै के आ वावळी होड़ भो छिणभंगुर धन, अर आ निरर्थक उत्तेजना ही आपां रै वास्तै सब सूं चोखी कोनी के हर ढंग री प्रवृतियां रो कुदरती अंत हुवै क भंत समै नै सुधारणो आपणो आखरी धेय है, अर उण सर्वसक्तिमान सूं सब छोटा अर व्यर्थ है, तो भो संदेसो बजार रै हाकां नै पार कर के भी आपां रा मन तक उतर जावेला, अर आपां रै मन सूं भा आवाज निकळैली के आ हीज सांची चीज है। उण बखत आपां रै दिमाग सूं खून सूं रंगी राष्ट्रीयता री सान रा अर आपसा होड़ रा फायदा स्कूलां में पढ्योड़ा पाठ बारै निकळ जावैला अर फौजां री मान अर बळ सेना रो जस आपां रै ऊपर कोई असर नी कर सकैलो।

मैं भो नी मानूं के ऊपर ले आवण री चीजां रो चोखापण जगां रै साथै बदळ जावै। मानी के कोई खास जगां मे ही वै चोखी नीं रैवै। भा चीज चोखी कोनी है के वे आपां कमजोर हां तो आपां नैं नरमी रो आसरो लेवणो चाईजै या आपां नै आपां री गरीबी छिपावण रै वास्तै हादसी रा चोगो पैरणो चाईजै। ससार रा मोटा लोगां रा उपदेसां नै बरतण रै वास्तै घणो हिम्मत री जरूरत हुवै।

होड़ रा फायदा अर मिनखां रै मांस पर पळण वाळी भूखी राष्ट्रीयता सूं होवण वाळी हत्यावां रा स्कूलां में पढ्योड़ा पाठां नैं सांवत करणै में जिण टिकाऊ हिम्मत, पूरी सिक्षा अर बळिदान री ताकत री जरूरत है, उण सूं बेसी संसार रा मोटा मिनखां रा उपदेसां नै मानण में हुवै।

किसोर प्रवस्था में उण सांसारिक जीवण री त्यारी करणी जिण मे आतमा नै आत्मत्याग अर अनुसासन सूं पूर्णता ताईं पुगणो है, अर सारीरिक अस्तित्व रै अन्त में तारीफ सूं परै रो पाणणो खोजणो है—ही पूरं मतळब नै प्राप्त करणै रो एक मात्र रस्तो है।

जे आपां इण में विस्वास करां तो आपां नैं श्रो भी जाण लेणो चाईजै कै सारे लोगां नै इण रै वास्तै पूरी कोसीस करणी चाईजै। पछै धन रो भाग अर राष्ट्र री ताकत बस में हो जावै अर आतमा आप री जीत रा ढोल बजावै अर खुद नैं स्वतन्त्र कर लेवै। उण रो काम पूरो हो जावै।

जे श्रो नीं हुयो अर आदमी लाखां दुसमणां नै मारणो अस्त्र भी बणा लियो, आप रै सरीर नैं लाखां बरसां तांई राखण री जड़ी भी खोजली, अर आपरै बेसुमार फायदै रो स्रोत भी उण नैं लादग्यो तो—पछै कांई ? पछै कांई ?

"कुहरै सूं ढकयोड़ै भाखर री दीसती हार उण पर कोई असर, कोनी करै।

—रवीन्द्र नाथ टैगोर

o

सभापति रो भासण

मनैं म्रा कैवणरा जरूरत कोनी के मैं इण राष्ट्रीय सभा रो सभापति हुवण रै काबिल कोनी। कोई तो इसै म्रादर नै म्रासान काम समझै, पण कई इण नैं मोटो भार समझै। म्रणसमझ नैं मूं'वे म्रोहदै पर बैठाणो उणरी हतक करण रो म्रेक दूजो तरीको है।

म्रौर कोई बखत होतो तो मैं इण जुम्मेवारी सूं न्यारो रैवण री पूरी कोसीस करतो, पण म्रबार तो म्रापा री हालत उण म्रादमी जिसी है जिको पाणी मे तो मगरमच्छ म्रर धरती पर ना'र रै बीच में घिर्‌योड़ो है। म्राज म्रापणै घर में तो फूट है म्रर बारलो खतरो बारणै पर खड़यो है। बारली ताकतां म्रापां नैं जमराजा री तरियां धमकारी है म्रर उण नैं सान्ति सूं बरदास्त करणो म्रापणै वास्तै घणो दोरो काम होग्यो है। मैं इण नैं भलीभात समझूं हूं के म्राज रै दिन सभापति रा म्रासण कोई म्राराम करण रा जगां कोनी। या भी हो सकै है के या कोई खास म्रादर री जगां ही नहीं हुवै। निरादर म्रर दीनता रा बादळ म्रापणै पर घिर्‌योड़ा है। इसै बखत पर, या बात कह र के "मनैं तो सरम म्रावै" म्रापरो हुकम म्रदूळो म्हारै सूं हुई कोनी।

मैं या भी जाणूं के कोई मौकै पर नलायक भी लायक बण जावै। म्राज ताई मैं म्रापां रै राजनीतिक जीवण में जगां बणावण री चेस्टा कोनी करी ही। इण सूं ही म्हारी कमियां म्रर नासमझी रो बेरो पट सकै। इण कमी रै कारण ही मैं सगळा दळां सूं दूर रयो, म्रर सायद इण कारण सूं ही म्राप लोग मनैं चुण्यो। मैं तो सगळां सूं सीधो सादो हूं, जिकै सूं सभापति रै मूं'वे म्रोहदै पर बैठणै लायक कोनी।

सायद इण कारण ही के मैं कोई खास दळ रै भेळो कोनी। मैं राष्ट्रीय महासभा रै लारलै बरसै में जिको झगड़ो हुयो उण नैं निलिप्त भाव सूं दूर सूं ही देख र्‌यो। जिको पर उण घटना रो सीधो म्रसर पड़्यो, वै इण पर म्रकरत सूं ज्यादा ध्यान देवै म्रर इण बात सूं घबरायोड़ा रैवै के उण सूं भी खराब बात फेर नहीं हो जावै। पण कोनी बात नैं याद राखणो म्रापरो ओ दुखाणो है, क्यूं के जद मूंछां बडोड़ी टूटै तो उण रा टुकड़ा हमेसा रै वास्तै न्यारा हो जावै, पण हड्‌यो कंग तो घंवणै सूं चोखो

तरियां पर तेजी सूं बधै। जिण तरियां सरीर रा घाव धीरै ही भर जावै, उणी भांत आपां नै महासभा रा घाव भर लेणा चाहीजै। भरयोड़ो घाव ही आपणी दुरसा कोसीसरो निसाणी बणसी, पण आपां नै इण बात सूं जिकी सीख मिली, उण नै नम्रता सूं मान लेणी चाहीजै।

इण सीख रो सार यो है कै आपां नै आपणै काम री योजनावां में जिकी अनेकता अर जिको आंतरो है, उणी नै मट मान लेणा चाहीजै। जीवण रा उण अलग रूपां नै उपड़ता देख र भी आपां नै धीरज नहीं खोणो चाहीजै, जिको रो आपणी बेहोसी रै बखत री जड़ एकरूपता सूं कोई मेळ कोनी। आपां नै जिकी चीज पसंद कोनी उण नै जोर जबरदस्ती सूं दबावणी नहीं चाहीजै, अर आपणो विरोध करणवाळी चीज नै ताकत सूं खतम करणं री भी कोसीस नहीं करणो चाहीजै। इसा बखत भी आवै जद आपां नै विजय करण री मानसा रो दमन करणो जरूरी हुवै। आपां नै कोरी विरोधियां नै जगा देवणरी ही जरूरत नीं है, पण आपां रै काम करण रै तरीकै में भी सुधार करणो जरूरी है, जिकै सूं आपणो संघ महान बण सकै। जे आपां इण तरै री सीख रो फायदो नीं उठायो तो सुराज रो नारो फालतू जासी।

सुतन्त्र देस में विरोध रो दमन नीं हुवै। उठै हरेक सलाह नैं जगा मिलै। विरोध री खींच-ताण सूं ही हरेक चीज पक्की हुवै अर उण रै फळ रो बेरो पटै। मजदूर अर समाजवादी दळां रो ध्येय यूरोप में पूरी सामाजिक क्रांति करणै रो है, पण इसा दळां नैं भी बांरी लोकसभावां में जगा मिलै।

न्यारा न्यारा राजनैतिक दळां रा प्रतिनिधियां रो आपस में मेळ राखणं में काईं भेद है? बांरा आपस रा बखेड़ा में देस रा टुकड़ा-टुकड़ा क्यूं नीं हो जावै? इण रो कारण यो है के बांरै चरित्र में अनुसासन रम्योड़ो है जिकै सूं बै लोग कानून री इज्जत करै। मनसा होतां हुयां भी बै लोग कानून नैं खूंटी पर टांग र चीजां नै खोसण री कोसीस नीं करै। कायदै नै मानतां थकां धीरै-धीरै विजय करण रो धीरज बांमें है। बांरो आत्मसंयम ही बांरी ताकत रो सबूत है। यो ही कारण है के बै लोग आपस में बहस ही ढंग सूं नीं कर सकै, बल्कि मोटा-मोटा राजां रो सामणो भी कर सकै। कई बार तो विरोधी लोग ही नीं, आपसरी में झगड़ण वाळा लोग भी इण काम रै वास्तै मेळ री भावना बरतै।

इण महासभा नैं कोई राज या बादसाही नीं चलाणी है। आपणै देस रा पढ्या लिख्या लोग मिल र देस में जाग्रति फैलावण सारू अर देस री इच्छा नैं मजबूत बणावण सारू या महासभा बणाई है। आपां रो ध्येय यो है के धीरै-धीरै आजादी री

छा जड़ पकड़ लेवै अर लोग इण तरै सूं काम करै के आजादी हासिल करणो समव सकै। जे आपा खास-खास आदमियाँ री खास मोटै काम रै वास्तै बणायोड़ी इण हासभा में भी न्यारी-न्यारी विचार धारावां रा लोगां नैं सहन नीं करोला, अर वां नैं म करण रो मोको नीं देवांला, तो या चीज आपणी कमी रो ही दिखावो करसी।

आपा लोग हाल ताई महासभा अर इण जलसै रै वास्तै प्रतिनिधि चुणण रै स्तै कोई कायदा नी बणाया हाँ। जिन्नै, लोग बेपरवाह हा, महासभा में एकमतो हो, के आपणी राजनैतिक उमंगां में कोई विरोध कोनी हो। इसी हालत में विधान री जरूरत कोनी ही। अबार लोग जागग्या है अर वां नैं देस री सेवा कानी मोड़ना है। वास्तै प्रतिनिधियां रै चुणाव में लोगां री रजामंदी री जरूरत है। असल में कोरा तिनिधियां रै चुणाव रा ही नीं, बलिक इण महासभा अर इण जलसै नैं चलावण रै स्त भी कायदा कानून बणाणै रो बखत आ चुक्यो है।

जे यो काम नीं कर्‌यो गयो अर न्यारा-न्यारा दळ विरोध सूं बचण रै वास्तै त-जात री न्यारी सस्थावां बणावणी सरू करदी, तो इण महासभा रो महत्व जातो डी। या महासभा तो सारै देसरी सबसूं आला सस्था रै रूप में ही रह सकै। जे आपां नैं सगठित राखण री इण री प्रतिग्या नैं पहलै विरोध सु होज न्यारी पटक देवांला, इण रा सदस्य वधावण रो कोई मतळब कोनी रैसी।

आपा बग-भग नैं रोकण रै वास्तै घणी मेहनत करी है। आपां नैं उण सूं घणो मेहनत आपणैं मायलै विभाजन नैं रोकण वास्तै करणी चाहीजै। उण आदमी , जिको परदेसी रै सामै कमजोरी दिखावै, आपरा रिस्तैदारां सूं अकड़ र आपरै अहकार पूर्ति मत करण देवा। बारलै आदमी रो कर्‌योड़ो बटवारो माफ कर देवै, पण खुद कर्‌योड़ो विभाजन तो पाप है। इसै पाप रो अनुभव उण नैं सहन कर्‌यां ही हो कै।

इण बखत तो आपां अपणैं आप नैं भूलण रो गळती नीं कर सका क्यूंके आपा आजादी री खातर चेस्टा कर रया हा। जे आपां आपणैं ध्येय सूं न्यारा करण वाळी ीजां रै लालच में आ जावांला तो आपणी सारी कोसीस अकारथ जावैली। मैं आप ोगां सूं क्रोध नैं दी जावण री अरज करूं हूं क्यूं के क्रोध में आदमी खुद रा आया ाथै ही हाथ उठा देवै। इण भांत रो विरोध पैदा करण वाळा आपणा रिस्तैदारा नैं ापां नै माफ कर देणा चाहाजै। आपां नै सारा विरोधां नैं भूल जाणा चाहीजै क्यू के ण आग सूं आपणैं घर नै ही खतरो पैदा होग्यो है। इसै बखत में जे दो दळ आपस में ड़ैला तो इण सूं बनी मूरखता री कोई बात नीं हो सकै।

बटवारै री तरवार आपणै देस पर लटकरी है। कई सौ बरसां सूं आ ही आ हिन्दू अर मुसळमानां रो पाळण-पोसण करती आई है, पण आज भी आपां एक दूजै सूं कितां दूर हां। जद तांई आपां आपणैं चरित्र रा दोस नीं मेटांला, तद तांई आपणै राजनैतिक जीवण में पग-पग पर मुसकलां आवैली अर आपणी भागीरथ कोसीस रो कांई फळ नीं निकळैलो। आपां नैं हिन्दू-मुसळमानां में फूट गेरण री बारली कोसीस सूं डरणैं री जरूरत कोनी। जे आपां मांयला विरोधां नैं जीत लेवांला, तो फूट गेरण वाळी बारली कोसीसां पर हास सकांला। इण मांतरी कोसीसां बखत पा'र खतम हो जावैली। सरकार रै कनै भी इण लाय में नाखण जितरो बळीतो को हैनीं। पर बै हुवै भी तो एक दिन इसो आवैलो के सरकार नैं इण लाय नैं निरबुझ करण री कोसीस करणी पड़ैली, क्यूं के जे जनता रा घर बळण लाग जावै तो एक न एक दिन महलां में भी लाय लाग जावै।

आ साची बात है के आज री सरकार हिंदुवां नैं दबावण रै वास्तै मुसळमानां पर जादा ध्यान देवै है। जे कदे मुसळमानां री समझ में आ बात आगी तो सरकार नैं भी इण रो बुरो फळ भुगतणो पड़सी। कुदरती भूख री एक हद हुवै। जीवण री जरूरतां री भी हद हुवै, पण लाळ री कोई हद कोनी हुवै। जिण नैं मनभावतो भोजन देवां उण नैं संतोस नीं हुवै। आ तो फूट्योड़ी मटकी में पाणी भरणै रो सो काम है। जितो भरो जितो ही खाली दीसै।

पण आपां नैं थोड़ी देर वास्तै इण में भी फायदो देखणै री कोसीस करणी चाहीजै। सुरू सूं ही हिन्दू लोग अंग्रेजी पढणै पर जादा ध्यान दियो। इण रो फळ औ हुयो के सरकारी नौकरियां में हिन्दू जादा भर्‌या गया जिण सूं आपां रै बीच एक खाई खुदगी। जितै आ खाई नीं भरी जावै आपसरो मेळ मुसकल है। ईतौ री आ भींत आपां रै बीच हमेसा रैवैली। जे सरकारी नौकरियां में मुसळमानां री तादाद भी इण री हो जावै, तो आपां दोनूं बरोबरी सूं मिल सकांला। इण वास्तै आपां नैं साचै मनसूं आ प्रार्थना करणी चाहीजै के सरकार सूं जिका फायदा आपां आज तांई उठाया हां, बै आपणा मुसळमान भायां नैं भी इण सूं मिलै। हर एक बात री एक हद हुवै पर आ जादा मामूली हद सूं भर्‌या कोनी जावै। बां नैं पछै मालूम पड़सी के ताकत रै सिर कांईक भी हुवै अर संगठण बिना ताकत नीं हुवै। उण बखत बै आ बात महसूस करसी के जिण देस में बै पैदा हुया है, बण रै संगठण नैं तोड़णो उणां रै बास्तै भी खिलाफ है। उण बखत बां री समझ में आ बात आ जासी के कुदरत री खिलाफ सूं स्वारथ भी सिध नीं हो सकै। उण बखत आपां दोनूं भाई-भाई री तरै सूं हाथ में हाथ दे'र आजादी री लड़ाई लड़सां। हिन्दू अर मुसळमान भारत री दो आंख है। दोनां रो एक मजबूत राजनैतिक संगठण बणावण सारू आपां नैं आत्मबळ,

बळिदान अर सबर दिखावण री जरूरत पड़सी । इसे बखत मे धरम अर सहज बुध नैं मिल र ओ कँवणो चाहीजै के देस रा जिका नया सगठण बणे, बै देस रा टुकड़ा करण वाळा नीं दीखणा चाहीजै । बै इण देस रा नया ताकतवर हाथ-पग हुवै ज्यूं अर देस री राजनैतिक चेतना रै रूप रै आकार ज्यूं दीखणा चाहीजै ।

जद कदेई पुराणै दळ में सूं एक नयो दळ बणै तो लोग उण नैं बिना बुलायाँ आवण वाळो समझणै री गळती कर देवै । आपां इण नैं नीं जाणां, इण वास्तै इण रो विरोध कर देवां अर आ बात भूल जावां के इण रो बणनो तो कोई भी हालत में रुकणवाळो नीं हो । इणी तरै सूं नयो दळ भी आपरी सत्ता नैं जमावण री कोसीस करै. इण वास्तै आपां इण नैं हमलावर समझां अर आपसरी रिस्ता नैं भूल जावा ।

आ बात निस्चै है कि जिण तरै सूं बीज रै मांय नैं सूं जडा जोर लगा र बारै निकळ आवै, उणीज तरै नयो दळ भी अड़चनां अर विरोधां रै होतां हुयां भी बधतो जावै । ओ दळ पुराणै दळ रै वातावरण सूं मा ही मां जुड्यो रैवै । दळ भले ई नयो हुवै, पण इण रा आदमी तो आपणा ही है, इण वास्तै ओ दळ भी आपणो ही है । आपणो उणा सू विरोध भले ही हुवो, पण आपां नैं उणां नैं छाती सूं लगा र कांधै सूं कांधो ओड़ कर देस री सेवा मे जुट जाणो चाहीजै ।

आजकाल आ बात अकसर सुणन में आवै के आपां रै देस में एक इसो उग्र दळ है जिको सीमावां नैं नीं मानैं । मैं आ जाणनी चाहूं हूँ के इसो दळ कठै है, अर देस रो सबसूं बड़ो उग्रवादी कुण है । उग्रपणैरो ओ नेम है के जे एक कानी सूं ज्यादती हुवण लाग जावै, तो दूजै कानी सूं भी ज्यादती करा देवै । बग भग रो दुख इण सूं पैलां लोग कदे भी कोनी महसूस कर्यो । प्रजा रै दुख सूं सासक लोग कोरा बेपरवा ही नहीं रया, बै लोग क्रूर अर जालिम भी होग्या हा । जिण बखत लार्ड मारले स्टेट रा सचालक बण्या हा, उण बखत भारत रा लोग राजी हुया हा, पण बै भी सात समदर पार सूं ओ समाचार भेज्यो के "जो होग्यो सो होग्यो, अब उण मे कोई हेर-फेर कोनी हो सकै ।"

बग-भग अर लोगां री तकलीफां नैं उदासीन भाव सूं देखणो हद्द दरजै रो उग्र पथ है । इण सूं लोगा री भावना भड़कैली कोनी काईं ? इण रो असर कोरो सान्ती रो ही हुवैलो काईं ?

सरकार इण मामलै मे कुछ भी कोना कर्यो अर उण रो दमन चक्र दमन री सीव नैं लाँघ चुक्यो है । पाणी नैं हिलाया बिना बण्योड़ी लहरां नैं दबावण रै वास्तै बै पाणी नैं और घणै जोर सूं मार रया है । इण सूं बारी ताकत रो परचो भला ही मिलै पण उणा नैं अकलमद राजा कोई नीं कैवेनो । आपां कमजोर भले ही हां, पण

भगवान री दियोड़ी भाषा री मन माटी री भी बणायोड़ो है ही नहीं । आपणी पर की मोट री असर तो हुवै ही । जे सरकार इण नै गुस्ताखी समझै तो भलै ही समझ लेवै के आ उण री भड़कावणरी कार्रवाई रो इज नतीजो है । दो मैं दो जोड़्यां सूं च्यार हुवै । इण बात मे रीस करणी एक मूरखता है के वै च्यार क्यूं होग्या ।

आजकल एक कानी तो सासक नियमां रा बंधण तोड़ र लोगां नै जेळ में ठूंसे है, प्रजा पर दमन अर अत्याचार करै है, पर दूजै कानी प्रजा में इण रै उपरांत जोस री उफाण आरयो है । जिको गरमी लोगां री जीभ पर ही ही, आज वा उणां री हाडां मे भी रमगी । विद्रोह करण री जगां दमन रै सामी झुकणो ज्यादा खराब है । इण सूं भाषा नै कुछ आस लगावणी चाहीजै । इण रो मतळब ओ है के आपणी भावनाएं मरी नी है, पर सदियां सूं कुचळी जाणै रै उपरांत भी आपां में दरद नै अनुभव करणै री चेतना बाकी है ।

उग्रपथ री नीति नै चलावणियो कोई भी कोनी । कोई भी निस्चै सूं आ बात नीं कह सकै के आ नीति लोगां नै कठै ले जावैली । जिका लोग उग्रपंथी हो ज्यावै वै आपरी ताकत रो संचालण नीं कर सकै । इण नीति री सरूआत करणी तो सोरी है, पण इण नै रोकणी घणी दोरी है । आपणा सासक आ बात जाणै भी कोनी सोची ही के एक वार सरू कर्‌यां पछै उण नै इत्तो घणो अत्याचार करणो पड़ैलो । मैं इण बात पर भरोसो कर सकूं हूं के ऊपरला हाकम निचला हाकमां रा कर्‌योड़ा अत्याचारां सूं राजी कोनी । सरकार भी तो आखर मिनखां री ही बण्योड़ी है । जिका सासन करै वै भी तो हाड-मांस रा ही पूतळा है, अर उणां में भी सत्ता रो मद कम-बेसी मात्रा में हुवै ही । जद कोई जाणकार कोचवान घोड़ा री रास खैंचै तो घोड़ा माथो नीचो कर देवै, पण इण सूं राजा रै रथ री हबक थोड़ी ही हुवै । इसी बखत घोड़ां री टाप धीमी होज ज्यां, अर जे पाळा चालण वाळा नाकै रस्तो दे देवै तो फेट लागण री खतरो नीं हुवै । जिण बखत मोटा हाकम राज री बागडोर ढीली छोड देवै, तो निचला कारिंदा गैरजिम्मेवारी री धून घणी बेगा लाग जावै । उण बखत आ कोई नीं जाणै पुलिस या कुण बेकसूर आदमी, रो सिर फोड़ गेरै, अर किसो हाकम राज रै मर त्यावरो गळो भोम देवै ।

जे इसै वखत मे कुछ खास लोगां री खास इज्जत करी जावै तो वै आ जाण सकै के ओ लाड कितीक देर रो है । लोगां नै राज री कमजोरियां दीखण ला जावै अर सरकार नै खुद रा कियोड़ा कामां री सरम आवण लाग जावै । पछै सरक इसी कमियां पर पोतो फेरण री कोसीस में कमीसन बिठावै । लोगां पर अत्याचार का वाळो नै तो दुखी मान र माफ कर देवै अर असली दुखी लोगां नै भूठा बा बेईज्जत करै ।

जनता री तरफ सूं भी आ ही बात हुवै। लोग जद अति करण लाग जावै, तो उणां पर बंधण लगावणो मुसकल हो जावै। आपरै दळ री हिमक कारवाही रै कारण नेता भी भटक जावै अर इसी हालत में आ बात कहणी घणी मुसकल हो जावै के किसो या किसा नेता इण तरैरा कामां वास्तै जुम्मेवार है।

आपां नै एक इण बात रो भी ख्याल राखणो है के आपां नरम अर गरम दळ रो कोई भेद-भाव नीं बणायो हा। ओ भेद तो सासक ही खड़्यो करै। इण रा कोई खास नियम भी तो कोनी। ओ तो उण रै मन री इच्छा रै मुजब ही बणै।

इण वास्तै मैं आ बात फेर केवूं के देस मे उग्र पथ नांव रो कोई दळ कोनी जिण सूं सरकार नै सलटणो है। ओ तो राष्ट्रवादी आंदोलन रो ही एक रूप है जिको उतरा दिन ताईं रैवैलो जितरा दिन आज री सी हालत बणी रैवैलो। जे एक रूप में इण नै दबा दियो गयो, तो ओ दूजै रूप में प्रगटैलो। घणै सूं घणो थोड़ा दिन ताईं छिप्यो रह सकै है।

जद आपां कोई दिमागी चीज नै पसन्द नीं करां तो आ कह दिया करां के ओ कुछ खास लोगां री आळसाई रो नतीजो है। अठारवीं सदी म यूरोप रा लोग आ बात सोचण लागग्या हा के धरम नीवरी चीज कुछेक पादरियां री बणायोड़ी है, अर पादरियां रै सार्थं ही आ बुरी चीज भी खतम होजासी। हिंदुवां रा विरोधी भी इणी तरै कैवै के आ तो ब्राह्मणां रै ब्योपार री चीज है। जे ब्राह्मणां नै देस निकाळो दे दियो जावै तो भारत सूं हिंदूपणो भी खतम हो जावै। इणी भांत आपणा सासकां नै भी ओ वैम होग्यो दीसै के कुछ बदमास लोग कोई गुपत प्रयोगसाळा में उग्रपथ नांवरो विस्फोट तैयार कर रया है, अर थोड़ा सा खास-खास लोगां नै सजा देवण सूं आ तकलीफ मिट जासी।

(५)

उण काम वास्तै आ चीज ठीक हो सकै, पण असली समस्या तो आयन्नी है। आ आंख्यां सूं थोड़ी ही दीख सकै, इण नै तो समझणरी जरूरत है। जद कोई छिप्योड़ो तत्व चौड़ै आवै तो ओ होळै-होळै नीं आया करै। ओ तो आंधी आवै ज्यूं आवै, क्यूं के नालायक लोगां रै बसैई रै रूप मे ओ लोगां रै सामै आवै।

घूमण-फिरण अर सोचण-समझण रा चोखा साधनां सूं इतिहास अर चोखै साहित्य री पढाई सूं, अर इण महासभा री कोसीसां सूं लोग आ बात महसूस करण लाग जावै के आपां सगळा एक देस रा रैवासियां हां, दुख-सुख में आपणो लक्ष्य एक है, अर एकता रा बंधण मजबूत कर्‌यां ही आपणो सुधार हो सकैलो।

भाषा मे इण तरं रो जागरण भा रयो है । पण इण दिन भो कोरो दिमागी जागरण हो क्यूं के भाषा भो भनुभव कोनी कर्यो हो के भापाँ देस री सेवा में पूरो बळिदान नीं कर रया हां ।

सायद भा हालत घणा दिनां ताईं रैती, पण लार्ड कर्जन इण पड़दे नै घणी फुरती सूं उठायो के इना दिनां ताईं जिको चाज ढकयोड़ो हो, बा उघड़गी । जिण पल भो हुकम हुयो के बंगाल रा दो टुकड़ा कर दिया जावैला, तो भपूण घर भाइयां दानां सूं भो होक हाको हुयो के सारा बंगाली एक है । इण सूं पैलां भापां कदे ही भा महसूस कोनी कर्यो के बंगाल रा सगळा भंगां में इतो मेळ है ।

जद बंगाल रै बटवारै रो दुख सींव लांघग्यो, तो लोग इण दुख सूं छुटकारो पावण सारू बादसाह रै कनै भरज करी । उण बखत भापां नै भा ठा नीं ही के सासक सूं दया री भीख मांगण रै भलावा भौर भी कई रस्ता हो सकै है ।

कमजोरां नै नीं मिलणवाळी विदेसियां री दया भापां नै भी नीं मिली भापां उण भादमी री तरियां हा जिको भाखी उमर इण भोलै में ही सरकियो भी नहीं के बो गीगळो है, पण जद घर में लाय लागी तो उण नै मालूम हुयो के बो भी भाग सकै है । इणी तरै सूं भापां भी भावना मे भाय विदेसी चीजां रो बहिस्कार कर दियो हो ।

दूजी कई चीजां री तरैं सूं भा चीज भी भापां नै एक खास भनुभव सूं मिली । भापां नै भो भनुभव भी हुयो के भा चीज तो इण रै कारण सूं भी बडी है । इण सूं तो भापां नै घर घर ताकत दोनूं मिलै । इण सूं परदेसी सासक कोरा हैरान ही नीं हुवै, भापां री ताकत भी बढ़ै । इण सूं भौर कुछ भी कार्य नीं हुयो पण भापां नै एक खास री तो भनुभव हो ही ग्यो ।

इण ताकत रै एकाएक भनुभव सूं ही भापां में विसवास आग्यो । इण रै बिना बहिस्कार सूं होवण वाळी तकलीफां भापां सह नीं सकता हा । भाठ में इसी बरस्म बणगी सी निस्चा नीं हुवै । खास तौर सूं निकळै री भाठ तो इसी ताकत रै पावे सार दी बी गई ।

किसी ज्यादा तकलीफ भापां भाज देखांला उतणी ही ज्यादा भापां नै उण ताकत रो भनुभव हुवैलो । जितणी कठण परीक्षा भावणी हुवैलो, उतणी ही भापणी ताकत बढ़ैलो । बरस सूं कमावाळो भो घन भापां रै मन रो खजानो है भरै तो भा दीखै है के बरस रै लारां सूं भापणे मन पर किसी दुःख पड़ी है बा कदेई भी किसी । सड़ रो भौसर भू भूं, भा भी बण भड़गो रो भापणी भवस्था रो भडूत हुवैली । भो बत दुख भापणे सूं बेहरा हुयो है भर इण रै कारण सूं ठीक भापां दुखनै सह सकांला ।

जद मनै मा ठा पड़ी के साथ सूं मिल्योड़ै म्हारे में कितो वेग हुवै तो मनै घणो अचरज हुयो। तिरा दिनां सूं लोग मा कहता मा रया हा के ढोल री महनत रै अपमान अर सरकारी नौकरियां रै मोह सूं ही आपां दुख पावां हा। इण बात नैं जिको कोई भी सुणी, वो ठीक बताई, पण सरकारी नौकरी खातर अरजी जरूर देदी। आज बखत बदळग्यो है। मानवान रो टाबर भी आज कताई-बुणाई सोखणी चावै, अर बिरामण रो छोरो भी हळ चलावै। आपां नैं सुपने मे भी मा आस कोनी ही के आपणै समाज में आ बात हो सकैली। एक दलील सूं दूजी दलील नैं खतम नीं करी जा सकै। सदियां सूं चालता आवा पुराणा विस्वास एक सनाइ सूं ही नीं खतम हो सकै, पण जद एक अंधेरै ठांव में छोटै दीवै री ज्यूं साच रा दरसण हुवै तो सगळो अंधेरो भाग जावै।

पैला तो घर-घर मांग्यो मो देस रै नांव पर धन री जगां बेइज्जती ही मिलती। पर आज देस रै प्रचार पर आपणै देस रा लोग मा सोचण वास्तै मी नीं रया के काईं जरूरी है अर काईं नीं। खुद नै बळिदान करणै री भावना में जो कुछ उणां रै कनै हो सो देवण सारू आगै आया। पैली थोडा सा दूरदर्सी लोग ही राष्ट्रीय विद्यालय बणावण री सोच सकता हा, पण जद थोड़ी सी ताकत आई तो जाणै अकास रो फूल हाथ में पकड़्यो गयो। अबार ताईं बंगाल रा लोगां में मोटा कारखाना चलावण रो अनुभव अर सिक्षा कोनी हो, पण आज वै हो लोग कई मोटा कारखाना लगा लिया है, अर उणां नैं चला भी रया है भो ही नी, वै लोग कई छोटा-बडा कारखाना और लगावण री भी सोच रया है। जद एक बार राष्ट्रीय लक्ष्य री प्राप्ति होगी अर राष्ट्र री ताकत तकलीफां नैं जीतली, तो कई दूजा क्षेत्रा में भी पूर्णता प्राप्त करण री मनसा नै रोकणी असम्भव होग्यो है।

आपणी राष्ट्रीय ताकत रो परचो आपा नैं चाणचुकी ही मिल्यो। पण इण सूं आपा नैं आपणी एक मोटी कमी रो भी पतो लाग्यो के आपां रै कनै इण ताकत नै काम मे लेवण सारू कोई सगठण कोनी। आपां नैं आज मो ही दुख है के राष्ट्र री जिको ताकत बिखर री है, बा ही सही ढग सूं काम मे लेवण सूं राष्ट्र री ताकत रो पुख्ता स्रोत बणसी।

जद आपां खुद रै मांय नैं कोई कमी या अस्थिरता महसूस करां, तो आपां चिंता में पड़ जावां अर चिड़चिड़ा होवण लाग जावां। पण आपा इण नैं न तो लोगां नै समझा सकां अर न इण रो कोई इलाज ही कर सकां। इण तरै सू जद छोटा टाबर आपरी मा नै मारै तो मा आ बात समझ जावै के टाबर री आ रीस दिखावटी है। उण रीस रा खास कारण तो कोई मांयली तकलीफ है। एक मोटो-ताजो टाबर तकलीफ रा कारण मिटतां ही उण तकलीफ नै भूल जावै। इण तरै सूं जे आपां आपसरी में लड़ां

हां तो इण री कारण भी कोई धूं'धो दुज है। आपां इण मभी ताकत रै धनि जागरूक तो हां, पण इण नै काम में लेणी नी जाणां। थोथै संगठण री कमी सूं राष्ट्र री ताकत री फिजूलखरची आपां नैं दुख देवै है। ओ ही ज कारण है के आपां आपणा ही लोगां सूं बिगड़ रया हां।

आपां नै यो पतो लागग्यो है के एक दिन री कोमीस सूं भी, इण गरीब देस में जठै कमाई थोड़ी है अर परवार मोटा है, राष्ट्रीय कोम खातर पूरतो धन भेळो हो सकै। तो आपां किण तरै सूं या बात भूल सकां कै संगठन री कमी सूं हीण इण तरै री कोमीसां जिन्दगी भर चालण लायक कोनी बण सकै। या ही बात नहीं, इण तरै सूं भेळो कर्योड़ो धन किण भांत काम में लियो जावै यो तय करणो भी दोरो काम है। जद दूध नीं उतरै तो मां नैं घणी तकलीफ होवै। इण तरियां ही आपणो भेळो कर्योडो धन दुखदायी होग्यो है। इण देस रा लोग धन देवण खातर अर मुदकाम करण खातर घणा उतावळा है। वै लोग यो जाणनो चावै कै किण नै देवां अर कांई देवां। जे आपां लोगां नै सही रस्तो नहीं बतावाला, अर जे म्हारा काम उनट-पुलट ही हुवैला, तो या कोई बडी बात नहीं हुवैनी कि लोगां री ताकत आपसी झगड़ै में अकारथ जावण लाग जावै।

जद इसी बात होवै तो आपां मांसूं थोड़ा लोग तो या बात कैसी कै आपां नै अंगरेजां रै "कामन वैल्थ' में स्वसासन ले लेणो चाईजै, अर दूजा आ बात कैसी कै म्हे तो पूरी आजादी चावां जिणरो अंगरेजां सूं कोई लेणो देणो कोनी होवै। पण आपां या बात भूल जावां कै ओ तो कोरो बाचां री कसरत है। क्यूं के इणां रा देस तो आपां सूं इता दूर है, कै आपणी आजरी जिम्मेवारियां सूं वांरो कोई सबंध कोनी। जे परमात्मा आपणै सामनै आवै अर कैवै कै म्हारै एक हाथ में औपनिवेशिक स्वसासन है, अर दूजै में पूरी आजादी अर आपां नैं पूछै के किसी लेवणी चावो, तो उण बखत इण तरै रो फैसलो करणै वास्तै इण तरै सूं आपस में लड़णो वाजबी हो सकै। खेत जोतण सूं पैलां ही बटवारै रो मुकदमो करणो किसो अकलरो काम है!

चाये देस हो, चाये आदमी, आजादी वणारो आखरी ध्येय है। जिया म्हारै ग्रन्थां में लिख्योड़ो है कै मुसकलां आपणै सुभाव में ही हुवै अर आपां नैं काम कर उणांनैं दूर करणो चाईजै, इण ही ज तरै आजादी रै वास्तै री मुसकलां भांत-भांत रूपां में आपणै मांय घुस्योड़ी है। जे आपां वानै आपणा कामां सूं दूर नहीं करांला, तो कोरी बहस सूं तो वै मिटण सूं रही। बलेड़ै सूं तो वै बढसी ही। आजादी रै न्यारी-न्यारी किस्मां रै बारै में आपां साती सूं बहस कर सकां, अर आ भी सोच समझ सकां के सधारमक आजादी ज्यादा चोखी है या एका एक आजादी। पण चाहे संसार

हो या सुसासन, कोई भी काम करियां बिनां प्राणे सूं रयो। दोनूं विचारां वाळा लोगां नैं या बात जाण लेणी चाईजै के आपां रो खास काम, काम करणो है बहम करणो नईं। काम इसा करणा चाईजै जिण सूं देस री गरीबी बटवारो अर गिरी हालत दूर हुवै अर आपां नैं ताकत मिलै।

मैं एक पल रै वास्तै भी आ बात नईं सोच सकूं, कै आपां मे इण बात रै बारै मे कोई विरोध है कै देस री सेवा रो काई मतलब है अर आ किण तरै सूं करी जावै। आपणै काम रो ध्येय एक दम सूं कोई चीज प्राप्त करणो नीं है। अबार तो आपां नैं आपणी छिप्योड़ी ताकतां नैं काम में लेवण लायक बणावण री जरूरत है। जद ताकत ठीक ढग सूं काम मे ली जावै, तो घणा मनोवा काम हो सकै।

जे ताकत नैं काम में लियां बिना ही आपां ध्येय ताईं पूग जावां, तो बा भी आपणै वास्तै चोखो काम नीं हुवै। इण तरै सूं फळ कदे मिल्या भी नीं करै। दूजा रो मेहरबानी सूं कदे ही चोखी चीज नीं मिल सकै। आ तो आपणी ताकत सूं ही मिलै। इण नियम,रो कोई अपवाद नीं है। भगवान आपणो नास कर सके, पण जे आपां मिनख पणै सूं गिरजावां तो बो बीच मे पचायती करण नी आवै।

राज री भेंट अर आपणी ताकत मे जठै कोई मेळ नीं हुवै तो बा भेंट आपणै वास्तै खतरनाक बण जावै। जे पुलिस रा लोग ही धाड़ेती बण जावै, तो इण जुलम रो कोई इलाज ही कोनी। जे गाव री पचायत ही जासूसी करै, तो गाव रै वास्तै घणी चिंता री बात हुवै। राज जे एक जात रो ही पणो पख लेवे, तो लोगां म ईरसा फैलै। इण तरै री बातां नीं हो सकै जे आपणै मे पूरी ताकत हुवै। उण हालत मे आपां राज री कियोड़ी मत्ता नै झेल सकां अर उणरो भोग कर सकां। उण बखत इण बातां सूं गुलामी री सुरूआत भी कोनी होती।

इणरो मतलब नीं है कै आपां आपणै काम में सरकार री कोई मदद नीं ले सकां। इण रो मतलब तो भो है के आपां आपणै काम में पूरी ताकत सूं लाग जावां अर उणरै पछै ही चाहे जठै सूं मिलण वाळै सहारै नैं ले सकां, नीं तो आपणी हालत बातां में लिख्योड़ै उण मिनख जिसी हो जावैली जिको या बात जाणतां हुयां भी के बो काळी देवी नै भैंसै री बळी नीं दे सकै, उणरी मानता बोलदी. पर आखर जद देवी भैंसेरी बजाय एक टिड्डो लेवण तक री भी हां करली, तो बोल्या कै म देवो ! पो काम तो खुद ही करलै। इया ही आपा भी मोटी-मोटी बातां तो करां पण जद काम रो बखत आवै तो छोटी-छोटी जुम्मेवारियां सूं भी बचणै री चेस्टा करां। जे आपां आपणै काम नैं ईमानदारी सूं करां, तो आपां इण नै क्रोध, घमड या और कोई कारण सूं छिटकावां नीं। भारत मे अगरेजां रो राज है इण बात नैं आपां नींद मे भला ही भूल जावां पण जै काम करतो बखत इण नै भूला तो पग पग पर मुसकलां आसी।

न्याय लेवण री उम्मेद आपां भी फालतू ही लगा मेलो है। इण बाबत ज्यादा विचारणो फालतू है। कमजोर रै वास्तै न्याय भी कमजोर बण जावै। पुलिस जुलम करण लाग जावै अर जिण सूं आपां पुलिस सूं बचाव मांगां बो भी पुलिस रो ही पख लेवै।

आपां नैं आ बात जाण लेणी चाईजै के आज रा सासक री नीत परजा नैं ताकत देणैं री नीं है। जिको आदमी पुलिस आयोग रै रूप मे पुलिस वाळां नैं दोसी करार देवै, बो ही सासक रै रूप में पुलिस री ज्यादतियां नै रोकण रै खिलाफ रोकर विरोध करणो जरूरी समझै। उण नैं ओ डर लागै के जे जनता नं ताकत मिलगी तो एक दिन इसो आ सकै जिण दिन जनता सासक रै मुकाबलै भी घणी ताकतवर बण जावै। जे बकरियो दूजा जिनावरां रै खातर करड़ो बण जावै तो भगवान रो मन भी उणनैं खावण रो नी हुवै। आ बात साची है के देवता भी निबळां रा बैरी है।

इण वास्तै मैं आपां रै देस रा जागीरदारां नै अरज करूं के वै आपरी रियाया री मदद करै अर बांनै लिखा पढा कर मजबूत अर तन्दुरुस्त बणावै जिकै सूं वै लोग आपणै आपरी रक्षा भलीभांत कर सकै, नीं तो जनता रा हक कोरा कायदा बणावणसूं या सरकारी मदद सूं कोनी मिलै। जिको कोई बांनैं देखैं, बो ही बांरी कमजोरी सूं *फायदो उठावणरी कोसीस करै। इण देस रा लोग तद ताईं ऊंचा नीं उठ सकै, जद* ताईं वै जागीरदारां, साहूकारां, पुलिस अर तहसीलांरा हाकमां अर बांरां मुन्सियां रा सिकार रेवै। जदताईं देसरा लोग आदमी बणनो नईं सीखै वै आपरो राज सम्भाळण जोगा कियां बण सकै ?

आखर मैं आपनैं आ बात कैवूं के आप लोग सब तरै रो खतरो उठाकर भी देसरो काम कर रह्या हो। आपनैं मातभोम रो आसिरवाद मिलै। मोर मे सगळां सूं पैली आपहोज काम करणवास्तै अर दिन भर री तकलीफां अर बखेड़ां नैं सहण वास्तै त्यार हुया हो। थांरी मरदानगी, जुदा री गरजना मे ही नीं गूंजी है, तिसाई धरती पर मूसळाधार बोछाड़ां मे भी वा प्रकटी है। जिका लोग पगांतळै कुचळया जाता रैया है, जिकां नै तिरस्कार अर बेइज्जती ही मिलती रैयो है, जिकां नैं खुदरै परवार नैं छोड बाकी दुनिया छिटकारती रैई है, अर जिकां नैं आपरैं मिनख पणैं रै इकरो भी मान नीं है, वै भी आज आप लोगां रै कारण मिनखां रै भाईचारै रो मतलब समझ गया है।

आपां रा गांव नान्हा नान्हा भलं ही हो, पण वै आपां रा खुद रा है। अंगरेज मोटो-मोटी चीजां बणाई है, पण वै आपां री नीं है। इण रै कारण सूं आपा मे सुस्ती रो सचार हुयो है, अर वै आपां री जरूरतां नै भी पूरी नीं करै। खुदरी आंख फूटियां पछै दूजै री आंख सूं देखण री कोसीस बेकार जाया करै।

पाविवाळां रै सामनै हथार मा तो कोई भेवा री पावर्ण है मर मी कोई उच्छ बळिदान री ही मिमाल है, पर वर्णा में भरसाचार री कमी भी कोनी है। कैंकै कानून रा डर सूं होय पनाचार सूं पाता रैवै। विरापी बड़ा मामरी में मुकदमा करै मर वै लोगां री समझ में मावणा मुस्किल है। इण बीच में भाव धीरे धीरे बध रया है पर देस में बेकारियां फैलरी है। काठ भी बैठा बैठा पड़ै पर काम रा कड़ूम्ब मी गायब हो रया है। लोगां माय समाज मर मनुस्यता री जिम्मेदारी री भावना खतम होय रही है। इण सूं लोगां माय चोर, धाड़ेतियां नै पुलिस रै मत्याचार सूं बचावण री हिम्मत खतम होय गई है। सरीर नै ताकत मर बेमारियां सूं बचावै री सकती देवण वाळो भोजन कठै? दूध इतो महगो है के लोग खरीद नीं सकै। घी मिलावटी मिलै। मसाला मिसाली ही दूमर होगयो है मर तेल जहर बरोबर हो ग्यो है। भापा रै बडरोडै काळजै पर जिस्या भाष जिण तरियां सूं रोग कब्जो जमा लियो है, उणहीज तरै सूं मो परदेसी भापा मापै कब्जो कर लियो है।

राटी नीं तन्दुरस्ती नीं, खुसी मीं कोई मासा नीं मर जे जरुरत पड़ै तो मदद वास्तै कोई पाड़ोसी भी नीं। मर जद दुख मा र पड़ै, तो मापां उण नै मापो निस्चय लेवां। जद मौत धमकावै तो मापां बिना लड़ियां हीज हार मान लेवां। जद मापां नैं न्याय नीं मिलै, तो मापां मापणै गिरह-चक्कर नैं दोस देवां। पाड़ोसियां माथै तकलीफ पड़ै, तो मापां वांनै रामजी रै मासरै छोड़ देवां। इणरो कारण मो ईज है के जड़ सूं मावण वाळो रस खतम होगयो है। जीवण री रक्षा करण वाळी धरती सूकगी है। देस री हरवखत मदद करणवाळो मर मो री तरियां जो है वा गांवा री जनता छिन्न-भिन्न हो चुकी है मर पतनोन्मुख है। इण नैं प्राणदान देवणवाळी संस्थावां जड़मूं उखड़ चुकी है मर समयरी नदी में सूका ठूंठ ज्यूं बह री है।

जिण वखत सुधार बारै सूं मावै तो समाज री पुराणी व्यवस्था काम में नीं मावण रै कारण सूं होळै-होळै खतम हो जावै। बदळतै वखतरै साथै जिका देस बदळता रिवाज नीं बणाया, वै देस खतम होग्या। तो काई मापां मी सांजी हूं मापणो खातमो होतो देखता रवां। सियादाव, काळ मर महामारियां बाणचुकी मावण वाळी चीजां कोनी। मैं तो कोई घोर बीमारी रा लखण है। मर मां सूं मो बडो रोग मापणै मन में लाग्योड़ो है। जद कोई देस रा लोगां मे मपणै मापरो भरोसो खतम हो ज्यावै मर लोग मा सोचण लाग ज्यावै के जो कुछ हो रयो है सो तो तकदीर रो खेल है मर वै खुद इण रै वास्तै कुछ भी नीं कर सकै, तो इसै देस खातर चोर्ट रो भी घाव बण ज्यावै। उण वखत वो देस मौत रै डर सूं ही मौत नैं नूंतो दे देवै।

एक छोटे से प्रयोग सूं ही यो बेरो लागजावी के आपणें देश में राष्ट्रीय चेतना जग सूं कोनी होई। आ चेतना कोरी सहरां में ही है पर आ भी समाज रै एक खास वर्ग में ही है। स्वदेशी रो आन्दोलन तो सहरां रा पढ्या लिख्या लोग ही सुरू कर्यो हो पण इण रो मोल गाँव वाळां नै चुकाणो पड्यो। परियां री कहाणियां में आपां "बगदळ" भाटे री बात सुणी है, पण आज वो ही भाटो पुलिस री लाठियां रै रूप में एक पर एक गाँव री छाती पर पटक्यो जा रयो है। इण रै बोझ सूं दळया जाता गाँवां रो साथ आपां क्यूं नीं देवां। आपणें दिल में दर्द क्यूं नीं होवै अर आपां वां रै दुख ने क्यूं नीं बटावां। हर एक गाँव इकाई में काम अर खेल रै वास्ते एक जगां होवणी चाईजे जठै उण गाँव रा पंच उणां री आपसी राड़ अर विरोधां री सुणवाई करनै फैसलो कर सकै।

अगर जमीन रा धणी अर जोतण वाळा न्यारै-न्यारै रस्तै चालै, तो उण दोनां रो भलो नीं हो सकै। सारै संसार में लोग ताकतवर बणन वास्तै संगठन बणा रैया है। जे कोई न्यारो रेवैला वो हीज गुमाम रेवैला अर अगर आपां सब मिलनै पक्को बांध नीं बणावैला तो क्यूं भाखर में सूं पाणी ढळक आवै उण हीज तरै आपणी मेहनत रो फळ भी आपां रै हाथां में सूं निकळ जावैलो। अर इण रो फायदो दूजा नै मिल जावैला। उण वखत आपां दूजां रै वास्तै खेती करांला अर खुद भूखा मरांला, अर आपां नैं यो बेरो नीं पड़ सकैला के यो दूजो आदमी कुण है। इण खातर आपां नै उण लोगां रो भी संगठन बणावणो चाईजे जिण री आपां सेवा करणी चावां हां।

यूरोप में मेहनत बचावण री घणी चीजां री खोज हुई है, पण आपां री जमीन नान्हा-नान्हा टुकड़ां में बंटियोड़ी है अर आपां रै कनै मोकळो धन भी कोनी, इण वास्तै आपां उण सूं कोई फायदो नीं उठा सकां। आज एक गाँव रा या एक जात रा लोग भेळा होय ने सहकारी तरीकां सूं खेती करै तो वांनै इण नवी चीज रो फायदो मिल सकै अर इण सूं उणांनै कम मेहनत सूं मोकळो फायदो मिल सकै अर बांधी उपज भी बढ सकै। एक पूरा गाँव में एक मंहगो कोल्हू लगावणो भी सस्तो पड़ैला। एक गाँव वाळा जूट एक जगां भेळो करसकै तो वणां रै गाँव मांय जूट प्रेस भी लाग सकै। अगर सारा गाँव रा ग्वाळा एक संगठन बणा लेवै तो गाँव रा जिनावरां री नसल भी सुधर सकै। इण हीज तरियां सूं गाँव रा सारा जुलाहा मिलनै पावर लूम भी मंगा सकै।

इण बात नैं आपां जाणां के जिण वखत मजूर आप-आप रा घरां ने छोडर सहर में भागवानां रै कारखाना में मजूरी करवा जावै उण वखत वांरो कितनो पतन हो जावै। आपां रे जिसा देस जिण मे समाज री इकाई घर है, इण बात रो घणो खतरो

रेवै। घर री जड़ परवार रै छूटणै रे साथ साथ हीज खुदती जावै अर बुरायां नै मसीन चलावण रो काम दे दियो जावै उण रे पतन री कल्पना भी म्हारी नीं कर सकां। कोई भी समाज मनुस्यता ने छोडकर कोरे उत्पादन सूं हो आगै नीं बढ सकै। म्हारा तो सांचो भलो तो इण बात में रेवै के गांव रा लोग इण तरै री मसीन लगावै जिण रो वै उपयोग कर सकै। इण सूं वांरी आमदनी हीज नीं बधैला पण साथै साथै लोगां में संगठन री भी आदत पड़ैला। अगर प्रान्तीय सभावां इण तरियां रो एक भी संगठन बणादे अर उणरो उदाहरण सामनै कर सकै तो उणांरी सफळता रे कारण सूं इसरो परचार मारा देस में झटपट हो जावै।

अगर भारत रो हर एक प्रान्त आत्मनिर्भर हो जावै तो एक बखत इसो भी आ सकै जिण बखत मारा देस री एक केन्द्रीय इकाई बण सकै। इण तरै रो केन्द्र भारत रो सांचो हृदय हुवैला। जिण बखत तक भो नीं हो सकै, उण बखत तक केन्द्रीय सगठन रो कीं मतळब नीं निकळै। घेरा बिना केन्द्र किण कामरो? कांगरेस महासभा ने सासन मे हिस्सो मांगण री ताकत उण बखत तक नीं आ सकै जद तक आ राष्ट्रीय सेवाभाव ने नीं अपणा लेवै अर जितै के आ कोरी सिकायत करण पे सळाह देवण री जमात रैवै। जिण तरै सूं कारखानां रै कारण सूं म्हारा री हाथ री कळा रो नास हो रयो है, उण हीज तरै सूं इण सरकार रै कारण सूं म्हारा रै पुराणा गांवां रो भी नास हो रयो है। जद कुदरतो बढोतरी रै कारण सूं म्हारी इकाइयां आपरी जरूरतां रै अनुसार बढै, तो फळ चोखो हुवै, म्हारी नै माफ नीं करै तो म्हारी भी झाळ मे बार-बार वा ही गळती करता आवां कांई? दूजां सूं नाराज हो'र म्हारी खुद नै ही तकलीफ पुगावां कांई?

हर बखेड़ै में ताकत खर्च हुवै। इण वास्ते बिना मतळब रो बखेड़ो फालतू है। जिका लोग मनभोग री सेवा री सोगन खाई है वांनै पग-पग पर कांटां पर चालणो पड़सी। पण सामो बहादरी दिखाणै वास्तै ही खुद रै रस्ते में कांटा बिछा देणा कोई देस भक्ती रो काम थोड़ो ही है। विदेसी माल रो बाईकाट करणै री सोगन सूं भी म्हारी घणी मोटी जिम्मेवारी लेणी है। यूरोप में भी पूंजीपती लोग म्हारै मतळब सूं मजदूरी रा नवा नवा कानून बणाणै री कोसीस करै है। इण सूं वठै की मोटी समस्यावां खड़ी होवै है। म्हारै देस रो पूंजीपती कोरो मालवान ही नीं है, वो बैठ्यो दलाली भी है, अर मीलारूप रा लोगां रै जिस्सो पड़ग्यो है।

आपणा सम्पत! ई बात हूं संतोष मान सक सूं कि ताकत है बठे ही होवै। म्हारी रै घर कलेस हूं भी बचणो चाईजे कै वै आपरो बजा आपानी सूं खोय देसी। बो करणे कोई डाकरी रो बेम कोनी। इण मे आपणी पूरी ताकत री दरकार है।

चाईजै के देस री सेवा उण रनान री तरियां ही नईं है, जिको एक खास जगा अर कोई खास वखत ताईं ही सीमित हुवै। आप लोगां नैं ओ भी सोचणो चाईजै के बांरै सुदरी कोसीस बिना कोरी आप लोगां री कोसीस सूं ही वांरो भलो नीं हो सकै।

वां लोगां नैं खुदरी रक्षा करण वास्तै मजबूत बणनैं री सीख देणी पड़सी क्यूं के इण तरीकै सूं ही वांरो फायदो हो सकै। आप लोगां में सूं हर एक नैं एक एक गांव सम्भाळ लेणो चाईजै। बठै रा लोगां नैं पढाणा अर खेती रा नया नया ढंग बताणा चाईजै। आप लोग वांरै मनां में नया प्राण फूंक देवो जिण सूं वै खुदरै वास्ते फूटरा, साफ अर हवादार मकान बणासकै। वांनैं सहकारता रो मतळब बताणो चाईजै जिकै सूं वै गांवरी सामाजिक जरूरतां नैं पूरी कर सकै। इण काम में आप लोगां नैं जस री लालसा नीं करणी चाईजै। गावां में भरोसै री जिको कमी अर विरोध आप लोगां नैं जिको मिलसी उण रै मुकाबलै री तैयारी भी आप लोगां नैं करणी चाईजै। आ बात समझ लेणी चाईजै के गांव वाळा आपरै कामरो महत्व नीं मानैला। इण काम में उतावळ भगड़ै अर दिखावै री जरूरत कोनी, इण नैं धीरज अर प्रेम सूं हळवां हळवां करणै री जरूरत है। पण आप लोगां नैं प्रण कर लेणो चाईजै के आप लोग धरती रा दुखी लोगां रै साथै जिन्दगी बिताणो आपरै जीवण रो लक्ष बणावो अर वांरी तकलीफां नैं दूर करावो जिकै सूं वांरा दुख जड़ामूळ सूं खतम हो ज्यावै।

जे आपणी प्रान्तीय सभा गांव गांव में इण तरै रा केन्द्र बणावण री जिम्मेवारी लेवै अर हर एक जिलै रै केन्द्र री साखावां गांव गांव में फैल ज्यावै, तो ही आपणै देस री साची सेवा होवै। उण वखत इण महासभा में देस रै कूणै कूणै सूं सदस्य आवैला। न्यारी न्यारी रगां सूं आयोड़ै खून रै केन्द्र रूप में धड़कतै हिये री तरियां आ महासभा एक पुखता चीज अर देस रै संगठन री मुखिया बण जासी।

इण मामलै रै कार्यक्रम में जिकी बातां ही, वांरै बारै में कुछ बतावणी चायो हूँ, पण देस री सेवा खातर आपां जो कुछ करां, वां बुनियादी चीजां नैं समझण री कोसीस करां हां। एक बार फेर बा खास खास बातां ने दोहरा देणी चावूं:—

१. जे आपां नवै जमानै री जरूरतां अर आपणै सामाजिक ढांचै में एक रास नीं रख सकां तो आपां धूळभुळैयै में रळ ज्यावां। आज रै जमानै री पुकार आ है के संगठन बणावो, एको करो, अर सुव्यवस्थित हो ज्यावो। भीड़ में भेळा होयोड़ा लोगां में घणा ही चोखा गुण हो सकै, पण वै सुव्यवस्थित लोगां रो मुकाबलो नीं कर सकै। इण वास्तै आपां नैं आपणै गावां में व्यवस्था बैठाणी है। जिकै सूं आंरो हित अनुभव हुवै अर वै नास सूं बचै।

जद ताईं आपां एक अंग नै मजबूत करणै री कोसीस करां तद ताईं दूजोड़ो अंग कमजोर पड़ जावै। साची राष्ट्रीय एकता इण वास्तै भी नी होरी है के पढ्योड़ा लोग साधारण जनता सूं दूर है।

३. जिण राष्ट्रीय एकता री आपां नैं जरूरत है, बा कोई सलाह सूं ही नीं आ सकै। आपस री रो प्रेम तो तद ही आवै जद पढ्योड़ा लोग साधारण जनता सूं मिल कर काम करै।

अद ताईं पढ्योड़ा लोगां में आपसरी एको नी है, उण बखत ताईं काई भी काम इण तरै सूं नीं बण सकै जो सगळा लोगा नै आपरी तरफ खेंचे। काम करण रा न्यारा न्यारा तरीका हो सकै अर सायद बै सगळा आपरै भलै खातर हो है। इसी ऊंची बातां न भविष्य रै वास्तै मेल देवो अर झगड़ों नै इण सभा तक ही सीमित राखो। पण एक बात तो इसी जरूर है जिण मे कोई रो भी विरोध नीं हो सकै। बा बात आ है के जे आपां ने देस रा टुकड़ा नीं होण देणा है अर देस ने सत्यानास सूं बचाणो है, तो आपां ने सगळा नै मिलकर देस री भलाई रै वास्तै करड़ै मारग सूं यात्रा करणी पड़ली। जे इण बात में भी कोई विरोध है, तो इण रो मतळब यो है के या तो आपां आपणैं ऊपर आयोड़ै खतरै ने नीं पिछाणां अर या पछै आपणी हालत पर इसी सुस्ती अर निरासा कब्जो कर लियो है जिको सगळा सूं खराब बेमारी है।

दोस्तो, जठै मिनख री महानता कस्ट अर बळिदान सूं प्रकटै, आपां नैं बठै ही आपणा मन अर्पित कर देणो चाईजै। आपां बां मोटा मिनखा नैं भुलरो करां जिका म प रै देस रै सुधार खातर घणी घणी मेनतां करी है। जद ही आपां बै काम कर सकाला जिको री आस बगाल रा लोग इण सभा सूं लगा राखो है। जे आपां इण बात ने याद नीं राखो अर फालतू रा झगड़ा में पड़्या रहवा, तो आपणो ध्येय आपसरी ईर्स्या सूं धुंधळो पड़ ज्यासी अर आपणैं दळ री सफळता ने ही देस री सफळता मानणैं री गळती कर आपां राजी हो लेस्यां।

काल आपां नै खतम होणो है। आपणैं सारै सूं आपणी आपसी फूट ईर्स्या अर झगड़ा ने कोई भी याद कोनी राखसी। पण आपणा चोखा काम पीढियां ताईं भेळा होता जासी अर एक दिन भगवान री दया सूं आपणो देस ऊंचा उठ जासी। आपणी गरीबी अर मलीनता रा दिनां मे भी आपां ने बा खुसी रा दिनां रा सपना देखणा चाईजै जद के आपणा पोता इण नै गरबसूं कै सकैला के ओ सब कुछ म्हारो है। अर म्हे लोग ही इण नै बणायो है। म्हे लोग ही आं खेतां न उपजाऊ बणाया है। म्हारां मनां सूं डर नामरी चीज नै दूर फेंक कर म्हे ही इण ग्यान नै दूर दूर तक फैलायो है। सायद बै लोग आ बात भी कह सकसी म्हारो

विस्वास में मिनखपणैं री सेवा करी जा सकै। इण काम रै वास्तै ही म्हे लोग वेवळ करी है अर उण नै पायो है। म्हारो म्हालो देस जीवण सूं लबालब अर मौजा री मौज सूं भरयोड़ो है। जठै कठै म्हां पूगै, म्हारा म्रादर्स अर म्हारी कोसीसां फळती फूलती देखां अर म्रादर्सों री मंजिल कानी जाता म्रणगिणत रस्तां पर म्रणथक्या जात्रियां रै कदमा सूं धरती नै कांपती देखां।

"जीणे रै हक रो पूरो मोल चुकायां ही म्राजादी मिलै" —१६०८

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

पूरब अर पिच्छम

भारत रो इतिहास—या किण री कथा है ?

घणैं पुराणैं बखत री बात है जद गोरी चामड़ीहाळा आर्य लोगां नैं भारत में जबरदस्ती घुसणैं खातर कुदरत री बहोत बडी बाधावां रैं सागैं ही मिनख री ताकत रो भी मुकाबलो करणो पड़्यो। ज्यूं ज्यूं वैं घणैं उजाड़ जंगळां रो पड़दो नाकैं कर्‌यो, वो नाना भांत री उपज देवण वाळी सोनेरी चमचमाती धरती दूर तांई पसरी दीसी। बुद्धि, ताकत अर भेळी महनत सूं आर्य लोग भारत रैं इतिहास री नींव जमाई। पण कदे भी वैं या बात कोनी कैयी—'यो म्हारो भारत है।"

वैं लोग देसी अनार्यां सागैं मिलणो सरू करयो। आपरी जात रैं दबदबैं रै पहलैं वेग में ही वैं अनार्य लुगायां नैं ब्याहली। बुद्ध काळ में इण वर्णसंकरता री घणी छूट होगी ही। उण काळ रैं अंत में जातां जातां ब्यावां री या छूट ब्रामण समाज नैं कोनी सुहाई, अर वैं ओजूं जातां री अभेद्य सींवां बणादी। पण बात इतणी आगैं बढगी ही के देस रा कई हिस्सां में तो धर्म-कर्म खातर भी सुद्ध बामण मिलणो दोरो हो। बामणां नैं या तो दूर-दूर सूं लाणा पड़ता, या राज रैं हुकम सूं, जनेऊ पहरा'र नया बामण बणाणा पड़ता। आर्य लोग जिको गोरी चामड़ी पर गरब करता हा, वा अबतांई काळी पड़गी ही, जिकैं सू वांरी समाज व्यवस्था में सूद्रां रा रीत-रिवाज भी खरणा पड़्या। इण भांत विकास करतो हुयो हिन्दू समाज, वेदां रैं बखत रा आर्य लोगां सूं न्यारो ही नहीं हो, पण कई बातां में तो वांरो विरोधी भी हो।

पण भारत रैं इतिहास रो अन्त अठैं ही कोनी हुंग्यो। विधाता नैं या मंजूर कोनी ही के इण रो इतिहास खाली हिंदुवां रो ही इतिहास बाजैं। जद राजपुत राजा घणी बहादरी सू एक दूजै सूं झगड़ता हुया आपस री लड़ायां में उळझ्योड़ा हा, तो भारत रैं बारैं सूं मुसळमान देस री इण फूट रो फायदो उठायो अर दराड़ां में सु झपट'र ब्यारूं कानी पसरग्या। वांरी पीढियां दर पीढियां अठैं ही जनमी अर अठैं ही मरी अर इण भांत वैं इण देस नैं आपरो देस बणायो।

जे आपां अठै ही लीक खींचदेवां, अर "बसकरो, आगैं जाणैं री जरूरत कोनी" या कह'र भारत रैं इतिहास नैं हिन्दुवां अर मुसळमानां रो ही इतिहास मानलेवां, तो

रैवे, आपरी मनक पूरी करण खातर ही कोई आपरी योजना बदळ देवी।

विधाता नैं इण समस्या सूं कोई सरोकार कोनी के भारत में हिन्दू राज करै या मुसळमान, या कोई दूजी जात ही इणां सूं आगै बढ जावै। या बात कोनी के परमात्मा री अदालत में हिन्दू, मुसळमान अर ईसाइयां रा दावां रा न्यारा न्यारा वकील आप आप रा दावा री वकालत करै है, अर जिको दळ आखर जीतसी, बो ही आपरी जीत रो झंडो गाड देसी अर सदा सदा तांई कबजो कर लेसी। आपणा अनुभव ही आपां नैं या बात सुझावै के यो अधिकारी बातर हाथ-पग पटकणो री लड़ाई है—लड़ाई तो एक ही है अर वा है साच नैं कायम करणै री अनंत लड़ाई।

भलाई अर साच सगळा खातर है, जिकै सूं ही विरोधी ताकतां अर बाधावां होणै पर भी आपरा पग जमा लेवै। पण इण री तरक्की तो इण नैं मानण वाळां री आपणी कोसीसां रै भरोसै ही है। संसार रै जोड़-तोड़ में उण महत्वाकांक्षी नितब खातर कोई जगां कोनी जिको आपरी या आपरी जात री जीत री चाटी पर हमेसा तांई आराम सूं बैठणो चावै। सिकंदर सारी दुनिया नैं यूनानरै झंडै तळै कोनी ला सक्यो। इण बात सूं इसी योजनावां री निरर्थकता साबित हुवै। यूनान री दम्भभरी प्रभुता री आज आपणै खातर कोई मतळब कोनी। सारी दुनिया पर राज करण रो रोमरो रो सुपनो बर्बर लोगां भेळ दियो—अर रोम रै बादसाही घमंड नैं चूर करणै री कुण कदे निन्दा करी? यूनान अर रोम आपरी संस्कृति री पाकी फसला सूं आपरै बगत रा सुनहरी जहाज लादया। पण बै खुद ही उण जहाज मे कोनी बैठ सक्या। इण सूं कोई घाटो होणै री बजाय उलटो बोझो ही हळको होयो।

भारत रै इतिहास रो मकसद हिन्दुवां रै या कोई और रै प्रभुत्व री थापना करणो कोनी, पण मिनखपणै रो एक खास किस्म री पूरती करणो, पूर्णता रो एक इसो स्तर बणाणो है, जिण सूं सगळां नैं ही फायदो हुवै। इण पूरती रै काम में जे हिन्दू, मुसळमान अर अंगरेज नैं आप-आपरै व्यक्तित्व रा झगड़ालू अंगां नैं मिटादेणा पड़ै तो इण सूं वांरै राष्ट्रीय अभिमान रै भले ही चोट लागै, पण साच अर मानव अधिकारां री तासड़ी रा पासड़ां में यो कदे ही नुकसान कोनी मान्यो जावै।

आपां सगळा भारत नैं घणो बडो बणाणो चावां। पण इण काम में जिका तत्व चाहीजै, वां में सूं आपां तो एक ही तत्व हां। जे कोई एकलो तत्व ही विद्रोह कर देवै, अर दूजा तत्वां सूं रळ-मिल'र चालणै री बजाय गैर वाजिब ढंग सूं आपरी मन करै, तो इणसूं निर्माण री गति क्यूं न क्यूं मन्दी ही पड़सी। जिको अंग न्यारो रहणो चावै उण नैं घरै बणाणो पड़सी। पण जिको अंग या बात जाणै के मरणै आप मैं सो

नाचीज है, अर योजना री पूर्णता में ही जिणरो ध्यान हुवै, वा आपरी सुंदरता नै मिटा'र सफलो सम्पन्न रूप मे आपरी पक्की जगां लेलेसी।

सो, भारत रो जिको अंग जूनै जुग री सरण में दूजो सूं निरवाळो रहणो चावै उण नै भारत रो भाग्य विधाता मसळ'र दूजां रै एकमेक करदेसी, अर नहीं तो उण नै बेकार रो रोड़ो समझ'र पटक देसी। भारत रो इतिहास खाली हिन्दुवां री ही कथा कोनी। आपां तो उण इतिहास रै मसालै रो एक अंग हां। जे उण योजना में आपां अपणै अपनै नहीं खपा सकां तो जाणो आपां नै पड़सी। जे आपां आपणी पविताई मे नाकं ही खड़्या रैया, अर आणै वाळी पीढियां नै आपणो निरवाळै पणै रो दभ संभळाता रैया, अर जे आपां आपणै धर्म अर सामाजिक रीत-रिवाजां नै अ.पणै ताई ही राख्या, आपणी पूजारी जगां में बारलां नै नहीं आवण दियां, अर आपणै पुराणै साहित नै ताळै कूंची मे राख्यो, तो आपा दुनियां नै खाली या ही कह सकां के भिनसारणै री कचेड़ी में म्हांनै मौत री सजा दी है, जिकी काळ कोटड़ियां आपां आपणै खातर बणाई है वां में ही बैठ्या आपां मौत रै दिन री बाट देखां हां।

सारला दिनां मे अंग्रेजां भारत रै इतिहास में एक महत्व रो जगां बणाली है। या कोई चाणचुकै होणै री बात कोनी। शिक्षण रै इण मदय रै बिना भारत अधूरो ही रहतो। यूरोप आपरो दीवो चास लियो है, उण लौ सूं आपां नै भी आपणो दीवो चणाणो है, अर एकबार ओजूं बखत रै गेलै पर आपणी जातरा सरू करणी है। न तो आपा इसा निरभागिया हां अर न दुनियां ही इसी गरीब है के या आपा नै और कुछ भी नहीं दे सकै क्यूं के तीन हजार बरसां पहली आपणा बडका जो कुछ या देय कही इण सूं खींच लियो। जे या ही बात साची होवै के करणै रा सारा काम पहलां ही हमेसा रै खातर कर लिया गया, तो फेर आपां धिरथी पर भार बण्या ही जीवां हां। जिका आदमी या बात सोचै के वै लोग आपरा बडका रै रूप में पूर्णता प्रात करली ही, अर वांनै आपरा विसवासां अर कामां नै आधुनिकता रै परस सूं बचाणा चाहीजै, वै आज रै जमानै मे कियां जीवै है अर कियां भविस्य में वां रो विसवास है ?

आपणी जीर्ण भींतारी दराड़ां में सूं अंग्रेज सुरगारा दूत बण'र आया अर आपणा घरां से बड़'र आपणै में यो विसवास जगायो के दुनियां नै आपणी भी जरूरत है—बठै नहीं, बठै आपा आपणी सांकड़ी सींवां में बन्द पड़्या हां, पण ग्यान, काम अर नई खोजां रा बडा खेत्रां मे जदताई आपां वांरै बुलावै पर नहीं आवां अर वां रै सागै कदम मिला'र नहीं चाला, तदताई वै आपां नै दुख देसी अर आपां सूं आपणी सुख सांति री नींद खोससी। भारत रो लगातार विकास करतो रैणो सगळी दुनियां रा लोगां रै घणै मतलब री बात है। यो देस म्हांरो अंकना रो ही है—या कहणिया

आपाँ कुण होवां हां। असल में म्हां में कुण कुण सामिल है—बंगाली, मराठी या पंजाबी, हिन्दू या मुसळमान, जिण 'आपां' सब्द में हिन्दू, मुसळमान अर अंग्रेज, अर और भी जो कोई होवै—अै सगळा कदे भेळा हो जावै, तो वै लोग ही यो फैसलो करणै रो हक राखसी के कुण सो तो भारत है अर कुण सो भारत सूं बारै रो।

जिण आपां लोगां कनै बिसाल भारत नैं बणाणै रो काम है वांनै अंग्रेजां सूं आपणैं सबधां सु चोखो फायदो उठाणो चाहीजै। आपां लोगां सूं निरवाळा, प्रतिक्रिया मूल्य अर लेण-देण सूं बेपरवाह कोनी रह सकां—क्यूं के उण रो मतळब है भारत रै इतिहास नैं ही कगाल बणा देणो।

यो ही कारण है के आज रै भारत रा भलै सूं भला आदमी पूरब अर पिच्छम नैं भेळा करणा ही आपरी जिंदगी रो काम बणा लियो। जियां राममोहन राय हुआ। आपरै बखत मे वै एकला ही मिनखपणै रै आधार पर दुनियां सूं भारत नैं मिलणै री कोसीस करी। कोई अंधबिसवास अर कोई पुरखां री रीत बारै आडै कोनाई। एक अनोखो चौड़ो छाती अर बुद्धि लियां वै पूरब नैं भुलायां बिना ही पिच्छम नैं अपणायो, अर एकला ही नयै बंगाल नैं खड़्यो कर्‌यो। आपां नैं या बात महसूस करावण खातर के आपां नैं भी पिरथी री विरासत मिळी है, सब री सोज में सागोड़ा मिनखां रा अधिकार आपणी वास्तै लेवण री कोसीस में वां बहादरी सूं जुरमी रो सामनो कर्‌यो। वै ही हा जिका सबसूं पैलां इण बात नैं महसूस करी अर कैयो, के बुद्ध, ईसा अर मुहम्मद आपणै वास्तै ही जीया, के आपां में सूं हरेक रै खातर ही पुराणां संतां रो सदाचार भेळो कर्‌योड़ो है, के जिको कोई ग्यान रै मारग सूं बाधावां हटाई है या मिनख री बंधोड़ी ताकतां नैं छुटकारो दियो है, वे ही आपणा नेता है, अर इणी भाईचारै सूं ही आपां सगळां री सोभा है।

राममोहन राय भारत अर यूरोप रै बीच एक पुळ बणायो अर आज भी वो आपणी सगळी सक्रिय गतिविधियां में प्रेरणा रूप है। कोई भी अंधविसवास या दंभ सूं वै बन्धन रै उद्देस्य सूं इनकार नहीं कर सकै हा, वो उद्देस्य जिको बीतै जुग में ही साफ कोनी हुयो, पण आणै वाळै जुग में पूर्णता कानी बध रह्यो है।

दिखणु भारत में रानाडे इसो पुळ बणाणै में आपरी जिंदगी लगाई। वो वै बिड़ ओ हुया हो, जिणनूं मिणा मिळै अर इक्सारी गुत्थणा बणै। आदर्सां अर स्वारथां रो झगड़ो मिटाणै में हरदम जुड़्या रह्‌यां वै उण गुणां नैं ग्रहण करणै रो भार बाक कर दियो जिका अंग्रेजां सूं आपणै इतिहास नैं मिल्या।

महात्मा विवेकानन्द भी, जिका रो मानस हाल में ही बणायो गयो, इसो ही काम कर्‌यो। वां मे कट्टरता, समन्वय अर पुनर्निर्माण री प्रतिभा ही अर वा भारत अर पिच्छम रा भारती री लेवा-देई में अपणै आपनैं लगा दियो।

एक इसो दिन भी हो जद बंकिमचन्द्र आपरै, बगदर्सन रै पानां में पूरब अर पिच्छम रै मेळ रै मसलो उच्छव में आपरा पाठकां नैं तूंस्या। वगना साहित में सर्वदेसीयता री वा झलक जदसूं घणी आगै वढगी है, अर वा दुनियां रै साहित री प्रवृत्तियां सूं मेळ खाती है।

पढी-लिखी जमात रा आपणै में सूं घणा लोग या बात सोचता दीखै के आपणी धरती पर सगळी जातां नैं एक करणै री कोसीस में कोई राजनीत रो मतळब निकाळ्यो जावै है। एक महान प्रयत्न रो छोटो सो उद्देस्य बता'र उण नैं नीचो दिखाणै री हो या बात है। भारत मे आपा लोगां खातर तो एकता प्राप्त करणी ही एक इसो उद्देस्य है जिको दूजै किणी उद्देस्य सूं घणो कीमती है। इण उद्देस्य में असफळ हुयां पछै आपां जीवण रो एक मूळ सिद्धांत खो देवां, अर आपणी सगळी ताकत नैं जकड़'र कमजोर बणा देवां।

एकता करण री इण कोसीसां कानी आपां नैं मिनख रै मोटे धर्म री नजर सूं देखणो चाहीजै-जदही अै कोसीसा सफळ हो सकै। पण, क्षुद्र दम अर उपयोगिता सूं घणी दूर, साची धार्मिक भावना जद आपणो खास लगन बणजासी, तो आपणी कोसीसां भारत रा लोगां तांई हो बधो कोनी रैवै—अंग्रेजां ताई भी वै जरूर पूगसी।

अंग्रेजां अर भारतवासियां रै चालू झगड़ै रो आपां कांई मतळब लेवां? इण मे कोई असलियत है कांई? या यो कुछेक जाळमाजां रो रच्योड़ो भ्रम हो है? इण री चाल आपणै इतिहास री वां धारां सूं विपरीत है कांई, जिकी आपणै महान देस रा लोगां रै जुद्ध अर मेळ दोनां में ही प्रगट होई है। आपां नैं मोजूदा मतभेदां रो मतळब समझणै री कोसीस करणो चाहीजै।

भारत रै भगती-दर्सन में विरोध भी भगवान सूं एकाकार होणै रो एक मारग बतायो गयो है, जियां रावण विरोध सूं ही मुगती पाई बतावै। इण रो खाली यो ही मतळब है के जद कोई पहलां तो साच नैं ललकारै अर आखर उण सूं हार मान लेवै तो साच री अनुभूति और भी पूर्ण हुवै। बिना तर्क रै तुरत मान लेणो, साचनै पूर्ण रूप सूं ग्रहण करणो कोनी बाजै। यो ही कारण है के हर विग्यान नैं करड़ै सूं करड़ै संदेहवाद रै आधार पर राखणो पड़ै।

कदे तो योरप री सान सौकत रो आपां पर इतणो ज्यादा असर हो के आपां उण री चीजां नैं भगती री जियां बिना भेद-भाव रै लेलेता हा। यो कोई असलां फायदै रो तरीको कोनी हो। चाहे ग्यान होवो अर चाहे राजनीत रो अधिकार, उण नैं कमाणो ही चाहीजै। मतळब यो के यो आपणै असल काम रो तद ही हो सकै जद आपां रोकण हाळी ताकतां सूं लड़'र इण नैं जीत'र काबू करां। पण जे कोई दान रो

तरियो इणनैं आपणैं हाथ में दे देवै तो आपां इण नैं काबू में नहीं राख सकांला। इण बीच में'र आपां अपणैं आपरो अपमान ही करां हां, अर इण सूं फायदै री अठा नुकसान ही घणो हुवै।

इण कारण ही योरप री संस्कृति अर उण रा आदर्शां खातर आपणी प्रतिक्रिया हुवै। एक नई-नई आत्मसम्मान री भावना आपां नैं आपणैं मांय ही विकोड़ती जारी है।

आपणी भावना में यो बडो परिवर्तन उण इतिहास रै आतर बंदरी है जिणनैं, म्हारै विचार में भारत री भोम में आजरो बगत बणा रयो है। भावना री घोर कमी रै कारण ही जिकी चीजां नैं आपां पिच्छम सूं बिना पूछे ही लेता आया हा, वैं आपरो कदै भी कोनी बण सकै हो, क्यूं कै आपां वांरा गुणां नैं परखणैं री बजाय वांनैं विदेसी री चीजां मान र ही काम में ली। ज्यूं ही आपां इण बात नैं महसूस करी, तो आपरां विचार में परिवर्तन आणो कुदरती हो।

राममोहन राय पर योरप रा विचारां रो इतणो जादा असर कदै ही कोनी, जिकै सूं ही वैं वां नैं पचा सकता। वां में कोई कमजोरी कोनी ही। आपरै देस संस्कृति में मजबूती सूं पग रोपणैं सूं वां कनैं एक इसो नाप हो जिण सूं दूजां लेवण हाळी चीजां रा गुण वैं परख सकता हा।

नयैं भारत रै पहले बडै कारीगर कनैं जिकी कुदरती योग्यता ही, वाही धीरै विरोधी दबाव, खिंचाव अर घात-प्रतिघात रै जरिये आपां में विगसरी है, जि सूं आपां अेक कूएं सूं दूजै कूएं कानी फैंक्या जारया हां। आपां बारी-बारी उतावळ में "हां" अर "नां" कर देवां। अै दोनूं ही बातां गैरवाजबी है अर दारी ही आपां आंधा हो'र आगै बढां।

अंग्रेज अर भारतवासी रै बीच आज जिकी तणातणी है उणरो एक कार भावना री या घोर प्रतिक्रिया है। अंगरेजां रै ऊंचै थ्यान अर मोटी ताकत में आपां लगातार अर निस्क्रिय रजामंदी सूं आपणी आत्मा तड़फरी ही। या तड़प घणी घाल सूं बढती जा री ही अर आज तो या एक इसी हालत में पूगगी है कै आपै देस भावना घोर घ्रिणा रै पंजै में आगी है।

इण रा दूजा कारण भी है। पिच्छम रा लोग आपणां घरां में घुसग्या है बिन बुलाया पावणां री जियां आपां वां नैं बारै नहीं निकाळ सकां। भाईचारै री सूं आपां बगत नैं कोई अरथ में नहीं ले सकां। दूजै कानी पिच्छम रा लोग, आपां नैं दे सकणैं लायक आधी सूं आधी चीजां सूं आपां नैं कोरा राखरया है, अर इणरो भी वो ही नतीजो हुवै।

जे आपां अंग्रेजां नैं खाली सिपाही या व्योपारी या नोकरसाह रै रूप में ही देखां, अर उणांरा आछा गुणां नैं नहीं परखां, अर जे अंग्रेज भी इसी धरती पर नहीं खड़्या हुवै जठै मिनख मिनख सूं बात कर सकै, अर थोड़ै में केवां तो, जे भारतवासी अर अंग्रेज न्यारा न्यारा ही रैवै, तो वै एक दूजै सूं घिरणा ही कर सकसी। इसी हालतां में सत्ताधारी दळ नाराज दळ नैं हथकड़ियां पहराणैं खातर राजद्रोह रो कानून बणासी, पण इण सूं बो उणरी नाराजी नैं रोकी भलै ही राखो, उण नैं मिटा नहीं सकै।

एक बखत हो जद डेविड हेयर जिसा महात्मा अंग्रेज आपणैं नेड़ै आया अर अंग्रेज चरित्र री उदारता आपां नैं महसूस कराई, जिकै सूं ही उण बखत रा छात्र विदेसियां रै सामैं आपरा दिल खोल'र मेल दिया। आज आपणा स्कूलां अर कालेजां में जिका विदेसी अध्यापक है, वै आपरी जातरी चोखी सूं चोखी बातां लेर छात्रां रै नेड़ा न आ'र अंग्रेज आदर्स री हेठी ही करै। पैलां री तरियां अंग्रेजी साहित्य री आत्मा में नहीं बड़ सकणै रै कारण वै आपरै सामैं पड़ी चीज नैं गिर तो जावै, पण उण रो स्वाद नहीं ले सकै। शेक्सपियर अर बायरन खातर बो पैलां जिसो प्यार अब कोनी। उणी साहित्य नैं साचाणी सरावण सूं जिकी सद्भावना बढ सकै ही, उण नैं धक्को लाग्यो है।

प्रोफेसर हो या मजिस्ट्रेट, व्योपारी हो या पुलिस अफसर, भारत में रैवण हाळै कोई भी अंग्रेज नैं देखो तो मालूम पड़सी के वां मे सूं एक में भी अंग्रेजी री संस्कृति ऊंचे सूं ऊंचेगुण रा दरसण नहीं होवै। भारत पर अंग्रेजां रै प्रभाव रा सागा फायदा सूं आपां नैं कोरा राख'र वै आपणी योग्यतावां नैं बढणैं सूं रोक दी है अर आपणां आत्मसम्मान नैं चोट पुगाई है। चोखा कानूनां अर आछै राग सूं ही मिनख री सारी जरूरतां पूरी कोनी हो जावै। मिनख रै परव'री कमी तो रैवै ही। भिनखाचार री मांग करां परं उणरी जगां खाली न्याय ही मिलै — या तो इसी बात होई जिसी मांगै तो रोटी अर मिलै भाठो। भाठो चाहे जितो ही कीमती होवो, इण सूं भूख थोड़ी ही मिटै।

पूरब अर पिच्छम रै एक दूजै रै नेड़ै नहीं आ सकणै रो कारण ही आज रा सगळा दुखां री जड़ है। एक दूजै रै नेड़ै रह'र भी करै हो नहीं मिलणो, एक न सहणे लायक अर खटकणैं हाळी बात है, अर मोड़ै या बेगैं इसी हालत रै खिलाफ विद्रोह करणै री इच्छा रोकी ही नहीं सकसी। विद्रोह री भावना नतीजै री परवा कोनी करै अर अपणैं आपरो भी नास करणै खातर त्यार रैवै।

इतणी बात होतां हुयां भी या भी साची है के ईंमा घिरणा रा भाव टिकण हाळा कदेई कोनी हुवै। रोक लगावण हाळी घणी बातां रै होतां थकां भी पिच्छम सूं आपणो संबंध एक पूर्ण मेळ रै रूप में प्रगट होणा चाहीजै। पिच्छम कनै सूं केवल

सायद चीजां लियां बिना आपणो कोई निस्तार कोनी । कांई फठै नैं तो कठै सूं आगे हा रहणो चाहीजै नहीं तो इण री चाकरी री आस ही कोनी रैवै ।

खतम करणै सूं पैला मैं एक बात और कहणी चावूं । जे अंग्रेज आपांरी आंखां सूं आधी चीज आपां नैं नहीं दे रया है तो इणरो थोड़ो दोस आपां रो भी है । जद आपां आपणो मंगतापणो छोड़ देस्यां तद ही वै आपांरी कदूमी नैं छोड़सी । जिंयां बाइबल में कैयो है—"जिण कनै है उण हरेक नैं दियो जासी ।" आपां नैं हर तरह सूं मजबूत बणणो चाहीजै, जद ही अंग्रेज आपां नैं वै चीजां देसी जिकी देवण नैं वै नटता है । जदताईं वै आपां नैं नीचा समझै, तदताईं आपां सूं भाईचारो किंयां राखसी? जे आपां हाथ फैलायां बांरा बारणां आगै खड़या होवां, तो आपां नैं बार-बार धक्का ही मिलसी ।

आपणैं मिनखपणैं सूं ही आपां वांरो मिनखपणो जगावां—यो ही एक मात्र रस्तो है । वै लोग भी आज रा चोखा अर बडा गुणां नैं घणी महनत सूं दुख भेलं'र कमाया है, इण वास्तै इसा गुणां नैं कमावण खातर आपां नैं भी मजबूत बणणो पड़सी। माथो झुकायां अर हाथ जोड़यां अंगरेजां कनैं जाणैं सूं आपां बांरै चरित्र री हळकी अर ओछी बात ही देख सकां । अर जे झाळ में आ'र वां री बुराई करां, तो बांरी बुरी आदतां नैं ही जगावां । इण भांत जे या साची बात है के भारत रा लोग अंग्रेजां री बदतमीजी, बुजदिली अर निर्दयता नैं ही उकसाता रया है, तो खाली अंगरेजां नैं ही दोस देणैं सूं काम कोनी चालै, पण ठीक तो या रैवै के यो दो। आपा आपरै पर ले लेवां ।

बां रै खुद रै देस में इसी ताकतां लगातार काम कर री है जिकी मिनख सुभाव री न्याऊ बातां नैं दबावै अर चोखी बातां नैं बढावो देवै । समाज री चेतना हर आदमी नैं या प्रेरणा देवै के वो ऊंचे स्तर पर खड़्यो होवै अर बठै ही आपरी जगां बणाई राखै। पण भारत में रैवण हाळो अंग्रेज वण समूचै समाज रो अंग कोनी । वो तो भारत री सिविल सर्विस रो या व्योपारी समाज अथवा फौज रो आदमी है । अं गीतूं ही बं अपणै आप में सीमित है, अर आंरी खुद री संभाळ'र राख्योड़ी परंपरावां पर आधार राखता है । इण कारण वो या तो पक्को सासक बण जावै, या चोखो व्योपारी अर या खरो सिपाही । उण रै मांयलो मिनख तो खो ही जावै ।

दूजै कानी, भारत री वा गिरावट जिण नैं वो देखी है, सायद उण रा चोखा गुणां नैं चेता नहीं सकै जिकै सूं आपां 'दोनूं' ही खोई, में हां । असल अंग्रेज नैं तो आपां देख ही कोनी पावां । जो कुछ देखां वो तो उण री भूंडी नकल है, अर यो ही आपणी बेइज्जती अर दुखां रो कारण है ।

ताकत री साची परख त्याग अर सेवां सूं होवै, करड़ा बोलां अर हिंसा सूं नहीं । जद आपां देस रै भलै में आपणी सारी ताकत लगा'र भारत नैं आपणो बणा

लेस्यां, तो भारत मे रैवणियै अंग्रेज नैं भी आपणी बात मानणी पड़सी। जदताई आपां व्यक्तिगत या सामाजिक बेवकूफी सूं आपणा भायां सूं निर्दयता रो बर्ताव करस्यां, जदताई आपणा जमींदार आपरा करसां नैं निजी जायदाद री तरियां मानता रैसी। जदताई ताकतवर आपरो पुराणो हक समझ'र कमजोर नैं कुचळता रैसी अर ऊंची जातां नीची जातां नैं जिनावरां सूं भी न्याऊ मानती रैसी, जद तांई आपां अंग्रेजां रा चोखा गुण नहीं ढूंढ सकस्यां, अर खुद भी भुलायोड़ा अर निदर्योड़ा ही रहस्यां।

आज भारत आपरैं कानूनां अर आपरी रीतां में तथा आपरी धार्मिक अर सामाजिक संस्थावां में, हर मोड़ पर अपणैं आपनैं धोखो देवै अर खुद आपरी बेइज्जती करै। यो ही कारण है के आपणी जमीं पर पूरब अर पच्छिम रो मेळ कदे ही पूर्ण कोनी होवै। इण संबंध सूं दुख रै सिवाय कुछ भी कोनी मिलै। जे आपां कोई रस्तै सूं अंग्रेजां नैं देस सूं निकाळ भी देवां तो भी दुख तो बण्यो ही रहसी। जदताई दोनां मे भीतरी मेळ नहीं होवै, यो दुख कोनी मिटै। भीतरी मेळ सूं ही भारत मे पूरब अर पच्छिम रो मेळ होसी। जद ही देस सूं देस जात सूं जात, ग्यान सूं ग्यान अर कोसीस सूं कोसीस मिल सकसी। उण बखत ही भारत रै इतिहास रो मौजूदा अध्याय खतम होसी अर एक नयो अध्याय सरू होसी जिको मिनख री कथा में एक चोखै सूं चोखो अध्याय होसी।

—१९०८

बिरछ में बाध्योड़ो आग फूल खिलावै, बाही बंधण सूं मुगत हुयां, राख बण'र खतम हो जावै।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

फायदो उठाणें सारू उण असलियत नें मिटाणें खातर ग्रांख मीच र कोसीस करणी साच सूं मेळ कोनी खावै। जिण न्यारे पणें नें दबायो जावै वो एक भयंकर विस्फोटक ताकत बण जावै। ग्राज नहीं तो काल दबाव रै कारण वाणवुको फाट र बा ताकत घणी बड़ी उथळ-पुथळ मचा देवै। मेळ में सब सूं ग्राछो तरीको यो ही है के जिका लोग ग्रसल में न्यारा है बा रै न्यारे पणें नै मान लियो जावै।

ग्रादमी जद ग्रापरै व्यक्तित्व नै महसूस करै तद ही उण नैं बडो बणणें री प्रेरणा मिलै। इण ग्रनुभव रै बिना बो ग्रापरो ग्रस्तित्व खो देवै। मिनख जद मूं या रेवै तो बां में कोई भेद कोनी रेवै, पण ज्यूं ही बै जागै तो हरेक री खासियत न्यारा न्यारा ढंग में प्रगटै। *सगळै विकास रो मरम यो ही है के ग्रनेकता एकता मे बदळै।* बीज मे कोई ग्रनेकता कोनी कळी में भी सारी पांखड़यां एक रूप मे भिड़ी रेवै। पांखड़यां नैं एक दूजी सूं न्यारो कर र देखणें पर ही कळी फूल बण र खिलै। फूल री पूर्णता तद ही है जद उण री सगळी पांखड़यां ग्राप-ग्राप रै ढग सूं न्यारी-न्यारी दिखावा मे पूर्ण रूप धारण करै। ग्राज लोगां मे ग्रेक दूजै पर ग्रापसरी रै ग्रसर सूं ग्राखी दुनियां में एक इसी हळचळ पैदा होगी है, जिकी सूं मिनख जात रा कुदरती भेद न्यारू मेर इण कोसीस में लाग रया है के विकास रै ग्रणमग कानून रै मुजब वै ग्रापणें ग्राप रो बचाव करै। ग्रापरो ग्रापो मेट र जिको विसालता मिलै उण नैं कोई भी जीतो-जागतो दिमाग बड़ी बात नहीं मान सकै। छोटी सूं छोटी इकाई भी, ग्रापरै सागै व्यक्तित्व रो बेरो पड़तां ही तुरत, ग्रपणें ग्राप नैं ज्यूं री त्यूं बणाई राखणें री पूरी चेस्टा करै– जीवण रो कानून इसो ही है। साच तो या है के विसालता में मरणें री बजाय बा ग्राप रै छोटे पणें में ही जीवती रहसी।

बै फिनलैंड रा लोग कियां न कियां रूसी बण जावै तो बांनै घणखरा झंझटां सूं मुगती मिल जावै, ग्रर छोटै पणें रै सराप सूं भी छुटकारो मिलै। कोई भी मोटा कोई राष्ट्र रो दो टूक होणो उण री ताकत रो कमजोर होणो है, इण डर सूं रूस रा लोग फिनलैंड नें रूस में जबरदस्ती मिलालेणो चावै। पण फिनलैंड री न्यारी सत्ता एक साची बात है। रूस रा लोगां रै स्वार्थ खातर बै ग्रापरा बळिदान कोनी करै। कायदै सूं बांनै राजी कर र बांरै न्यारै पणें नैं कोई भलै ही खतम करदे, पण बांनै मिटा देणें रो कोसीस तो *हत्या करणें रै बरोबर ही मानी जासी।* इ गलैंड रै भी या ही तकलीफ ग्रायरलैंड सूं है। ग्रठै भी साच ग्रर फुरती रो झगड़ो है। या समस्या ग्राज दुनियां मे ग्रनेक जगावां पर खड़ी होरी है। इणरो एक मात्र कारण यो ही है के ग्राखी दुनियां में जिन्दगी री एक नई लहर ग्रारी है।

इण सब झगड़ै रो मतळब काईं? मतळब यो ही है के मिनख जद ग्रापरै व्यक्तित्व री गरिमा नैं पिछाण जावै तद ही वो ग्रापरी महानता नैं प्राप्त करण री

कोसीस करै, चाहे नख सूं तख में दुख ही भैलणा पड़े। पण महानता पर दूजां पछै ही मिनखां रो साचो मेळ हो सकै। गरीबी रो मेळ, गुलामी रो मेळ, चोरणं रो मेळ ऐ सगळा पेला दियोड़ा मेळ ही है।

मनै याद है के आपणी साहित्य परिसद री एक बैठक में एक व्याकरण रै विसै पर म्हारै निबंध रै सिलसिलै में एक सवाल उठायो गयो हो, के बंगला भासा में जठा सूं जादा संस्कृतमय बणाणं री कोसीस करणी चाहीजै, क्यूं के इण सूं गुजराती, मराठा अर दूसरा लोग इण नै आसानी सूं समझ सकसी।

इण बात सूं इनकार नहीं करयो जा सकै के बंगला भासा रो न्यारो व्यक्तित्व गैर बंगालियां रै समझण में एक मोटो बाधा है; फेर भी, जिको ताकत अर सुदरता इण भासा में है वा इण रै न्यारै व्यक्तित्व रै कारण ही है। आज गुजराती लोग बंगला नै सीखणं री कोसीस करै, भले ही या संस्कृत रै सांचै में ढाळ र बणायोड़ी नकली सरल भासा मत होसी।

बंगला भासा रै न्यारै व्यक्तित्व रै पाण ही जे बंगला साहित्य आगै बढ़सी तो बंगाली अर हिन्दी बोलणियां में पुख्ता मेळ हो सकसी। जे बंगाली लोग हिन्दुस्तानी सूं आसानी सूं मेळ बिठाणं खातर आपरी भासा नैं हिन्दी रै तरीकै सूं ढाळसी, तो बंगला रो साहित्य फोड़ा देवसी, अर कोई हिन्दुस्तानी उणरा परवा कोनी करसी। मनै याद है एक बहुत पढ्यो लिख्यो अर समझदार आदमी मनै या बात कैयी "बंगला साहित्य री तरक्की आपणो राष्ट्रीय एकता में एक बाधा है. क्यूं के, ज्यूं ज्यूं यो साहित्य समृद्ध होसी, यो जिन्दा रहणा चाहसी, अर इण रै कारण ही बंगला भासा जड़ पकड़ती जासी। इण भांत बंगला भासा भारत रो भासागत एकता में बाधक बणसी।" वां दिनां लोगां री या धारणा ही के राष्ट्रीय एकता रो चोखं सूं चोखो रूप सगळा भेद भावां नैं एकमेक कर'र इकसार ढेर री ज्यूं करणो हो है। साच तो या है के निजी व्यक्तित्व रो बळिदान कर र जिको फायदो लियो जावै वो थोड़ी देर रो ही है। एक मात्र असली फायदो तो वो ही है जिको निजी व्यक्तित्व नैं समृद्ध कर र उठायो जावै।

अठै, भारत में, जद राजनीतिक एकता री कोसीस जोर पकड़यो, या यूं कैवो के जद आपणी आत्म चेतना खास तौर सूं जाग उठी, तो म्हां मुसळमानां नैं आपणं में मिलाणं री कोसीस करी, पण मिला नहीं सक्या। जे म्हां मिला पाता, तो निस्चै ही या बात आपणं फायदै री तो होती, पण फायदै सूं मेळ होणो कोई जरूरी कोनी। हिन्दू अर मुसळमान में एक घणो असली फर्क है, जिण नैं भुलाणो संभव कोनी। जे

आपाँ आपणी निजी जरूरताँ में उळझ्या रहणँ सूं उण भेद नैं नहीं पिछाणी, तो बो भी आपणी जरूरताँ नैं कोनी पिछाणसी ।

बयू के हिन्दुआँ अर मुसळमानाँ में कदे ही साचो समूळो मेळ कोनी रह सक्यो, इण वास्तै राजनीतिक क्षेत्र में बाँ नैं मिलाणैरी कोसीस सूं आपस में संदेह अर अविस्वास ही पैदा हुयो । इण सदेह नैं निराधार कहर टाळणैं सूं काम कोनी चालै । मुसळमानाँ नैं आपाँ आपणा *निजी नहीं समझ्याँ, खाली आपणो मतळब सिद्ध करणैरो साधन ही* समझ्याँ । जे आपाँ कदे या महसूस करां के बो अब और आपणैं काम रो कोनी, तो आपाँ उण नैं परै बगारां में जरा भी धड़को कोनी खावां । आपाँ उण नैं कदे भी आपणो साचो साथी कोनी *समझ्यो कोरो काम निकाळणैरो औजार ही मान्यो ।* जे दो दळ, जिकाँ में मुकाबलै रो कोई सवाल ही नहीं हो सकै, साझैदार हो जावैं, तो वैं उण बखत ही सागैं चिपक्या रहसी जद ताँई बाहरलै खतरै नैं दूर करण खातर बाँ रो भेळो रहणो जरूरी होसी । बा जरूरत पूरी होयाँ पछै वैं लुरखण रै बटवारै पर भी एक दूजै नैं ठगणाँ री कोसीस करसी । इण अंदेसै सूं ही मुसळमान आपणैं भेळा नहीं हुया । जे आपाँ एकठा रह सकता, तो दोनूं घणो मोटो फायदो उठाता, पण मुसळमान या सोचण लाग्या के म्यारा रहणैं सूं सायद वैं जादा फायदो उठा सकसी ।

थोड़ा दिनाँ पहलाँ हिन्दू मुसळमानाँ रो भेद आज री तरियाँ बढ्यो चढ्यो कोनी हो । आपाँ आपसरी मे इतणा मिल्या-मिल्या हा के आपाँ नैं आपणा फर्क दीखता कोनी हा । पण, न्यारैपणे री भावना रो नहीं होणो एक विसवासमक सत्य हो । असलो नहीं । या यूं कैवाँ के आपाँ नैं आपणा भेदां रो भान कोनी हो, सो इण कारण नहीं के भेद ही कोनी हा । साचो बात तो या है के आपाँ एक जड़ता में डूब्योड़ा हा जिक सूं आपाँ नैं आपणो भान हा कोनी हो । एक दिन इसो आयो जद हिन्दुआँ नैं हिन्दुत्वरी गरिमा रो आभास हुयो । वैं निस्चै/ही घणा खुसी होता जे मुसळमान भी बाँरी गरिमा नैं मान लेता अर चुप बैठ्या रहता । पण मुसळमानाँ रो मुस्लिमपणो भी आवरो हक जमाणो सरू कर्यो जियां हिन्दूआँ रो हिन्दुत्व कर्यो हो । आज बो हिन्दुआँ में मिल र नहीं, मुसळमान बण्यो रह र ही तकड़ो बणणो चावै ।

आज सारी दुनियाँ मे समस्या या नहीं है के सगळा भेद भाव मिटा र कियाँ मेळ बणायो जा सकै, पण कियाँ भेदा नैं ज्यूं रा त्यूं बणाया राख र मेळ करायो जावै । यो एक कठण काम है, क्यूं के इण मे कोई चालवाजी नहीं चाल सकै, इण में तो इण हाथ दे अर उण हाथ ले, रो सवाल है । पण, जिकी चीज आसान दीसै बा होणी मुसकल हुवै, अर जिकी मुसकल दीसै, वा आसान पड़ै ।

आपणैं देस रा मुसळमान न्यारी जात रै रूप में ही तरक्की करणैं री कोसीस करै है । आज रै बखत मे आपाँ नैं या बात कितणो ही बेरवाद पर बाटै री सामो

करे आगे चाल र साचो मेळ करणे रो यो ही एक सही रस्तो है। घन मेळो करणो तिरा दान देणो मुसकल है। किणी कने मोकळो हुयां ही वो त्याग कर सकै। बदळाई अभाव अर कमजोरी रहसी, तदलाई ईर्सा अर झगडा भी बण्या रहसी। गरीबी अर कमजोरी रै रहतां मेळ, घींगाणं रो अर मूठो मेळ है।

आज री सिक्षा कानी समै पर ध्यान नहीं देवण सूं भारत रा मुसळमान कई खेतां में हिन्दुआं सूं पिछड़ग्या है। इण बात में वांनै हिन्दुआं रै बरोबर आणो है। इण विसमता सूं पीछो छुडावण सरू हर बात में हिन्दुआं री बजाय जादा मांग करै। वांरी मांगां नै साचे मन सूं मानणी चाहीजै। हिन्दुआं रै वास्तै भी आ चोखी बात है के मुसळमान सिक्षा मान अर दरजै में वांरै बरोबर हुवै।

वारै सूं सीजावण वाळी चीज रो एक हद हुवै। आ हद हिन्दू अर मुसळमान दोनां खातर ही करीब करीब बरोबर ही है। उण हद तांई पूगे जद तक आ आस रैवे के आगे कोई हद ही कोनी। असली भलो तो उण में ही है। मुसाफरी वास्ते किण नै थोड़ै सूं जादा मिल्यो यो सवाल ही करड़ो ईरसा अर झगडे री जड है।

पण थोड़ो दूर चाल्यां सूं पछै आ बात साफ हो जावै के आपरे गुणां अर ताकत रे पाण ही टिकाऊ भलाई री आस करणी चाहीजै। अधिकारां रै जोग हुयां बिना ही अधिकार कोनी मिलै। आ बात जितणी जल्दी समझणी आवे उतणो ही ठीक है। उण रे बाद जे मुसळमान आपरै सनमान रो कोई न्यारो अर साचो रस्तो निकाळ लेवे, तो उण नैं बिना रोक-टोक स्वीकार करणी चाहीजै। भलं मिनख री हरियां आस ने आ कामना करणी चाहीजै के वे तेजी सूं आपरी मंजल पर पूगे।

पण मैं बारली विसमता पर घणो जोर कोनी देणो चाहूं क्यूं के उण नै मिटाणो कोई मुसकिल काम कोनी। आ ही वा साची बिलग सत्ता है जिकी म्हारे विचार में है। उण बिलग सत्ता नै मिटा देणो अपणं आपरो विनास करणो है।

आपरो न्यारो विस्वविद्यालय खड़्यो करणं रै मुसळमानां रै ओर सूं पीछे जे कोई प्रतिद्वन्दिता री भावना है, तो म्हारो यो पक्को विस्वास है के आ साची और टिकण वाळी नहीं हो सके। इण बखत एक मात्र साच आपरी अलग सत्ता ने महसूस करणो ही है। मुसळमानां रो एक मात्र साची मनसा आ ही हो सके के वे आपरै तरीके सूं ही बढ़ा बढ़ै। इण तरियां आपरो अधिकार बनावण वाळी बिलग सत्ता ने देखा र इस्लाम के लोगां ने इर यो मावे क्यूं मासम देवे वाळी बिलग सत्ताधारां रै तरह बिना विरोध ने अपनावे, लोगां ने आपसरी प्रिणा फैलावण री मांग रैवा है।

ईं डर रो भी एक बखत हो—वो बखत जद हर बात आ देस अपणे आप तांई सीमित हो, अर आपरो बिलग सत्ता ने इण विवेकसून्य हद तांई बढ़ावो जातो, के अठै तांई का मिनख बार बारेर एक वातन नहीं बण जाती।

. . ', जाणै विकासवाद रा कानून तो बाकी दुनिय
. नहीं, जठै सगळी चीजां अनादि अर इतिहास सूं घणी
.. विग्यान प्रापरा पूरा अर विकसित रूपां मे ही
ड़ा बताया जावै—कोई री व्याकरण, कोई री रसायन
अठै क्यारूं वणां भो एक देवतारै ग्रग सूं ही समूचं अर
. अर रिसी लोगां आपसरी मे हा सगळी चोजां नैं पिरथी
प्रश्न री कोई गुंजायस कोनी। इण वास्तै ही भारत
ी चमत्कारां अर अलौकिक घटनावां नैं भो छोडा कोनी।
. में भी तर्क अर न्याय री कोई जगां कोनी। या पूछणो
कोई चीज क्यूं करो या क्यूं नहीं करो। सारै संसार
ै जठै कार्य अर कारण रै कानून री छूट है। अठै रा
। सास्त्र हो या बात बतासी के समुद्र री यात्रा चोखी है या
ो निर्णय करसी के कोई मिनख रै ग्यारै कमरै में बड़णं सूं
होसा या कोनी। नीचो जात रै मिनख रै हाथां सूं पाणो
दूध या खजूर अर गंडेरी रो रस पीणं सूं क्यू नहीं लागै ?
। चावळ खाणं सूं तो जात बारै होणो पड़ै, पण दारू पीणं
ा सवाल पूछो तो सामाजिक बहिष्कार रो डर बता र थांनै

ोग भी इसा अजीब अर गैर वाजबी तरीकै रो ब्योहार क्यूं
ा तो यो है के आपां विग्यान तो स्कूल या कालेज में
ान कठै घोर ही भिन्न वातावरण में पढां। इण वास्तै ही बां
ोण भी भिन्न हो जावै—आपां या कमजोर धारणा बणा लेवां
.म रै. पर ही लागू है। जे मैं दोनूं विग्यान एक ही ग्यान
र अग बणाया जा सक, तो उण सूं इण भ्रम सूं

सिक्षित लोगां में जोर पकड़तो जावै है। इण
प्रावेस घणो है। इण रो खास कारण यो है के
। नै बेवाजबी घिरणा सूं देखता। इणरी जोरदार
निरीक्षण रो बहानो करा जिको निरीक्षण

जिको भाषा पिच्छमरी विद्या पर लगावां, आपणै विकासवाद रा कानून तो बाकी दुनिय सातर ही बणायोड़ा है, भारत सातर नहीं, अठै सगळी चीजां अनादि अर इतिहास सूं घणी पैला री है। भारत रा न्यारा-न्यारा विग्यान वारला पूरा अर विकसित रूपां में ही न्यारा-न्यारा देवतावां रा बणायोड़ा बताया जावै—कोई री व्याकरण, कोई री रसायन विद्या अर कोई रो आयुर्वेद। अठै म्हारूं वर्ण भी एक देवतारै अंगां सूं ही समूचै अर सपूरण रूप में प्रगट्या। देवतां अर रिसी लोगां आपसरी में हा सगळी चीजां नैं पिरथी पर पैदा करी – इण धारणा में प्रस्न री कोई गुंजायस कोनी। इण वास्तै ही भारत रो इतिहास लिखणी बखत आपां चमत्कारां अर अलौकिक घटनावां नैं भी छोड़ा कोनी। आपणा सामाजिक रीत-रिवाजां में भी तर्क अर न्याय री कोई जगां कोनी। या पूछणै री ही दरकार कोनी के आपां कोई चीज क्यूं करां या क्यूं नहीं करां। सारै संसार में भारत ही एक इसो देस है जठै कार्य अर कारण रै कानून री छूट है। अठै रा कारण मान्त्रां में छिप्योड़ा है। सास्त्र हो या बात बतासी के समुद्र री यात्रा चोखी है या न्याय, अर पहल भोग ही यो निर्णय करसी के कोई मिनख रै न्यारै कमरै में बड़णै सूं न्यारै छुवणै सूं पाणी दूसित होसी या कोनी। सीधी जात रै मिनख रै हाथां सूं पाणी पीणै सूं तो पाप लागै, पण दूध या खजूर अर गंडेरी रो रस पीणै सूं क्यू नहीं लागै? विधर्मी रै हाथ रा पकायोड़ा चावळ खाणै सूं तो जात बारै होणो पड़ै, पण दारू पीणै सूं क्यूं नहीं?—ये जे इसा सवाल पूछो तो सामाजिक बहिष्कार रो डर बता र थांनै चुप कर दिया जासी।

पढ्या लिख्या लोग भी इसा अजीब अर गैर वाजबी तरीकै रो ब्योहार क्यू करै—इण रो एक जवाब तो यो है के आपां पिच्छमरा विग्यान तो स्कूल या कालेज में पढां, पण पूरब रा विज्ञान कठै ओर ही भिन्न वातावरण में पढां। इण वास्तै ही बां रै प्रति आपणो द्रिस्टिकोण भी भिन्न हो जावै—आपां या कमजोर धारणा बणा लेवां के तर्क रो कानून पिच्छम रै ग्यान पर ही लागू है। जे यै दोनूं विग्यान एक ही ग्यान रै मंदिर में, एक ही सिक्षा रै तरीकै रा अंग बणाया जा सकै, तो आपां नैं इण भ्रम सूं छुटकारो पाणै में मदद मिलसी।

आपरै न्यारै अस्तित्व रो दंभ सिक्षित लोगां में जोर पकड़तो जावै है। इण दंभ रै पहलै वेग में न्यायरी बजाय आवेस घणो है। इण रो खास कारण यो है के आज तांई आपां आपणी सगळी चीजां नैं बेवाजवी घिरणा सूं देखता। इणरी जोरदार प्रतिक्रिया रै कारण आपां कदे-कदे वैग्यानिक निरीक्षण रो बहानो करां जिको निरीक्षण न करणै सूं भी बुरो है।

इण मगरू तें दंभ रो ताव हमेसा कोनी टिक सकै। इण प्रतिक्रिया रो बोल ठडो जरूर पड़सी। उण बखत मांय अर बारै माथ नैं स्वीकार करणो आसान होसी।

हिन्दू समाज रै अठै पूरै विकास रो धारां रो कदै ही कोई सीधो अनुमा कोनी रैयो। इण वास्तै हिन्दू लोग कांई कर्‌यो अर कांई कर सकै, इण बाबत धारणो धारणावां कमजोर अर धुंधळी है। इण वखत आपणो आंख्यां रै आगै आ जो कुछ देखां वा ही सबमें जादा महत्वपूर्ण है। आपणै वास्तै या बात सोचणी कठण है के हिन्दू समाज रो मौजूदा ढांचो हिन्दुआं री प्रवृति अर वारी ताकता रो अनेक भांत घटो घोटै अर वांनैं नीचा दिखावै। हिन्दू सभ्यता री सकल आपणै वास्तै तो उण तरै री सी है जिकी हिन्दू पंचांगां में महीनैं रै आखर में धर्म कर्मां रै सिलसिलै में छाप्योड़ी मिलै। या एक इसी तस्वीर है जिकी हर बखत पूजा पाठ में लागी रैवै, व्रत अर उपवासां सूं दूबळी हुयोड़ी, अर दुनियां री सगळी चीजां सूं भींटणै रै डरसूं दूर कूणै में दुबक्योड़ी सी रैवै। पण एक इसो बखत भी हो जद हिन्दू सभ्यता आपरै पूरै जोर पर ही। वो बखत अनेक दिसावां में उण रै कामां रो बसंत हो। उण बखत हिन्दू समदरां पार जाता अर उपनिवेस बसाता, वांरी सुदरी कळा, कारीगरी-व्योपार अर उद्योग होता, वांरै इतिहास में नित नयां दिरिस्टकोणां रो विकास होतो, सामाजिक तथा धार्मिक क्रांतियां री गुंजाइस रहती अर लुगायां री वीरता, विद्या अर सांचै आध्यात्मिक ग्यान खातर सरनाम होती। महाभारत रा पाना इण बातरी पूरी गवा देवै के उण बखत रा सामाजिक रीत-रिवाज अर व्योहार कोई लोह रै सांचै में ढाळयोड़ा कोनी हा। अनेक रूप वाळो महान हिन्दू समाज, जीवणरी गतिसीलता सूं भर्‌योड़ो, अर नित नवा कामां में सारा जागरूक दिमाग नैं लगायां, गळतियां रै माय माथ री खोज करी, प्रयोगां रै मारग फैसला कर्‌या, अर महनत रै मारग पूरा नइ पूग्यो। आपरा सास्त्री रा गांठांदार तागां सूं बंध्योड़ी कठपूतळी रो तरियां भो एक दिन एक ही निरदाग नाटक रो अभ्यास कोनी कर्‌यो। यो एक इसो समाज हो जिण में बौद्ध अर जैन भी भेळा हा अर जिको मुसळमानां अर ईसाइयां नैं भी जगां दे सकै हो। यो एक इसो समाज हो जिण रा घणाखरा सदस्य एक बार अनार्यां नैं भी आपरा दोस्त मान लिया अर दूजा इसा भी हा जिको वैदिक कर्मकांड रै बंधणां सूं धर्म नैं मुगत कर्‌यो अर ऊपरो पंचारै अर दिखावटी री दासता सूं धर्म नैं छुटकारो दिराइण नैं सगळो तांई सुगम कर दियो। हिन्दू समाज अब वो महान समाज कोनी रैयो। आज जिण नैं आपां हिन्दू समाज मानां वो तो बड़ बूढ़ी रो देसो है। आज जीवण रो कानून हिन्दू समाज रो कानून कोनी, क्यूं के जीवण रो कानून तो विकास रो कानून है परिवर्तन रो, अर लगातार स्वीकार अर इनकार रो कानून है।

अर आपाँ आपणी मौजूदा अवस्था नै ज्यूं री त्यूं बणाई राखणै रै इरादै री जोर सूं घोसणा करां हां। आपां या बात भूल जावां हां के जे चीजां नै छोडणै रो ही आपणो इरादो है, तो इण रो चोखै सूं चोखो तरीको तो पूरी निरवसता बरतणो ई है। दूजा उणारी वास्ते खेतनै जोतणै री बात कोई कोनी करै। ज्यूं ही वे कोई कोसीस करो, उण हल चल सूं आस पर परिवर्तन रो क्रम तेजी पकड़सी।

जिकी नई ताकत आपां आज महसूस करां, उण सूं ही आपां या बात सोचण लाग जावां के खतम हुयोड़ी चीज नैं भी आपां इण ताकत सूं स्थायी बणा सकां हां। पण, यो भी तो जीवण रो एक कानून है के खतम हुयोड़ी चीज रो यो बड़ो नास करै, अर थोड़ो सी प्राणां री झलक भी जठै हुवै बठै ही आपरो सहारो देवै। इण कानून में चीजां ज्यू री त्यूं नहीं रह सकै, जिकी बढणै जोग है, वां नै तो यो बढासी, पर जिकी बढ चुकी है, वां नैं खतम करकै दूर फैंकसी। इण वास्तै ही मैं कैंवू के आपणै आप नये जीवण री हलचल आपा नै क्रियासील बणारी हो, यो सदा ही उण बखत रो सबसू बड़ो सत्य हो। या कहणी कोई मौकै री बात कोनी के यो मौत नैं स्थायी बणाणै रो एक प्रयोग सरू करयो है। यो तो गेलै सूं थोड़ी देर खातर भटक जाणै रै सिवाय कुछ भी कोनी।

अनिवार्य प्राथमिक सिक्षा लागू करणै रै संबंध में गोखलेजी रै विधेयक सूं कई पढ्या लिख्या लोग या सोचण लागग्या है के आज री सिक्षा सूं लोगां रा सिर घूमग्या है। देस री जनता नैं भी वै इण आफत में क्यूं उळझावै है। पण या बात कैवणिया भी आपरा टाबरां नैं आजकाल री स्कूलां में भेजणा बंद कोनी करै। यो अजीब आत्मविरोध क्यूं? या बात नहीं के यो कोई ढोंग हुवै। बात यूं है के आत्मा में तो नया विसवासां रो बसंत पूगग्यो, पण होठां पर हाल पुराणा विसवास ही अटक रया है। अर इण भांत आपां करता तो वो ही काम आवां हां जिको करणो चाहीजतो हो, पण बोली हाल पुराणी ही बोलता आवां हां। आज री सिक्षा रो फायदो, इण में सामिल खतरां रै होतां हुयां भी आपां हिरदै सूं समझ लियो है। बिना खतरै री तो मौत भी अब आपां नहीं चावां अर इण कारण ही जिंदगी रा दुखां अर बोझा नैं ढोवण री तरिया सहणै री तैयारी में लाग रया हां। आपां नैं ठा है के इण में घणी गड़बड़ी आ सकै अर घणी गळतियां भी हो सकै। आपां या भी जाणां के ज्यूं ही कोई पुराणी व्यवस्था नैं हिलाणै री कोसीस करै, तो उण नै सरूआत में अव्यवस्था री तकलीफां भी उठाणी पड़ै। जद थे कोई ढांचरी घणा दिनां सूं जम्योड़ी धूल साफ करो, तो वा धूल थे अड़कायोड़ी धूम थानै दुख देवै।

आपाँ देखां हाँ के आज सारी दुनियाँ में हर देस आपरो न्यारो अस्तित्व बणायो राखण री भरपूर कोसीस करै। पण, साथै ही हर देस समूची मानवता सूं आपरै सम्बन्ध खातर भी सावचेत होतो दीखै। सावचेत होणै री उण भावना नैं लखदाद है, जिण सूं आज सगळा देस आपरी विलग सत्ता रा इसा रूपाँ नैं बदळ रया है, जिका सिर्फ वां में ही मिलै, अर जिका बारै री दुनियाँ सूं वां रै सम्बन्ध रै मारग मे आडा पड़ै। आज हर रास्ट्र दुनिया री परख खातर आपरा सर्वस्व दे रयो है। आपरै ही कमरै में एकला बैठ र आपरो विलग सता रो ढोल बजाणै मे अब कोई सुख कोनी। पारमारी या माग है के आपणी विलग सत्ता नैं आखी मिनख जात रो आभूखण बणावाँ।

बो बखत आयो खड्यो है जद संकीर्ण प्रान्तीयता नैं रास्ट्रीयता बता र दिखावो करणो असम्भव हो जासी। आपा नैं वै सगळा रीत-रिवाज अर अन्ध-बिसवास छिटकार देणा चाहीजै, जिका आपा नैं बणावटी बाड़ां रै परै सगळां सूं न्यारा पटक राख्या है। वै बाड़ां जिकी आपणी गतिसीलता, लेण-देण, अर विचार अर कर्म सगळां रै आडी खड़ी है। नहीं तो मिनखपणै री राजधानी मे आपा बेहद जलील हो जावाँला। इण नैं आपा भले ही खुल र नहीं मानाँ, पण आपणा हिरदा में ता इण रो गहरो अनुभव कर लियो है। आपां आपणी बापोती री वा चीज ढूंढणै री कोसीस अनेक तरीका सूं करता आया हां, जिकी खाली घर मे चली आई, परंपरा या कर्मकांड ही नहीं हुवै, *पण जिणनैं आखी दुनिया सजानै री ज्यूं सम्भाळ र राखै। जिण दिन आपां उण नैं* ढूंढ लेस्यां उण दिन आपां उरिण हो जास्यां। इण चावना रै कारण ही आपा कूणै मे बैठ्यो रहणो नहीं पोसा सकां। आज जिकी सस्थावां री थापना आपा कर रया हां, वै आपणी रास्ट्रीय अर विस्व जागरूकता नैं प्रगट करै। जे यो काम पचास बरस पहला होतो, तो हिन्दू विस्वविद्यालय रो विचार ही आपा नैं घणो अपरोधो लागतो।

आपणैं देस रा अन्तस पर राज करण वाळै इस्ट देवता नैं मदर रैं अंधेरै कूणै में सदा खातर बैठायो रहणो अब आपणैं वास्तै और सम्भव कोनी। उण री रथ-जात्रा रो दिन आ पुग्यो है। दुनियाँ री सड़कां पर, मिनखां रैं सुख-दुखां रैं बीच, मानव व्योपार री गळियां में सूं वो आगै बढतो जावै है। आपां आपणी सामरथ रै मुजब, सस्ते महगै सामान सूं, उण रो रथ बणावाँ, अर कोई रो रथ रस्तै में ही टूट पड़ै, तो कोई रो बरसा ताई चालतो रैवै, पण काम री बात तो या है के वा सुभ घड़ी आगी है। आपाँ आगूंच ही यो हिसाब तो नहीं लगा सका के कुण रो रथ कठै ताई जासी, पण आपणो बो महान दिन जरूर आग्यो है, जद आपणो सबसूं बारहूं।

चीज, पुजारियां रै कब्जै में, धूप-दीप रै गहरै धुएँ-सूं धुंधळी हुयोड़ी, अब घोर छिप पड़ी नहीं रह सकै।

अठै मैं जिकी चर्चा करी है वा इसो एक रथ बणाणै री ही है। इण सूं कांई बणसी, मैं ठीक नहीं बता सकूं, पण इण री सबमूं चोखी बात या है, के ओ रथ दुनियां रै मारगां पर, अपणै आपनै प्रगट करणै रा मारगां पर, चाल पड़्यो है, जिण रै आनंद में आपां सगळा मेळा हो र आपणै देवता री जय बोलता, रथ रा रस्सा खींचण नै लागग्या हां।

'विरछ री धरती रै बंधण सूं छूटणो कोई आजादी कोनी'

—रवीन्द्रनाथ टैगोर—

विदाई सूं पैलां

आपणो आश्रम मैदानां रै बीच में है। अठै, कुदरत रै बीचूंबीच खुला भर बगान, चहुं मेर खेत, इकसार जीवण बितातां रैवां। दिनूगै पैलां सूरजरी पैलड़ी किरणां आपां नैं छूवे, अर रातनैं आपणा मूं पर देखता चहुरां पर तारां री रोसणी पड़ै। जद तूफान आवै, तो दूर क्षितिज में उणरी घूमरी चेतावणी आपां देखां। मौसम री फेरबदळ रो पहलो समाचार आपणां च्यारूं मेर रा रूंखां रा पानां मे प्रगटै। आपां आपणो कुदरत मैं आपणैं जीवण सूं दूर कोनी राखां। या बड़ी आसानी सूं सीधी आपणैं तांईं पूगे।

फेर भी, अठै एकांत में रहतां हुयां भी, आपां बारली दुनिया सूं भी उतणो ही सीधो सबध राखणो चावां। आपां वै तूफान भी देखणा चावां जिका रो असर मिनख जात पर पड़ै, वै फेरबदळ, सूर्योदय अर सूर्यास्त भी जिका मिनख रो कहाण म आवै। जीवण 'रा व्यस्त केंद्रां सूं दूर' रहणै रै कारण आपां नैं दुनिया री घटनाओं नैं ज्यूं री त्यूं मान लेवण रो फायदो मिलै, न्यारा-न्यारा विचारां रा सांचा में ढळियोड़ी नहीं। इण वास्तै आपां वांनैं सही नजर सूं देख सकां।

आपणी छोटी सी गांवरी पाठशाळा रो सबध सांची चोड़ी दुनिया सूं त्रिठाणै रै वास्तै, आपां दुनिया में च्यारूं मेर घूमणै री जरूरत महसूस करां। अर दुनिया आपां नैं बुलावै भी है। पण, यो सभव कोनी कै इण बुलावै पर आपां दो सौरा दोसो निकळ पड़ां। इण वास्तै आप सब लोगां कानी सूं मैं यो बुलावो मान लियो है। म्हारी मारफत थे सगळा इण जात्रा रा फायदा उठा सकोला। बारली दुनिया री कुछ चीजां मैं म्हारै भीतर भेळी कर लेस्यूं अर थारै आश्रम मे पाछो आतो थारै वास्तै ले आस्यूं।

वण बखत आपां इण बाबत घणीसारी बातां करस्यां। फिलहाल, विदाई सूं पैलां मैं दो एक बातां, साफ कह देवूं।

* *

घणा लोग मनैं पूछ्यो है— "थे यूरोप री जात्रा क्यूं करणी चावो ?" अर मैं नहीं जाणूं कै वांनैं कांयां जवाब देवूं। जे मैं या बात कह देवूं, कै मैं जात्रा रै खातर ही जात्रा करूं हूं, तो वै सोचसी कै मैं वांरै सवाल नैं टाळू हूं। जदताईं कोई काम में

होवण वाळै लाभ अर नुकसाण रो पूरो हाल नही बता दियो जावै, इदताई सांची संतोस दिराणो मुसकिल है ।

आपणो देस ही इसो है जठै लोग या बात पूछै के बिना कारण कोई बारै क्यूं जावै । जात्रा करणं री कुदरती मनसा एक दूजी चीज है जिकी नैं आपां समझ नहीं सकां । आपां आपणा घरां सूं इत्ता काठा बंध्योड़ा हां, अर बारै जाणैं विचारै ही इतो असुभ रो भय, बिछड़णरा आंसू भर्‌या पड़्या है के दुनियां आपणी आंख्यां नूं ही ओझळ होगी । आपणा सवधी आपां नैं इतणो नजदीक सू घेर्‌या राखै के उण सूं परै आपां नैं सगळा गैर मालम देवै । योही कारण है के जद आपां थोड़ी देर खातर भी बारै पग धरणो चावां तो आपां नैं अनेक सवाला रा जवाब देणा ही पड़ै । जिस पख काम में नहीं लेवण सूं करड़ा पड़ाशा है वै उडणै रै आनंद ने किंयां समझ सकै!

जद मैं पैलां बारै गयो हो उण बखत मैं जवान हो, अर सिविल सर्विस (राजरी ऊंची नोकरी) या बार (वकालत) री पढाई करणं री कोशीस रो उद्देस म्हारी जात्रा रो जचतो हुयो सो बहानो हो । आज बावन वरसरी ऊमर में मैं इसो कोई बहानो कोनी बणा सकूं, अर कोई आध्यात्मिक सो बहानो हो ढूंढणो पड़सी ।

भारत रा लोग आध्यात्मिक उद्देश्य सूं जात्रारी जरूरत रो अनुभव करै । म्हारी ऊमर नैं देखतां इसो उद्देश्य ठीक मानणवाळा भी यो अचभो करै के समदरां पार जाणं सूं काईं भलो होसी । आखर, मुगती तो भारत रा तीरथां अर महात्मावां री जातरा सूं ही मिलै ।

मैं तो या ही कह सकूं हूं के म्हारो उद्देश्य तो जाणं रो ही है । इण धरती पर पैदा होणं रो सोभाग मनैं मिल्यो है, अर इण नैं जितणी जादा सूं जादा मैं देख सकूं वितणो ही साचो संतोस मनैं होसी । मनैं परमात्मा दो आख्यां दी है, अर आंरी पूर्णता लांबी चोडी दुनियां मैं जितणी तरह सू मैं देख सकूं उण में ही है ।

पण, मैं या बात भी मंजूर करूं के मनैं फायदै री भी गरज है, मैं जात्रा रा मजा ही नहीं लेणा चावूं, पण वींरै मारफत कोई न कोई मतळब भी सिद्ध करणो चावूं ।

म्हारो विसवास है के जिको यूरोपियन आपरै दिल में आदर भाव लियां भारत री सैर करै, वो तीरथ जात्रा रा महातम पावै । मैं इसा यूरोपियनां नैं जाणूं अर वांरै वास्तै म्हारै दिल में घणी इज्जत है । या बात नहीं है के विदेसियां री प्रसंसा सूं ही भारत री गरिमा रो आभास मनैं हुयो है । मैं म्हारी आत्मा री ताकत सूं आवै सांची

मुकाम —अणजाण चीज रै आवरण न भेदकर उणरै मांयरी अच्छाई नै ढूंढ निकळण री गुण घणो बिरलो है। साच रै काज मे आजादी सू घूम सकणै री ताकत री परख तद ताई कोनी हुवै जद ताई दूजा देसां में नहीं घूम्यो जावै। तुच्छ आत्मावां रा लोग आण पिछाण री चीज नै ही एक मात्र साच मानै अर बाकी सबनै झूठी अर बिना महत्तरी कह र दूर कर देवै। साच खातर आपणी लगन री परख तद होवै जद आपां में आ लियाकत हुवै के आपां अणजाण चीजां रा बारणा झटकै सू खोल देवां अर उणां रै माय छिपी बातां नै ढूंढ र वां नै इज्जत देवां, इसी इज्जत जिकी आंधा रीत-रिवाजां सूं नहीं खुले, मन सूं दी जावै।

भारत रै निवासी खातर यूरोप री तीर्थ-जात्रा बहोत घणी सफळ हो सके जे वणरो दिमाग पुराणा पूर्वाग्रहां सूं घबड़ायोड़ो नहीं रैवै अर उणरी आंख्यां साच नै ढूंढती रैवै। जिका यूरोपियन भारत में तीरथ जात्री री भावना सू आया है वै आपणै जीवण रै बारलै पक्ष रा दुख जरूर देख लिया है, अर फेर भी चेहरां रै घु घळकै मे सूं दूर खड़ी वास्तविकतावां नै भी वै जरूर देखी है।

या बात कोनी के यूरोप मे वास्तविकतावा झट दीख जाती हुवै। फर्क योही है के बठै वै चौंधड़ा में दब्योड़ी कोनी मिले, पण चकाचौंध रै एक पड़दै रै नीचे मिलै, जिकै सूं वांनै देखणो और भी मुसकिल हो जावै। उण रतनां जड़ियै पड़दै री चमक सूं आपां चकित हो सका, अठै भ्रम सू यो सोच सका के पिच्छम मे देखणै जोग या ही सबसूं कीमती चीज है, अर पड़दै रै पाछै छिप्योड़ी देव मूरत री झळक देख्यां बिना ही आपां पाछा आ सका।

जो आपां पैलां सूं ही या बात सोच र जावा के बठै रतनां जड़यो ही सब कुछ है, तो आपणी जात्रा जाबक फालतू है।

एक घिसीपिटी बात चाल पडी है वा या के यूरोप री सभ्यता भौतिकवादी है अर आत्माहीण है। इण विचार नै तथ्यां सूं साबित करणै री जरूरत कोनी समझी जावै। कुछ लोक जिकी बात कैवै, उणनै ही दूजा दुहरावै, संख्यावां ही इणनै साबित कर देवै, अर वै ही तक री जगा ले लेवै।

आपानै सबसूं पैलां तो या चीज याद राखणी चाहीजै के जठै भी कोई चोखी बात है, बठै उण रै गैल आत्मारी ताकत जरूर है। क्यूंके साच री प्राप्ति आत्मा सूं ही हो सकै, मसीनां सू नहीं, चाहे वै कितणी ही ताकतवर हो। जे आपां यूरोप मे कोई तरक्की देखा, तो उणरै पोछै आत्मारी ताकत जरूर है, या पक्की बात है कै या जड़ पदार्थ री करयोड़ी तो हो नीं सकै। आत्मा री ताकत ही भौतिक चीजां में अपणै आप नै प्रगट करै।

यूरोप भौतिक चीजां रो ही संग्रह करै, मानवरी आत्मानै प्रगट कोनी करै, या बात कहणी किसी है जिसी या कहणी के रूंख आपरै जीवण नैं सूखा पत्ता गेर र कोनी प्रगट करै। रूंख रै जीवण री ताकत ही उण रा सूखा पत्तां नैं गिरावै, पत्ता बणै आपरी मौत री निसाणी कोनी हो सकै। जीवण में हो या ताकत है के कोई भी जिन मर सकै—असली मौत तो जद ही आवै जद मरणै रो काम बंद हो जावै।

आज रै यूरोप रो आदमी लगातार प्रयोग अर फेरबदळ में लाग्योड़ो है। आज जिकी बात वो मानै, काल उणी नै छोड देवै। चुप चाप खड़्यो रैणो उणनै सुहावै कोनी। घणा इसा लोग भी है जिका इण बदळा-बदळी में गहराई री कमी देवै।

विस्वरी हरेक चीज मरण अर पुनर्जन्म रै चक्कर में बंध्योड़ो है। फेर भी, आपणा रिसियां इण विस्वरी हर चीज नैं आनंद सूं ही पैदा हुयोड़ी कोनी मानी कांई? मरण में ही अमरता आपणै आप नैं निरंतर प्रगट करती रैवै। जद आपां बारली चीजां नैं ही असली मान लेवण री गळती करां, तो आपां न तो आत्मारा दरसण कर सकां अर न बारला चीजां नैं ही मान र खुस हो सकां। यूरोप रै भी एक आत्मा है, अर उण में ताकतरी भी कोई कमी कोनी। जद आपां यूरोप री आत्मा रो भीतरी मरम ढूंढां; तो उण रै मांयली सचाई भी मिलै, अर या एक इसी चीज है जिकी न तो भौतिक ही है अर न खाली बुद्धि री ही; पण जीवण रो कोरो आनंद है।

मैं जिकी बात कैवण री कोसीस करूं हूं, उण नै एक हाल में हुयोड़ी घटणा सूं दरसा सकूं हूं। पाणी रो एक जहाज, जिण में दो हजार मुसाफर बैठ्या हा, अतलान्तक महासागर नै पार करतो आधी रात रै बखत एक तिरतै हिमखंड सूं टकराग्यो। जद यो डूबण वाळो ही हो, इण पर बैठ्या यूरोपियन अर अमरीकन आदमी आपरी जान बचाणै री बजाय लुगायां अर टाबरां री जान बचाणै में जुटग्या। या भयंकर घटणा चाणचुकी ही जाणै एक पड़दो सो आंख्यां आगै सूं दूर कर दियो, अर वां लोगां री मांयली आत्मावां री एक झळक आपां नैं दिखाई, जिण सूं ताजुब अर परम प्रसन्नता रै कारण आपणा माथा नीचा झुकग्या।

कोई घणा दिना री बात कोनी, आपणा कुछ मित्र, नदी रै रास्तै एक स्टीमर बोट में बैठ्या ढाकै सूं पाछा आवै हा। नदी रै बीचूंबीच एक नाव बोट सूं टकराकर उलटगी अर उण में बैठ्योड़ा सब लोग डूबण लागग्या। बोट में बैठ्योड़ा सगळा लोग पास में आणियै एक दूजै बोट वाळै नैं मदद वास्तै हेला मार्‌या, पण वो बिना देख्यां ही चल दियो। डूबणियां नैं बचाणै मे कोई खतरो या मुस्किल कोनी ही, पण ओटवाळै तो कोई परवा कोनी करी।

इण सूं मनै एक और घटणा याद आवै। एक बार रात भर तूफान चलतो रैयो, अर दिन उगतां उगतां हवा रो जोर तो कम पड़ग्यो, पण नदी हाल भी वेग पर

हो। म्हारो बोट किनारै पर लंगर गेर राख्यो हो। पाणडुबी हो मनैं एक लुगाई रो सो डील नदी में तिरतो दीख्यो, जिण रा लाम्बी लाँबा-लाँबा केस ही पाणी पर दीसै हा। मैं कनैं रा मिनखां नैं हेलो मार्‌यो अर कैयो के म्हारी रक्षा-नौका लेर उण नै बचाणं री जल्दी करो, सायद बा जीती ही हुवै। पण कोई भी को हाल्यो नीं। फेर *मैं हरेक डावणियै नैं पांच-पांच रिपिया देवण रो लालच दियो। या सुण र घणा* सारा मिनख नाव लेर भाग्या अर उण अचेत लुगाई नैं पाछी ले आया, जिकी थोड़ी *देर बाद होश में आगी। जे मैं इनाम देवणरी बात नहीं कैतो तो उणरी जिन्दगी कोनी* बचती।

एक दूसरै मोकै पर मैं नाव सूं एक लाँबै चौड़ै छिछळै पाणी नैं पार करै हो। जठै झील अर नदा रो जळ मिलै, बठै मछुआ मछणरी बार पाणी रो रस्तो मांकड़ो करण खातर लठ्ठा बिछा देवै। उण सूं बांनैं मछली पकड़णमें तो सुभीतो हुवै, पण नदी री धार बडी तेज अर भयकर हो जावै। इसी जगांशे पर मैं कई नावां नैं सकट में फंसी देखी है। लट्ठां रै बीच एक सांकड़ी गैली में सूं निकळतां बखत म्हारी नाव एक खतरनाक जगा पूगी। थोड़ा गज दूर ही मछुआ आप रै काम में लागयोड़ा हा, पण बै म्हारी मदद री पुकार पर ध्यान ही कोनी दियो। म्हारी नाव झाळा इनाम देवणरी बात भी कैयी, पण मछुआ या सोच र मुणी अणसुणी करदी के सायद ओर बधसी, चाहे म्हारी मुसीबत बां रै गळत काम रै कारण ही ही। जद इनाम री रकम बधती-बधती मजेरी होगी तो वै झट कान सभा लिया।

थानैं याद होसी के थोड़ा दिनां पैलां जद बोलपुर रै बजार मे एक दूकान में *आग लागगी ही,* तो पड़ोसी कोई कोनी आया, अर ब्यार काबुला उण नैं बुझाणं मे* मदद करी। पाड़ोसी तो आपरा पाणी रा कुंआ भी कोनी लेवण दिया वयूं के काबुलिया *रा हाथा सूं भीटर्‌यां पर बै उतारू हो जाता।*

आत्मारी जिकी दरिद्रता आपा रात-दिन देखां हां उण रा घणा द्रिस्टांत देणं री जरूरत कोनी।। आपां चाये किमी ही दलीलां देर इण री काट करां, पण मन मे तो चरित्र रो कमी नैं मानणी ही पड़ै।

निस्वार्थता रो आध्यात्मिकता सूं बिलकुल संबध कोनी काई ?[1] आध्यात्मिकता दुनियां नैं छाड र एकान्त मे बैठ्यां परमात्मा रो नांव लेणं सूं हां मिलै काई ? या बा आत्मारी ताकत कोनी जिकी मिनखां नैं साचा वीर बणावै ?

'टिटानिक' जहाज रै डूबणं री दुर्घटणा में आपा नैं थाणडुबो इसा मिनखां रो श्रेक झुंड दीख्यो जिको मौत सूं जूझतो हुयो भी एक चमकदार रोसणी मे जगमगावै हो। इण दुर्घटणा सूं कोई एक मिनख रो निगळो गुण सामैं कोनी आयो। सचमुच

तारीफरी बात तो या ही के ऐस-आराम में पळयोड़ा, अर आपरै मूंछं वर्गं में दरशोग्योड़ा भागवान लोग भी आपरी इच्छा सूं आत्मत्याग करयो। निरबळ अर अपंग लोगां प्राण बचावण सारू वै लोग आपरी इच्छा सूं ही यां त्याग करयो।

अकस्मात आयोड़ी विपदा सभ्यता रै अनुशासन रो पड़दो मगा र निरव री आदू प्रिवित्तियां नै चौड़ै ला देवै। जठै सोच विचार रो वगत मिलै बठै तो आदमी मन पर काबू कर लेणै रो मौको मिल जावै। 'टिटानिक' जहाज पर उण सबेरे, रात नै, जद लोग या तो गहरी नींद सूता हा, या रंगरेळियां में चूर हा, एक झटकै सूं जाग उठ्या अर चाणचुकी आयोड़ी मौत नै सामीं खड़ी देखी। इणां पर मौत रै घबराहट में बावळा कोनी बण्या, अर आपरी जान बचावण खातर झगड़्या कोनी। या बात कोनी के जिकी वीरता वै दिखाई बा अनायास री कोई चीज ही, या कोई एक मिनख रो गुण हो। वो घणां दिनां रै अनुशासन सूं कमायोड़ै राष्ट्रीय गुणां रो एक नाटक रो सो प्रदर्शन हो। या मौत पर मिनखरी आतमारी जीत ही।

आतमारी या ही ताकत, जिकी इण घटना में इतणी जोर सूं प्रगट हुई है, पिच्छम रै संसार रै जीवण में अनेक रूपां अर अनेक भांतां में कोनी दीखै कांई? देस अर समाज रै खातर स्वार्थ नै एक दम भुला देणै रा अणगिणत उदाहरण मिलै। इण बळिदानां रै सांवठै असर सूं ही यूरोप री सभ्यता ऊँची उठी है—जाणै भूंमं रो टापू समदर सूं उठ्यो हुवै।

कोई भी समाज दुख देख्यां बिना साची तरक्की कोनी कर सकै, अर भौतिकवादी मिनख कनै इण काम रो लेसमात्र भी लियाकत कोनी हो सकै। भौतिकवादी नै जे भौतिक चीजा में ही सुख मिलै तो वो बानै क्यूं छोडै? लोग पुन्न कमाणै खातै सास्त्रां रै मुजब कस्ट सहणै खातर घणा त्यार रैवै, क्यूं के बांरै वास्तै दुनिया री चीजां जिसा ही उपयोगी औ भी है। पण, खाली भौतिक चीजा रो ही पुजारी इसै कोई गुण खातर आपरी जान कोनी दे सकै जिको हिरदै रो एक आजाद भावना मात्र है।

यूरोप में आपा नित इसा द्रिस्टांत देखां, जद हिरदै री ही भावना सूं प्रेरित होय र लोग आपरै देस, मिनखजात, आपरै प्यार अर ग्यान रै प्रसाद तांई खुसी-खुसी, दूसनै गळै लगावै।

या बात कोनी के यै सगळा ही त्याग साचा है, यां में सूं घणसरा तो कोरो देखो है। पण इण सूं आपां नै सचै त्याग नै भी तुच्छ बताणैरी कोसीस नहीं करणी चाहीजै। बडे बडे रात नै चांद रै च्यारूं मेर रोसणी रा एक घेरो (अळेरो) रैवै। आपां जाणां हां के या अळेरो एक भ्रम मात्र है। पण इण भ्रम नै भी चांद रै च्यारू

मेर मझणो पड़ै, जिको खुद बिलकुल असली है। हर समाज में ही असली चानणो रै च्यारूंमेर उण रो बिब चमकतो रैवै, पण यो नकली चानणो असली री मौजूदगी नैं ही साबित करै।

पिच्छम रा अदभुत लोगां री बातां ही आपां पढी है बां मे नेड़ै सू कदे देख्या कोनी। अर जिकां नैं आपां देख्या है वैं यूरोप री जागती जोता में सूं कोनी। घणा दिनां पैलां आपा हेमरग्रीन नांव रै एक स्विडेन रै आदमी सूं मिल्या हा। बानैं राममोहनराय रै बारै मैं पढणै रो मौको मिल्यो अर भारत खातर घणी गहरी भावना ले'र बै अठै आया—यो काम घणो मुसकिल हो क्यूं के बा कनै इसा साधन कोनी हा। बे न तो इण देस रा लोगां नैं जाणता हा अर न अठ री भासा पण फेर भी वै एक बंगला परिवार मे रैया, अर राममोहनराय रै देस नैं आपरो देस बणायो।

वै थोडा दिन ही जिया, पण जिका लोग बांनै जाणता हा वै या बात कदे भी कोनी भूलसी के किसी तकड़ी लगन सूं बै आपणा लोगां री सेवा करी, जद के बडो-बडी मुसीबतां बां नैं उठाणी पड़ी। इतणै पर भी, जद नीमतल्ला घाट में वां रो दाहसंस्कार करयो गयो, तो आपणो एक साप्ताहिक छापो इण बात पर दुख प्रगट करयो के हिन्दुआं रा समसाण अपवित्र होग्या।

ये सगळा जाणो हो के निवेदिता बैन स्वामी विवेकानद री भगती सूं प्रेरित हो र कियां भारत रै वास्तै आपरो समूचो जीवण समर्पित कर दियो

ये दोनूं द्रिस्टात इसा लोगा रा है जिका आपरा अनुभवा रा परिचित मारगां सूं घणो दूर री हालतां में आपरै आपै रो लोप करयो। हर चीज जिणरो बै मुकाबलो करयो, बां रै सुभाव सु एकदम विपरीत ही। यो खाली बारो त्याग ही कोनी हो—बांनै तो आपरै त्याग रो मारग भी खुद ही बणाणो पड़यो, क्यू के सगळा परिचित मारग तो बां रै खातर बद हा।

इण में कोई सक कोनी के आपरै रास्ट्रीय चरित्र सूं ही वै इण आदर्स नैं लियो अर इण पर अपणै आपनैं मिटा देणै री ताकत भी ली। इसी अनोखी ताकत एक भौतिकवादी परपरा सूं ली जा सकै ही काई? या एक साची आध्यात्मिक ताकत कोनी ही काई, जिण री जोड़ आपणै देस में बिरली ही देखण नैं मिलै।

मनै या बात कहणै रा दिन परमात्मा न दिखावै के आपणै देस में आध्यात्मिकता आय ही कोनी। अठै भी इण रो एक पक्ष साफ तौर सूं प्रगट हुयो है। आपां में भी साचै भगत कनै बा ताकत है के वो ध्यान री आंख्यां सूं या आपरी भावना सूं स्रिस्टिरा

अनेक तत्वां में परमब्रह्म नैं ढूंढ सकै । 'इण ताकत रै पांछै अनेक सदियां री तपस्या अर गूढ विचार है । यो ही कारण है के अठै रा धर्मात्मा लोग आसानी सूं परमात्मा रो ध्यान कर सकै ।

कोई भावनासील विदेसी, जिको आपणैं राष्ट्रीय चरित्र रै इण पक्ष री खोज में आपणैं देस में आवै, निस्चै ही सफळ होवै, अर इण सूं उणरै भीतर रो थोड़ो सून भी भर सकै । पण आपणैं भीतर भी इसो ही एक सून्य है जिण नैं भरणैं री जरूरत है—घणा दिनां सूं यो आपणी घणखरी कमजोरी अर थकावट रो कारण बण्योड़ो है।

परंपरावां रा दंभी अर उथळो देसी के आपणैं में आध्यात्मिकता री तो कोई कमी कोनी, पण वां भौतिक चीजां रै ध्यान री कमी जरूर है जिण सूं पिच्छमरा लोग दुनियां पर हावी बण सक्या है ।

पण, कोई भी देस कोरी भौतिक चीजां सूं ही कदे भी तरक्की कोनी कर सक्यो, अर न कोरै दुनियादारी रै ध्यान सूं ही ताकत पा सक्यो है । दीवै में तेल पुर देणो अर चतराई सूं बाती बट देणो ही काफी कोनी—दीवै नैं क्यों न किणी चानणैं री जरूरत है ।

या बात तो कोई मनको ही कह सकै के यूरोप आपरी भौतिक ताकत रै पाण ही सारी दुनियां पर राज करै । इणरी ताकत रा असली स्रोत तो आध्यात्मिक ही है। और कोई रस्तो कोनी जिणसूं आ ताकत उपज सकै ।

हरेक आदमी या बात मानसी के बौद्ध धर्म भौतिक लाभां रो धर्म कोनी। फेर भी इणरै उदय अर प्रभाव रा दिनां में विग्यान, उद्योग अर सारी ताकत इणी आडा बढ़ग्या हा जिन्णा आपणैं इतिहास में फेर कदे भी कोनी बढ़ पाया । कारण यो है के जद मिनखरी आत्मा जड़ता सूं छूट पड़ै तो उणरी ताकत हर दिसा नैं फैलणै अर बढणै री कोसीस करै । आध्यात्मिकता हर ताकत रै मांय छिपी रैवै, अर पूर्णता उणरै सुभाव में ही हुवै । मांय या बारै, मिनख रै विकास नैं रोक कर या आपरी आपनैं हराणै री कोसीस कदे भी कोनी करै ।

यूरोपरी ताकत रो बारलो रूप किसो भी हो, मनैं कोई संदेह कोनी के इणरै मांय तो आत्मारी ताकत ही है ।

अर या एक साबचेत ताकत है । कोई भी मानखो दुख त्याग नैं भूल कोनी सकै । अब मांय रा कस्टां नैं दूर करणै री पागी दोरी कोसीस सूं या हर दम जुड्योड़ी रैवै । इण कोसीस रै मांय जिकी सक्रिय सद्भावना है उणनैं बळ दे वाळी बाट्टी अमर आत्मा रै सिवाय और कोई चीज कोनी । या सद्भावना ही आदमी नैं

उणारा गुदगुदा बिछावणां सूं खींच र म्रात्म-त्याग रा कामां खातर मजबूर करै, म्रर मौत रै हेलै नै भी सांभळनै वास्तै त्यार करै।

ईसा रै जीवण-रूंख रो एक म्राध्यात्मिक बीज यूरोप री चेतनता री जमीं में बड़ग्यो म्रर बेसकीमती फळ देवण लागग्यो। इण बीज में जीवण री कुणसी ताकत है? दुख मे भी मजबूती राख सकणै रा लियाकत ही वा ताकत है।

सैंकड़ां बरसां तांई, गीतां, प्रार्थनावां म्रर कर्मकांडां में यूरोप भगवान री उण दया रो सदेसो सुण्यो है जिको मिनख मात्र रै दुख नैं म्रापरा बणा लेवै। जुगां सूं यो विचार यूरोप रा लोगां रै म्रंतर में प्रवेस करग्यो है म्रर वां रै म्रचेतन मनां री म्रग्यात गहराइयां पर कब्जो जमा लियो है, जठै बीज बोयो ज वै म्रर मिनख री समूची चेस्टा़वां रो म्राधार बणायो जावै।

योही कारण है के म्राणां यूरोप में लगातार इसा लोगां रा द्रिस्टांत देखा, जिका ईसाई धर्म रो विरोध करै म्रर भौतिकता री तारीफ रा गीत गावैं, पण बखत पड़णै पर बिना हिचकिचाहट रै म्रापरो बळिदान कर देवैं म्रर हर दुख म्रर उपहास नैं बहादरी सूं मेलै। म्रमरता रा गुणां नैं वै नासवान गुणां सूं म्रर सगळा लोगां रै हित नैं म्रापरै हितां सूं ऊंचो जगां देवैं म्रर इण बातरो वांनैं म्राभास भी नी हुवै।

'टिटानिक' जहाज पर भी जिका लोग दूसरां री जान बचावण खातर म्रापरी जान रै खतरै री परवा कोनी करी, सगळा ही पक्का ईसाई कोनी हा। वां में सायद इसा भी घणा हा जिका नास्तिक म्रर ससयवादी हा। पण म्हारै मत नैं मानणवाळा होणां सूं ही वैं म्रापरी म्राध्यात्मिक परपरा सूं संबध किणां तोड़ सकै हा। जिको म्रादमी कोई उद्देश्य रै वास्तै म्रापरी जान देवै है, वो म्रेकलो ही समूचै लोगां खातर कोसीस कर रयो है। म्रापरी मूरखता रै कारण जनसमूह उण नैं भिड़क सकै, पण फेर भी उणारी मेहनत रा फळ वां रै हा वास्तै है।

या बात चाये कितणी ही खारी लागो, पण म्हानैं मानणी पड़सी के, परमात्मा रै प्रेम में पाई जावण वाळी, न तो पर-दुख महण री सामरथ म्रर न कोसीस ही म्रापणै देस में ज्यादातर दिखाई देवै। भगती रो घणो गहरो भावात्मक पख, भावनावां रा सूक्ष्म म्रतर म्रर म्रनेक भांतरा उन्माद, तो म्रापणै में घणा मिलै, पण सेवा म्रर म्रात्मत्याग री भावना म्रर दुखां नैं म्रासानी सूं झेलणै री ताकत बिरणी मात्र मे कोनी मिलै। म्हां भगवान रै प्यार री खुसियां ही ढूंढी है उण रा दुख नहीं।

कोई लाभ रै विचार सूं दुख झेलणै री म्रादत गेरणै मे कोई म्राध्यात्मिकता कोनी। साचो म्राध्यात्मिकता तो दुखरै प्यार सूं ही दुख झेलणै में है। नित घनरी

खोज में लाग्योड़ै मिनखरी पीड़ा अर आगली दुनिया में चोखी जगां लेवण खातर करी गई तपस्या—आं कामां सूं पूर्णता कोनी मिलै। अै तो आंयला गरीबी नै ही दूर करै। प्यार रै कारण ही जिको त्याग करयो जावै, वो ही आत्मा नै ताकत अर ज्ञान रो बड़ी ऊँचाई ताणी पुगावै, अर मौत नै जीतण में जीवण री मदद करै।

दुख में आनंद लेवण सूं ही आपां अपणै आपै सूं ऊँचा उठर सारी दुनियां री बोध कर सको हां। दुख ही साचरो मोल है। यो आत्मा नै समृद्ध करणै रो मारग है। दुखरै रूप मे आत्मा आपरी ताकत प्रगट करै, अर उणरै मारफत ही आपां अपणै आपनै अर मानवता नै समझां। यो ही कारण है के शास्त्र आपां नै कैवै—"बलहीण आत्मा नै नहीं पा सकै।" इण नै यूं कैवां के जिकै में दुख झेलणै री ताकत कोनी, वो अपणै आपनै नहीं समझ सकै।

दुखां नै झेल र आपां एक दूजै रै नैड़ा नहीं आ सक्या हां। आपां आपणां रा मोल चुकाये बिना आपणा लोगां नै 'आपणा' कियां कह सको? एक मां नै आपरै टाबर नै आपणो बणाणै वास्तै दुख अर सेवा रै रूप में मोल चुकाणो पड़ै। जिण माता गुरुवां नै आपां ग्रहण करां वांरो मोल बिना करयां ही आपां चुका देवां। परन्तु, आपरै आसपास रा लोगां नै हिरदै सूं आपणा बणाणै में आपां [illegible] ही सकां अर इण वास्तै ही वां रै खातर त्याग रै कोई काम में आपां नै आनंद नहीं मिल सकै।

प्यार कही जावण वाळी मोहिनी दिरस्टि सूं ही आपां दूजां री मनस्थिति समझ सको हां। दर्शन शास्त्र आपां नै आ बात कैवै के सगळा प्राणी समान है, तो आ एक कल्पना मात्र है जिको आपांनै ध्यान में सगळा प्राणियां रै बरोबर समझणै में थोड़ी सी मदद करै। आ समानता तो प्यार रै मारफत ही करी जा सकै, जिको आत्मा री इक लाखण है, जिण रो पैरोकार धरम है, अर जिणरो समर्थन आवश्यक है। इण तरां रै दुख सूं ही एक देस-भगत आपरै देस में सगळै जिनरी आत्मा रो अनुभव करै, अर [illegible] रै उणनै धारै।

[illegible] रो धर्म प्यार रो अर दुख सहणै रो धर्म है जिको आपणै आप नै [illegible] बदल करै अर जिणसूं [illegible]। दुखां री [illegible] है जिकी नै [illegible] कालिमा [illegible], अर [illegible] है। [illegible] त्याग सूं ही [illegible] विज्ञान, [illegible], साहित्य, राजनीति अर [illegible] है। [illegible] सूं [illegible] मई, [illegible] सूं [illegible] पई, अर [illegible] है, [illegible] रै धर्म री [illegible]।

इण कारण ही बौद्ध काळ में, प्रेम अर त्याग रै धर्म नैं अपणायो सू, भारत एक इसै विकास तांई पूग्यो जिको आज रै यूरोप री तरियां हो। उण बखत मिनखां नैं ही नहीं जानवरां नैं भी चिकित्सा सुलभ ही। सगळा जीवधारियां रा दुखां नै दूर करणै री कोसीस अनेक रूपां मे दिखाई दी। धार्मिक नेता, घणी तकलीफां उठाकर भी, विदेशां में जाकर ग्यानसून्य विदेसियां रो उद्धार करणै वास्तै, न उलांघी जाणै जोग बाधावां नैं भी पार करी। उण बखत भारत आप रा उपासकां नैं दुखां रै मारफत ही ताकत अर महानता बख्सी, अर इण कारण ही बो आपरी ही नहीं समूचै संसार री आत्मा नैं जीत पायो। बो उण बखत आध्यात्मिक अर भौतिक तरक्की नै एक साथ प्राप्त करी जद यूरोप में ईसाई सभ्यता सुपनै मे भी कोनी ही। उण तपस्या अर त्याग री चमक अबार बणावटीपणै अर भावुकता सु धुंधळी पड़गी है, पण वा जावक मिटगी ही कांई? जे आपां उण नैं दूजां में देखां, तो आपणै मांय कांई है, इणरी याद कोनी आवै कांई?

आपां नैं या बात याद राखणी चाहीजै के जठै अगन तेजी सूं जळै बठै राख भी काफी मात्रा में होणी चाहीजै। नान्ही सी लौ तो थोड़ी गरमी ही देवै, उण रो असर भी मामूली ही हुवै अर नासकारी पक्ष भी मदो हो रवै। या बात मानणी पड़सी के यूरोप में पाप भयंकर अनुपात में, एक भड़कती बैचेनी रै रूप में मिलै, जिसो आपणै देस में नहीं देखां। फेर भी यूरोपरा लोग उण हालत में ही संतोस नहीं कर लियो। वै इण सूं घोर घणा सतर्क होग्या है। मलेरिया रै माछर सूं लगा र सामाजिक बुराइयां तांई, राखस रै हर रूप नै वै ललकारयो है, चाये इण लड़ाई में वां नैं आपरी जान ही जोखणी पड़ी हुवै। गीता में लिख्यो है के "एक छोटो सो गुण भी बडै सूं बडै डरसूं बचा लेवै।" समाज में गुण रो वो अंस बडै सूं बडै भ्रस्टाचार सू भारी पड़ै।

यूरोप में निबळा लोगां सागै जिको बरताव हुवै उण में न्याय रै मारग सूं भ्रस्ट हुयो जावै, पण यो भ्रस्ट होणो ही एकमात्र असलियत कोनी उण रै निर्दयी अर मदांध लोभ रै मांयसूं ही एक अवाज उठै जिकी अपणै आपनैं लांछित करै। यूरोप में इसी वीर आत्मावां री कमी कोनी जिकी ताकतवर रै अत्याचारां रै सामीं मजबूती सूं डट जावै। इसा साचा आदमी दूर देसां में विदेसी लोगां रो पक्ष लेवण में अर वां रै खातर दुख झेलण में भी हिचकिचावै कोनी। देस रै स्वराज री चेस्टा करणियां भारतवासियां रा साचा मित्र असल में कुण है? विरोध अर तिरस्कार री परवा कियां बिना ही वै आपरा देसवासियां नैं न्याय रै वास्तै स्वार्थ छोड़ण री बात कैवै। दीखण में तो इसा लोग थोड़ा ही है, पण सचमुच में नहीं, क्यूं के अै आदमी अपणै आप सूं भी आगा है, अै तो परंपरा रा एक भाग है। अै सगळा एक ही समै पर या एक

जिका लोगां नैं अपरणं आपमें ताकत रो साचो आभास नहीं हुवै, वे ही या कारण बणा सकै के ताकत बारली चीजां में ही हुवै, अर एक बार वां नैं प्राप्त करयां फेर हर चीज जीती जा सकै । पण यूरोप प्राचीन भारत री अवाज में ही पूछै जिकी चीज मनैं अमर नहीं बणा सकै उण नैं लेय मैं कांई करूं ?" वो जरणें के महानता रेलगाडियां, तार-रा खम्भां, कारखानां अर तकनीकां री उपज कोनी वो ही कारण है के यूरोप एक वीर री सी साची सोगन ली है, आपरी दौलत अर आपरो जीतणो इणनैं समर्पित कर दियो है, अर हर गळती अर हर असफळता पर पैलां सूं भी जादा जोश सूं आपरी कोसीस चालू राखी है । समै समै पर बुराइयां जरूर प्रगट हुवै, जिया रगड सूं अगन प्रगटै अर समुद्रमंथण सूं जहर । पण वो बुराई नैं स्वीकार नहीं करै । उणरा सिपाही वीर है, वांरा हथियार तीखा है, साच रै प्रति वांरी लगन उणांनैं अमर बणा दिया है । अर आपां अर लोग साधनैं ढूंढणो तो दूर रयो, उणरो सामनो करणें में भी घणा सुस्त हां, क्यूंके आपां हाथां घड़योडा बधणां में लिपटया पड़या हां अर वां नैं ही ढाल मानणें री भूल करां हां ।

जद या अचभै री बात नहीं होणी चाहीजै के सकट रै बखत, जद साच रै अलावा कोई मारग ही नीं हुवै, आपा बखतरी ललकार नैं झेल नीं सकां । आपां खेल में लाग्या रैवां अर उण नैं ही काम बतावां, भ्रम में पड़या रैवां अर असलियत रा फायदां री आस करां । आपां हाथ में लियोड़े काम नैं पूरो करणें सारू आपणें बणा बड़ा उत्साह नैं बणायो कोनी राख सकां, अर सिद्धांतां अर भावनावां रै जाळ में फस्योड़ा, आपणें कामा में बारंबार आखड़ता रैवां । इण वास्तै, जीवण रा ऊंचा सूं ऊंचा गुणां रो अनुभव करणें री खोज में, तीर्थ जात्री री भावना सूं यूरोप री यात्रा फालतू नहीं हो सकै । पण, जात्री नै आदर री भावना सूं आगैं बढणो चाहीजै, अर मानवी व्यक्तित्व नैं समिद्ध बणाणो ही उण रो लक्ष्य होणो चाहीजै ।

मैं जाणूं हूं के पिच्छम रै अर आपां रै बीच भगड़ै री एक बात है—स्वार्थ—जिको अनेक तरियां आपां नैं दुख देवै । आपणी ही आध्यात्मिक दरिद्रता रै कारण पैदा होणें अर आपणा एकठा हुयोडा पापां रो प्रायश्चित होणें पर भी वो आपां नैं दुख देवै । आपणा विरोधी आपरै दिमाग रै ओछैपणें नैं दभ री नकाब सूं ढक लेवै, अर आपरै आंधै घमड में वे आपरै अलावा कोई में भी भली बात कोना देखै । इण गहरै घाव नैं सहता हुया, आपां यूरोप री अच्छाई नैं आसानी सूं समझ अर मान कोनी सकां । यूरोप री सभ्यता रै पीछै रो धार्मिक ताकत रो आपां विसवास कोनी करां अर उणनैं कोरी भौतिकवादी कह र टाळ देवां । आपां आत्मा री मलीनता सूं डरां, जिको सायद आपां नैं साच रै आसण पर ताकत नैं मेल र पूजा रै विनीत भाव में उणरै आगैं ढोक करणें री प्रेरणा दे देवै । आपां या सोच र डरां के कठै या न हो के भला आदमियां री तरियां हूवै आदमीरी अच्छाई नैं तो नहीं मान पावां, अर थक र आराम

तिरस्कार रै रूप में आपणा निजी विस्वास ही खो बैठां, या कोसळी नजर में छार दूजे री हिंयों ही बण जावां, अर इण भांत आपणो अस्तित्व ही मिट जावे।

अै ही वै खातरा है जिका इण जात्रा में साच री तीर्थ जात्रा रो रूप दे देवे। आपां नें बाधावां में पार करणी है अर दुर्गम मारग रा दुख भेलणा है। आपांनें आत्म गौरव रो झूठो बोझो परै बगाणो है, अर फेर भी आपणें सार्चे स्वाभिमान रा पदार्थों री होसियारी सूं रुखाळी करणी है। सचमुच में मुसीबतां ही आत्मा नें अमर बणावे, क्यूं के जिकी चीज आसानी सूं मिल सके वा आपणें जीवण रो अंग कोनी बणे। इतणें पर भी सगळें सार्थ लाभ रो अर्थ यो ही है के वो चेतनता नें और जादा उभार कर दिखावे। इण नें यूं कह सकां के जो कुछ आपां सचमुच प्राप्त करां उण सूं म्हांनें आपरी और जादा समझ आणी चाहीजे। जे यो काम नहीं हुवे, तो बारला नाव बारला ही बण्या रेवे, अर बिसा ही काल्पनिक भी हुवे जिसी इण ढंग री सगळी चीजां हुया करे।

॥१॥

"गुलाब रो फूल, आपरै कांटे कानी री लाज भरी झाडी सांमण सूं भी घणी विसेस चीज है।"

—रवीन्द्रनाथ टैगोर—

करतार चावै सो हुवै

हवा नैं तो आपणी गळीनैं आम सड़क ताँई पाणी सूं मरणैं खातर बरखा ही स्याणी हो। जद पगाँ चालणियां नैं जूता भी छत्तेरी तरियाँ माथै पर ताण कर ले जाणा पड़ै, अर गळीरा रैवणिया जान बचाणै रै संघर्ष में धरती अर पाणी दोनुवां पर बो सकणिया जिनावरां री तरियां मालम होवै। भो नजारो मैं म्हारै घर रै बरामदै सूं घणा बरसा सूं देखतो आयो हूं —ठेठ म्हारै टाबरपणैसूं लगार आज ताँई जद म्हारा केस धोळा होग्या है।

इणी बीच मे करीब साठ बरसरो अरसो गुजरग्यो उण बखत आपणै मसीन जुग मे आप ही आवण-जावण रो मोटो साधनहो, अर बिजळी उण कानी आख्याँ मटकाकर चिड़ाणो सरू करयो हो। प्राणविक सिद्धान्त उण बखत तक अहस्यता री हालत तक पूग्यो हो, अर बो अवार बुद्धि में नी आ सकण री अवस्था तक आयो है। मिनख प्रकास में आपरी पाँख्यां फैला रयो हो जियां मरणैं सूं पैली कीड़ियां रै पाँख्यां आ जाया करै। वकील लोग भी दिन गिणरया है के प्रकास में अट्टारी जमीनां खातर झगड़ा कद सरू होवै। चीणी लोग रात्यूंरात आपरी चोटियां कटा मेरी जिको नैं बै अनत जुगां सूं राखता आया हा, पर जापानी तो बखत रै समुन्दर में ऊपर सूं इसी जबरदस्त छलांग *मारी के पांच सो बरसां रै रस्तै नैं पचास बरसां में ही पार कर लियो। पण आपणी* गळी री बिरखा रै पाणी नैं तूतो देणैं री उतारता ज्यूं री त्यूं है। भारतीय राष्ट्रीय कॉंगरेस री नींव पड़णैं सूं पैली ही म्हारी गळी री लुगायां बिरखारी मौसम में ओ गीत गाती ही —

> कद ताँई रैवैलो भो जातरो तूं।
> कळेसां रै सागर नैं तिरियां पैली।।

आज जद के स्वराज आपणी पूंच रै सायनै है अर पचपोड़ै फळ री तरियां आपरणै माथै पर लटकै, उणी राग अर लय में बै लुगायां बिरखा रो बो ही गीत गावै है। आपणै टाबरपणै सूं लगार हमेसा आपां आपणी गळी नैं बिरखारै पाणी सूं डूब्योड़ो देखी है। इण वास्तै इण सूं मनै कोई अचरज नीं हुयो। उण मामला री चिन्ता कोई भी कोनी करै जिको अचाणचक कोनी हुवै। सो बात आ होयी के आपां कोई चिन्ता कोनी करी अर उण मे बिना विरोध आपणी राय दे दी।

कागद में बिना निगाण करयोड़ो सबद तो आंख सूं चूक सकै पण विण रै नीचै लकीर खींचयोड़ी हुवै बो जरूर ध्यान में सीधै। आही बात होई जद चितपुर रोड पर म्हारी गळी रै आगसूं ट्रामरेल रा चीला लागता हा। आंसूं म्हारै दिमाग रै हो ही, म्हारी गाडी रै पैंडां नै भी बार-बार झटका लागता हा। आगै कै सबां कै ट्रामवे री कम्पनी हाळा आपणी गळी रै पाणी सूं भरयोड़ी होवण 'री बात रै नीचै काळी लकीर खेंच दी। फेर भी ट्रामरेल रा चीलां री मरम्मत बिरखारी मोसम में सरू होई अर तरक सास्त्र रै मुजब जिको काम सरू होवै बो खतम होवै, पण ट्रामरेल कम्पनी रै तरह रै ढंग में इण मरम्मत री कदे ही खतम होवण री गुंजाइस नीं ही। सो म्हारो सरीर अर दिमाग दोनूं आ बात देख कर खीज गया के ट्रामरेल रा चीलां नै लगातार बखत मिनखां रै नाळ पाणी रै नाळै सूं जूझरयो हो। अर इणी बखत में गम्भीरता सूं ओ विचार करण लाग्यो के आखर आपां हार क्यूं मानां ?

थानै चौरंगी में यूरोप हाळा रै काम में खाली पग धरणै री ही जरूरत है अर थानै वैरो पटज्यासी के थे बठै री हालत नीं सह सको तो चोखो है। आपां सगळा एक ही नगरपालिका रै इन्तजाम सूं एक ही नगर में रवां हां। फरक इतो ही है कै भारत रा लोग बिना विरोध रै हुंकारो भर लेवै जद के यूरोप रा लोग यूं नीं करै। वे ट्राम कम्पनी वाळा चौरंगी नै खोदकर अर उणरा आठां भागां में सूं सात नै घेर कर धीरै धीरै गजगती सूं मरम्मत रो काम चलाता, जियां के वै चितपुर रोड में चलायो है, तो बानै न दिन में खाणो मिलतो नै रात नै नींद।

आपणै मांय सूं दब्बू अर भला आदमी आ बात कैसी के थारै कैणै रो मतळब ओ है के ट्रामरा चीलां नै इण वास्तै बिना मरम्मत छोड देणा चाईजै के आपां नै इण रै कारण थोड़ी अड़चण होवै।

नहीं उण री मरम्मत जरूर होणी चाईजै, पण इत्ती अद्भुत धीमी अर आराम री चाल सूं नीं।

आ बात कांई सम्भव है ?

आपणै मांयला भला आदमियां में ओ विस्वास कोनी के जिण तरियां अबार काम होरयो है, उण सूं चोखो भी हो सकै। ओ ही कारण है के आपणी सड़कां अर गळियां पाणी सूं भरयोड़ी रेवै। इण कारण सूं ही आपां सदा अपणै आपनै दुख सूं घेरयां राखां, अर 'फूटयोड़ै ढोल में सूं निकळती डामर 'री तरियां उण नै बा' निकाळो।

जिकी बात में कहतो आयो हूं बा इत्ती मामूली कोनी जित्ती के बा मालम देवै। आपां इण बात नैं कदे ही अनुभव नीं करी के किणी चीज पर आपणो अधिकार भी है। मैं एक पोथी में एक इसी मछली री बात पढी ही जिकी नैं एक काच रै मटकै में राख दी ही। उण में लिख्यो होके बा मछली किया कांचसूं बार बार सिर टकरा'र समझ पाई के बो कांच हो पाणी नीं। पछै उण मछली नै पाणी री बडी कूंड में छोड दी। जिण में उण नै आ समझणरी कदे ही हिम्मत नीं होई के बो है काच पाणी नीं। नतीजो ओ होयो के बा छोटै से घेरै में गोळगोळ चक्कर काटती रयी। उण मछली री तरियां ही आपां भी माथो फूटण सूं डरां हां, अर ओ डर आपणा हाडां मे रमग्यो है। आपणां में इसो जगा में भी तिरणै री हिम्मत कोनी रयी जठै आपां बिना खतरै रै तिर सकां हां। आपणा पुराणां में चर्चा आई है के अभिमन्यू आपरी मां रै गरभ में ही दुसमणां रै चक्रव्यूह में बड़णै री विद्या सीख ली ही। पण बो पाछो निकळ नै री विद्या कोनी सीखी जिकै रो नतीजो ओ हुयो के सात महारथी उण रै अंग अंग नैं छेद दियो। आपां भी जनमरै पैली सूं ही फंसणै री विद्या तो सीख जावां, पण तोड़'र बारै निकलनै री विद्या नीं सीखां। आपां जिण बखत जलमां, उणी बखत सूं जो कुछ करां अर सोचां उण में उळझता जावां, जिण रो नतीजो ओ हुवै के आपां छोटा, बडा सगळां री लातां अर धक्का खावां। पीढियां सूं ही आपां लोगां रो, पोथियां रो अर मठै तक घेरै में बांधण वाळो भाव भगिमा रो बोला-डाला हुकम मानणै री इसी आदत में रैया हां के आपां नैं ओ बेरो ही नीं पड़ै के ससार री कोई चीज पर आपणो भी अधिकार है।

मिनख रै खातर सब सूं मोटी चीज आ समझणो है के अधिकार नैं बस में करणो मिनख पणै नै प्राप्त करणो है। जिण देस में ज्ञान नै धार्मिक तन्तर मन्तर अर करम कांडरै नीचै दाब्योड़ो राखै, जठै मिनख सिद्धान्तांसूं थोड़ो सो भी नाकै होणै रै डर सूं आचरण रै मामले में आपरा हाथ पग जकड़्या राखै, अर जठै बो आपरी अड़कानैं इण डर सूं अपणै ही हाथां सूं तोड़ गेरै के बै उण नै दूर ले जावैलो, तो इसो देस आध्यात्मिकता रै नाम पर मिनखपणै री चोर चेइज्जती रो पाठ सिखावै अर दुनियां में गुनाम पैदा करण रो सबसूं बडो कारखानो खोलै।

आपणा सासक आपां नै धार्मिक अधिकार रै ढग सूं कैवै के थे नालायक हो, थे गळतियां करोला, इण वास्तै थानैं राज नीं सूंप्यो जा सकै।

इसा सबद तो मनु अर परासर जिसा आपणा पुराणा रिसियां अर स्मृतिकारां मैं सोभता हा। अंगरेजी जबान में बै ठीक नीं मालम देवै। इण वास्तै आपां आपणै सासकां नै साफ भासा में जबाब देवां, जिको बै खुद उण बखत काम में ल्यावै जदकै बांरो मिजाज आसमान में नीं हुवै। आपां कैवां के गळतियां करणो इतणो बडो

संकट कोनी जितणो अधिकारां रो नीं मिलणो है। गळतियां करणें री आजादी ही साच नैं हांसल करणें री आजादी देवै। निरदोस बणन री उम्मीद में निर्जिव रहणें री बजाय म्हे गळतियां करणो ज्यादा पसंद करांगा।

इण सूं भी वेसी आपां कै सकां। आपां आपणा साथकां नैं याद दिरा सकां हां के आज तो वैं स्वराज री मोटर गाडी पर बैठ्या है, पण वैं आपरी कुदरी राजनीति यात्रा कुत्ता गाडी सूं सुरू करी ही जिण बखत लड़को होवण में भी देर ही। उण दिनां री गाडी रा पैड़ां री खड़खड़, जदकै वैं खाडा खोचरां में पड़ता हा, कोई रैसी जिसी कोनी ही। अंगरेज री पारलियामैंट सूं ही आपरा इन्जनां रै रोगन सूं चमकता करयोड़ी पक्की सड़क पर ही जात्रा कोनी करी है। आपरै सगळै इतिहास में आ को ही बांयें कानी अर कदेही जीवणें कानी भूंडी तरियां धक्का खाती ज्यूं डांकी चालती ही। आ घणें भ्रष्टाचार, झगड़ै-टंटे, बिरोध, अन्याय अर बदइन्तजामी रै मांयसूं होवणी लानी, गिरती-पड़ती चालती आई है। आज आ 'राजा रो स्वार्थ साध्यो है, तो कदे गिरजाघर रो अर परसूं जमींदार रो, तो परसें दिन दारू काढ़ण वालां रो भी। कोई बखत हो जद के लोग धुरमानें अर डांटरै डर सूं पालियामैंट में आता हा। पईसां री चरचा करतां बखत आपां वां गळतियां री सूची बणा सकां जिकी अंगरेज लोग रेस आयरलैण्ड अर अमरीका सूं लगा'र अबार ताई बोर युध, डारडेनलीस अर मैसोपोटामिया में करी है। जिकी गळतियां वैं भारत में करी है वैं भी कोई खास छोटी कोनी पण वांरी चरचा नीं करणी ही चोखी है। अमरीका री राजनीति में कुबेर रा पुजारियां जिको कमीणपणो करयो है बो मामूली कोनी। फ्रांस रा फौजी अफसरां में दंगो, भ्रष्टाचार जिकै रो "ड्रेफस" अफेयर रै नाम सूं पड़दो फास हुयो है, बतावै है के दिनां री फ्रांस री राजनीति पर नीच भावनावां रो किसो दबाव हो। आ बात होतां हुयां भी आज कोई रै भी लेस मात्र भी सन्देह कोनी के स्वराज री नित सक्रिय रैणें वाळी ही मिनख मैं आत्मपाळना रै जरियै गळतियां पर काबू पाणें री लियाकत देवै, अर बार बार गिरणें रै बाद चेस्टा सूं ऊठर ठेठ ऊपर पूगणें री जोग्यता भी। यो ही कारण है के राज नैं आजादी सूं रोटी कमाणें री चेस्टा में भूल करण देणो आछो चोखो है बनिस्बत इण बात रै के उणनैं बाळक मानकर बढ़िया सूं बढ़िया खाणो देवां।

इण सूं भी खास मतलब री बात आ है के राजनैतिक आजादी बिना कोई अन्दरै आणगी ताकत अर जिम्मेवारी री भावना ही कोनी रयावै, पण आ दिमाग रै इसी मैं भी बणी बणावै। जद मैं लोग जिका गांव रा छोटा छोटा समाजां में आ बाताजू बसी में बरसोंतक राजनैतिक ताकत हासिल कर लेवै, तो वैं जीवणनैं अर बेड़ मैं देखणो शुरू कर देवै। इण मोकै रै बिना वैं मिनख बिना ही ढंढा रहू आवै अर [illegible]

जीवण में मिनख मात्र में फैलरोड़ी चेतना रै रूप में नीं देख सकै जिण रो नतीजो भो हुवै के बांरी सारीरिक अर मानसिक ताकतां, भासावां अर मनस्यावां सगळी मुरझा जावै। इण तरियां मिनख री प्रात्मा रो विस्तार नीं होवण देणो मोत सूं भी घणो न्यावू है।

—"भूमैव सुख नाल्पे सुखमस्ति"—घणैं में ही सुख है थोड़ै में कोनी। आपां आपणा सासकां नैं जबाब देवां के म्हे स्वराज री मांग करणैं में गळतियां करणैं रै खतरै री सम्भावना नैं मजूर करां हां। आपां उणनैं कैवां के बै आपां नैं पड़ता-गुड़ता आगे चालण सूं नीं रोकै।

ओ एक सही जबाब है। दृढ निस्चय वाळो जिको आदमी इण जबाब सूं सरकार नैं दुख देवै उण नैं मजा मिलेलो, पण दूजै कानी राष्ट्रवादी उणरो स्वागत करैला। अब आपां देखां के जे आपा ओ ही जबाब आपणैं समाजिक नेतावां कानी राखां तो कांई हुवै। मानल्यो आपां आपणैं समाज रै सासकां नैं कैवां के बै आपणैं वास्तै जो कुछ कैवै बा बात आपां मानां, जियां के आपां निरथोड़ै जमानै में रैवां हां, के आपा न्याय करणैं री छूट मिल्या पछै गळतियां करां अर आज वीसूं बरताव करतां बहत लोगां नैं नाराज कर देवां, के आपां नैं आपणी बुद्धि पर भरोसो नीं करणो चाईजै अर धार्मिक पोथियां मे लिख्योड़ा उपदेसा नैं सिर झुकार मान लेणा चाईजै। जे आपां समाज रा सासकां नैं कह देवां के म्हे थैं सगळी बातां मानां अर फेर भी बां रै चालर अपणैं आपरी बेइज्जती कराणैं सूं इनकार करा तो बारी आंख्यां कोध सूं लाल हो ज्यासी अर बै आपां नैं जात बारै करणरो हुकम दे देसी। जिका लोग राजनीति प्रकास में उडण खातर पख फड़फड़ावै, बांरा पग समाज में मजबूती सूं टिक्या रैवै।

बात रो सार ओ है के मावनैं दांयैं अर बांयैं खेवण रो एक ही पतवार है। एक ही इसो जरूरी सिद्धान्त है जिण पर काबू करयां पछै आदमी राजनैतिक अर सामाजिक दोन्यूं खेत्रां में साचो बण्यो रह सकै। इण सिद्धान्त वास्तैं म्हारैं दृष्टिकोणां में इतनो ही आंतरो है जितो चितपुर रोड अर चोरंगी में है। चितपुर रोड वाळा तो एक दम ओ फैसलो कर लियो के हर एक बात ऊंचा हाकमां रैं बसरी है, अर इण कारण बै न कुछ करतां हुयां बांरैं भरोसे बैठ्या है। चोरंगी वाळा इयां सोचैं के जिको चीज कोई भी तरीकैं सूं बां सूं सम्बन्ध राखैं उण में दखल देणो बां रो अधिकार है। बां रो विस्वास है के बां में अर हाकमां में एक घणो मजबूत सम्बन्ध है अर इण विस्वास रैं बळ पर हो सारो ससार बां रैं कब्जैं में है। ठीक इण विस्वास री कमी सूं ही चितपुर रोड वाळां री मुट्ठी सूं ससार निकळग्यो अर बै लोग श्रांत मोवर वेबेन पड़्या है।

आपां नैं आंख मींचर यो सोचणो पड़ै के आपणैं घर में बणायोड़ा नियम ही सगळा सूं चोखा हुया करै। पण आइंस्टीन सोचतो जद आपां नैं संसार में एक मोटो सिद्धान्त काम करतो दीसै। उण सिद्धान्त नैं मानणैं सोचनैं समा लेणैं सूं ताकत अर सुख सम्पत मिल सकै। एकलै मिनख री सफळता सगळी सिस्टी रै नियम सूं ही होवै, खाली एकलै मिनख रै मान या कोपीन सूं नईं। इण बात रै साचै ज्ञान सूं ही युरोप री ताकत री नींव मजबूत बणी।

पण दुनियां रै इण हिस्सै में आपां हाथ पसार कर ठंडी सांसां भरां अर ईसं के "करतार चावै सो हुवै" आपां करतार नैं हजार नांव देवां जियां के बाप, बडो भाई पुलिस रो इन्सपेक्टर, जोसी, सीतळा, (माता री देवी), मन्सा (सांपां री देवी), ओला बीबी (हैजै री देवी), दीखणराय (नरसिंग), अर ग्रहमंडळ, सनी, मगळ, राहू अर केतू। आपां खुद आपणी ताकत नैं हमारां टुकड़ां में बिखर कर हवा में उडादी।

कालेज रा विद्यार्थी केवैला, "पण म्हे तो पुराणी रूढियां अर विस्वासां नैं कोनी मानां। म्हे सीतळा रा टीका लगवावां अर हैजो फैलै जद उण रा भी टीका लगवावां। माछरां सूं होवण वाळै बुखार नैं देवी मानण री तो बात ही दूर रई, म्हे तो उण नैं कीटाणु रो रूप समझां हां। पण फेर भी म्हे बढयोड़ी तिल्ली रै इलाज खातर पेट पर जादू रो जन्तर लटकायो राखां।

भलै ही आपां खुल्लम खुल्ला मानां या नईं, पण बात तो आ ही है के आपणो दिमाग हुकम मानण रै जहर सूं खोखळो हो गयो है। आ मानसिक कायरता एक अनिश्चित अर सर्वग्राही डर सूं निकळयोडी है। क्यूं के आपां सिस्टी रै नियम रै रूप में प्रगट हुयोड़ी सरवव्यापी ताकत नैं नीं ओळखां, इण वास्तै आपणी अक्कल पहले सूं ही गमां लागणी कर जावै। अर उण रै मांय हजारूं डर बड जावै। डर हमेसा आपणी अक्कल पर वैम बणायो राखणरै वास्तै आपां नैं उकसावै अर काम नीं करण देवै। मैं देखूं हूं के आपणा सासक भी जद आपरै राजनैतिक सासन में हुयोड़ी थोड़ी सीक तेड़ रै मांय नैं सूं डरनैं भाप वाई पुगयोड़ो देखै तो पिच्छम रा आपरा सिद्धान्त भूल जावै। इण कारण सूं वै उण नियम नैं भी आंख मींचर तोड देवै जिको बा री ताकत री पक्की नींव है. अर जिणनैं तोड़णो कदे भी नीं चाईजै। उण वगत वै न्याव नैं बचाकर राखण में आपरो विस्वास छोड देवै अर आपरी-इज्जत नैं बचाणी घणी जरूरी समझै। असलियत में तो सगळी सिस्टी रै नियम में आ विस्वास री कमी है। ओ तो आपरी खुद री खास ताकत मे विस्वास करणो है, अर ओ मामूली डर या आपणो मुस्कल नैं टळ करण रो मिस है। डर सूं आधा ढोर आपां भी आपणैं जरूरी मिनखपणैं रो बळिदान करण वास्तै तैयार हो जावां, अर हाथ जोड़र उण हर चीज नैं मानण नैं

उतावळा हो जावां जिकी धरती पर है। भले ही आपां जीव या भौतिक विज्ञान नैं पढां, पर भले ही राजनीति रै इतिहास री परिक्षावां पास करां, आपणें दिमाग सूं इण मन्तर रो जादू, "करतार चावैं सो हुवैं" कोनी निकळ सकैं।

किस्मत सूं आज रै जमानैं में आपणें देश में साधारण हिम्मत रा कुछ कामां री नींव पड़ी है। पण साबास है आपणें भूत-काळनैं के आम लोगां री भलाई रै माथैं भी किणी एकलै आदमी रै स्वार्थ में बदळ नैं रो जबरदस्त दबाव पड़रयो है। बिना कोई मतळब रै अर बिनां कोई जगांरै एक मालक थाकर आ रो माथो ऊँचो कर देवैं। औ ही कारण है के लोग समुदाय बणाकर उठै-बैठै, खावैं-पीवैं, ब्याव-सादी करैं, मर जावैं अर मरयां पाछै आपरा टाबरां सूं पिण्ड अर तर्पण लेवैं। औ सगळा काम करतार री मरजी सूं हुवैं। बांरी सगळी समस्यावां, जियां के पाप पुण्य रा काम स्नान रै लायक जळ वाळै कुए रै घेरै रो नाप जोख अर उणी दृष्टि सूं अछूत रो छूयोड़ो पाणी अर विदेसी री बणायोड़ी दाळ औ सगळी समस्यावां करतार री मरजी पर थोपकर हमेसा रै वास्तै सुळझाली गई है। जे आपां बांनैं कैवां के हिन्दू पणिहारै रो पाणी पीणैं लायक कोनी क्यूं के बो बाल्टी में सूगलो गिलासियो डबोकर उणनैं निकाळैं, अर मुसळमान भिश्ती रो पाणी छाणेड़ो है अर साफ सुथरो है, तो आपांनैं औ ही जबाब मिलसी के ऐ सगळी फालतू तरकरी वातां है अर करतार री मरजी री बात कोनी। जे बदळै में आपां या बात कैवां के करतार री मरजी री बात कोनी तो कोई परवा नीं, तो बै आपांनैं आपरै घरां नैंतो देर कदे भी कोनी जिमावैंला अर बासूं आपणा सारा सामाजिक सम्बन्ध खतम हो जावैंला। औ लोग कदम कदम पर अर बड़ी निर्दयता अर जोर जबरदस्ती सूं आपरा हां अधिकारां रो जोर जमावै के बै कांई खावैंला अर किणनैं छूवैंला, अर इण बपणांनैं बै लाभकारी नी समझैं। औ लोग राजनैतिक अधिकारांरी छूट मांगण में हिचकिचाहट रो अनुभव फेर क्यूं नीं करैं।

जद कोई राष्ट्र आपरी ताकत री पूंजी सूं काम नीं चला सकैं, तो बो दूजा लोगां सूं, देवी देवतावांसूं अर ग्रहां सूं हर कस्टसूं बचाणैं री मदद री भीख मांगैं अर अरदास करै। इण रो सब सूं चोखो हाल बगाल रा पुराणां मगळकाव्या में मिलै। चड सदागर एक ऊचा सिद्धान्तां रो आदमी हो पण उणनैं एक इसै देवता सूं कस्ट भुगत कर हार मानणी पड़ी जिणनैं बो नीचो अर हुकम मानण लायक नीं समझतो। बो देवता ज्ञान अर सद्गुणा रो विरोधी ताकतां रो मालक हो, उतणो ही आतताई हो जितणो भयकर हो, अर लोगां री पूरी गुलामी चावतो। दुनियां रै इसै सासकरो ख्याल उण दिनांरी राजनैतिक हालत सूं सम्बन्धित हो, जियां के आपांनैं कवि कंकणरै चंडो काव्य री भूमिका सूं बेरो पटै। बां दिनां इसो कोई कानून कोनी हो जिणनैं नीं

तोड़णो जा सकै, कोई न्याय नीं हो, अर टाबे री ओर जबरदस्ती नैं रोकण रो कोई कानूनी साधन भी कोनी हो। जिणरी लाठी उणरी भैंस वाळी बात ही। बाढ़ूले, धूस अर भाखर में बस कर भागणो ही कमजोर लोगां रा तरीका हा। उण वगत री राजनैतिक हालत अर देवी देवतावां री थाथू धारणावां में मेळ-जोळ हो।

फेर भी उपनिसद एक दिन इसें ईश्वर रै बारै में बोल्या जिको के व्यवस्थित, नियमित अर निरय अनादिकाळ सूं आदिकाळ तांई निर्धारित हो, अर बदळनै वाळै सबरो मनक रै बस में कोनी है। यो ही कारण है के आपणीं में सूं छेके ध्यान रं मारग सूं उणनैं अपणो बणा सकै। जिती ऊंचाई सूं आपां उणनैं पावां जिता ही आपं नवीं नई नई अड़चणां ने प्यार करता बढांला। इण न्यायसील अर निरय ईसर नैं ठीक सिर सूं समझणो ही विज्ञान है। विज्ञान री ताकत यूरोप नैं दावो करणे रो विस्वास दियो है के बो मलेरिया अर दूजी बिमारियां रो नास करसी, मिनखां रा घरां सूं अज्ञान अर गरीबी नैं मिटासी, हर टाबर दिमाग अर सरीर सूं तन्दुरुस्त अर मजबूत बणासी अर राजनैतिक क्षेत्र में व्यक्ति री आजादी अर साधारण हित रै बीच पूरो ताळमेळ बैठ सकसी।

आध्यात्मिक अर्थ में भारत एक दिन कयो हो के अज्ञान बंधण है अर ज्ञान मुगती है, अर साच नैं प्राप्त करणें सूं आपां बंधण मुगत होवां। झूठ कांई है? अपणें आपनैं अंदरूणी रूप सूं निरवाळो समझणो ही झूठ है। समूचै विस्व सूं अर आप नैं मिल्योड़ो जाणणो, अर परमात्मा में व्यक्ति री आत्मा नैं लीन करणो ही साचं पिछाणणो है। आज तो आपां इण बातरी कल्पनां भी नीं कर सकां के जूनैं बखत रा भारतवासी इतणें बडै सत्य नैं मिनखरै दिमागरैं समझण लायक बणाकर किसो अनोखो काम करयो। मौलिक रूप सूं, मुगती जिणरी खोज प्राचीन भारत आध्यात्मिक क्षेत्र में करी, अर जिणनैं आज रो यूरोप भौतिक क्षेत्र में ल्यावण री कोसीस करै एक सरीकी है। अठै भी अज्ञान बंधण है अर ज्ञान मुगती है। विज्ञान रा साच विस्वरैं दिमाग नैं एकान्त सूं विस्वरी एकता कानी अर व्यक्ति री ताकत नैं विस्वरी ताकत कानी ले जारया है।

भारत में वो रिसी-मुनियां रो जमानो गयो जिका ससार नैं छोड़कर दूर नैं आध्यात्मिक लक्ष कानीं लगाता हा। उणां रै पछै बोढां रो जमानो आयो। भारत जीवण सूं अर उण मोटें साच सूं दूर रंयो जिणनैं बो सीख्यो हो, अर सन्यासनैं मुगती पावणरी एक जरूरी सर्त घोसित करदी। इण रो नतीजो औ होयो के आपणें देस में ज्ञान अर अज्ञानरा हिस्सा होग्या, अर जद सूं बै न्यारा-न्यारा ही रया है, चाहे हर्दे-

सामें ही रया हो, उण जायदादां री तरियां जिकी भींत खींचर कानून सूं न्यारो-न्यारी करदी होवै। दुनियां चाहे मनें ही सकीर्णता, असम्यता अर मूर्खता में कळयो, पण सबसूं ऊंचे साचनें मोसणियां उण रै खिलाफ क्यूं भी नीं केवै अर उलटा उणरी मदद करै। रूख रै नीचै बैठ्यो ज्ञानवान मिनख केवै, "जिको सब में अपणैं आपनैं अर अपणैं आप में सबनैं देखै बो ही साचनैं पायो है," अर इण बात पर दुनियांदार आदमी तुरन्त भगती में पिघळ जासी अर उण ज्ञानवान री झोळी भेंट पूजा सूं भर देसी। आपरी बैठक में बैठ्यो दुनियांदार आदमी केवै, "जिको मूरख लोगांनैं अपणैं आप सूं जादा सूं जादा दूर नीं राखै बो सर्वनास नैं नूंतै," अर इण बात पर ज्ञानवान मिनख उणनें आसीरवाद देवै अर चिरन्जीवी होणरी कामना करै। यो ही कारण है के आपणी नित बढ़ती उदासीनता अर अकर्मण्यता रो कोई विरोध कोनी होयो, जिकै सूं काम रै क्षेत्र में आपां सैंकड़ां बरसां सूं बेइज्जत अर हारता आया हा।

यूरोप मे बात ठीक इण सूं उळटी ही। बठै सिद्धान्त अर कर्म दोनूं क्षेत्रां में ही सत्य री खोज करी गई, अर उण साचरी रोसणी में लोग आपरा राजनैतिक अर सामाजिक सगठन मे मानव देवण वाळी कमियां पर परखा करण वास्तै अर वां नै सुधारणैं वास्तै भेळा होता। इण भांत साचरी दियोड़ी ताकत अर आजादी नैं सगळा आपस में बाँटी जिण सूं सगळां नैं आस अर हिम्मत मिली। धार्मिक रीतियां अर मन्तरां रै कुहरै सूं ढक्योड़ो नीं होणैंरै कारण साच दिन रै खुलै चानणैं में पनप्यो अर दूजानैं भी पनपणैं में मदद करी।

कामरै क्षेत्र में सैंकड़ां बरसां तांई आपां जिकी बेइज्जती भुगती बा राजनैतिक गुलामी रै रूप में प्रगटी। जिण तरैं आपणा हाथ कुदरती ही डोलरै उण अग कानी आवै जिण में पीड़ा हुवै, ठीक उण तरैं सूं ही आपणो दिमाग भी राजनैतिक सगठण कानी गयो जिको यूरोप वाळां रो जमायोड़ो हो अर जिका आपणा सासक बण्या। दूजी सगळी बातां नैं भूलकर आपां आपणो ध्यान भारत सरकार में आपणी आवाज उठाण में लागरया हां, अर आपणैं पर जिका मनमान्या हुकम लागरया है वानैं मानण सूं इनकार करां हां। जद सासक नैं खांधै पर बढार चालणा पड़ै, तो बो आपणैं आगर भार बणजावै। इण वास्तै आपां उणनैं एक इसी गाडी मे पटकणा चावां जिणनैं आपां हाथां सूं धक्को देकर चला सकां।

आज सारै ससार मे आ आवाज गूंज री है के मिनखां पर कोई बिदेसी ताकत रो राज उण रै खुद रै स्वार्थ खातर हो नीं रहणो चाईजै। इण पुकार मे आपां भी आपरी आवाज मिलाकर जमानै री भावनारै प्रति साचा हुया हां। जे आपां आ बात करण

सूं चूक जाता अर हमेसा रै वास्तै राजनैतिक गुलामी मंजूर कर लेता, तो आपां आपं आपनैं घणी नीचता सूं दीनतारी हालत में पुगाता। भो चोखो सम्जुण है के आवर साथ आपणैं सांमें आयो तो सरी।

इण वास्तै मैं आ कैवणरी हिम्मत करूं अर आपणैं में जागोड़ै राष्ट्रीय आत्म-सम्मान री उण बगत तक सम्मान करूं, जद ताई वो आपां नैं आगै बढावै। मैं उण री उण बगत ताई विरोध भी करूं जद ताई वो आपां नैं बलिदान रै बकरै री तरियां हमेसा एक खूंटै सूं बांध्यो राखै। राष्ट्रीय आत्म सम्मान दुनियां में आपणी मूंडो आगै कोनी करै अर आपां राजनैतिक ताकत मांगा। पण आपणै देस में आपणी मूंडो लारै कानी हो जावै अर आपां मगळा धार्मिक सामाजिक अर अठै ताई के निजी मामलां मे भी करतार री मन्सा सूं एक कदम भी पाछे नीं हटां। इणनैं वै हिन्दुवाद री पुनर्जागरण कैवै। राष्ट्रीय आत्म सम्मान आपां नैं ओ नामुमकिन काम करण रो हुकम देवै, के आपां आपणी एक आंख नैं तो खुल्ली और जागती राखां अर दूजी नै नींद में बन्द कर लेवां।

जद सजा रै रूप में आपणी कमरां पर बैंतां रा सड़ाका पड़या तो आपणो राष्ट्रीय आत्म-सम्मान जाग्यो अर आपां तुरन्त ही मांग करी कै बैंत रा जंगळ बढ जाणा चाईजै। पण आपां आ बात भूलग्या के बैंत रा जंगळां कनै ही बांस रा जंगळ भी है। इण री दोस बैंत या बांस नैं नीं देणो चाईजै, पण आपां नैं खुद नै ही देणो चाईजै, अर आपणी उण भावना नैं देणो चाईजै जिण सूं आपां साच सूं भी बत्ती करतार री मरजी नैं मानां अर आंख्यां सूं भी बत्ती आंख्यां पर सीधा देखण वास्तै लगायोड़ा बालरा चसमां पर विस्वास करां। जद ताई आपां इण हालत में रैवांला, दुनियां में आपणैं वास्तै कठै न कठै बैंता रैवैलो ही।

यूरोप में एक इसो जमानो भी हो जद गिरजाघर सारी बातां पर हावी रहतो। यूरोप रा राष्ट्र स्वराज कानी तद ही बढ सक्या जद के वै उणरा बधण काट गेरया। आ बात कई जा सकै के इगलैंड एक टापू है अर गिरजाघर रो केन्द्र रोम में हो जिकै सूं इगलैंड नैं घणो फायदो मिल्यो अर रोम रै अधिकार नैं मानणैं सूं नटणो उण खातर सोरो रयो। मैं आ बात भी कैवूं के गिरजाघर इगलैंड में कुछ भी ताकत नीं राखै, पण वो बठै अब उण ऊंचे घराणै री लुगाई री तरियां है जिको विधवा हो जाणै सूं पुराणो सम्मान कोनी रैवै। जिकी लुगाई पैलां घणा चोखा करती ही वा अब पेटियो लेकर एक न्यारी कोटड़ी में पड़ी रैवै। उण रा टावर भी सिर्फ पुराणैं रिवाज रै कारण ही उण रो आदर करै पण वै उण रो हुकम नीं मानै।

जे उण कनै पैलै वाळी ताकत और अधिकार होता तो वा पैली री नरियाँ ही मगळा नै चुप कर कै बैठा देती।

इण डोकरी रो जूड़ो इंग्लैंड भोत पैला ही उतार फैंक्यो पण स्पेन हाळा हाल पूरी तरियां उतार नीं पाया। एक बखत हो जद स्पेन समुन्दरां में बेधड़क घूमतो हो अर कई देसां रै किनारां पर आप रा झंडा गाड्या हा। पण आज वो पिछड़यो है क्यूं के वा डोकरी उणरै पतवार घुमाणै रै चक्के पर बैठी है। स्पेनरी सरूवात घणी चोखी ही पण उण रो दम जल्दी ही फूलग्यो क्यूं कै वा डोकरी हमेसा उणरै कांधै पर बैठी रहती। जिण दिन स्पेन रो जहाजी बेड़ो इंग्लैंड सूं मात खाई, उण दिन भी उण रो सास फूल्योड़ो अर हांफ चढ्योड़ो दीखती ही। आपरै धार्मिक विस्वासां री तरियाँ ही समुद्री लड़ाई री विद्या में भी उण दिन स्पेन रूढीवाद में बंध्योड़ो पायो गयो। अंगरेजी जहाजी बेड़ै में जात पांत रै भेद भाव बिना कोई भी लायक वीर सेनापति बण सकै, पण स्पेन मे ऊंचा घराणा में पैदा हुयोड़ा नै ही इसा जगां मिलै।

आज यूरोप रा देसां रा छोटा बड़ा सगळा आदमी ऊंचा माथा करके चालणैं री ताकत ले ली है, अर गिरजाघर री आधी ताकत रो कमजोर पड़नो वांनै आतम-सम्मान सिखायो है। जारसाही रे रूस जिसो देस, जिण मे मिनखां रै वास्तै इज्जत रो कोई भावना कोनी ही, झाड़ झंखाड़ अर कांटा सूं विनां भरी घणी थोरी रो बेकार धरती री तरियां बिगड्या। इसा देसां मे मिनख नैं उण बखत रा जमींदारां, जूनी धार्मिक पोथियां अर मनमानी ताकत रै हर दूजै ओजार री मदद सूं बेइज्जत अर तंग करकै लूट्यो गयो। धरमरी भावना अर रूप रो फरक हमेसा ध्यान में राखणो चाईजै। जिण वखत भावना सूं रूप बत्तो हो जावै तो बाही हालत होवै जिको नदी रै तळै में पाणी सूं बत्ती रेत जम जाणैं सूं होवै, अर जिणरो नतीजो बहतै पाणी रो बंद होणो, अर रेत रो रेगिस्तान बणणो हुवै। धरमरी भावना कैवै के मिनखरी बेइज्जती सूं ना तो बेइज्जती करण वाळै नैं कोई फायदो मिलै अर ना जिण री करी जावै उणनैं ही। पण धरम रो रूप बतावै के मिनख रै साथै बेदर्दी अर बेइज्जती सूं बरताव करण रा लांबा चौड़ा नियमां मे चूक करणी धरम नैं खोणा है।" भावना तो आ बात सिखावै के आपां नैं दूजां नैं सताकर आपणी आतमा रो नास नीं करणो चाईजै, पण रूप कैवै के आपरी बेवा बेटी नैं भयंकर बेमारी में आराम पुगावण रै वास्तै भी महीनै मे कुछ दिनां ताईं रोटी पाणी नीं देवणा चाईजै। भावना कैवै के आपां अपणा खोटा कामां अर विचारां नैं चोखा कामां सूं पस्चाताप करकै सुधारां, पण रूप इण रो इलाज सूरज या चांद ग्रहण रै दिन कोई खास नदी रै पाणी मे स्नान करणो ही बतावै। भावना तो सलाह देवै के थे समन्दरां अर पहाड़ां नैं लांघकर थारै दिमाग नैं बढाओ पण

रूप समुद्र यात्रा पर रोक लगायोड़ी राखी। भावना कैवै के ज्ञान पंथ रै वेद मार्ग सूं दूर गयोड़ा भला मिनखां रो आदर करो, पण रूप बामणां रो ही आदर करणै री बात कैवै। सारी बात रो सार ओ है के धरम री अंतर-आत्मा तो भावां नैं प्राणां री बणी ले आवै अर उण रो रूप गुमामी कानी।

धार्मिक भगती में भी एक सोचणी बात है जिण री टीका टीपणी देस में आयोड़ा परदेसी जातरी करी है, उण चीतारै री तरियां जिको कोई दूजै पर हूंस फूटर्यं हुवै री सुन्दरता नैं ही देखै, उण में रचो जा सकै या नीं, इण मजर सूं नहैं स्नान जातरा रै उच्छाव रै दिन बारीसालसूं कळकतै पाछो आतां बगत में तीर्थ जातरियां, खासकर लुगायां, नैं रेलरै ठेसण पर अर पाणी रै जहाजां में घोर कस्ट अर दोरता सहकर गंग स्नान खातर आता देख्या है। बारै सूं देखणै पर इण तरै सूं कस्ट भुगतणो चोखो लाग सकै, पण अन्तरजामी भगवान इसी आंधी भगती नैं न तो ठीक समझै अर न उण रो फळ ही देवै। अै लुगायां बरत बडूलां में आपरा टाबरां नैं पाळती दुनिया री हर चीज रै आगै आपरा माथा झुकाया है अर परलोक री हरेक छीयां सूं आपरा सिर टकराया है। उण रो काम आजादी सूं काम करणै में अड़चणां गेरणो ही है, अर असली आपरी तरक्की रै आडी इण तरै सूं ऊंची भींतां खड़ी करणै नैं ही बै तरक्की कैवै। साचरै खातर कस्ट भुगतणो तो चोखो दीसै, पण आंख्यां मीच कर कमजोरी अर दुख सूं सहणो भूंडो लागै। आ तो भगवान री दियोड़ी बहादुरी सूं बळिदान करणै री ताकत री फिजूल खरची लागै।

ओ है आपणो हिसाब-किताब जिण नैं आपां आज सत्य मानां हां, अर जिण में जमा सूं खर्च बेसी है। मैं म्हारी आंख्यां सूं हजारां लुगाई—मोट्यार तीरथ जातरियां नैं देख्या हूं, जिका गंगा मे स्नान करकै पुण्य कमाणै खातर भागता हा, पण बां मांय कोई सो रस्तै में मांदो पड़ जातो अर मरणै री हालत में हो जातो तो बाकी लोग इण डर सूं ऊनैं नीं छूता के पतो नीं बो किण जातरो हुवै। ओ आपणो चोड़ै दोखतो आध्यात्मिक दिवाळियापणो है। तीरथ जातरियां री धारमिकता ही बां नैं मरतै मिनख खातर इतणी निर्दय बणा देवै।

सरधा सूं एकलव्य आपरो अगूंठो काटकर निर्दयी द्रोणाचार्य नैं दे दियो। इण काम सूं बो आपरा ही लोगां नैं धनुस विद्या री उण कळा सूं कोरा राख्या जिण वास्तै बो जीवण भर कोसीस करके पारगत हुयो। पण इण भांतरी मूर्खता सूं भरी अर फिजूल री सरधा लेकर भगवान राजी कोनी हुवै क्यूं के आसो भगवान री उण देण री बेइज्जती है जिकी बो मिनख नैं दी।

जिणनैं हमेसा आंख्यां मीचकर चालणो सिखायो गयो है वो खुली आंख्यां सूं कदेही साबळ नीं चाल सकै । जनमरो गुलाम तो सिरफ ओ ही जाणैं कै आपरै मालिक खातर जीवण नैं बळिदान कर देणो चाईजै । वो आपणैं आपनैं आजाद मानकर खुद रैं न्याय संगत कामां खातर आपरो बळिदान नीं कर सकै ।

गांवां रा जुग जुगान्तरां रा दु:खां रो कारण ओ ही है के भलाई रा सारा काम पुण्य कमावण रैं लोभ सूं ही हुया । इण पुण्य रा उम्मीदवार चाहे खुद भगवान नीं हो, पण गांव री देखभाळ करणैं री हर जुम्मेवारी आपरै ऊपर ले लेवै, जद के बाकी सारा लोग आपरै हाथां सूं एक फावड़ो भी धरती पर नीं मारै भलै ही वै तिस मरता मर जावो । गांवां रा लोग जिसा हमेसा हा, बिसा ही रह्या । वै लोग उण डोकरी री गोदी रा टाबरां री तरियां है जिकी हर आदमी अर लुगाई खातर हर चीज पैलां ही तयकर राखी है । आ डोकरी लोगां री जान जिरादरी, आध्यात्मिक अर ससारी धंधा, भला बुरा काम, अर बां रैं सोणैं, बैठणैं तक री हर चीज तयकर राखी है । असल में आपां लोगां नैं कोई ओळमो नीं दे सकां क्यूं के वा डोकरी बान अफमल खुवाकर नींद में पटक राख्या है । पण अचम्भैरी तो बात आ है के आजरा पढ्या लिख्या लोग भी, विस्वविद्यालयां मे पढण वाळा जवान विद्यार्थी भी, डोकरी रैं धरम नैं मानैं । भारत नैं इण जुगां जूनीं धाय रां कोख में देखकर बांनैं सन्तोख हुवै । इसी ऊंची स्थिति रै कारण भारत रा पग धरती पर कोनी टिक अर बड़ै घमंड सूं वै आ बात केवै कै उण री कोख में बैठ्योड़ो भारत रैं हाथ में स्वराज नैं देखणैं सूं ज्यादा चोखो और कांई नजारो हो सकै ।

चाये ओ हुवो पण इण में कोई सक कोनी के गरीबी भूख अर दूजा जमदूत आपणा घरां नैं आपरी धरमसाळा बणा राखी है । जद ऐ उछळकर त्यार हुवै अर आपणी नाड़ में आपरा दांत गडावै उण बखत आपां नैं ठा पड़ै के आपणैं कनै बदूक कोनी । आपणा सामाजिक नेता इण बुरायां सूं लड़ण वास्तै बदूक रो लाइसेंस देणैं री मनाई वियां ही करै जियां आपणी सरकार सेरां अर डाकुवां सूं बचण खातर आपां नैं बदूक राखणैं सूं मना करै । ग्यान, तर्क अर बुद्धि ही वै हथियार है जिकां सूं आपां इण बुरायां नैं हटा सकां । डोकरी रैं सासन में अडिग विस्वास राखणिया लोग इण बात रो विरोध करै अर केवै के हथियारां पर पूरी मनाही नीं है, अर आपां नैं विज्ञान पढणैं, अर जठै तांई बण पड़ै, उणरा सिद्धान्तां नैं काम में लेवण री पूरी छूट है । पण लाईसैंस रैं बारैं में जिका करड़ा नियम है, वै बारैं उपयोग नैं कम करणैं वास्तै ही बणायोड़ा है । बां पर भांत भांत री पाबन्दियां है अर मामूली सी गळती वास्तै भी करड़ी सजावां है । आपणैं पूरैं ध्यान अर आदर भाव खातर इतणा सारा गुरु अर पुजारी, जन्तर-मन्तर अर सास्त्रां रा अर लोक रा उपदेस है, के डाकुवारैं हमलै रैं बखत आपां

डाकू सूं भी बत्ती उण बन्दूक सूं परेसान हो जाशी जिकी नैं पाछी कदै भी काम में कोनी ली।

दयालू लोगां रो यो कहणो के, "थारैं नगां री नै इयां बणी रबो" 'रग मालीस री तरियां है जिकी केवै के, "लोगां रै कांधा पर चढकर थांरै पगां रै फल घालो।" इसा लोग आपणी जूनी सामाजिक अर व्यक्तिगत धारणारी मरम्मत करके वांनै मजबूत कर लेवै अर उणनै पुनर्जागरण रो नाम देवै। अै लोग जिन्दगी नै गतिहीन बणायी राखणै में अर उण रै कारण होवण वाळी बुद्धि री जकड़ में बस करै। इसा लोगां नै बता देणो चाईजै के उण लाचार लोगां री सम्भाळ करणं वास्तै भी त्यार रेवै जिका आंरा कामां सूं भूखा अर असहाय बण जावेला। कोई भी आदमी, चाहे जितो ही लायक हुवो, एक ही वखत में दो विरोधी स्वार्थां नै पूरा नीं कर सकै। अै लोग पहलां तो तिसाये आदमी रा पाणी ल्यावण रा सगळा भांडा फोड़ गेरै अर फेर फूटयोड़ै घटकै में पाणी ल्याणं री कोसीस में उण रै घर अर नदी रै बीच दौड़ धाम करै। घणा जणां रो ओ मानणो है के देसरी दुखी हालत परदेसी राज रै कारण ही है। इण बात री सावधानी सूं जांच करणं री जरूरत है राजा अर परजा री ताकत रो मेळ अंगरेजांरी राजनीति रो मूळ सिद्धान्त है। इंगलैंड में ओ सिद्धा निरकुसता रै साथै घणो जूझ्यो है अर उण संघर्ष री काणो आपणं नु छानो कोनी इण बात नैं आपां सरकारी स्कूलां में पढां अर इण रा इम्तिहान भी पास करां जिकै इण नैं आपणं सूं कोई खोस नीं सकै। आ ही वा माटी है जिण में आपणो काम री राजनैतिक संगठन जम्योड़ो है। जियां कं यूरोप रै विज्ञान पर आपणो हक उण विज्ञा रै सुभाव में ही है वियां ही अंगरेजी राजनीति पर भी आपणो 'हक उण राजनीती सुभाव मे ही है। कुछ अंगरेज आ बात कह सकै भारत रा विद्यार्थियां नैं विज्ञान सीखण रो मौको मत देवो, पण खुद विज्ञान ही, हर धरम बात अर रग रा लोगां नै उणनै बढकर मजबूत बनण रै वास्तै, ऊंचै सुर सूं हेला मारतो वां अंगरेजां नैं सरमिन्दा कर देसी। इणी भांत थोड़ा या घणा अंगरेज राजनीतिज्ञ अर पत्रकार भी आ बात कह सकै के भारतीय स्वराज में जिता रोड़ा अटका सको विता अटकावो, पण अंगरेजी राजनीती हर धर्म अर रग रै भारतीय नैं आपरै स्वराज रै अधिकार नै पक्को कायम खातर नूंतो देवै अर वां अंगरेजांरी राय नैं ठोकर मार देवै।

आपां नैं बिना ही तीखा बोल मारकर कयो जा सकै के आपां अंगरेजां री राजनैतिक संस्थावां मांनर नाका बल हां जिमा पुराणै भारत मे ब्राह्मण सूद्रां नैं या बात कह कर मारता हा के ज्ञान अर अध्यात्मरी ऊंची विद्यावां में वां रो कोई हक कोनी। ब्राह्मण लाग नीचे सूं ऊपर ताईं—अधिकारां रो घणो मजबूत विभाजन बणा दियो हो

अर जिण सूद्र नैं वै सारीरिक ढग सूं अपंग बणाणो चावता हा उण नैं मानसिक ढंग सूं भी अपग बणाणैं री पूरी सावधानी बरती। सूद्रां री जड़ां में कुल्हाड़ो मारणैं रै इण काम नै करयां, पछै, जिको कोई बहोत जादा मुस्कल कोनी-हो, सूद्र रो माथो अपणैं आप बामणां रै चरणा में आ झुकयो पण अंगरेज लोग आ जाणता हुयां भी के ज्ञान रो दरवाजो आजादी रो सिहद्वार है, उणानैं आपणा वास्तै कोनी बन्द करयो। मैं सोचूं हूं के भोत सा अंगरेज हाकम इण रो पछतावो भी करै, अर सिक्षा रै मामलै मे धीरैं चालणैं री प्रवृत्ति भी बां मे दिखायी देवै, पण फेर भी वै कदै भी आ बात पूरी तरियां नीं भूल सकसी के आपरै स्वार्थ खातर कोई रै मिनखपणैं रो बळिदान कर देणो आत्महत्या करणैं रै बरोबर है। जे आपां आपणी पूरी ताकत सूं इण विचार नैं मानता रैवां के स्वराज री आपणी न्याय-संगत माग अगरेजां रै मानसिक ढांचै में ठेट सूं ही मौजूद है, तो स्वराज लेवण खातर कस्टां नैं भुगतणा अर घणा बळिदान करणा आपणैं वास्तै सोरो काम हो जासी। पण जे आपां करतार री अबूक मरजी रै भरोसै ही हर काम नै छोड देवणरी आपणी कमजोर आदत में पड़जावां तो इण सूं जिकी गहरी निरासा हुसी बा दो भांत में दिखाई देसी। एक तो या के कूणैं कूणैं में षडयन्त्र होसी जिको सूं चाणचुक आतकवादी काम सामनैं आसी, दूजी या के फलाणो भलो या बुरो वायसराय है, फलाणो आदमी जद ताई वायसराय री सलाइकार समिति में है तदताई भारत रो कोई भलो नीं हो सकै। श्री मोण्टै जद भारत रो स्टेट सैक्रेट्री हो जावै तो भारत रै भलै दिनां री गरूवात होसी अर इसी ही दूसरी बातां बाबत मामूली चरचा अर कानाफूसी। थोड़ै नै कैवां तो या तो आ गड़बड़ आपणी ताकत नैं उलटै मारग चलाकर षडयन्त्रां मे लगा देसी अर या छुट-पुट अर फालतू कामां में पटक देसी।

पण मैं मिनखपणैं में सूं म्हारो विस्वास कोनी गमावूं अर ना इण विस्वास नै ढीलो पड़ण देवूं के अंगरेजी राजनीति में ताकत सूं बेसी नैतिकतारी सचाई है भलै ही मनै इण रै खिलाफ सबूत मिलै है अर मैं अंगरेजांनै स्वार्थी ताकत रा प्रेमी लालची, कोधो, कायर अर घमण्डी ही देखूं हूं। अंगरेजांरी अ खामियां मनैं इण वास्तै ही दुख देवै के अ आपणैं मे भी है क्यूं के आपां खुद आसानी सूं डरजावां, लालच में पड़जावां अर आपणै मन मे द्वेष, घृणा अर अविस्वास राखां; पण जे आपां महान अर बहादुर हां सज्जन, गुणी अर विस्वासी हां, अर आपणै मायनैं भी आपणैं दुस्मण जित्ती ही महानता होवै तो आपां दुस्मणरी गळतियां री चोटां खाता हुयां भी सांसारिक खेत्र में न सही, नैतिक मे तो, बां नै जीत ही लेवां। जद कोई काम में दो दळ हुवै तो बां दोनांरै मेळ सूं कामयाबी मिल सकै। दीनता सू ब्राह्मण री गुलामी मंजूर करकै सूद्र ब्राह्मण रै पतन खातर ऊंडो खाडो खोद दियो। कमजोर लोग बळवानांरा जिता ही ताकतवर दुस्मण है जिता के ताकतवर कमजोरां रा।

फेर भी आपां नैं या साबित करणी चाईजै के जिण चीज नैं आपां सिद्धान्त रूप में साचो मानां, बा व्यवहार में भी साचो है।"

"आपणा खुद रा लोग भी डर अर लालच सूं आपणै खिलाफ गवाही देसी।"

"ठीक है, पण इतणै पर भी साच रो रस्तो पकड़यो राखणो चाईजै।"

"तारीफ या इनाम रै लालच में आपरा खुदरा लोग आपणी पीठ में छुरा मोंकसी।"

'आ भी ठीक है। पण फेर भी साच री गैल नीं छोडणा चाईजै।"

'थे सचमुच इतनी आदा उम्मेद कर सको हो ?"

हां आपां नैं इतनी आदा उम्मेद जरूर करणी चाईजै; इण सूं एक कण भी कमती नीं। आपां राज सूं आपणा मांग करस्यां पण बा तद तांई मंजूर नीं होसी जद तांई उण सूं भी बडी मांग आपां आपणै आप सूं नीं करस्यां। मैं जाणूं हूं के लोग इतना मजबूत कोनी अर बां में सूं घणकरा असल में कमजोर है। पण हर बडै देस में रोजीना इसा घणा लोग जलमै जिका आखी मिनख जात रा प्रतिनिधि हुवै अै लोग दुनियां री बुरायां रो बोझो आपरी कमरां पर लादै अर आपरा हाथां सूं बो मारग बणावै जिण पर सगळा चालै। सारै विरोध रै बावजूद वै इन्सानियत मे आपरो विस्वास कायम राखै अर घोर निरासा रै अंधेरै में भी पूरब में ऊगण वाळै सूरज नैं उडीकता जागता रैवै। अणविस्वासी लोगां रै तानां री परवाह न करता हुयां वै जोर सूं कैवै, "धरमरो जरासो अस भी बडै सारै भय सूं रक्षा करै। इण वास्तै आपां डर रै आगै झुकांला नीं, आपां उण नैतिकता रै आगे ही झुकांला जिकी राजनीति में चाहै जठै भी मिलो। आपां गुण में विस्वास करां अर उण नैं पाणै वास्तै आपणै जीवण नैं खतरै में गेरां।

अंगरेजी राज रै डेढ सो बरसां बाद आप नैं अभी कैयो गयो है के बंगाल रा लोगां नैं मद्रास सरकार रै बुरा कामां पर दुख री सांस लेवण रो कोई अधिकार कोनी। आज तांई आपां नैं सदा या बात कही गयी के अविभाजित अंगरेजी राज में मद्रास, बंगाल, पंजाब, महाराष्ट्र अर दूजा सगळा भारत रा प्रान्त भीतरी अर बाहरी दोनूं द्रिस्टियां सूं संगठित रैया है, अर इण एकता री प्राप्ति रो गरब अंगरेज सम्राट रै ताज में जड़योड़ो कोहीनूर हीरो है। इण बखत पिच्छम में अंगरेज लोग इण बात नैं महसूस करै है के बेल्जियम अर फ्रान्स रा दुख बारा खुद रा दुख है, अर इण वास्तै ही बेल्जियम अर फ्रान्स री लड़ायां रा मैदानां में आपरी जिन्दगी देवण वास्तै वै आगै बढ रया है। इण मौके पर ओ सिद्धान्त पूरब में भी ठीक रह सकै कांई ? के बंगाल रा लोगां नैं मद्रास

प्रापरी एक इसे छोटे कमरे में देखें के वो एक दो कदम भी आँये दाँयें धरतां ही मौत सूं माथो मिड़ावें, तो वो जिन्दगी रै हर काम में आपरी महानता साबित करणै री ऊंची मनस्या नीं राख सकै ।

मैं जाणू के इतिहास मे एक दिन प्रभात रै वखत पूरब मे सूरज रै ऊगतां चाणचानणो पिच्छम, उतराध अर दिक्खण में जरूर फैलै । जे प्रगती रो चाल एक पग गैल एक इन्च सूं भी जादा तेज नीं हुवै तो कोई भी राष्ट्र अनन्त काळ तांई भी आपरै लक्ष तक नीं पूग सकै । अंगरेज लोग आपां नैं कैवै के कोई भी देस तद ही स्वतन्त्र हो सकै जद वो स्वतन्त्रता रै वास्तै पूरी तरियां लायक हो जावै । जे आ बात साची होवै तो आज संसार रो कोई भी देस स्वतन्त्र कोनी रैवै । वै लोग आपरै प्रजातन्त्र री डींग मारै । यूरोप रा साधारण लोगां में घणी गम्भीर खामियां है, पण मैं वांरी चरचा नीं करणी चावूं । जे कोई निरकुंस सासक आ हुकम देवै के जठै तक वै खामियां है वां लोगां नैं प्रजातन्त्र रा अधिकार नीं मिल सकै, तो वै खामियां ही नीं वणी रवैली पण वां नै दूर करणै रा कुदरती साधन भी खोस लिया जावैला ।

आपणै सामाजिक अर व्यक्तिगत जीवण में जिकी घणी सारी खामियां है, वांनै न तो आपां छिपाणी चावां अर न आपां नैं छिपाणै में सफळता मिलणी ही चाईजै । पण फेर भी आपां स्वराज री मांग करां । जे म्हारै कमरै में च्यार चिराग होवै, हर कूणै में जे एक चिराग कम रोसणी देतो होवै तो इण सूं दूसरो चिराग जळाणै री बुरी नीं मान्यो जाणो चाईजै । जरूरी बात तो है—मनै चानणो मिलणो चाईजै, चाहे जिण कूणै सूं अर चाहे जिण चिराग सूं । इन्सानियत रै दिवाळी रै मोटै उच्छव में कोई भी देस आपरा सगळा दीप अभी नीं जळा सक्यो है, पण उच्छव तो चालतो आरयो है । थोड़ा दिनां पहली आपणी खुद रो दीप भी बुझायो हो, अर आपां इग्लैंड रै दीप सूं दुबारा जोणो चावां । आ बात कोई नै भी बुरी नीं लागणी चाईजै । इण सूं अंगरेजां री दियो मा मंदो कोनी पड़ै अर उच्छव में भी जादा चानणो होसी ।

उम्मीद करण रा कारण है अर वै अंगरेजां रै अर आपां रै दोनां रै कनै है । मैं बंगाल रा लोगांरी इज्जत करूं अर आ बात जाणूं के आपणा जवान लोग ऊमर री पेहरो उधार लेकर मकनमद बणनै री कदै भी कोसीस कोनी करैला । अंगरेजां में भी मैं इसी कई मोटी आत्मावां वाळा लोगांनै जाणूं जिका अंगरेजी इतिहास रै कारनामां सूं इमरत रो फळ लेकर भारत में ल्यावण पर उतारू है । आपणी कानी भी इसा बहादुर लोगां री जरूरत है जिका सरकार री दियोड़ी सजा अर आपरा लोगां सूं मिलण वाळो मजाक नै सहन करणै वास्तै तैयार रैवै अर असफळता रै डर पर काबू

कारणै आपरी मरदानगी नै साबित करणै वास्तै उतावळा रैवै। भारत रो नित जुग अर नित जागतो भगवान आपणी आतमा नै पुकार रयो है। आपणी अ नागी बावरणवाळी अर न जीती जावण वाळी आतमा रो उण अमर धरती पर इसो हक है जिणनैं उण सूं न्यारो नीं करी जा सकै, इण वगत वा आंधा सामाजिक रीत रिवाजां अर आंधा राजनैतिक अधिकारां रै अपमानां सूं आपरो मुंह धूळ में अर्मा ही छिपाती हुवै। भारत रो भगवान आपां नैं पुकार कर कैवै है के आपां उण हर भटकै में जिको वो आपां नैं देवै अर हर दुख में जिको वो आपणै खातर भेजै, अपणैं आपनै पिछाणां।

आज आपां नैं साफ दीखै के मिनख री दुनियां कितनी बडी है, मिनख रो इतिहास कितो मोटो है, अर मिनख में प्रगट होतो "भूमा," आपानैं दीखै। ताकत रै रथ पर चढ़योड़ो वो अनन्त रै राजमार्ग पर चालरयो है अर रोग या सोग, विपदा या मौत उण नैं नीं रोक सकै। विश्वरी कुदरत उणरै गळै में माळा घाल री है। ग्यान रो चानणो उण रै ऊंचे लिलाड़ पर चमक रयो है अर दूर भविस्य री चोटी सूं लोग उण रो स्वागत कर रया है। म्हारै हिवड़ै में अर आपणा सगळां रा हिवड़ां में भूमा सिंघासण पर विराजणै री कोसीस करै है, भलैं ही आपां बखत सूं पैली आयोड़ी ऊमर रै बोझ सूं थकयोड़ा, अपणैं आप पर अविश्वास सूं डरपोक अर झूठ रै बोझै तळै कुड़बांड़ा अर मूर्ख बण्योड़ा होवां।

आपसरी में तुच्छ ईर्सा अर तुच्छ द्वेस सूं गाळ-भेळ करणो आज रो दिन नीं है, अर न मामूली ताकत अर इज्जत खातर भिखमगां री तरियां छीना-झपटी रो ही बखत है। आज रो दिन उण झूठै घमंड सूं अपणैं आपनैं भरमाणै रो नीं है जिको आपरै छोटै सै घर रै अंधेरै कूणां में ही घमंड सूं अकड़ रयो है, पण दुनियांरी महासभा में जिण नैं निदरै अर जिण री मजाक उडावै। दूजां नैं बदनाम करणैं में सुख लेणो कमजोरां रो मनोरंजन है, अर आपां इसो कोई मनोरंजन कोनी करां। आज रो दिन उण घणा सारा दोसा खातर अपणै आपरी निन्दा करणैं रो बखत है जिणारैं भेळै बोझ रै नीचे आपणो मिनखपणो कुचळ्यो गयो है अर आपणो ग्यान सुन्न होग्यो है। आज रो दिन आपणी पूरी ताकत सूं उण कूड़ळैनै झाड़र दूर फेंकणैं रो है जिको अनेक सदियां सूं भेळो हुयोड़ो है। आपणैं आगे बढणैं री मजबूं बडी अड़चण आपणीं पीछै ही है। आपणो बीत्योड़ो जमानो आपणैं भविस्य कानी आपरो मोहक बाण फेंक दियो है इण सूं जिको धूळ अर सूखा पानड़ा उड़या है वैं आपणैं नयैं जुग रै प्रभात पर छा रया है, अर आपणी नयी झकझोरयोड़ी जवानी री ताकत नैं ओमल रया है। आपां नैं बीत्योड़ै जमानै सूं आपणो सम्बन्ध झटको देकर तोड़ देणो चाईजै अर आखी दुनिया रा उण नो। लुगायां नैं आपणी बस मेलां

चाईजै जिका नित आगै बढता रवै, नित जीवता, नित जागता अर नित चेस्टासील रवै। मैं लोग लुगाई ही दुनियां नैं बणाणै वाळै विस्वकर्मा रो जीवणो हाथ है। साच नैं प्राप्त करणै री आपरी अथक कोसीस में वैं जिको मारग पकड़ै बो ग्यान रै चानणै सूं संचन्नण है, अर हर जुग में हर देस वांरी जीत सूं गूंज उठै।

सावण री झड़ियाँ-री तरियाँ आपणैं पर दुख बरस्या है अर आपणैं में एक इसी अपवित्रता रो मैळ भर दियो है जिण रै वास्तै पस्चाताप करणो जरूरी है। पण ओ पस्चाताप किया करयो जावै? दुखां रै मन री उण पवित्र भगत री तरियां स्वागत करकै ही पस्चाताप करणो चाईजै, जिको आपणा पाप आपणो अग्यान अर आपणै आळस नैं बाळ कर भसम कर देवै। इण वास्तै आवो आपा उण परमात्मा री स्तुति करां अर उण नैं आपणी आ भेंट देवां जिण में आपणी नीचता न हो अर आपणैं मांयलो महान अर अमर देवता होवै। आपा परमात्मा सूं आ विनती करां के वो आपानैं देवतां नैं आपरै सिंघासण रै जीवणै पासै बुलावै। आपणी नीचता रो मजाक उड़ावै, आपणी गुलामी नैं नीची दिखाई जावै अर आपणी बेवकूफी नैं ओछूं साबित कर के हमेसा रै खातर-देस निकाळो दे दियो जावै।

भारतीय संस्कृति रो केन्द्र

भारत या साबित करदी है के इण रै खुद रै.मो दिमाग है, अर ओ अस्तित्व री समस्या नै आप रै ढंग सूं ही हल करणै री गहरी चिंता में डुब्योड़ो है। भारत में सिक्षा रो उद्देस्य इण दिमाग नै आपरै तरीकै सूं इण खोज में पूरो काम में मदद देवणरो है।

इण काम सारू भारत रै दिमाग नै सगठित अर सावचेत होणो चाहीजै, अर ही यो गुरुवारी सिक्षा नै सही भावना सूं ग्रहण कर सकै, आपरै निजी मापदंड सूं इण नै आंक सकै, अर आपरी निजी क्रिया-सगती सूं इण नै काम में ले सकै। देणो और लेणो दोनूं वगत ही आंगळयां भेळी राखणी चाहीजै। जद आपां विसरयोड़ा दिमाग नै सहकारी किरा में ओन देवां तो वै ग्रहणसील अर सक्रिय हो जासी, अर जीवण रो जळ छेकड़ में सूं टपक'र नीचै री धरती नै गीली कोनी करसी।

सिक्षा में सबसूं महत्वपूर्ण बात निर्माणकारी क्रियासीलता रो इसो वातावरण है जिण में बौद्धिक अनुसधान नै पूरो औसर मिलै। संस्कृति रै झरणां सूं उमळतै पाणी री तरियां सिक्षा स्वतः प्रेरित अर अचूक होणी चाहीजै। सिक्षा स्वाभाविक अर अपूर्ण तद ही हुवै जद आ जीतै-जागतै अर बढतै ध्यान रो फळ हुवै।

और आगे, आपणी सिक्षा आपणै आर्थिक, बौद्धिक, कळात्मक, सामाजिक अर आध्यात्मिक सम्पूर्ण जीवण सूं लगातार सही रहणी चाहीजै, अर आपणी सूझ आपणै समाज रै हिरदै पर होणी चाहीजै जिकी न्यारा-न्यारा जीवित सहकार-संस्थां सूं इण सूं जुड़ी रैवै। क्यूंके, सही सिक्षा आ ही है जिण सूं पग-पग पर आ समझ में आवै कै म्हां आपणी सिक्षा अर दरसन रो पालण आप रहोस सूं सवेतन मनस्य हैं।

(१)

आपणी मौजूदा सिक्षा पद्धति रै बारै में असन्तोस री एक अनिश्चित सी भावना सारै भारत में फैल्योड़ी है। हाल में ही इणनै बदळणै री इच्छा रा अनेक लक्षण दिखाई दिया है। आपणै राष्ट्रीय दिमाग रो मौसमी परतां में अणु जीवण री प्रेरणा रो आगमन हुयो है जिको नई संस्थावां नै जनम देवै अर नया प्रयोगां नै बढ़ावा दी।

पण, प्रायः इसी बात हुवै के आदमी री मनसा इतणी तुरत अर द्रिढ होणंसूं, उत्साह रै कारण री सही ठौड़ ढूंढणी अर इणरै लक्ष्य री दिसा निश्चित करणी घणी कठण हो जावै।

सिक्षा रै जिण मौजूदा तरीकै में आपणा दिमाग पळ्या है, वो आपणै नाजर भौतिक सरीर रै समान ही व्यस्त है, जिकै सूं आपां या सोच ही नहीं सकां के इण में फेर बदळ हो सकै। आपणी कल्पना इण सींव सूं आगै उडणैरी हिम्मत नहीं करै, आपां बारै सूं इणनैं देखणै अर परखणै में मजबूर हां। आपां कनैं या बात कहणै री न तो हिम्मत है अर न हौसलो ही के इण री जगां दूजी कोई चीज मेली जा सकै, क्यूं के आपणो खुद रो बौद्धिक जीवण भी जिणरै वास्तै आपणी स्वाभाविक प्रवृत्ति है, इण पद्धति री ही उपज है।

पण फेर भी, आपणी आत्मतोस रै नीचै एक इसो कांटो उभर रयो है जिको आपांनैं सुख री नींद कोनी सोवण देवै। क्यूंके मांय-मांय ही यो कांटो गडतो रवै, आपां दण सूं चिड़'र आपणै सताप रो कारण कोई बाहरी हस्तक्षेप रै सिर पर मढ देवां। आपां कैवां के आपणी सिक्षा री एकमात्र खराबी या ही है के या आपणै पूरै बस में कोनी, के नाव समुद्र मे तिरणै लायक तो है पण, इणनैं टकरा कर चूर होणै सूं बचाणै खातर आपणै हाथां में पतवार आणी जरूरी है। पिछला दिनां में राष्ट्रीय स्कूल अर विस्वविद्यालय थरपणै री आपणी कोसीसां इण विचार सूं ही करी गई के आपांनैं बारली आजादी री जरूरत है। आपां या बात भूल जावां के आपणी आजादी जद तांई बारली ही रहसी तदतांई आपणै चरित्र या वातावरण री वा ही कमजोरी आपणी गैल पड़ी रहसी, जिकी आपां नैं नकल रै फिसलणै ढळाण पर यकायक धींसकर ले जावै। क्यूं के फेर आपणी आजादी विदेसी संस्थावां री नकल करणै री ही आजादी हो जासी, जिकी आपणै दुर्भाग्य नैं नकल अर नकल री बुरायां रा दो अमंगळकारी ग्रहां रै योग रै दुष्प्रभाव में ला देसी अर इण सूं एक इसो मसीनां सूं बण्यो विस्वविद्यालय पड़्यो होसी जिण नैं बणाणैवाळी मसीनां भी खराब है।

या प्रायः हुया करै के हारयोड़ै पाळै रा सीरी आपरी हार रो कारण एक दूसरै री अयोग्यता रै सिर मंढै। आपणी बदनाम सिक्षा पद्धति में भी दोनूं सीरी-आपणा विदेसी सासक अर आपां खुद-एक दूजै नैं दोस देवण रा बो ही ढंग अपणा राख्यो है। बहोत संभव है के इण दोस नैं आपां आपस नैं बरोबर बांट सकां, पण मैं तो सदा या बात सोचूं के आपणी असफळता री जिम्मेंवारी एक ... ... आ स्यूं आगी माऱतोब है। आपणै व्यावहारिक उपयोगरो ... ... के इण गिरावट में आपणो दोस कठैतांई है।

इण विषय में आपनै ताळै में आपां नै भूल जाणो चाहीजै । आपां नै तो आपणी कमजोरी में ही दोस देणो चाहीजै, जिकी सूं आपां हर दम यो सोचता रैवां के आपां रै विदेसी शिक्षा करी मकड़ी री बणावटी टांगां लाग्योड़ी है, क्यूं के आपां नै भ्रम है के आपणी कुदरती टांगां ही कोनी । मैं इसी ही एक बात एक आदमी री सुणी है जिको छिछळै पाणी में इण भ्रम सूं डूब मरयो के वो बहोत गहरै पाणी में उतरग्यो है ।

मुसकिल तो आ है के ज्यूं ही आपां कोई विश्वविद्यालय री बात सोचां तो ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज अर झुंडरा झुंड यूरोपीय विश्वविद्यालय आपरै आपणै दिमाग में घुस जावै । अब आपां आ बात सोचण लाग जावां के हरेक री देसी बातां नैं धुण-धुण कर जमा लेणै में ही आपणो कल्याण है, आपां आ बात भूल जावां के यूरोप रा विश्वविद्यालय यूरोप रै जीवण रा सचेतन अंग है, अर वांरो जनम स्वाभाविक ढंग सूं ही हुयो है । आजकाल री चीरफाड़ री विद्या में एक रै अंग री चामड़ी उतार र दूजै रै अंग पर लगाई जा सकै, पण इण तरीकै सूं ही आखो आदमी बणादेणो विग्यान रै बूतै रै बाहर है, खाली आज ही नहीं, आगद आगै आवण वाळा सब जमानां में भी रहसी ।

यूरोपीय विश्वविद्यालय आज आपां नैं पूरा बढ़्या चढ़्या दीखै, यो ही कारण है के आपां विश्वविद्यालय री कल्पना एक पूरो विगस्योड़ी संस्था रै रूप में ही करां। मैं मेरै पाड़ोसी नैं, उणरी मदद करणियै अर सहारो देवणियै उण रै मजबूत बेटै रै सागै देखूं तो मेरे मन में भी कुदरती ही या आवै के मेरै भी इसो बेटो हुवै । पण जे मैं इसो मोटयार जवान बेटो तुरत चाहूं तो सायद जल्दी में मैं कोई मोटयार जवान लड़कै नैं भले ही ले बैठूं पण बो मेरे बेटो तो कदेही नईं हो सकै । अयां ही, अधीर होकर कळा री भावना करणैं अर नकल करणैं री बदकिस्मत कमजोरी सूं आपां जनम सूं ही पूरै पाठै एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय री इसी ही अणहूती मनसा करण लागजावां। इणसूं ही आपणी कोसीसां निरफळ हो जावै, अर जे कोई फळ निकळै भी तो बो खारो । यो फळ आकार, सकल अर रग में असली री तरियां भी हुवै तो इण रै बटको भरतां अर गिटतां तो और भी जादा, सावचेत रहणो पड़ै । आपरो देस जिका पूरा ठोस विश्वविद्यालयां पर ध्यान दे रयो है, बै गहरा उबाळयोड़ा अंडा री तरियां है, जिका सूं बचियां री कोई उमेद नहीं करी जासकै ।

आपां ही नहीं, आपणो यूरोपीय स्कूल मास्टर खुद भी आ बात भूलग्यो दीखै के उण रो विश्वविद्यालय आपरै राष्ट्र रै साथै-साथै बढ्यो है अर इण री भौतिक महिमा

रो इण रा मुहरा दिनां सूं कोई सम्बन्ध कोनी। वो या बात भूल जाणो चावतो के उण री सुरूपोत री सिक्षा रो प्रबंध करणियां दरिद्र सन्यासी हा अर उण वखत रा घणखरा विद्यार्थी गरीब हा। पण जद वो या साची बात भुलादेवै के भारत जिसै गरीब देस में विस्वविद्यालय रै भौतिक पख नैं जरूरत सूं जादा तूल नहीं दियो जाणो चाहीजै, अर जद वो या भी कठोरता सूं भूल जावै के ठाठ-कबाड़ बढाकर अर सुविधावां नैं एकदम कम कर'र आपणी अपर्याप्त स्कूलां अर कालेजां रो दायरो और जादा तंग नहीं करणो चाहीजै, तो या बात आपणा लोगां सारू बिनासकारी बणजावै।

मैं भली भांत या बात समझूं के आदमी नैं भोजन अर भोजन करणै रा बरतण दोनूं चाहीजै। पण जद भोजन री ही तंगी हो जावै तो बरतणां री किफायतसारी और भी जरूरी हो जावै। सिक्षा रो सरजाम इतणो कीमती बणा देणो के सिक्षा लेणी ही दोरी हो जावै, इसो ही बात है जिसो बटुवा खरीदणै में ही सारा पीसा उडा देणो। पूरब रा आपां लोगां नैं आपणैं जीवण री समस्यावां रो हल खुद ही ढूंढणो पड्यो है। अठै तांई बण पड्यो आपां आपणैं भोजन वस्त्र नैं बोझ कोनी बणणैं दियो। आपणो आबहवा ही आपां नैं अयां करणो सिखायो। आपां नैं भींतां री बजाय भींतां में मोरियां री जादा जरूरत है। आपणा पासां रो सम्बन्ध जुलाहै रै करघैरी बजाय हवा अर रोसणी सूं जादा है। दूजी जगावां में जिकी सगती भोजन सूं मिलै वा आपां सूरज री धूप सूं ही ले लेवां। इण सब कुदरती फायदां सूं आपणो जीवण एक खास सांचै में ढळ्यो है, जिकै नैं सिक्षा रै मामले में भुला देणो मेरे विचार में तो कोई फायदै मंद चीज कोनी।

मेरो मतळब गरीबी रा गुण गाणैंरो नहीं है। पण सादगी पीसै रै ठाठ-बाट सूं जादा गुणकारी है। मैं जिकी सादगी री चर्चा करूं हूं वा बोळायत री कमी रो असर कोनी, पूर्णता रो एक चिह्न है। जद मिनखजात में इण रो उदय होवै तो सभ्यता पर छायोड़ो मैली चदर मिट जावै। इण सादगी री कमी सूं जीवण री जरूरी चीजां इतणी दुस्प्राप्य अर कीमती होगी के आजरी सभ्य दुनियां में घणखरी चीजां, अयां भोजन अर मनोरंजन सिक्षा आ संस्कृति, सासन अर मुकदमेंबाजी ज्यान सूं जादा जगा घेर राखी है। यो घणखरो बोझ फालतू है, अर इणनैं उठाणैं में सभ्य आदमी सायद आपरी ताकत रो दिखावो तो जादा कर रयो है, पण समझदारी रो कम। घराव में बैठ्या देख'णयां देवतावां खातर या इमी ही बात है जाणैं कोई रासम तिरणो न जाण कर गहरै पाणी में चल्यो जावै अर कादै में फसकर तड़फड़ावै, पण फालतू हाथ-पग फैंक कर सारै तळाब रो कादो उछळतो रहणैं पर भी जिको इण विचार सूं तिरयो रैवै के अयां ताकत दिखाणैं में भी कोई न कोई खास बात है।

अपरिवर्तनीय बण'र आपणै कनै आवै, जिकां न देवतावां रा वणायोड़ा समझ'र आपणा दिमाग नै वांरे विरोध अर आलोचना सूं दूर राखणा पड़ै।

इण भांत आपां जीतै-जागतै सत्य रै वेगपूर्ण रूप नै खो दियो है। अंग्रेजी दिमाग, विक्टोरिया काळ रै सुरू सूं बाद तांई री आपरै विकास री अवधि मे, अनेक भावावस्थावां अर स्तरां मे सूं गुजरयो है। पण, अंग्रेजां सूं उपदेस लेवणिया उतणा लोग, इण अवस्थावां पर स्तरां में सूं कोई एक नै ही निश्चित मानकर पकड़ बैठा, आपां आपणै गुरू रै गतिसील दिमाग रै साथै-साथै सुभावीक रूप सूं कोनी चाल सकां, अर खाली एक जगां सूं दूजी जगां उछळता रहकर-जीवण रा उतार चढ़ावां नैं खो देवां। आपां आपणी सगळी बौद्धिक श्रद्धा नैं संभाळ'र जड़देवां, या तो बेंथम अर मिल रै उपयोगितावाद में, या कारलाइल अर रस्किन रै ... में, ... दिमागां नैं मत्यरी चमक दिखावणवाळी उण उलटवांसियों में जिण में ... बरलाडंशा नामी है, अर आपां उणां री अवस्यंभावी क्रिया प्रतिक्रिया में देख ही ... पावां। आपां आपणी सिक्षा रै अप-टू-डेटपणै रो घमंड करां, आपां भूल जावां के ... सिक्षा रो एक ही उद्देश्य है, अर वो है वर्तमान सूं मार्ग ले जाणो।

जीवणरो व्योहार जीतै-जागतै माध्यम सूं ही हो सकै ... विभाग रो प्राण है, आदमी रै मारफत ही आदमी तक पुगाई जा सकै ... पढ़णै सूं तो आपां पंडिताई रा दंभी ही बण सकां। पोथयां री पढाई स्थिर अर परिमाणात्मक है, या खुद संग्रह करै अर करड़ै पहरै में भेळो राखी जावै। पण, संस्कृ... जीवण में अपणै आप बढ़ै, फैलै अर गुणित होती जावै।

यूरोपीय विश्वविद्यालयां रा विद्यार्थी, खाली समाज मे ही सस्कृति रो मानवीय पास-पड़ोस नहीं बढ़ाया जावै, पण गुरुआं रै निकट सपर्क सूं भी लाभ उठावै ... कनै च नणं खातर खुद रो सूरज है, अर वो है सिक्षकां अर विद्यार्थियां रै बीच ... सम्बन्ध। आपणै कनै तो आपणा करड़ा चकमक भाटा है जिकां नैं जोर सूं मा ... पर बिखरयोड़ी चिणगारियां पड़ै। पानणो तो कम हुवै अर खुड़का घणा देवी ... चकमक सिक्षा रा न्यारा-न्यारा टुकड़ा है, इसा ठोस तरीका जिकां में न ... न गर्मी।

दुरभाग सूं, आपणै देस में यूरोपीय विश्वविद्यालय रो ओर सारो सरंजाम तो है, पण जीतो-जागतो सिक्षक कोनी। उणरी जगां आपणै कनै पुस्तक-विद्या रा ... है जिकां रै मुंह सूं किताबां री दुकान रो कागद-देवता परचा देवै। इणरो कुदरती नतीजो यो है के आपणा विद्यार्थी आपरा सिक्षकां खातर भी 'अछूत' सा है। मैं

अध्यापक बडी सान सूं, दूर बैठ्या ही, भारत रा विद्यार्थियां नैं सावधानी सूं मानसिक भोजन रो दान देता रैवै, अर मोटयुकां री भीनी दीनां रै बीचूं बोच पड़ी रैवै। यो भोजन न तो स्वादिस्ट ही है अर न पोसण ही देवै। यो तो काळ में बरतणवाळो, कड़ा नियमां सूं बण्यो रासन है जिको मारी नैं दुर्बळता सूं तो नहीं, पण मौत सूं जरूर बचावै। इण सू उण संस्कृति री कोई आस कोनी जिकी आदमी री कोरो बड़ता सूं कितणी हो जावा है, या पढ़ाई ही काठी सूं कम अर गोड सूं तो बहोत ही कम है।

जदताईं आपां या साबित कर देणं री हालत में नहीं होवां के दुनियां नैं म्हारी जरूरत है, अर म्हारैं बिना काम हो नहीं चाल सकै, के म्हे बालो आपरै लाग्योड़ा ही कोनी हां—मगज जिका पाछो नहीं दे सकै—तदताईं दूजां री किरपा में ही आपणो थाम रहसी। अर इण किरपा में लेवण सारू रोणो-धोणो, चापलूसी अर पूंछ हिलाणैंरा कानूनी तरीका भी अपणाणा पड़सी।

जे भाषा इसी कोई चीज नहीं दे सकां, जिकी आदर सूं ग्रहण करणं लायक हो, कोई भी आपणी चिन्ता कोनी करसी। पण दोस किण नैं देवां ? जिका आदमी खावैं ही खावैं अर पैदा नहीं करैं, वां खातर धरती पर फालतू जगां कठै है ? सारै देस जितणो बडो अपनाश्रम भी कोई कठैतक बणावै ? इण कठोर सत्य नैं जरूर समझ लेणो चाहीजै के कोई भी चीज भाषा नैं दो गई है जिकै सूं ही आपणो कोनी हो जावै। अकास रै जळ नै ग्रहण कर'र सभाळ कर राखणो झीलरो ही काम है, रेगिस्तान रो नहीं, क्यूंके झील री गहराई में देणं अर लेणं रा दोनूं गुण अेकाकार होग्या है। जिण रै कनै कुछ है उणनै ही दियो जावै, नहीं तो दान लेवणियो अर खुद दान दोनां रो अपमान हुवै।

(५)

मैं एक इसै विस्वविद्यालय रो उदाहरण आपनैं बताऊं जिको राष्ट्रीय धरती पर जनम्यो अर बढ्यो, पण इतिहास रै फेरबदळ रै साथै ही असफळ होग्यो।

यूरोप रै उण जमानै में, जिकै नैं लोग अंधकार जुग बोलै, जद असभ्य लोगां रै हमलै सू रोम रो ग्यान-दीप बुझग्यो हो, तो पिच्छम रा देसां में आयरलैंड ही एकलो आपरी सांस्कृतिक थापोती नैं बणाई राखी। यूरोप रा अनेक देसां सूं विद्यार्थी बठै पढणनैं आता हा। आपणी संस्कृति पाठसाळावां री तरियां बठै भी खाणो, रहणो, अर किताबां मुफ्त में मिलती ही। आयरिस सन्यासी सारै यूरोप में ईसाई धर्म अर संस्कृति रै धुंधळै चानणै नैं फेर सूं सजीवण कर्‌यो। पैरिस विस्वविद्यालय

री थापना में भी चार्लेमैग्ने भ्रायरिस विद्वान क्लीमेन्स री मदद । ली उण बखत री भ्रायरिस संस्कृति रै प्रताप री भ्रोर घणी मिसालां है । इणरो जनम तो रोम में जरूर हुयो, पण घणा दिनां तांई त्यारी रहणैं सूं इण मे भ्रायरिस लोगा रै दिमाग भर जीवण रो प्रवेस होग्यो, भर या ठेठ भ्रायरिस प्रतिभा नैं ग्रहण करली । भर इण संस्कृति रो माध्यम भ्रायरिस भासा ही बणी ।

जद हेनिम भर भ्रंग्रेज लोग भ्रायरलैंड पर हमलो करयो, तो वैं भ्रायरिस कालेजां रै भाग लगादी, पोथीखाना तहस-नहस कर दिया भर सन्यासियां तथा विद्यार्थियां नैं या तो मार दिया या भगा दिया । पण फेर भी, देस रा उण भाग मे जिका हमलैं सूं दूर भर भ्राजाद रया, सिक्षारो काम मात-भासा में तदनांई चालतो रयो जदतांई राणी एलिजाबेथ रै राज मे पूरैं भ्रायरलैंड नैं ही जीतकर बठैरा देसी विश्वविद्यालयां नैं खतम नहीं कर दिया गया । संस्कृति भर भ्रध्ययन रैं वातावरण सूं छिटकायोड़ी भ्रायरिस भासा धीरैं-धीरैं भ्रापरो कदर खोदी भर लोग उणनैं नीचां जातां री बोली समझण लागग्या । बाद में उगणसवीं सदी में जद राष्ट्रीय स्कूल भ्रान्दोलन सुरू हुयो, तो भ्रायरिस लोग भ्रापरैं पक्कैं विद्या प्रेम रै कारण, बिना कोई भ्रालोचना रै, बडै उछाह सूं उणरो स्वागत करयो ।

राष्ट्रीय स्कूल चलाणैं रो उद्देस्य भ्रायरिस लोगां नै एग्लो सेक्सन तरीकै पर ढाळणो हो, पण भलो समझो या बुरो, विधाता हर जाति नैं न्यारै-न्यारै तरीकै सूं बणाई है, भर एक नैं दूजैं रो कोट पहराणो फबै कोनी । राष्ट्रीय स्कूल भ्रान्दोलन सुरू हुयो जद सौ मैंल भ्रस्सी भ्रायरिस लोग भ्रापरी भासा नं ही काम में लेता हा । पण भ्रायरिस छोरां नै, मार रैं डर सूं, भ्रापरी भासा छोड़णैं पर मजबूर कर दिया गया, भर वांरो इतिहास पढणैं पर भी रोक लगा दी गई ।

नतीजो वो ही हुयो जिकै री उमेद ही । सारैं देस में मानसिक जड़ता फैलगी। भ्रायरिस भासा बोलणिया लड़का, जिकां में स्कूल जाणो सुरू करतां बखत बुद्धि भर उछाह जीवता हा, स्कूल छोडता बखत मानसिक रूप सूं भ्रपंग होग्या भर पढाई सूं घृणा करैं लागा । कारण यो ही के सिक्षारो तरीको मसीनां रो सो हो जिकै सूं नतीजो भी तोता-रटत रो ही हो सकै हो ।

ग्यान रै ठीकसिर प्रचार खातर विदेसी भासा रो माध्यम सही कोनी । या बात एक इसो सिद्ध वचन है जिणनैं सुणनैं सूं तग भ्राकर बाकी दुनियारा लोग तो नींद लेणी सुरू कर देवैं, पण भ्रापणैं देस मे या भयकर नास्तिकता सी लागैं । भ्रापां नैं सचिय विरोधी बणाकर या भ्रापणैं पर पौस्टिक भ्रौखध रो सो काम करै । साधारण

बाळां नै जबर करे करे अंगरेजी पढ़ावां, जिण सूं ही मैं बोलूं कैवूं के टाबरां रै मगज सूं पढ़ाई पर घणो भार मजबूर करणो चावै तो बरसां री मुसकलां पर टाळी मगज खपाणै में ही जीवण रा थोड़ा सूं थोड़ा दिन बीत जावै। क्यूंकै मैं थोड़ा घणो अनुभव ध्यान रखणो है, पण भारत में जिसी सुणाणी चावै पर देर लागै जद सूं भूख मारी जावै, पर इयां मना दियां बाद पाणी करणो सूं पेट भरो रै लायक बळ हो जावै। इण सूं विचार थोड़ा मूळ जावै, पर व्याकरण री मगजपच्ची तथा उच्चारणां री रटन रै कारण जिको बालै कोई दलील ही नहीं है, जीवन रै घणां बातां री उणरी भूख ही मारी जावै।

जे बातां मदरसा री इसी कानूनेत में कंस लगाणो चावां जठै बरसां रो मन निकाल ही नहीं हुवै तो बातां में आपरी चीज ही नहीं पण माटी पर पाणी भी कठै दूर सूं ही नाखणा पड़सी। पर इणरी सारी मेहनत रै बाद भी कंस बठै नहीं पर्छ। पर जे बदास इण रै फळ लाग भी जावै तो चीज पड़ै नहीं। भारत रा विश्वविद्यालयां रै हिन्दी शिक्षा भाषा में मिले है उण सूं या पक्की धारणा बणूं के यो बजड़ धरती में तगाड माटी गेरणें रो सो काम है, पर या भी है आपणी मानसिक द्रिस्टिकोण तथा ध्यान ही नहीं, खुद भारत नै ही समन्दर पार सूं बीस गुणा उठार लावण री जरूरत है। इण सूं आपणी शिक्षा घणी धुंधळी, पळगी अर बणावटी हो जावै, जीवण सूं उण रो लगाव एक दम टूट जावै अर सर्व, स्वास्थ्य तथा भावना नै देखणा का आरणै खातर बहोत बुरी तरियां कोमती हो जावै, पर फेर भी फळ बहोत थोड़ा ही देवै।

जठै ताई मैं पढ़ाई री बात जाणूं, घणाखरा सा विद्यार्थी तो कुदरती ही भासावां सीखणें में पोचा हुवै। अंग्रेजी रै भयंकरै ध्यान सूं दसवीं पास करणो ही वां खातर घणो दोरो काम है, पर ऊंचली कलासां में तो वै जरूर ही पीछै बैठ जावै। इण रै अलावा और भी अनेक कारण है। जिका सूं आपणें देस रा घणाखरा टाबर अंग्रेजी नैं रवां नहीं कर सकै। सब सूं पहला तो जिका दिमागां नैं पूरब रै तरीकै सूं सोचणें रो अभ्यास है, वां में अंग्रेजी घुसेड़नी एक इसी ही बात है जियां किरपाण री म्यान में अंग्रेजी तरवार घालणी। दूसरी, बहोत थोड़ा टाबरां कनै इसा साधन है के वै कोई समर्थ गुरु रै कनै भली भांत अंग्रेजी रो अभ्यास कर सकै। गरीबां रा टाबरां कनै तो इसा साधन है ही कठै ?

मैं या बात भी जाणूं के इण बात री काट करणिया लोग या दलील देसी "थे टाबरां नैं देसी भासावां में ऊंची सिक्षा देणी चाहो, पण पोथ्यां कठै ?" मनैं मालूम है के पोथ्यां कोनी। पण जद ताई ऊंची सिक्षा आपणी भासावां में नहीं दी

आवें पोथ्यां आसी कठै सूं ? जद सिक्का ही बजार में नहीं चाळै तो टकसाल फलतू क्यूं ढाळै ।

आयरलैंड रा मिसाल सूं सीखणैं री दूजी बात या है के कुदरत रै नियम मुजब पाणी पहलां आवै अर मछली पाछै । यानी आदमी पैदा हुवै, जद ही वां कनैं विद्यार्थी भेळा हुवै ।

गहरी मानसिक चेतनता रै उण जमानै में, जद ग्यान अर विचारां सूं उळझता दिमागां वाळा लोग रहता हा, भारत में नालंदा अर तक्षशिला जिसा संस्कृति रा केन्द्र बणना कुदरती हा । पण, खाली संस्थावां खड़ी करणै री आदत होणै सूं आपां राष्ट्रीय विश्वविद्यालय खड़्यो करणैं रो कोसीस भी गळत ढंग सूं सुरू करां । विद्यार्थी भेळा हुयां पछै गुरुआं री खोज सुरू करां । या तो उण मनमौजी कारीगर री सी सनक है जिको बडी महनत सूं कोई जानवर री पूंछ बणावै, अर फेर चाणचुकी ध्यान आवै जद देखै के सिर तो बणायो ही नहीं । आपां बटाउवां नैं तो जीमावा बिठा देवां अर फेर ठा पड़ै के हाल तो चूल्हो ही कोनी चेतायो । आपणा दिमागां में स्याणप अर कामां में विवेक लावण सारू आपां नैं पाठ्यक्रम अर विद्यार्थियां री सारी चिंता भुला देणी चाहीजै । आपणी मौजूदा सिक्षा संस्थावां रो जक्योड़ो मूरतां नैं आपणा दिम ग सूं निकाळ फैंकणी चाहीजै । उणरै बाद आपां नैं या विनती करणी चाहीजे ? लोग आपरा दिमागां रो संस्कार करणै रै अनुशासण में सफळ हो चुक्या है अर जिका ग्यान बांटणै अर ग्रहण करणै भी त्यार है वै भेळा हो र आवै अर ग्यान रै अन्वेसण अर आविस्कार रै आपरै निजू काम में जुट्या थका अध्ययनपूर्ण स्रम रा आसणां पर बैठे । इण रीत सूं ही या संगती एकठी होसी जिकी सूं जीवण रै समूचै सत्य नैं ले'र आपणैं मांय सूं ही विस्वविद्यालय खड़्या हो सकसी ।

आपां नैं या बात समझ लेणी चाहीजै के विस्वविद्यालय रो सबसूं बडो उद्देस्य देस री दिमागी साकतां नैं इण भांत एकठी करदेणी ही है, क्यूं के या ही जीवाणु रै केन्द्र भाग री तरियां, राष्ट्रीय दिमाग रै क्रियासील जीवण रो केन्द्र है ।

(८)

लोग कैवै के भारत में दिमागी अेकता लाणी मुसकल अर असम्भव सी है क्यूं के अठै इतणी भांत भांत री भासावां है ।

पण, दुनिया रै हर राष्ट्र नैं या तो आपरी समस्यावां खुद सुळझाणी चाहीजै या हार मान'र मौतो दरजो मानलेणो चाहीजै । सगळी सांची सभ्यतावां मुसकलां री

चट्टानां पर ही बणी है। जिकां कनै पीणै रै पाणी री नदियां है बै तो बडभागी है, पण जिकां कनै कोनी, बांनै तो कूंडाकलां सूं खोद'र पाणी काढणो पड़सी। पण आपां नैं आ कदे ही नहीं सोचणी चाहीजै के धूळ, आसानी सूं मिलणै रै कारण, पाणी रो काम भी दे सकै। आपां नैं बहादुरी सूं आपणी न्यारी-न्यारी भासावां री असुविधावां नैं मान लेणी चाहीजै, अर साथै ही या भी जाण लेणी चाहीजै के विदेसां माटीरी तांई विदेसी भासा भी काच री पेटियां में उगायोड़ा पौधां वास्तै भलै ही ठीक हो, पण जीवण रो आधार बणण वाळी खेती खातर नहीं।

आपां नैं या भी मान लेणी चाहीजै के भारत यूरोप रा उण महान देसां जिसो कोनी जिकांरी आपरी एक ही भासा है। यो तो आखै यूरोप जिसो है जिणमें न्यारा-न्यारा लोग अर वांरी न्यारी-न्यारी भासावां है। अर फेर भी यूरोप में एक इकसार सभ्यता अर बौद्धिक एकता है जिकी रो आधार भासा री एकता पर कोनी।

सभ्यता रा पैलड़ा दिनां में आखै यूरोप में सिक्षा री भासा लेटिन ही। उण बखत उणरी बुद्धि डोडी री तरियां ही जिणरी आत्म-प्रकासण री सगळी पांखड़यां हाल खिली कोनी ही, पण उणरै मानसिक विकास री संपूर्णता साहित्यिक भासा एक होणै रै कारण कोनी ही। यूरोप रा देस जद सूं आपरी न्यारी-न्यारी भासावां अपणाई तद ही पच्छम री सस्क्रतियां रो साचो मेळ सम्भव हुयो। भारग न्यारा-न्यारा होणै सूं ही यूरोप विचारां रो लेण-देण इतणो मोकळायत सूं अर इतणो अनेक भांत सक्रिय हुयो। असल में तो कुदरती फर्क जद एकजान हो जावै तद ही साचो एकता हुवै, पण बणावटी इकसारपणो तो निर्जीव बणा देवै। आपां भली भांत सोच सकां हां के यूरोप री सभ्यता नैं कितणो बडो नुकसाण हुवै, जे फ्रांस, इटली, जर्मनी अर इगलैंड आपरी न्यारी-न्यारी आढ़त सूं आप-आपरी कमाई भेळी खजानै में जमा नहीं करै। अर आपां या भी जाणां के जद जर्मन सभ्यता आपरो घणियाप जताणो चाह्यो तो सारो यूरोप सकट री तरियां उणनैं टाळयो।

एक बखत हो जद भारत में भी एक भासा-संस्कृति ही। पण विचारां रै पूरै लेण-देण वास्तै उणरी सगळी भासावां में पूरी समझी आणी चाहीजै, जिण सूं अठै रा सगळा लोग आपरी न्यारी-न्यारी प्रतिभावां नैं प्रगट कर सकै। यो काम उण भासा सूं कदे भी नहीं हो सकै जिकी विदेसी है अर जिकी रो आपरो न्यारो वातावरण है, जिकै सूं आपणा विचारां अर कामां री आजादी में विघन पड़ै। अंग्रेजी नैं काम में लेणै सूं आपणा दिमागां नैं प्रेरणा देवण खातर जरूर ही पच्छम कानी मुड़णो पड़ै, जिण सूं आपां कदे भी अपणायत रो सम्बन्ध नहीं राख सकां, अर इण कारण सूं ही आपणी सिक्षा बांझ रह जावै अर जे पैदा भी करसी तो बेमेळ बातां ही। आपां

आपणी न्यारी-न्यारी भासावां सूं डरणो नहीं चाहीजै, पण आपणी संस्कृति खातर एक इसी दूर देसरी भासा उधार लेवणरी निरर्थकता सूं जरूर सावधान रहणो चाहीजै, जिको आपणै बहनै झरणै नै रोक'र छिछळो बणा देसी।

(६)

भारतीय ग्यान रा आपणा स्थान मौजूदा विस्वविद्यालयां रै नीचै चालणवाळी स्कूलां अर कालेजां सूं बिलकुल अळगा होणा चाहीजै।

जे आपणो देस फळ अर छाया चावै तो ईंट चूनै रा ढांचां नै त्याग देणा पड़सी। क्यूं नहीं आपां थोड़ै साहस सूं या सौगन्ध लेलेवां के आपां आपणो जीवण-सगती नैं उणी कुदरती ढग सूं पाळस्यां जिण ढग सूं वेदां रै बखत में रिसियां रा आस्रमां मे, सिस्य गुरुआं रै च्यारूंमेर बैठता हा, या बुद्ध रै बखत में नालंदा अर तक्षसिला में, या जियां वै आज भी आपणै पतन रा इण दिनां में पटसाळावां में भेळा हुवै है।

आपां नैं इण नै विस्वविद्यालय नांव देणै री भूल भी नहीं करणी चाहीजै क्यूं के इण नांव सूं ही मुकाबलै री अर थोड़ी-थोड़ी नकल री सी भावना पैदा हुवै जिको नै दाबणी मुसकल है। म्हारो सुझाव है के आपां कठै ही एक इसी केन्द्र कानी खींचणवाळी सगती पैदा करां, जिकी आपणै देसरा न्यारा-न्यारा भागां सूं लोगां नैं खींचर भेळा करै, न्यारा-न्यारा जुगां सूं आपणै निजू ग्यान री सामग्री जुटावै अर इण भांत भारतीय संस्कृति री एक सपूरण अर सजीव मडळ बणावै।

इलाहाबाद री अेक अंग्रेजी-हिन्दी स्कूल रै विद्यार्थी नैं नदी री परिभासा पूछी गई। बो छोटो हुसियार टाबर एकदम सही परिभासा बताई। पण, जद उणनै पूछयो के कुण-कुण सी नदियां देखी है, तो गंगा-जमना रै संगम पर रहणवाळो वो लड़को जवाब दियो के बो एक भी नदी कोनी देखी। अेक हळको सो विचार उण रै दिमाग में हो, के रात दिन री बोलचाल रो बो सब्द, जिण नैं बो आपरी बोली मे इतणी आसानी सूं झट समझ लेवै, भूगोलरी घणखरी पढी-लिखी दुनियां रो कदे भी नहीं हो सकै। बाद रै जीवण में बो जरूर समझ गयो होसी के उण रै देसरी भी भूगोल में आपरी एक जगां है अर आपरी सावनी नदियां भी है। मान लो इण बात री जाणकारी उणनै तदताई नहीं होवी जद ताई कोई विदेसी जात्री कदे उणनै नहीं बतासी के उणरो देस एक बहोत बडो देस है, के हिमालय बहोत बडो पहाड़ है अर सिंध, गंगा अर ब्रह्मपुत्र बहोत बडी नदियां है। उण बखत उण री मानसिक संतुलन जरूर बिगड़ जासी, अर जिकी ग्लानि उण रै मन मे इतणै बरसां ताई बणी रही, उणरी प्रतिक्रिया रूप मे बो पूरै जोर सूं या बात कहण लाग जासी के दूजा देस तो खाली देस

ही है, पण उण रो देस तो साख्यात सुरग है। पहलां, अग्यानता रै कारण, दुनियां री उणरी समझ गळत ही। पण, बादरी समझ तो श्रौर भी बुरी ही, मिथ्या मूढता रे कारण इणरो झूठापणो श्रौर भी हांसी उडाणं जोग हो।

याही बात भारतीय संस्कृति पर भी लागू हुवै। श्रापणी पढाई रो ढब श्रठै-जगा टूटयोड़ो होणं सूं श्रापां या बात मानलेवां के भारतरी कोई संस्कृति ही कोनी ही, श्रथवा या बात के इण रै बरोबर कोई दूजी संस्कृति ही कोनी ही। फेर जद कदै श्रापां कोई विदेसी विद्वान रै मुंह सूं भारतीय संस्कृति री तारीफ सुणां, तो म्हारा मगज श्राप रै बस में नहीं रह सकां श्रापां हेला मार-मार श्राकास नैं गुंजा देवां के दुनियां री दूजी सस्कृतियां तो मिनखां री ही है पण म्हारी सस्कृति देवतावां री है।

श्रापां नै याद राखणो चाहीजै के विसेस सृस्टि रो सिद्धान्त - पुराणो पड़ग्यो है श्रर भाग्यसाळी जातियां रो विचार जंगळी जमानै री चीज है। श्राजरै जमानै श्रापां या बात समझण लागग्या हां के कोई भी खास सस्कृति, जिकी दुनियां की संस्कृति सूं एकदम विलग है, साची संस्कृति नहीं हो सकै।

काळ कोटड़ी में पड़योड़ो कैदी ही दुनियां सू विलग रह सकै। जिको श्रादमी या बात कैवै के भारत नैं विधाता बौद्धिक रूप सूं नजरबंद बणायो है, भारत री कोई तारीफ कोनी कर रयो।

श्रापां श्रासानी सूं या बात बता सकां के श्रापणी संस्कृति रा घणकरा श्रंग विस्वास पर श्राधारी कमियां है। श्रबार ही यूरोप री संस्कृति भी है। श्रठैरी राजनीति पर विग्यान इणां सूं भरया पड़या है। पण बांरी बातां श्रातक कोनी, क्यूं के बै किणी बदळती रैवै जियां यूरोप री जात-पांत, जिकी इतणी दुखदायी कोनी क्यूं के बै निरंतर एक जोर रै बहाव में रैवै।

थोड़ा बरसां पहला ही यूरोप श्रस्तित्व रै भगड़ै रै श्रापरै पुराणै डार्विनिस्ट सिद्धांत री पकड़ में सूं बाको दुनियां नैं देखणो सुरू करयो। इण सूं उणरी बार पर रंग चढ़गयो पर उणरो द्रिस्टिकोण निश्चित होग्यो। श्रापां भी श्रागकाळी विचारां री तरियां बायूं यो डार्विन ग्रहण करयो पर इण में विश्राम नहीं करयो कमजोर विचारी निमाणी बणग्यो। पण इण द्रिस्टिकोण में परिवर्तन रा चिह्न श्रबै श्रावण लागग्या है या साबित करी जारी है के कुदरती चुणाव रै मूळ में जिको निरंतर मरणो काम करै वा सहानुभूति री मगती है, वा सगती जिकी एक दूजै नैं जोड़ै। उन्नीसवीं सदी में राजनैतिक श्रर्थसास्त्र री श्रनेको बेरोकटोक मुकाबलै री हो, बीसवीं में यो ही सहकारिता में बदळणो सुरू होग्यो है।

एक इसो बखत हो जद भारत में आपां लोग जीवण री समस्या नैं सोचता हा; खुल कर प्रयोग करता हा, जिका हल आपां निकाळ्या, वैं खाली इण कारण सूं ही नहीं भुलाया जाणा चाहीजैं के वैं यूरोप रा हलां सूं भिन्न है। पण बैं ही हल स्थायी नहीं बण जाणा चाहीजैं, बां नैं, जीवण रै ढोलां रै ढमकै, आदमी रा आविस्कारां रै चालतै जुलूस मे, भेळा होणा है।

बहोत घणा दिनां ताईं आपां आपणी सस्कृति नैं देखी। सस्कृति पाठसाळावां में बद कर'र जातवारै करी राखी—जरूरत सूं भी जादा इज्जत सूं वाही अस्पृस्यता पैदा हुवें जिको जरूरत सूं जादा घृणा सूं हुवै।

एक बखत हो जद जापान रो राजा मिकाडो, जरूरत सूं जादा सान रै कारण, आपरै महल में कैदो सो पड्या रहतो, जिण रो नतीजो यो हुयो के उणरी बजाय "सोगुन" ही असली राजा हो। जद सचमुच में उणरो राज करणो जरूरी समझ्यो गयो तो उणनैं एकांत सूं -पकड़'र बारै लोगां री निजरा में लाणो पड़्यो। इसी हा आपणी सस्कृति पाठसाळावां री संस्कृति ही, आपणैं आप में बद, पर दुनियां री दूजी सस्कृतियां रो तिरस्कार करती अर बांनैं भुलाती। घणी तारीफ सूं या बात कही जाती ही के या ब्रह्मा रै मुंह सूं या सिव री जटा सूं निकळी है, इण वास्तै या दुनियां में मसूरब है, अर इणनैं सबसूं न्यारी राख'र रक्षा करणी चाहीजै, नहीं तो साधारण लोगां रै संपर्क सू या दूसित हो जासी। इण भांत या सस्कृति आपणैं ही देस में मिकाडो री तरियां होगी, अर विदेसी सस्कृति आपरी गति अर विकास री खुली छूट अर मानवीयता रै कारण 'सोगुन' री तरियां स्थिति पर कब्जो कर लियो। आपा सारो आदर-मान तो इणनैं देवां, पण सारी लाग दूजी नैं चुकावां। आपां छानैं में उणनैं माळ काढ सकां, उणरा दास बणजारां पर रोणो धोणो कर सकां, पण फेर भी आपणा टावरा नैं उण रै दरबार में भेजणै खातर आपणी लुगायां रा गहणा बेचां अर बडकां रा घरां नैं डाणां मेल्हां।

आपणी सस्कृति नैं यूं कोरै आदर री सुनहरी जजीरां सूं बांधी राख्यां काम कोनी चालै। अब सारी बणावटी बाड़ां टूटण री जमानो आयो है। वांही बाड़ कायम रहसी जिकी रो आधार समळै विस्वभर में अेकसो है। जिकी मारग सू दूर जा'र सुरक्षारा न्यारा बिल हूंढसी वींरो नास होसी। चूंधतै टाबर रो धायधर निरवाळो अर उणरो पालणो सुरक्षित होणो चाहीजै। पण टाबर रै बडै होणैं पर भी उणनैं निरवाळो राख्यो जावै तो उणरो सरीर अर दिमाग कमजोर रह जावै।

एक बखत हो जद चीण, फारस मिस्र, यूनान अर रोम हरेक नैं आप-आपरी सभ्यता एक दूजै सूं अळगी राख'र पालणी पड़ी। हरेक कनैं विरवरी सभ्यता

री आपरो प्यारो मान हो अर बै आपरै आत्माभिमान सूं आपरी रक्षा ध्यानां नै मजबू करी । अब सहयोग अर सहकार रो जमानो आग्यो है । अब क्यारियां में पाळ्योड़ा पौधों नै उपाड़'र खुला खेतां में रोपणा है । अब जे म्हारी ऊंची सूं ऊंची चीजां लेणी है तो दुनियां री मंडी में म्हारी जांच कराणी पड़सी ।

इण वास्तै आपां दुनियां री संस्कृतियां रै आपसी सहयोग रो मेळ-मेळाप, लांबो-चौड़ो खेत्र त्यार करां । एक दूजै रै अरपण सूं ग्यान रो यो एकीकरण, बौद्धिक सहकार री या प्रगति आणैवाळै जमानै री प्रधान बात बणसी । आपां आपणै सळगाव नै पवित्र समझ'र कोई सुरक्षित कूणां में बचा कर राखणै री कल्पना कर सकां हां, पण दुनियां आपाणै रक्षा घर सूं ज्यादा तकड़ी साबित होसी ।

पण दुनियां री दूजी संस्कृतियां रो मुकाबलो या उणां सूं सहकार करणै जोग हुवण सूं पहलां आपां नै भारत में आवण वाळा भांत-भांत रा दरसां रै मेळ सूं आपणी सुदरी संस्कृति नै त्यार कर लेणी चाहीजै । जद आपां इण केन्द्र पर खड़ा हो'र चिफुफेर झांको देखां तो पहलांरी तरियां आपणी नजर झरोखा पर रुकी नहीं रैवै, अर आपणा सिर सीधा तण्या रैवै क्यूं के फेर आपां आपणै श्रेष्ठ पद रै कारण साची बात नै देख सकस्यां अर अटूमानमद दुनियां नै विचारां री नई सैन दिखा सकस्यां ।

(१०)

सगळा बडा देसां रै बौद्धिक जीवण रा सगती केन्द्र हुवै । बठै विचारां ऊंचो स्तर बणायो जावै, लोगां रा दिमागां नै सोचणो वातावरण मिलै अर बै आपरी योग्यता नै प्रमाणित करै । बै देसरी संस्कृति नै ऊंची उठावै अर ग्यान री एक इसी होमाग्नि जळावै जिकी चारूं कूटां में पवित्र प्रकास फैलावै ।

इसो ही एक केन्द्र एथेन्स हो, अर रोम भी, अर आज इसो ही पेरिस है । बनारस आपणी संस्कृति रो केन्द्र रयो है, अर आज भी है । पण संस्कृत विद्या में भारत री आज री संस्कृति रा सारा गुण नहीं समा पावै ।

जे आपां या मान लेवां, जिकी कुछ लोगां री धारणा है, के आज रै जमानै में नीव लेवण जोग संस्कृति कोई है तो वा यूरोप री ही है, तो आपणै दिमाग में एक सवाल उठै—'भारत में इण री कोई कुदरती केन्द्र है ? , भारत रै जीवण सूं इण रो कोई सगतीसाळी अर सदा सूं चाल्यो आवण वाळो सम्बन्ध है ? जवाब यो है के न तो इण रो कोई सम्बन्ध है अर न कोई कदे हो ही सकै, क्यूं के यूरोप री संस्कृति रो बारामासी श्रोत तो यूरोप मे ही होणो जरूरी है । जे इण नै जीवण रै एक मात्र श्रोत रै रूप मे आपा नै स्वीकार करणो पड़सी तो या बिसी ही बात हुसी जियां आपां दिटै

वास्तै आपणै सूरज री बजाय कोई विदेसी तारै पर निर्भर करां । इसो तारो आपां नै रोसणी तो दे सकै पण तड़को नहीं दे सकै । यो आपणी खोज यात्रा री दिसा तो दिखा सकै, पण आपणै सामैं आखै सत्य नैं उघाड़'र नहीं मेल सकै । असल में, आपां इण तारै रै प्रकास में आपणी अणदेखी गहराइयां में रस घोळणै अर आपणै जीवण में रंग अर जीवन भरणै रो काम करै भी नहीं कर सकां ।

यो ही कारण है के यूरोप री सिक्षा भारत में खाली स्कूलां री पढाई ही बण पाई, अठै री संस्कृति नहीं । या एक दियासळाई री पेटी सो बणगी जिको अनेक कामां में लो जावै, पण प्रभात रो प्रकास नहीं, जिण में उपयोगिता, सोभा अर जीवण रो सूक्ष्म रहस्य एकाकार हो उठै ।

यो ही कारण है के भारत री अन्तरात्मा इण देस में इसा केन्द्र करणैरो पुकार आपां सूं करै है, जठै उणरी सगळी बौद्धिक सगतियां द्रिस्टि करण खातर भेळी होसी, अर पूरब तथा पिच्छम रै ग्यान अर विचार रा सगळा श्रोत पूरे मेळ सूं एक हो जासी । आपणो देस एक नयै ब्रह्मावर्त, जनक रै बखत री मिथिला, अर विक्रमादीत री उजीणी री बाट देखै है । वो उण मानदार मौकै नै उडीकै, जद वो अपणै आपनै समझसी, दुनिया नै मुनफर दे सकसी, अर बिखरयोड़ी ताकतां अर उधार रै लाभ री जड़ता री अस्तव्यस्त स्थिति सूं छुटकारो पासी ।

(११)

मैं या साफ बता देवूं के मैं कोई भी संस्कृति रो बेविस्वास इण वास्तै नहीं करूं के वा विदेसी है । उलटो मैं तो यो विस्वास करूं के आपणी बुद्धि री सगती बणाई राखणै वास्तै बारली ताकतां रो झटको जरूरी है । या मान्योड़ी बात है के ईसाई धर्म रो घणखरो सो भावना यूरोपरी सास्त्रीय संस्कृति रै ही नहीं उण रै सुभाव रै भी विपरीत चालै । अर फेर भी यो योपरो आन्दोलन, यूरोप री सुभावीक आदतां रै लगातार खिलाफ चालतो हुयो भी, उणरी सभ्यता नै ताकत अर समृद्धि देवण वाळी सबसूं बडो धारणा रयो है । असल में तो इण री विपरीत दिसा ही इण नैं जादा असरदार बणायो है । पूरबी रूपां अर भावनावां समेत इण विदेसी विचार रै प्रभाव सूं ही यूरोप री भासावां में जीवण अर फळदायक सगती प्रगट हुई । वा ही बात भारत में होरी है । यूरोपरी संस्कृति आपरै ग्यान नैं ही नहीं आपरै वेग नैं भी लेकर आपणै कनै आई है । आपणो परिपाक पूरो नहीं होणै अर कई भ्रम पैदा होणै पर भी, या संस्कृति आपणै बौद्धिक जीवण नै नियमित आदतां री जड़ता सूं जगारी है । आपणी परंपरावां सूं इण रो जिको विरोध है, वो आपणी चेतनता नैं धमका देवै ।

मैं जिकी बात रो विरोध करूं, वा बणावटी व्यवस्था है जिकी सूं विदेसी सिक्षा आपणैं राष्ट्रीय दिमाग री सगळी जगां घेरती जारी है, अर इण मांत हाथ रै नयैं मेळ सूं नयैं विचार री सिष्टी करणैं रै महान अवसर नैं या तो खतम कर री है या उण रो मारग रोक री है। इण बात सूं ही मैं यो आग्रह करूं के आपणी पुराणी संस्कृति रा सगळा तत्वां नैं मजबूत बणाणा है, पिच्छम री संस्कृति नैं रोक के नहीं, उणनैं ग्रहण करकै अर पचाकैं। या आपणो बोझ न बण कैं आपणो पोसण करणो चाहीजैं। आपां नैं इण पर अधिकार करणो चाहीजै, अर सहनमेल होकर पाछा विसम रा टुकड़ा करण वाळा अर पोथी री विद्या रा दरास ही नहीं बण जाणा चाहीजैं। भारतीय संस्कृति री मुख्य नदी चार धारा में बटी है—वैदिक, पौराणिक, बौद्ध अर जैन। इण रो श्रोत भारतीय चेतनता में घणो ऊंचो है।

पण, कोई देसरी नदी खाली बठै रै ही पाणी सूं कोना बह्नी रैवै। तिब्बत री ब्रह्मपुत्र भारत री गंगा सूं आ मिलै। इणी भांत भारत री मूळ संस्कृति में भी दूजा देसां री धारा आ मिली है। उदाहरण रै तौर पर मुस्लिम संस्कृति भारत रै बारै सूं बारबार आई, अर सागै आपरै ग्यान, आपरी भावना अर आपरै जनो धार्मिक प्रजातंत्र रा खजाना लाद'र आई, जिण सूं संस्कृतिरी नदी में पाणी रो पूर अर वेग बढ्यो। आपणैं संगीत, स्थापत्य, चित्रकळा अर साहित्य में मुसळमानां री देण टिकाऊ अर कीमती है। जिका लोग आपणा मध्यकालीन संतां री बाणियां अर रचनावां पढी है, अर मुसळमानां रै राज में सहधा हुवण वाळा भगती बा धार्मिक आन्दोलनां री जाणकारी करी है, वै या बात जाणै के आपां इण विदेसी धारा रा कितणा रिणी हां, जिकी आपणै जीवण में इतणी गहरी घुळ मिलगी है।

अर उण रै बाद पिच्छमी संस्कृति री बाढ आपणै अठै आई जिकी आपरै कळकळाट सूं डाबा तोड़ती अळ थळ एकमेक करती, दूजी सगळी धारां रै ऊपर सूं निकळगी। आपां इण रै बहाव री कोई नाळो निकाळ देवां तो ही बाढ सूं बच सकां हां, नहीं तो या आपां नैं घेर लेसी।

आपणैं भारतीय ग्यान केन्द्र पर आप.नैं इण सगळी न्यारी-न्यारी धारावां रै मिलवा अध्ययन री व्यवस्था करणी चाहीजैं, जियां वैदिक, पौराणिक, बौद्ध, जैन, इस्लाम सिक्ख अर जोरास्टर। अर इणां रै सागै-सागै यूरोपीय भी, ज्यूं के हां आपां इण नै पचा सकांला। डावां रै बीच बहणवाळी नदी तो आपां काम री है, पण बाढ आवणवाळी नदी तो विनास ही करै।

या बात धीर ओढ़णी री अबकल कोनी के उण भासावां रै सागै-सागै, जिका कै आपणी ग्यान-धारा रै ग्यान रा खजाना दबा पड़्या है, आपां नैं उण अनदी आपणी

रै अध्ययन री भी जगां बलाणी चाहीजै जिण मे आजरै भारतीय दिमाग री धारा बह री है। आजरी जीती-जागती भासावां रै इण अध्ययन में आपणैं लोकसाहित्य नैं भी मिला लेणो चाहीजै जिकै सूं आपां आपणा लोगां रै मनोविग्यान री साची जाणकारी कर सकां अर या भी जाण सकां के आपणैं जीवण री सांवली धार किण दिसा में बह री है।

कई इसा आदमी है जिका आधुनिकता सूं घिरया बैठया है, अर यो विस्वास करै है के आपणा गैलड़ा दिन दीवाळै रा दिन हा, अर बै आपणैं खातर पूंजी री बजाय कर्ज री वसीयत ही छोडग्या है। वां नैं यो विस्वास ही कोनी के आगै बढती फौज नैं गैल सूं खुराक दी जा सकै। बांनैं या बात याद दिराणी ठीक रहसी के इणां मे संस्कृतिक जागरण रा भला जमाना वै हा हा जद लोगां नैं पुराणा कोठयारां में चाणचुकी विचारां रा बीज लाध्या।

बै दुरभागी मिनख, जिका आपरी पुराणी फसल खो दी, आपरो नयो जमानो भी खो दियो। बै आपरी खेती रा बीज रुळा दिया अर अब दर-दर दाणा मांगता फिरै। आपां नै या सोचणो ही नहीं चाहीजै के आपां उण जायदाद सूं टाळयोड़ा लोगां में सूं हां। अब बखत आगयो है के आपां बडकां री जमीं में गाडयोड़ो धन खोद निकाळां, अर उणनैं जीवण रै व्योपार में लगावां। इण री मदद सूं आपणा आगला दिन चोखा बणावा अर पराई कुरड़ियां पर उमरभर पूर चुगणिया री तरियां रहणो बंद करां।

(१२)

अब ताई मैं सिक्षा रै बौद्धिक पखरी ही बात करी है। इणरो कारण यो है, के जियां चांद सूरज नैं आपरो एक ही पसवाड़ो दिखावै, बयां आज रै भारत रा आपां लोग भी दुनियां री संस्कृति नैं आपणैं जीवण रो बौद्धिक पख ही दिखावां। आपां मजे या बात पूरी तरियां नहीं महसूस करी है के आपणा दूजा पसवाड़ा नैं भी प्रकास में आवण खातर बिसै ही चानणैं री जरूरत है। सिक्षा रै द्रिस्टिकोण सूं आपां यूरोप रै विग्यान अर साहित्य नैं ही जाणां। इण सूं आजरी संस्कृति री आपणी जाणकारी व्याकरण अर परीक्षणसाळा री सींवां में ही सिमटयोड़ी है। आपां आदमी रै कळात्मक जीवण नैं एकदम भुला देवां, अर इण मणजोती धरती में बेकार रो घास-फूस उगण देवां।

इण वास्तै, मैं श्रोजूं उण सिद्धांत नैं दुहरा'र कहूं के संगीत अर ललित कळावां रास्ट्र रै आत्म प्रकटीकरण रा ऊंचै सूं ऊंचा साधन है, अर वां विना लोग गूंगा रह जावै।

आपणो चेतन दिमाग तो जीवण री ऊपरली तह ताईं ही रैवे. पण अर्ध चेतन दिमाग री गहराई तो अणत है। बठै आपणी नजरां सूं दूर अणगिणत जुगां रो ग्यान बढतो रैवै। आपणो चेतन दिमाग तो आंख्यां रै सामै रात दिन गुजरती क्रियावां में अपणें आपनैं प्रगट कर लेवै। पण अर्ध चेतन नैं भी जठै आपणी आत्मा रो बासो है, अपणें आप नैं प्रगट करणें रा पूरा साधन मिलणा चाहीजें। अैं साधन कविता, संगीत अर कळावां रा है। इणां में आदमी रो पूरो व्यक्तित्व प्रगट हुवै।

काठ रो व्योपारी या सोच सकै के फूल अर पता तो रूंख री फालतू सजावटां है, पण वो जद या जाणसी तो महूणी पड़सी के फूल-पत्ता कोनी रहसी तो लकड़ी कठैसूं आसी।

मुगलां रै बखत में भारत में संगीत अर कळा नैं राजावां सूं घणो बढावो मिल्यो। इण रो कारण यो हो के वांरो मगळो जीवण ही अठै बीत्यो, खाली राज-काज रा दिन ही नहीं। आदमी री संपूर्णता सूं ही कळा ऊपजै। आपणा अंग्रेजी अध्यापक तो उड़ता पंछी है, वैं खाली अवाज करै गावैं कोनी। वांरो मायलो मन वांरै देसनिकाळै री इण मोम में कोनी। वांरो कळा अर संगीत री कुदरती थाग तो यूरोप में है। बठै री माटी में वैं इतणा गहरा गडयोड़ा है के दूर देस में वांनैं रोपणा मुसकल है, जदताईं माटी सूधा ही नहीं लाया जावै।

भारत मे आपां यूरोप वासी नैं विद्वान, अधिकार सम्पन्न अर राजनीति तथा व्योपार मे लगन सूं जुटयोड़ो ही देख्यो, पण कळात्मक सृस्टिकरता नहीं। यो ही कारण है के आज रै यूरोप रो पूरो व्यक्तित्व आपणें सामैं प्रगट कोनी हो सक्यो, खाली उणरी बौद्धिक ताकत अर उपयोगितावादी क्रियावां ही आपां देखी है। इण सूं ही वो आपणी बुद्धि नैं ही परखी है अर आपणी उपयोगितावादी मनसावां नैं ही जगाई है।

संस्कृति री इण संकीर्णता सूं खंडित होतै जीवण नैं जादा नहीं बढण देणो चाहीजै। आपणी संस्कृति रो जिको केन्द्र बणै, उण में संगीत अर कळा रा आसण घणें आदर रा होणा चाहीजें, खाली मानता रो हुंकारो ही नहीं।

इण रीत कळात्मक रुचि रो समस्त स्तर बधसी, अर इणरी मदद सूं आपणी खुदरी कळा भी ताकतवर अर समृद्ध होसी जिके सूं आपां सगळी विदेसी कळावां नैं गंभीरता सूं परख सकस्यां अर अप-चोर रो बदनामी लियै बिना ही वां सूं विचार अर रूप ग्रहण कर सकस्यां।

(११)

आपणें सामैं दो मोटी समस्यावां है—एक तो आपणें बौद्धिक जीवण री दरिद्रता, अर दूजी आपणें भौतिक जीवण री दरिद्रता।

पहली पर तो मैं अठै विस्तार सूं चर्चा करी है। मैं इण नतीजै पर पूंग्यो हूं के आपणी मानसिक जीवणरी पूर्णता सारू आपणा सगळा सांस्कृतिक स्रोता रो मेळ जरूरी है। मैं या जाणी हूं के आपणी मौजूदा सिक्षा आपणा दिमागां नैं एक इसी खुराक देवै, जिकी में आपणें जीता रहणें खातर जरूरी खाली एक तत्व है अर वो भी ताजो नहीं, सूखो अर बद बवा रो है। संतुलित भोजन सारू आपां नैं भांत-भांतरा तत्वां रो मेळ चाहीजै अर इणा में सूं घणखरा, परीक्षणसाळावां री उपज, या जमायोड़ी हालत में न होकर आपणें सभाण तणुजाळ री तरियां जीता जागता होणा चाहीजै।

इण तरियां ही, आपणी भौतिक दरिद्रता भी न्यारी-न्यारी ताकतां रै मेळ सूं दूर हो सकै। अर आपणी संस्था रो आधार भी यो आर्थिक सहकार ही बणणो चाहीजै। पाछली आपणा तपोवन, जिका आपणा प्राकृतिक विश्वविद्यालय हा, जीवण सूं अळगा कोनी हा। अठै गुरू अर सिस्य आपरैं भरपूर जीवण में रहता। फळ अर ईंधण भेळा करता, ढोरां नैं चरावण ले जाता, अर जिकी आध्यात्मिक शिक्षा विद्यार्थियां नैं मिलती, वा वांरैं सगळै जीवण में व्याप्त अध्यात्म रो ही एक अंग ही। आपणी संस्कृति रो केन्द्र भारत रै बौद्धिक जीवण रो ही नहीं उणरै आर्थिक जीवण रो भी केन्द्र बणै। अठै जमीं जोती जावै ढोर चराया जावै, विद्यार्थियां अर गुरुआं खातर चोखा सूं चोखा उपायां अर आछा सूं आछा साधनां सूं तथा विग्यान री मदद लेर आछो भोजन सामग्री निपजाई जावै। इणरो अस्तित्व हो उण औद्योगिक साहसी कामां री सफळता रै आसरैं है, जिका सहकारी सिद्धांत सूं चलाया जावै, अर जिण सूं गुरू अर विद्यार्थी जरूरतां रै जीतैं अर सक्रिय बंधण में एक जूट हो जावै। अठै वारां नैं उद्योगां री व्यावहारिक सिक्षा भी मिलसी, जिणरी प्रेरक सगती रो लाभ-हाणि सूं कोई सम्बन्ध कोनी।

इसी संस्था आपरै चारू मेर आड़-पड़ोसरा गांवां नैं भेळाकर'र आपरी आर्थिक कोसीसां में वांनैं एकजूट कर लेवै। वा गांवांरा घरां रो, वांरी सफाई रो अर वांरै नैतिक अर बौद्धिक जीवण रो सुधार उण संस्था री सामाजिक गतिविधि'रो उद्देस्य बणै। इण बातनैं सबद में इयां कह सका के आ संस्था टूटं तारं री तरियां रो एक बिखरयोड़ो टुकड़ो न बण कर, एक सपूर्ण दुनियां बणै—इसी दुनियां जिकी आत्मनिर्भर हवै, नित नवैं जीवण सूं समृद्ध रैवै, जिकी काल अर दूरी रै पार पार जिकी चानणो करै, आपरै चारूं मेर आश्रित संस्थावां रै ग्रहचक्र में खीचती अर बसाती चालै, अर वण एकमानव में जीवण री खासो देती जावै, जिको बौद्धिक भी है अर आर्थिक भी,

अर जिको सामाजिक बंधणां सूं बधपोड़ो आध्यात्मिक स्वतंत्रता री सांवठी राखै।

खतम करणै सूं पहली मनै एक बहोत नाजुक सवाल पर विचार करणो है। भारतीय संस्कृति रै आपणै इण केन्द्र में, जिण रो नांव मैं विश्वभारती राखूं, धार्मिक सिक्षा किसी होणी चाहीजै। इण सवाल नैं आपणी राष्ट्रीय नांवधारी स्कूलां टाळे सो देवी है। आपणा दिमागां में राष्ट्रीय विश्वविद्यालय हिन्दू विश्वविद्यालय रो ही दूजो नांव है। जद-जद आपां इण सवाल पर विचार करां, आपां खाली हिन्दू धर्म री बात ही सोचां। महान भारत री कल्पना तांई न पूगणै रै कारण आपां धार्मिक रीत-रिवाजां अर सामाजिक परंपरावां री तरियां, संस्कृति नैं भी काटण लागग्या। दूजा सब्दां में, इण एकता रो विचार, जिकी तक पूगणरी सामरथ आपां राखां, सगळां रा मनां में उछाह पैदा तो नहीं कर सकै, पण उलटो घृणा पैदा कर देवै।

कुछ भी हो या बात तो मानणी पड़सी के दुनियां में अनेक भांत रा धार्मिक पंथ है अर सायद हमेसा ही बण्या भी रहसी। इण साची बात पर झगड़णैं या रोवैं-धोवणैं सूं कोई फायदो कोनी। मेरै घर में मेरै खातर एक निरवाळो कूणो है, जठै एक छोटी सी मेज है, जिण पर खास किस्मरा कलम, दवात अर कागज पड़्या है, अर म्हारै वैठ'र मैं मेरी लिखाई पढाई अर दूजो काम घणो चोखो कर सकूं। मेरै इण कूणैं री निंदा करणी या इण सूं दूर भागणैं रो खाली यो ही कोई कारण कोनी के मैं अठै मेरा सारा दोस्तां अर महमानां नैं बुलार बिठा कोनी सकूं।

या हो सकै के यो बहोत तंग, बहोत सांकड़ो अर बहोत गंदो हुवै, जिकै सूं म्हारो डाक्टर आपत्ति करै, म्हारा दोस्त प्रतिवाद करै अर म्हारा दुसमण झिड़कै, पण मौजूदा हालत सूं यां बातां रो कोई सम्बन्ध कोनी। मेरो मतलब है के मेरै घरा सगळा ठांव जे मेरी निजरी खास सुविधा रै अनुकूल ही हुवै, अर अठै मेरा दोस्तां खातर बैठक अर महमानां खातर सोवण-उठण री जगां न हुवै, तो मैं साचाणी दोसी हूं। जद तो मैं सिर झुकार आ बात मान लेवूं के मेरै घर पर दोस्तांरी कोई बड़ी बैठक को कदे भी कोनी हो सकै।

हर देस अर हर जमानैं में ऐतिहासिक कारणां सूं धार्मिक पंथ बणता आया है। इसा आदमी सदां मिलसी, जिकां नैं परंपरा अर सुभाव सूं कोई खास पंथ नैं मानणियां होणैंरै कारण ही धीरज बधै। इसा भी आदमी होसी, जिका होवैं के वां धीरज बांरै पंथ में ही वाजबी मान्यो जा सकै। यां दोनां में झगड़ा होणा लाजमी है। झगड़ां-टंटां रो गुंजायस राखकर भी, इसी कोई बड़ी जगां के नहीं हो सकै जठै सगळा पंथ एकठा हुवै अर आपरो मतभेद भुलावै? भारत रा धार्मिक आदर्सां में घणै भिन्न

समाज सातर एकसो दिन रो चानणो अर एकसी खुली हवा री कोई जगां के कोनी ? जिण जोश सूं हठधर्मी पंथवाळा इण बात पर सिर हिलावै उण सूं ही संदेह हुवै। छोटी-मोटी बातां नैं ले'र आये दिन जिका खून खच्चर हुवै उण सूं जी संदेह हुवै। मिनख-मिनख रै बीच जिका निर्मम अपमानजनक भेद-भाव धर्म री आड में बणाया राख्या जावै उण सूं संदेह हुवै। पर जद मैं भारत री पुराणी संस्कृति नैं बावड़कर देखूं, उण जमानै नैं जद या साथ में फळती ही, तो मनै यो दावो करणं री हिम्मत बधै के इसी जगां इण में है। आपणा बडेरा एक इसो बडो गलीचो जरूर बिछायो हो जठै वै सारी दुनियां नैं प्यार सूं नूतो दे'र बठै घणा नेड़ा बिठाया हा। बठै कोई झगड़ो कोनी हो सकै हो, क्यूंके जिण रै नांव सूं सदा सातर नूतो भेज्यो हो, वो हो सांत, शिव अर अद्वैत-सगळा झगड़ां रै बीच भी सांत रैवणियो, परमात्मा, जिको अभावां अर संकटां में सूं प्रगट हुवै, जिको सिस्टि री सगळी विसमतावां में एकसो रैवै। अर उण रै नांव सूं ही प्राचीन भारत यो अमर सत्य बतायो—

"उण रो ही देखणो सार्थक है जिको सगळा प्राणियां नैं आपरै समान ही देखै।"

फूलां री पांखड़्यां ख्वाबां रै चारूंमेर सांतिरा दलासौ है। —१६१६

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सिक्षा रो मेळ

सब लोगां नैं या बात मान लेणी चाहीजै के आज री दुनियां रा मानव यूरोप रा लोग है। या वां लोगां री दूधारू गाय है, अर इण रै दूध सूं वांरा दुहारा तिरियां-मिरियां हो रया है। आपां पूरब रा लोग क्यूं भी कोनी करां, अर घड़योड़ा सा भोंचक्का हुया मुंह बावां, जद के दुनियां में आपणी पांतीरी रोटी अर दरब दिन-दिन छीजता जारया है। भूख सूं आपां यूरोप वाळां पर झाळ मारां के वांनैं इतणी चोखी रोटी क्यूं मिलै, अर आपां चावां के वांनैं घर दबावां। पण आ कयां पार पड़ै ? दाव तो वांरै हाथ में है। दुनियां भर जिन्दगी में जितरा मौका मिल सकै, सगळा वांरी पांती में ही गया, आपणै कनै तो एक भी कोनी आयो।

आपां नैं एक भी मौको कोनी मिल पायो, इण रो कारण कांई ? कुणसी वा ताकत है जिकी यूरोप वाळां नै दुनियां रा सुख भोगण रो अधिकार दियो ? निस्चै ही वा कोई साची ताकत है। आपणो यो सोचणो एक बहोत बडो भूल होसी के मनचायो चीजां लेवण सारू आपां नैं कयां न कयां एकठा हो'र यूरोपवाळां सूं वांरी चीजां खोस लेणी है। आ गळती ठीक विसी ही गळती होसी जिकी आपां या बात सोच'र करां के आपणैं हुकम मुजब रेल रो इंजन चलाणैं खातर आपां नैं इंजन ड्राइवर रै सिर पर लठ जमा'र बस उणनैं नीचैं पटक देणो है। या बात सोचतां बखत आपां भूल जावां के इंजन तो ड्राइवर रै रूप में इंजीनियरी री विद्या सूं ही चलावै। आपणैं क्रोधरी जादा सूं जादा गरमी सूं भी इंजन पर जरा सो भी असर कोनी पड़ै। वो आपणैं हुकम सूं जद ही हालसी जद आपां उण विद्या नैं सीख लेसां।

एक आदमी रै जिको आपरी मोटर खुद ही चलातो हो, दो बेटा हा। वो आपरी मोटर उण छोरै नैं देणी चावतो हो जिको चोखी तरियां चलाणी सीख लेवै। एक बेटो, जिको घणो हुसियार हो, सीखणैं रै चाव में तुरंत मोटर री सारी जाणकारी करणी सुरू करी। दूजो बेटो सीधो-सादो अर बापरो घणो आग्याकारी हो। वो सदा आपरी नजर बाप रै पगां में ही गडाई राखतो। उणनैं यो बेरो भी कोनी पड़तो के उणरो बाप कद मोटर रो स्टियरिंग पकड़यो अर किण तरफ उणनैं मोड़यो। हुसियार बेटो मोटर रै कळ पुरजा री जाणकारी मली भांत कर'र एक

दिन इंजन नैं चलाया भर खूब तेजी सूं हांक्यो। मोटर चलाणं रो इतणो चाव उणरै हा के रात-दिन मोटर नैं लियां फिरै भर या भी परवाह नहीं करै के उणरो बाप कांई कहसी। पण बाप भी कांई उणनें डट दियो या मोटर नैं भोजूं छेरणं री नां दी? बो तो उलटो खुस हुयो के उणरो बेटो भी उणरी तरियां ही मोटर चलाणं रो सौकीन हो गयो। हुसियार बेटो भापरै भाई रै खेत मांकर ही मोटर चलादी भर पाकै धान नैं रूद गेरयो। विरोध भर धमकियां रो भी वो परवाह नहीं करी। वो मोटर नैं इतणी तेज हांकतो के उण रै सामैं भाणो मौत नैं नूंतो देणो हो।

सीधो-सादो बेटो भोजूं बाप रै पगां पर नजर गडाई भर बोल्यो भाखर इसो कांई होग्यो' म्हनैं तो कांई चीजरो भोर जरूरत कोनी।

पण, भापां पूरब रा लोग जे भापणी भसली जरूरतांनैं मुजार भयां सोचां के भ पां नैं कोई चीज री परवाह कोनी, तो भापां दुख नैं नूतो देर बुलावां हां। जरूरतां सो भापां नैं पूरी करणी ही पड़सी। बं तो भापणो पिंडो तद ही छोड़सी जद पूरी चूक लेसी। बांनैं भुलाणं रो मतळब है जिन्दगीभर बांरो कर्जदार रहणो भर ब्याज भरतो रहणो। जरूरता सूं पिंड छुड़ाणं रो भेक ही तरीको है भर बो है बांगे पूर्ति करणो, ठीक बयां ही जयां परीक्षा सूं पिंड छुड़ाणं रो तरीको परीक्षा पास करणो ही है।

ऊपर सूं देखां तो संसार एक विसालकाय मसीन ज्यूं है जिकी भापरै कायदं नैं छोडै नहीं। यो माया रो संसार भनेक रास्तां सूं भापणो मारग रोकै, भर जिका मिनख भाळस या मूरखता सूं इण सूं बचणं रा उपाय करया, बैं बचणं री बजाय भपणं भाप नैं धोखं में फंसा'र खतम होग्या। दूजं कानी, वै लोग जिका दुनिया रा कायदा सीख लिया, बाधावां पर खाली विजय ही कोनी पाली, बां सूं मदद भी ली। भौतिक दुनियां रा भेदां नं जाण'र वै इण मे घणा भागै पूगग्या भर इण री दोलत सूं फायदो उठायो, जद के भाळसी भर भोड़ा भाबणियां नैं या तो सुरचण खाधो या क्यूं भी कोनी लाध्यो।

इसी बात देखतां पूरब रा लोग, जे उण विद्या री निंदा करै जिकी सूं पिच्छम रा लोग दुनियां जीतली, तो कोई फायदो कोनी हो सकै। विद्या साच है भर साच री निंदा करणी भपणं भापरी निंदा करणी है।

जानवर विचार शून्य होवै, बां पर जो कुछ बीतै सो बिना सोच-समझ'र भुगतै। घटनावां नैं सोच-समझणं रो काम मिनख रो ऊचं सूं ऊंचो गुमान है, भर इण सूं ठा पड़ै के मिनख जानवरां री तरियां कोनी, बो एक विद्रोही है। सगळा जीवधारियां में मिनख रो सगळां सूं ऊंचो दरजो इण कारण है के बो

आपरै बिना अथवा आपरी मरजी बिना घटनावां रै होणै री बात मान लेणो तो दूर, इतिहास रै सुरुपोत सूं ही घटनावां रा कारण ढूंढ'र अर वांरा गुर सीख'र वां पर काबू पाणै री कोसीस करी है यो ही कारण है। के आज बो एक इसी ताकत है जिको काम नै करै, इसी निस्क्रिय चीज कोनी जिको काम नैं भुगतै। वा आपरी ताकत री खोज जादू-टूणां सूं सुरु करी क्यूं के उणरो विस्वास हो के दुनिया में जादू रो ही राज है। बो या सोचतो हो के जादू-टूणा सीख लेणै सूं बो घर नै बसमें कर सकैलो।

ताकतरी खोज में अब मिनख जादू नै छोड'र विग्यान नैं पकड़ लियो अर जिका लोग विग्यान री जाणकारी करली बै बाहरी ससार पर कब्जो लियो। विग्यान री या मान्यता है के संसार रा कायदा सदा एकसा हो रै विग्यान रै भरोसै हा पिच्छम रा लोग बाहरी दुनिया रा खतरां नैं पार क दुनियां नै जीतली है पण आज भी इसा आदमी है जिका यो विस्वास क दुनियां में जादू रो राज है, अर सकट रै वखत बै जादू-टूणा काम में लेवै। बै हारयोड़ा, सतायोड़ा अर हीण लोग है।

अठारवीं सदी मे पूरब रा आपां लोग बीमारी रै वखत भोपां नैं बुला सकट रै वखत ग्रहां री सांति सारू जोतकियां रा मदद लेता, माता सूं बच खातर सीतळा नै धोक्ता अर सत्रुवां नैं मारणै खातर काळै जादू नै काम में ले हा। अब आपनै बताऊं के उण वखत हो यूरोप रा लोग काई काम कर रया हा जद एक लुगाई वोल्टेर नैं पूछ्यो के जादू सूं भेड़ां रै पूरै रेवड नै मार्यो जा स कंई, तो बो जवाब दियो के जादू में जे पूरो आरसनिक नाव रो जहर मिला दि जावै तो यो काम जरूर हो सकै। आज भी यूरोप रा दूर रा कूणां में जादू विस्वास करण वाळा लोग निस्चै ही रेवै पण आरसनिक जहर री ताकत विस्वास करणवाळा तो सगळी जगावां मे ही मिलै। यो ही कारण है के यूरो रा लोग चावै जिण नैं मार सकै, अर आपां नैं तो वांरी दया पर ही जीणो पड़ै।

आज या बात बताणी फालतू है के विस्व री ताकत कुदरत रा कायदां रै भेद खुलणो ही है। मिनख री अकल इण ताकत नै समझ सकै, अर इणरै कायदां सूं उण रो मेळ बैठ सकै। मिनख आपरी निजू ताकत पर भरोसो तद ही कर सकै जद वैरो जाण लेवै के कुदरत रा कायदा वांरै अदर ही मौजूद है। जिका लोग भाग पर भरोसो करै बै आपरो आपमें विस्वास खोवै, अर सदा इसै मिनख री खोज मे रेवै जिण रो सहारो वै ले सकै। आपरी अकल रो भरोसो न कर'र बै सोच-समझ करणो छोड देवै अर खोज-बीण करणी बद कर देवै। खुद रै बणाया

बारै सूं गुहरी तलास में बै कोई भी आदमी या चीज री ताकत नै मान लेवै, चाहे बो पुलिस रो सिपाही हो या कोई माछर । अकल रा डरपोक बाप'र दूबळा हुवै।

राजनैतिक सवायत सासरा पिच्छम मे कद सू पनपणो सुरु हुयो ? इण बात नै अयां भी कह सकां के पिच्छम रा लोग कद सूं आ बात समझै लाग्या के राजरा कानून कोई एक मिनख या एक जात री सनक पर न चाल'र सगळा लोगां री मरजी सूं चालै ? आ बात उण दिन हुई जद विग्यान बा रां दिमागां सूं डर नैं निकाळ फेंक्यो, अर बां नैं कुदरतरा कायदां री जाणकारी दी, जिका एक आदमी री सनक या मौज सूं न बदळया जावै अर न उथळया जावै ।

परमात्मा कुदरत रा कायदा आपरी समझ में आवण जोग बणा'र आदमी नैं आपरै राज मे पूरो स्वराज दियो है । आपरै सूरज, चाँद, तारां अर नखतरां पर बो आपणी खातर यो सनेसो मांड राख्यो है-'मैं कुदरतरी आड में हो रयो हूं, क्यूं के कुदरत रै राज में थे मेरै बिना काम चला सकोला । इण मे एक कानी कुदरत रा नियम है अर दूजै कानी थारै दिमाग रा नियम । आ दोनुवां रै मेळ सूं थे बडा बणोला अर कुदरत रै सारै राज रा धणी बणोला । मैं थांनैं बै हथियार देवूं हूं जिकां सूं थे जीत सको हो, थांनैं काम में लेवो अर विजय पावो ।' परमात्मा रो दियो यो स्वराज जिका जीतै बै दूजो हर भांत रो स्वराज भी जीतै अर सदा-सदा खातर उण नैं आपरो बणावै ।

पण जिका मिनख बुद्धि रा कामां मे भी दूजै मालक रो आसरो ताकै बै राजनीत रा कामां में तो ताकै ही । जिका कामां में परमात्मा भी आपरो अधिकार नहीं मानै बां में भी बारै सूं किणी नैं मालक बणा'र बिठाणै री बांनैं अभ्यास है । जिण कामां में परमात्मा बांनैं आदर देणो चावै बांमेभी आपरी बेइज्जती करवाणै वाळा औ मिनख जे किणी राज रै काबिल है तो बो स्व बिहूणो राज ही है ।

जिका आदमी मिनख रै दिमाग नैं अलौकिक बातां अर जादू-टूणां रा बधणां सूं छुडवायो बै, चाहे यूरोप रा हो चाहे एसिया रा, उस्ताद मान्या जाणा चाहीजै । विस्व रो आध्यात्मिक पख तो देवतावां रै भरोसै है अर भौतिक पख दानवां रै, अर दानवां सूं म्हारो मतळब विस्व री उण सगती सूं है जिकी अठै पर प्रकास रा दूजा तत्वा नै आपरी टेढी कक्षावां मे चकरी री ज्यूं एक ताळसुर मे फिरावै । लौकिक ग्यान री घणी महत्वपूर्ण साखा जीवण रो विग्यान है, जिको आज यूरोप रा विचारकां अर वैग्यानिकां रै बस में है । यो आपां नैं सरीरां रो कल्याण अर आराम बगसै, तगी अर आपदा सूं छुटकारो दिरावै, अर पसुवां रा हमला अर आदमियां रा अत्याचारां सूं आपणी रखवाळी करै । यो

ग्यान उणां नैं वो विधाता दियो जिको ग्याय करै, अर भारत रा धर्मां मांय भी स्वराज री नींव जद ही मेल सकांला जद आपां उण ग्यान नैं प्राप्त कर लेसा

इण ग्यान सूं भटक चालै री एक बात मैं थानैं बताऊं हिन्दू लोग विश्वास करै के कोई मुसळमान वारै कुए सूं पाणी काढ लेवै तो वो अपवित्र व्हावै। या एक अजीब बात है, क्यूं के अपवित्रता तो आत्मा रो विषय है। कुए रो पाणी भौतिक दुनिया री चीज। जे या बात कही जाती के मुसळमान सूं घृणा करणैं सूं हिरदो अपवित्र हुवै तो म्हारी समझ में आती। पण, या बात कहणी के मुसळमान रै पाणी खींचणरी बाल्टी में अपवित्रता है, इण बहुमतो सवाल नैं वहम री नींव सूं परै लेजा'र बुद्धि नैं धोखो देणो है। विज्ञान ! हिन्दू भगत या दलील दे सकै के अपवित्रता रो यो दोषारोपण सफाई रै विहीं नैं प्रकाशित करणै रो एक धार्मिक तरीको है।

पण सफाई रो नैतिक पवित्रता सूं कोई लेणो देणो कोनी। इण भांत वै मिनख जिको कनै विग्यान रा तथ्यां खातर कोई आदर कोनी वांनैं मानण खातर भलीभांत राजी करया जा सकै, जद भौतिक चीजां नैं आध्यात्मिक नांव दे दिया जावै। पण या कोई चोखो आदत कोनी। इसा मिनखां सूं जे झूठा बहाना बणार काम न लियो जावै तो वै आपरी खुदरी मरजी सूं कदेई काम नहीं कर सकैला, अर सदां ही कोई मालक रै हुकम री बाट देखैला।

दूसरी बात सोचूं लेवां तो जे या कही जाती के मुसळमान री बाळटी पाणी नैं अपवित्र तो नहीं गन्दो कर देवै, तो शायद बहस री गुंजायश होती। उण वखत सारी परिस्थितियां री तुलनात्मक परख करी जाती हिन्दू-मुसळमान दोनां री बाळटियां री सफाई, वांरा कुआं री सफाई, अर वांरा रिहायशी मकानां री हालत।

अर फेर अपवित्रता तो एक मांयली अर्थात आध्यात्मिक बात है अर के अस्वच्छता एक बारली सफाई री बात है जिणरो इलाज सफाई रा उपाय काम में लेणैं सूं ही हुवै। बाळटी नैं साफ राखणो तो एक सफाई सबधी जिम्मेवारी है जिकी हिन्दू-मुसळमान दोनां पर बरोबर लागू होवै, अर उणरो बेरो तद ही पड़ै जद वै एक दूजै रा कुआं नैं काम में लेवै। पण अस्वच्छता अर अपवित्रता नैं बरोबर मान लेणैं अर सफाई रै सवाल नैं आध्यात्मिक सवाल बणा देणैं सूं आपां पहलां तो आपणी बुद्धि नैं झूठी बणा देवां, अर फेर उण सूं उपजण वाळी बेवकूफी सूं आपणा कारज सिद्ध करणैं री कोसीस करां। इण भांत री बौद्धिक कायरता सूं मुकती लेवण सारू आपां नैं यूरोप रा विचारकां अर वैग्यानिकां री मदद मांगणी पड़ै। पण आपां विज्ञान रै विधान रो विरोध जे इण

कन्नै ही कह के जो विज्ञान री है तो इणरा उपदेशां सूं ही अपणै आपनै कोरा नहीं राखा, बल्कि पूरब री आपरी निजी आध्यात्मिकता नैं भी मोघी मींचा।

मैं देख रह्यो हूं के मैं विवाद नै छेड़ दियो है। म्हनैं पूछ सको हो के आ बात कांई नहीं नहीं है के जद यूरोप रा लोग जंगळियां री ज्यूं ही रहता हा, प्राचीन भारतवासी बहोत पैलां सभ्य होग्या हा। जद यूरोप रा लोग जिनावरां री खालां पहरयां जंगळां में शिकार ही करता हा, उण बखत वै ऊंचै दरजै री जिन्दगी कोनी बितावै हा कांई? जद यूरोप रा लोग समंदरां में धाड़ैती करता ही फिरै हा, उण बखत वै कोई मामला रा सिद्धांत कोनी बणा लिया हा कांई? मैं मानूं, थे साचेली बातां आखी है। पण म्हारो यो कहणो है के उण दिनां भारतवासी यूरोपवासियां सूं इण वास्तै बढ़योड़ा हा के वै बांसूं जादा विज्ञान जाणता हा। विज्ञान रो ज्यादा ग्यान प्राप्त करणै सूं ही आदमी जिनावरां री खाल पहरणै री जोख्या नूं करयो पर बुणोड़ा गाभा पहरणै री जोख्या ताईं, जिनावरां री शिकार सूं पेट भरणै सूं खेती सूं भोजन निपजावण ताईं अर धाड़ैती सूं कोर्ट कानून ताईं पूग पायो। उण बखत री हालत किया पलटी खायो, अर यूरोपवासी भारतवासियां सूं अब कियां ऊंचा चढ़ग्या, इणरो कारण विचारणो कोई काम को हैनी, पण यो सत्य है के यूरोप रा लोग आपां सूं बेसी विज्ञान जाणै। इण वास्तै भारतवासी जे यूरोप रा लोगां री सभ्यता रो मुकाबलो करणो चावै तो पहला विज्ञान में वांरो मुकाबलो करणो जरूरी है। भारत री समस्या खासकर शिक्षा री समस्या है, अर इण नैं सुळझावण खातर भारत-वासियां नैं यूरोप रा विचारकां अर वैज्ञानिकां सूं मदद मांगणी जरूरी है।

इती दूर आयर सो बहोत सभव है इण सवाल सूं मैं रोक्यो जाऊं। "म्हे थे सारी बातां कहो, इण भारी यात्रा रै बखत पिच्छम में जिकी ताकत प्रगट होती थारै देखी, उणसूं थारनैं सतोस है?"

नहीं, म्हनैं सतोस कोनी। मैं देख्यो के चोखा दिन होतां हुयां भी पिच्छम रा लोग खुश कोनी हा। मैं लगातार सात महीना ताईं उण अपरपार दौलत रै देस-अमरीका में रैयो। नित म्हारै होटल री खिड़की में बैठ'र जद मैं पैंतीस मजल रै गगनचुम्बी महल में खोटी धड़ाधड़ देखतो तो मैं आपणी लिछमी अर आपणै कुबेर रै बाबत सारै तरह री बात सोचतो। लिछमी संपत देवै, जिण सूं धन नैं सोभा मिलै। कुबेर लाभ देवै जिण सूं धन री बढोतरी में मदद मिलै, पण आपरी उद्देश्य कुछ नहीं। दो अर दो रो गुणा चार, अर चार अर दो रो आठ हुवै—यूं ही मोड़ कारो ज्यूं ढाक कूदता जावै। इण बावळै पणै में फस्योड़ो आदमी धणो-धणो दम भेळो करतो जावै अर एक दिन इसो आवै जद धन री

खाली उत्तेजना सूं ही उण रो खून बळण लाग जावै। अर बिना मिनखां नै वा उत्तेजना कोनी हुवै, बां मैं कांई बीतै या बात मैं आपनै एक द्स्टांत कहर बताऊं।

थोड़ा बरसां पहलां, पतझड़ री पून्यूं री एक रात में, मैं नदी मैं देरै हाउस बोटरी खिड़की में बैठ्यो हो। दूर नदी किनारै आबाहाळां री एक टोळो ढोलक अर झांझ-मजीरा सूं मन बहलारी ही, पर बोली रै संगीत री बजाय हाथां री ताकत जादा दिखारी ही। ज्यूं अंधेरो बढ़तो गयो अर आधी रात नैड़ी आई बांरो रोळो घणो ऊंचो अर तेज होतो गयो, पण फेर भी चुप होणै रो नाम नहीं। चुप हुवै भी क्यूं ? जे कोई गीत होतो तो कुदरती विश्राम भी होतो। उल्टूं अर ताळ-लय मे तो बेरोक गति हुवै, बिना आनन्द री उत्तेजना हुवै। आधी रात बीतगी पण ताळ-लय में गहला बै आपरै आमोद-प्रमोद रै दूर छिण रो मजो ले रयाहा, जद के मैं बेसुमार पीड़ा सूं तड़प रयो हो।

अतलांतक समदर रै दूजै कानी माटी अर ईंटां रै इण जंगळ मैं भी म्हारो मांदो हियो इण भांत ही कहतो हो, 'साचाणी ही अठै रोळो तो घणो ठाडो है, पण संगीत कठै ?" और आवण दो, और आवण दो—इण सबदां सूं ही तो राग कोनी बणै इण भांत अमरीका री गगनचुम्बी दौलत री बड़ी रळोरियां रै सामी, निर्धन अर नग्न भारत रो एक बेटो नित घबराहट में पूछतो—'पण कांई।"

मैं बारू-बार या बात दुहरा देणो चाहूं के मैं सादगी रै भेस में ओछाई री हिमायत कोनी करूं। म्हारो विस्वास है के जे संगीत हिरदै में मोद बरण म ह्वो हुवै तो तान अर लय भी कायदा में बधै, अर कायदा में बंध्योड़ो बारमो का आतमा री पूर्णता री साख भरै। मस्ती में रोळा करणियां रै आमोद-प्रमोद रै कायदै रो सवाल ही कोनी। हिरदै में जे साची भावना हुवै तो उणरा बोल भी संयम सूं बंध्या अर पवित्र हुवै। पवित्रता रो नेम ही साची सादगी है। धन री देवी अर इण भिक्षुक देवता रो मेळ जिणनै धन री कोई जरूरत कोनी, ही साचो भेट है।

थोड़ा दिनां मैं जापान में हो, अर जापान री पुराणी संस्कृति किसी कला मैं देखी उण सूं घणो राजी हुयो। यो कूटतारै रै ऊंडै अनुभव री भावना रो भेद बतावणवालो हो जिणमें ढोंग अर बणाऊटीपणै रा बोल ही कोनी। रोजाना अर हेत, घर घर बांरी साज-सजावट, बूना आदमियां री हरबारी उठ-बैठ अर धार्मिक रीति-रिवाज—अलटा एक मोटै विचार सूं भेद दूर हुयोड़ा सा दीखता, अर बा एकता ही बांरी कळा में भांत-भांत रा रूपां मैं प्रगट हुई। ओछाईरा

ठीक इतणो ही बापू है जितणो बधाऊपणो, भर जूनी जापानी संस्कृति रो जिको रूप म्हनें सगळा सूं वेसी रुच्यो वो न तो उणरो खोखळोपण हो भर न उणरो बधाऊपणो हो, बाड़ी उणरी पूर्णता, भर हिरदै री पूर्णता सूं ही भादमी भापरा साथियां नैं घरै बुला'र वांरी खातरदारी करै, दरवाजै सूं ही बानैं पाछा कोनी मोड़ै। म्हैं भ्राजकाल रो जापान भी देख्यो है भर इको कोई चांदणी रात रो मजो बिगाड़णियां वां नाचवाळां री ज्यूं रोळा मचा'र खुसियां मनाता भ्राजरा जापानियां नें भी सुण्या है।

मैं रेल भर तार, मसीनां भर कारखानां नैं मिटावण री बात कोनी कंवूं। ऐ सगळा जरूरा है। पण वां कनै भापणै खातर कोई सदेसो कोनी। ऐ बिसारी कोई सो तान मे भी एकसुर कोनी हुवै, हिरदै री कोई भी पुकार रो जबळो कोनी देवै। भ्रादमी जद भ्रापरी जरूरतां रै ही काम मे लागै तो वो जरूरत मुजब भोजार घड़ै। थायोड़ो मिनख भ्रातमा री भ्रमरता प्रगट करै। जरूरतां भर भ्रोजारां री दुनियां में ईर्स्या भर द्वेस नाका भर संतरी भर दूजां रै मोल पर खुदरी बढोतरी ही पळै, जिणरो नतीजो हुवै—युद्ध। पण जिकी दुनियां में भ्रादमी भ्रापरी भ्रातमा नैं प्रगट कर'र भ्रमरता रो स्वाद चाखै, बठै दया, दोस्ती भर सांति फळै।

जद यूरोप विग्यान री ताळी सूं बिस्व रै रहस्यरी साळ खोली, तो उणनैं चारूं मेर बच्योड़ा कायदा मिल्या। भ्रा कायदां सूं रात-दिन रै सम्पर्क रै कारण यूरोप नैं बा चीज सायद दीखणी बद होगी जिण रो सम्बन्ध कायदां सूं परै मानवीय गुणां सूं है। भौतिक तत्वां रा कायदां नैं ब्यौहार रै ढग सूं काम में लेणै रै कारण दुनियादारी में सफळता मिलै, पण इण सूं बडो कोई चीज है जिण पर मिनखपणै रो दावो है। जद चाय-बागान रो कामदार कुळियां पर भ्रापरा कायदा कड़ाई सूं लागू करै तो चोखी भर घणी सारी चाय निपजै। पण दोस्तां सू उण रा सबधा रा न तो कोई कायदा है भर न होणै रो सवाल ही उठै। बागान रा कुळियां रा कायदा भौतिक दुनियां रा कानूनां रो हो भ्रस है। पण, मित्रता बिस्व-सत्य रो एक भ्रस कोनी, इण विचार सूं ही मिनखपणो मुरझावै। भ्रापणरो मिठास भ्राते मसीनां नैं कियां दे सकां? मसीनां सूं परै जद कोई चीज हो कोनी तो उण मिठास री भ्रापी री जरूरत कियां पूरी होसी? विग्यान पर भ्रणूंतो ध्यान देवण सूं यूरोप रा लोग भ्रातमा नैं न्यारी मेलता, भर भ्रापरी योजनावां मे उण नैं कोई जगां कोनी देता दीखै। भ्राध्यामिकता में उळझ्या रहणै सूं पूरब रा लोग दुखदायोड़ा पर उदासीण होग्या, पण या भी कठै तक साचो है के पिच्छम रो इकतरफो भौतिकवाद भ्रात्मपूर्णता रै मुकाम तांई पुगण में मदद करै।

दुनियां सूं जिका लोगां रो सबंध चाय बागान रा कुळियां भर कामदार

रै सबब किमो ही है कै ऊचै दरजै री चतराई वाळा है। आ बात मानणी पड़सी के कामदार आपरा आदमियां री चोकस निगराणी करै अर आपरी चाकरी मनीसांत बजावै। बो कर'रणी सूं काटयोड़ा कपड़ै रा टुकड़ा री ज्यूं कुतियां रा बर एक सीधी कतार में बणावै, अर दसतकारी, बजारा अर और ही इणमांत रा कामां रो चोखे सूं चोखो बदोबस्त करै। पण, श्रमिक सूं पर्रे उणरी आ उदारता उणरै प्रसासनिक चतराई रो ही एक भाग है, अर इणसूं उण रै मुनाफै में बढोतरी अर कुलियां रो भी थोड़ो भलो तो हुवै, पण कोई नै भी असली खुसी नहीं हुवै।

कोई आ बात नहीं सोचै के म्हारै दिमाग में विन्दम री मानको अर पुरख री अधीनता रै सम्बन्ध रो ही बात है। मसीनां रै धर्म सूं खुद विन्दम में ही मिनख-मिनख रा सबधां में खाई खुदगी है। बणावटी तरीकां सूं बोतो-जागतां मिनखां नैं एक करणै री कोसीस सूं आणै वै कागद या लकड़ी रा टुकड़ा हुवै जिका गूंद सूं चेप्या जा सकै या पेचां सूं कस्या जा सकै, वै कुदरती अर निर्माणकारी बंधण ढीला पड़जावै, जिकां सूं हो मिनख गहरी आध्यात्मिक एकता साल आपूं आप प्रेरित हुवै। पण, इण बात में भी कोई संदेह नहीं हो सकै के विन्दम रा लोग मिनखां नैं मसीनां री जियां समझ'र अपरंपार दौलत भेळी करली है। वै बसतवानैरा ढेर रा ढेर बणाया, आखी दुनियां रा बजारां में वांनै बेच्या, अर बादळां नैं चोरता महल खड़या करया। और भी, वै समाजरा सगळा वर्गां में विद्या फैलाई, सगळां खातर अस्पताळ खोल्या, लाखां री कमाई रा साधन जुटाया, अर और भी घणा भला काम मिनखमात्र साल करया। अै सब बातां, चौड़ै दीसती दुनियां में, मसीन री आपरी सत्ता रै पाण हुई। पण, इण रा भगतां में भूत सा बड़ जावै, अर बै झट-झट घणा-घणा फळ चावण लागै। ज्यूं-ज्यूं वांरी लोभ बढै त्यूं-त्यूं बै दूजा मिनखां री हळकाई करणै में हिचकै कोनी।

लोभ एक बुरो व्यसन है अर इण कारण ही बो निर्माण कर सकै। लोभ जद कोई सभ्यता री प्रेरक ताकत बण जावै तो मिनख रो आध्यात्मिक बंधण कमजोर हो जावै। इसी सभ्यता री बगस्योड़ी भौतिक दौलत, ताकत अर समृद्धि ज्यूं-ज्यूं बढती जावै त्यूं-त्यूं मिनख री आध्यात्मिक ताकत री सामरथ्य घटती जावै।

एक लीक सूं चितराम कोनी मंडै पण घणी सारी लीकां रै मेळ सूं बणै, सगळी छोटी बडी लीकां एक दूजै सूं जुड़ै, अर वांरै संकल्प होणै सूं ही चित्राम बणै। सोलै मोमजामै पर मंडियोड़ा घरा रा नकसा चित्राम कोनी कहावै। वांरी लीकां खाली वारली व्योवहारिक जरूरत सूं जुड़योड़ी है, मांयलै आध्यात्मिक बंधण सूं नहीं। चित्राम निर्माण करै जद के नकसो जोड'र खड़यो ही करै।

मानखो विणजाई सूं सासित समाज एक सांवो, चोड़ो नकसो बण जावै,

उण मे विश्राम रा कोई गुण नहीं रेवै । इसै समाज मे मिनखां रै बीच रा ग्राध्यात्मिक बंधण कमजोर पड़ जावै । इसै समाज रो रथ दौलत ग्रर धनवान मिनख सारथी हुवै । इण रथ नै बै मामूली ग्रादमी खींचै जिका तकड़ी सांकळा सूं इण रै बंध्या रेवै । खड़खड़ाहट करतो ओ रथ जद गुड़ै तो सभ्यता ग्रागै बढती मानी जावै । लाभ री दौलत रै देवतारो ओ विजय कूच मिनखा नै राजी नहीं कर सकै, क्यूं के इण देवता खातर वां कनै ग्रसली ग्रादर कोनी । मिनखां नै जद खाली बारलै बंधण सूं ही भेळा करथा जावै तो बै बागी हो जावै । या बात उण सामाजिक क्रांति में साफ दीखै जिकी ग्राज यूरोप रै ग्राकास में छायोड़ी है । जूनो भारत धर्म री ग्रात्मा री बजाय उण रै बारलै रूप मे लोगां नै एक करणै री कोसिस मे समाज नै निर्जीव बणा दियो । ग्रर ग्राज रो यूरोप नैतिक ग्रर ग्राध्यात्मिक कानूनां री बजाय, सामाजिक ग्रर ग्रार्थिक कानूनां में बांधणै री कोसीस में समाज नै छितर बितर कर रयो है । ग्रै दोनूं रस्ता ही मिनख री ग्रात्मा रो कोई लेखो कोनी लेवै, ग्रर ग्राध्यात्मिक सत्य सूं ग्रांरो बहोत थोड़ो लेण देण है ।

ग्राध्यात्मिक सत्य कांई है ? ईसामसीह कैवो के बै ग्रर परमात्मा एक ही है । ओ ही ग्राध्यात्मिक सत्य है । बेटै री बाप सूं ग्रभिन्नता ग्रसली एकता है, पण, चाय बगान रै कामदार ग्रर कुळियां रो संबंध, चाहे किसो भी हो ग्रसली एकता कोनी ।

ग्राज यूरोप री सभ्यता रै हिरदै-सिंघासण पर बिराज्योड़ै लालच री मैं निन्दा करी । लालच री निन्दा क्यूं करणी चाहीजै ? क्यूंके इण सूं साच तांईं नहीं पूग्यो जावै–ग्रो ही ईसोपनिसद रो कहणो है । ग्रर उण लोगां नै, जिका साच री परवा किया बिना खाली ग्रानंद चावै, उपनिसद रो कहणो है– खूब ग्रानंद मनाग्रो, पण, साच बिना ग्रानंद कठै ?" इण वास्तै सवाल उठै–"ओ साच कांई है।" इणरो उथळो है के दुनिया री हर चीज पर परमात्मा रो ग्रावरण है, ग्रो ग्यान ही साच है । जे दुनियां ही ग्राखरी सच होती, ग्रर दुनियां सूं परै जे कोई चीज नहीं होती, तो दुनियां री चीजां रो ग्रधिकार ही मिनख रो सबसूं बडो काम ग्रर लालच ही उण रै संतोष रो सबसूं बडो साधन होतो; पण सबसूं बडो साच तो ग्रो है के परमात्मा हर चीज री पूर्ति करै । इण रो मतळब ओ हुयो के ग्रात्मा मे उण साच रो ग्रनुभव करणो ही मिनख रो सबसूं बडो काम है । उपनिसद रो ओ भी कहणो है के साच रो ग्रनुभव लोभ सूं नहीं, त्याग सूं हुवै । ग्रमरीका में धन रा हौवा कोटां मे जिका सात महीनां मैं बिताया बां मे मैं उण देस नै उलटी चाल चालतो देख्यो । जिण दुनियां नै उपनिसद नाचीज ग्रर क्षणभंगुर बतावै, वो ही वठै सब कुछ है । ग्रर परमात्मा जिको हर चीज पर ग्रावरण बण्योड़ो है, वठै सुर मोहरां री मीठी गरद सूं ढक्योड़ो है ।

जिको ग्यान मिलै उणसूं आवै । जीवण री जिम्मेवारियां भौतिक जगत री जिम्मेवारियां री ही एक अंग है, अर आध्यात्मिक जगत ताईं पूगण सारू आपां नैं आसूं बच'र चालणै री नहीं, बीरै माय सूं गुजरणै री अर वानै ऊंची उठाणै री जरूरत है । मनु रै इण विचार री पख उपनिसद भी लियो अर कैयो के पहलां आपणै आपनै मौत सूं बचाणै खातर भौतिक ग्यान नैं सीखणो चाहीजै । आज री भौतिक ग्यान यूरोप रा विचारकां अर वैग्यानिकां रै बस में है, अर पूरब रा आपां लोगां नैं उण खातर वांरी मदद मांगणी चाहीजै ।

आध्यात्मिक संस्कृति री एक पख आत्मा नैं भौतिक जगत रा दुःखां सूं मुक्त करणै सूं संबंध राखै । यो संस्कृति री आधारभूत काम है जिको आज पिच्छम रा लोगां रै हाथ में है । यो आधार जद ताईं मजबूत नहीं हुवै, घणखरा आदमी भूख सूं लाचार हो'र भौतिक पदार्थां रा गुलाम बण्या काम करणै में ही आपरो सारो समतो खर्च देसी । योही कारण है के पिच्छम रा लोग आपरी बांह्यां चढ़ा'र, कुदाळी-फावड़ो लियां, नीचा झुक'र जमीं खोदणै में यूं जुट रैया है के ऊपर पकास कानी झांकण री ही फुरसत कोनी । इण मजबूत आधार पर जद ऊपरली मजलां बणासी जद ही हुवा अर रोमणी रा रसिया निश्चित हो'र रह सकसी ।

आपणा पुराणा रिसिरां या बात कैयी के अग्यान बंधण है अर ग्यान मुगती । या बात कहतां बखत वै आत्मा रै संसार री बात सोचै हा, पण भौतिक जगत पर भी या बात वैयां ही लागू होवै । जिको आदमी भौतिक जगत रा कानून जाणै बो एक मुक्त पुरस है, जिको नहीं जाणै बो गुलाम । इण जगत री जिको बाधावां है वै सगळी मायावी है, अर विग्यान री मदद सूं वै पार करी जा सकै । इण दुनियां में मुगती ढूंढण खातर पिच्छम रा लोग भूख, तिस, रोग अर गरीबी री जड़ां खोद रया है, इण बात नैं थोड़ै में यूं भी कह सकां के वै मिनख नैं मौत सूं बचाणै री कोसिस कर रैया है, दूजै कानी पूरब रा लोग पुराणै जमानै में आत्मा री खोज रै जरियै अमरता प्राप्त करणै रै रहस्य रो संकेत दियो । योही कारण है के जे पिच्छम अर पूरब रा लोग एक दूजै सूं मिल नहीं पाया तो वै निराश हो जावैला । इण मेळ री मत उपनिसदां में दूं बतायोड़ो है के अग्यान सूं मौत अर ग्यान सूं अमरता प्राप्त हुवै के भौतिक जगत सारू विग्यान अर परमात्मा नैं जाणणै सारू अध्यात्मिकता री जरूरत है । पूरब अर पिच्छम रै मेळ सूं आध्यात्मिक अर वैग्यानिक ग्यान रा मेळ होसी । मेळ न रहणै सूं ही पूरब रा लोग भूखा अर निर्जीव है । अर पिच्छम रा लोगां कनै शांति अर आनंद कोनी ।

मनै कोई गळत नहीं समझ लेवै इण वास्तै मैं या बात साफ कह देवूं के इकसार हुणो ही मेळ नहीं है । जिका भिन्न है वै ही मिल सकै । जिका राष्ट्र दूजा

रास्ट्रां रा सुतंत्रता नैं मिटा देवें वैं एक दूजै री आपरी ही मिटा देवें । साम्राज्यवादी रास्ट्र अजगर री तरियां दूजा रास्ट्रां नैं गिट जावें अर उण नैं मेळ रो नांव देवें। ऐयां ही के आध्यात्मिक पख मिनख रा भौतिक स्वार्थां नैं गिट जावें तो उण रो नतीजो आध्यात्मिक अर भौतिक पदार्थ रो मेळ नहीं कहा सकै। मेळ तो जद ही हुवें जद वें न्यारा रह'र भी मिल जावें। जिण बातां में लोग न्यारा-न्यारा है वां में वांरी निजी सत्ता नैं मान लेणीं सूं ही आपां वां बातां में साचो मेळ पा सकां जिकां में वें एक है। जिण दिन महाजुद्ध खतम हुयो अर यूरोप शांति खातर उतावळो हुयो उण दिन सूं ही यूरोप रा छोटा रास्ट्र आपरी निजी सत्ता री हटपूर्वक मांग करता रैया है। जिको नयो जमानो यूरोप में आवण वाळो है उण में अपरंपार दोलत, अन साम्राज्य अर महान स घर्षरी सगळी रा छितरा-छितरा हो जासी अर सा सुतंत्रता पर साचै मेळ री नींव मेली जासी। जिका मिनख नयै जमानै खातर मेहनत कर रैया है वानै उण सुतंत्रता खातर या सोच'र कोसीस करणी चाहीजै के वा सा खास रास्ट्रां नै ही नहीं आखी मिनख जात नैं मुक्त कर देसी।

'जिको आदमी अपणे आपमें सगळा प्राणियां नैं देखें और सगळा प्राणिय में अपणे आपनैं देखें, अप्रगट कोनी रैवें।" मिनखमात्र रो सगळो इतिहास ही इण सिद्धांत री सावत व्याख्या कोनी कांई ? इतिहास रै सुरूपोत में डूंगरा अर समदरां री हदबंदियां में आदम जातां रा न्यारा-न्यारा समूह आपां नैं मिल। वां में सूं जिका आपां मे मिल नहीं पाया और आपस में एक लूट-पाट अर लड़ाई झगड़ो हो करता रैया, वें बहोत पहलां ही मिटग्या, पण जिका आपरा सगळा साथियां में एक ही बिस्वात्मारी झळक देखी वै महान रास्ट्रां रैं रूप में प्रगट हुया।

आज विग्यान थळ, जळ, अर अकास मे मुसाफरी रा इतणा मारग खोल दिया अर वां पर इतणी सवारियां चलादी के भूगोल री हदबंदियां खतम सी ही होगी। इतणा सारा मिनख, अर वां सूं भी ज्यादा, इतणा सारा रास्ट्र एकठा हो रैया है के मिनखां रैं मेळ री समस्या आज पहलां सूं भी वैसी महत्वपूर्ण होगी है। विग्यान जिणां नैं एकठा कर रैयो है वां नैं मिलासी कुण ? पण मेळ कराणैं वाळी मांयली ताकतां हाल घणी दूर है। यूं लागै जाणैं इंजन गाड़ी नैं ले'र भाग्यो जा रैयो है अर ड्राइवर जिको गैलनैं छूटग्यो है, इण रैं गैल भागै। इंजन री तेज चाल सूं जोस में आयोड़ा यूरोप रा दर्सक वाहवाह करता कैवें है—"याही साची प्रगती है।" पण पूरब रा आपां सीधा सादा अर मधरी चाल चालणियां पैदल मुसाफरां नैं इसी इण प्रगति रैं धक्कै नैं सहणो सीखणो है। एक दूजी रैं हैं पड़ी चीजां जे सत्र में वध्योड़ो कोनी तो हालतां बखत टकराणी सी स्थिति है। इण टकराणें री खतरो चोखो कोनी हुवें, मनां ही कदे-कदे वो हितकर होवें।

कुछ भी हो, आ बात घणी साफ है के राष्ट्र आपस में मिल्यां बिना ही एकठा हो रैया है—पर इण दुख सूं ही आज री दुनियां दुखी है। पर कोई कारण है के इण पीड़ा रो कोई इलाज कोनी हो पावै। इण रो कारण यो ही है के जिका राष्ट्र आपरी सींव में ही मेळ करणो सीख्यो है वै उण सूं परै मेळ कोनी कर सकै।

आपरी चालू परिस्थितियां रैं दबाव मे आदमी नैं जद कोई सीमावां रै मांय साच रै आकार री कोई चीज मिल जावै तो वो उण सीमावां नैं ही साच सूं भी बेसी मानण लागै, पुजारियां नैं देवतां सूं अर पुलिस रा अफसरां नैं राजा सूं भी बत्ता मानण लागै। साचरी ताकत सूं राष्ट्र बढ्या है। राष्ट्रवाद नहीं। फेर भी राष्ट्रवाद री वेदी पर बळि चढाणै खातर यूरोप लोग रा दुनियां रा सगळा देसां सूं मिनखां नैं भेळा करया।

अबताईं बिदेसी लोग भेंट चढाता रैया कोई भी विरोध कोनी करयो। पण सन १९१४ मे जद यूरोप रा लोग आपरी जातरी ही बळि चढाणी सुरू करी तो वां में सूं कुछ सोचण लाग्या के राष्ट्रवाद री देवी वांरै भलै री कोनी, क्यूंकै या आप री बळि लेतां बखत यूरोप अर यूरोप सूं बारैरा लोगां मे कोई भेद कोनी राखै। अबताईं राष्ट्रवाद एसिया रा सगमूं कोमळ अंगा नैं ही दांतां तळै लियां हा, अर जोर-सोर सूं गोठा होती अर सेखी बघारी जाती। पण यूरोप रा कुछ लोग यो पचमो करणो सुरू करयो के या भी कोई साचाणी आछी बात है काईं। जद लड़ाई पूरै जोर पर ही तो वै सोचता हा के इण रै साथ ही राष्ट्रवाद खतम हो जासी, पण लड़ाई रो अत मांति रै भेम में धोजूं छिड़णै खातर ही हुयो। यूरोप रा विचारक घणा डरै है के इतणा दुख देखर अर इतणो टक्कर खाकर भी राष्ट्रवाद आज भी इतणो मजबूत है। आपरी बडोतरी री या घातक भूख एक राष्ट्रीय मूर्खता है जिकी लोगां नैं अन्तर्राष्ट्रीय एकता सूं विपरीत कर देवै। पण फेरभी या एक साची बात है के दुनियां रा लोग एकठा हुया है। क्यूंके कोई भी राष्ट्र, चाहे वो कितणो ही मजबूत या साम्राज्यवादी हुवो, इण साची बात सूं इनकार नहीं कर सकै, इण वास्तै सबनैं इण बात पर समझौतो करणो पड़सी। नहीं तो पाखंडी राजनीति अर राष्ट्रवाद रा भूख सूं उपजायोड़ा इण विनासकारी जुद्धां रो कदे ही अंत कोनी होसी।

'आजरै जुग में सिक्षा जमानैं री भावना सूं मेळ खातो होणी चाहीजै। राष्ट्रवाद रा पुजारी सिक्षा रै जरियै खुद रै अम्युदय री बात बताणै रा बहाना ढूंढणो ही आपरो काम समझै। पिछला बरसां में यूरोप रा राष्ट्र जर्मनी री निंदा या कह'र करी के वां सिक्षा में राजनीतिक अति घृणा री गुलाम बणादी, चाहे उणसू पहलां यूरोप रो हर राष्ट्र ही इण बात रो दोसी रैयो हुवै। वै सगळा राष्ट्रवाद

नैं सेवण खातर सिक्षा नैं भ डा संर्एं रै यंत्र ज्यूं काम में ली है । फर्क यो ही है के जर्मनी वा सगळां मूं विग्यान में आगै बढ़णें रै कारण सबसूं चोखी मसीन बणाई अर सबसूं चोखा पुर्जा लेकर तैयार करया । अर वांरा अखबार भी उणी उद्देस सूं झूठ रा थाळ सजाणैं रै अलावा और कांई करै है ?

आज सबसूं बडो पाठ जिको सीखणो है वो ओ ही है के इण अहूणी राश्ट्रवाद सूं किंयां पिंड छूटै । काल रो इतिहास अंतर्राश्ट्रीयता रै प्रकास सूं बण होसी, अर आपां जै विस्वैक्य री भावना रै खिलाफ व्योहार रीत-रिवाज या आदर्श बणाई राखस्यां तो उण बखत रै लायक कोनी रहस्यां । मैं जाणूं हूं के राश्ट्रीय [illegible] नींव री चीज तो है, पण मैं या साचै दिल सूं चाहूं के मैं इण कारण भारत रिसियां री उण महान कोसीसां नैं नहीं भूल जाऊं जिकी वै अनेकता मैं [illegible] साम करी समदर पर सूं लोग-लुगायां री आपस में बतळावण री आवाजां आ सुण सकां हां, जिका पूछै के वा कुणसी इसी गळत चीज ही जिकी नैं सीखर सोचणैं या करणैं सूं वै इण संकट में पड़ग्या । अर इण देस सूं आपां वांनैं कह सा के वा रा.दुखांरी जड़ उण गलती में है जिकी वै आपरै नानाविध कामां मैं सूं [illegible] री एकता रै काम नैं निकाळ'र करी ।

"जिका आदमी अपणैं आपनैं विस्व सूं अेकरूप कर'र मिनखरी एकता [illegible] लियो वो अग्यान अर दुख सूं छुटकारो पा लियो ।" समंदर पार सूं आ लोग-लुगायां नैं आति खातर गरळाता सुण सकां हां, अर आपां नैं वांनैं बता देण चाहीजै के आति तद ही मिलसी जद हित री भावना होसी, अर हित री भावना ही होसी जद एकता होसी । आपांनैं प्राचीन भारत रो यो संदेस वांनैं सुणा देणु चाहीजै के अद्वैत, जिको सपूर्ण अर अविभाज्य एक है, सिव अर सनातन है । (एक सिवम् अद्वैतम्) । नयो जमानो आवणवाळो है, अर नण नैं बधाणैं रो सही तरीको यो ही है के आपां पुराणा जमानां रो कूड़ो कचरो आपणां घरां सूं निकाळ देवां, जिको [illegible] ग सोच करणो सुरू कर दियो है । मनैं या बात सोचकर घणी [illegible] आवै के इण देस रै घणा लोग आज भी पुराणा जमानां रै कूड़ै-कचरै पर [illegible] हो'र भविस्य नैं बणाणो सुविधाजनक मानै । मैं या बात बिलकुल ठीक कहूं हूं के राश्ट्रीय अर्थ नांव री चीज [illegible] है । संपूर्ण अर अविभाज्य अद्वैत री [illegible] आपणो निजी विचार है, तो फेर आवणवाळै नयै जमानैं नैं बणाणी बगत [illegible] विचार नैं दिमाग मैं क्यूं कोनी राख सकां ?

मैं अठी आज कहूं के आपणा सिक्षा केन्द्र पूरब अर पिच्छम रा [illegible] बणसी । भौतिक भाव री दुनियां मैं निजस्वार्थ न तो कदे मइणो अर कदसी है न है दौलैल सूं करणी ही । पण सांस्कृतिक आदान-प्रदान मैं वांरै [illegible]

बाधावां कोनी। जिको आदमी सबसूं निरवाळो रैवै अर मेहमानां री खातरदारी नहीं करै तो ओछै दिमाग रो आदमी है। याही बात रास्ट्रां पर भी लागू होवै। आप री सुख-सुविधा रो बंदोबस्त करणै रै अलावा रास्ट्रां नै मेहमान-घरां रो प्रबंध भी करणो चाहीजै जठै दुनियां रा सगळा देसां सूं आयोड़ा लोगां री खातरदारी करी जावै। अर रास्ट्रीय सिक्सण संस्थावां ही सबसूं आछा मेहमान-घर है। दुरभाग सूं आपणी राजरी स्कूलां अर कालेजां में जिकी सिक्षा दी जावै उण में बहोत थोड़ी भारतीयता है, अर घणखरी तो पिच्छम सूं मांग्योड़ै दान सूं ही भरयोड़ी है। भारतीय सिक्सण संस्थावां कानी सूं यो बहानो बणायो जावै के वै खुद ही दान पर पळै है। सो वांसूं खातरदारी री आस कियां राखी जा सकै। या बात साची कोनी के वांसूं कोई आस कोनी राखी जावै। मैं पिच्छम रा लोगां नैं बार-बार पूछतां सुण्यो है—"भारत री आवाज कठै ?" पण जद पिच्छम रा पूछणवाळा भारत में आवै अर आपणै दरवाजै पर कान लगावै, तो वै अठै आपरी पिच्छमरी आवाज री धीमी सी गूंज ही सुणै, जिकी एक हंसोड़ नकल सी लागै। मैं भी या बात देखी है के आज रा भारतवासी जिका हाल में ही मैक्समूलर नैं पढ्यो है, यूरोपवाळां रा पीतळ रा बैंड-बाजा ज्यूं लागै, चाहे वै आपरी निजी प्राचीन सभ्यता री स्तुति करो चाहे पिच्छम री निंदा अर भर्त्सना।

मैं या आसा करूं के पूरब रा सगळा देसां कानी सूं भारत इसी सिक्सण संस्थावां खड़ी करै अठै दुनियां रा सगळा देसां सूं लोग भेळा हुवै अर सांचरी खोज करै। इसै कामरा साधन आपणै देस में है। जिण देस नैं आपां नूंतस्यां वो आपां नैं भी नूंतसी अर आदरजोग मेहमान मानसी। पण आदर अर अनादर रो सवाल तो असल में उठै ही कोनी। मुद्दै री बात तो या है के आपां मिनखरी आत्मा नैं मुगत अर प्रगट करणै रै एकमात्र उद्देस्य सूं सांच नैं अदर पिछाणां अर बारै प्रगट करां, मिनख नैं प्रगट करणै रै सिद्धांत रो प्रचार आपणी सिक्षा रै जरियै अर अभ्यास आपणा कामां रै जरियै होणो चाहीजै। जद ही, आखी मिनखजात नैं मान देणै सूं आपां नैं मान मिलसी, अर नयै जुगरी मांग सूं, इण जुग री बाधावां नैं पार करस्यां जिको अपणै आपा में सगळा प्राणियां नैं देखै, अर सगळा प्राणियां में अपणै आपनैं देखै, अप्रगट नहीं रह सकै—यो ही आपणी भारतीय सिक्सण संस्थावां रो आदर्स वाक्य होणो चाहीजै।

—१९२१

साच री पुकार

भोजन नैं कुदरती रूप में पचाणै री सगती खोयां पछै परासयी भो सुरग्व पोसण खातर मोल चुकाणो पड़ै । मिनखरी ध्यान में सगती नैं भरण रै इण पाप सूं ही पतन हुयो है । ग्रादमी इण वास्तै ही परासयी कोनो बाजै वो दूजां रै भरोसै जीवै, पण इण वास्तै भी के वो बारली परिस्थिति सूं बिण में चीजां है ग्रर सदा चलो ग्राई है, बांनै बधणै री कोसीस कियां बिना ही ग्रा पग बधा लेवै, ग्रसहाय बण'र घार में मरकतो चलै । बारली परिस्थिति नैं पू तरियां समर्पण कर देणै री हीं मांय सूं कोनी हुवै । इणरो नतीजो यो हुवै के ग्रादमी ग्रापरा निजी सकळपां सूं हालणो-चालणो बंदकर देवै ग्रर खानो ग्रा रै बसीभूत ही रेवै, तो वो एक तरह री परासयी बण जावै, क्यूं के वो ग्रापरै ग्र रै ग्रसम्भव दीखणवाळै काम नै सम्भव बणाणै री उण सामरथा नैं खो देवै, जि मिनख रै सार्वं प्रारब्ध री, इणरी तरक्की री रस्तो है ।

इण भरय में निचला सै जिनावर परजीवी है । वातावरण में रहता थ वै कुदरत री मौत मरै ग्रर जीवै । वै कुदरत रै हुकम सूं हालै ग्रर रुकै, ग्रर दिमाग में विकास री ताकत न होणै सूं वांरो विकास रुक्यो रवै । माखूं ग्र ताईं मोमाख्यां ग्रापरा खानां नैं एक खास ढंग सूं बणाणै रै ग्रलावा ग्रौर कुछ कोनी कर सकी । इण भांत छातां रा खानां नैं तो रूप री पूर्णता मिलगी प मोमाख्या ग्रापरा छातां री सीमित ग्रर न बदळणै वाळी जिन्दगी री सिकार होगी निचली भांत रा जीवां रै प्रति कुदरत एक ग्रजीव मोहपणो दिखायो है । इण मैं ग्रापरी झोळी में बचा'र राख्या है, ग्रर वांरै सहुग्रयान नैं यूं डर'र होणै राख्यो है के कठै वै साहसी ग्रर खतरनाक ग्राजमायसा न कर बैठै ।

पण विघना ग्रादमी तक ग्रातां-ग्रातां एक नई निर्माणकारी हिम्मत दिखाई चणरी मांयली प्रवृति तो खुलो छोडदी गई पण बारै सूं वो कमजोर, नागो ग्र बिना बचाव रै ही रैयो । इण मांयली सुतंत्रता सूं घणो राजी हो'र ग्रादमी बारै होर घोसणा करी—मैं ग्रसम्भव नैं सम्भव बणासूं । पोला त्रियां इदा सूं चाली ग्राई है विगं मनैं मंजूर कोनी । मैं इसी बात कर दिखासूं जिसी ग्राज ताईं हो ही कोनी घटी ।

या ही बात हुई भी, जद इयात रै सुरू मे आदमी आपरा किस्मत तीखा दांतां अर नखां वाळा प्राणियां भेळी देखी तो वो हिरण री तरियां भग'र या कछुवै री तरियां छिप'र बचणै री कोसीस कोनी करी, पण असम्भव नै सम्भव बणाबा खातर बडी ताकत रा हथियार घड़णै मारू चकमक भाठै सूं काम करणो सुरू करयो। इण रा नवा दांत अर नख उणरी पूर्णता कुदरत री सनकां रै भरोसै कोनी ही।

उणरा औजार बढता गया, भाठै सूं लोह ताईं पूग्या, अर वो साबित कर दियो के उणरो दिमाग कुदरत री सीमावां मे बद कोनी, सदा नवा उपायां में जुटयोड़ो है। जिकै ताईं पूगणो हो दोगो दीसतो हो वो उणरी पकड़ में आग्यो। हाथ रै कनै पड़यो भाठै रै हथियार सूं ही वो संतोस कोनी मान्यो। वीं जमीं रै तळै सूं लोह काढ निकाळयो। भाठा नै तोड़-फोड़'र सवारणै रै सरल तरीकै सै संतोस नहीं मान'र वो लोह नै गळाणै अर हथोड़ै सूं छीनर काम में लेवण लाग्यो जिकी सबसूं करड़ी अर बस मे नहीं आवण वाळी चीज ही वाही उण री सबसूं कामरू चीज बणगी। मिनख री या आदत है के वो नित प्रति रै काम में सफलता ही नहीं रम जावै। धनी री सतह सूं उणरी गहराई में, सांप्रत सूं छिप्योड़ै में, सरल सूं मुमकिन में, परजीवी होण सूं मरजी माफक बणाणै में, अर वासनावां मे बहणै सूं आत्मसंयम री थिरता मे पूगण ताईं उण नै अथक मेहनत री जरूरत है। यो ही उण री विजयां रो कारण है।

कुछेक लोग या दलील दी—भाठै रा हथियार आपणा पूजनीक बडेरां री चीज ही, उणनै त्यागणो आपणी जान री बनीयत नैं छोडणो है। मो वै आपरी जान री बनीयत नैं सम्भाळ'र राखी पण मिनखपणै री उण घणी मोटी बर्म दन रै बोल पर जिकी भी बीरी ई ही। आज भी उण भांत रा लोग है जिका भाटा र युग मे रैवै पण बै जान बारै करयोड़ा मा है, अर बडकां री ज्यूं अकड़ा अर गुफावां मे लुकता फिरै। कुदरत रै भरोसे परजीवी बण'र जीवणि'रा आंदयां रै पाठो बांध'र दुनियां रै सीमावरतै सूं जुग्योड़ा इसा लोग, जिका आपरै अन्तर मे हो मुराद भरी पा सक्या, बारलो दुनियां मे भी उणनै नहीं पा सकै। औनै हाम टा मरी के आपरै मुसकळ सूं असम्भव नैं सम्भव बणाणो ही आदमी रो सांचो काम है, अर यो भी, के आदमी रो सुख पहुंचा हुयो है उण ताईं ही अरणै आपरै सीमित कोनी राख सकै, पण बाईं हाणो चाहीजै उण दिस मे आगै बढै।

' तीस बरस पहला जद अंग्रेजी पढ्योड़ा भारतवासी राजनीत रा अधिकारां री भीख मांगणै मे लाग्योड़ा हा, मै म्हारा देसवासियां नैं या दिखणै री कोसीस करी के अधिकार मांग्यां सूं कोनी मिलै, वांनै तो खुद बणाणा पड़ै, आदमी आपरै

आ ही बात हुई भी, जद स्यात रै सुरू मे आदमी आपरा किस्मत तोला दांतां अर नखां वाळा प्राणियां मेळो देखो तो वो हिरण री तरियां भाग'र या कछुवै री तरियां छिप'र बचणैरी कोसीस कोनी करी, पण असम्भव नै सम्भव बणाणै खातर बडी ताकत रा हथियार घड़णै मारू चकमक भाठै सूं काम करणो सुरू करयो। उण रा नया दम अर नख उणरी पूर्णता कुदरत री सनकां रै भरोसै कोनी हो।

उणरा औजार बढता गया, भाठै सू लोह तांई पूग्या, अर यो साबित कर दियो के उणरो दिमाग कुदरत री सीमावां में बद कोनी, सदा नवा उपायां में जुटयोड़ो है। जिकै तांई पूगणो ही दोरो दोखतो हो वो उणरी पकड़ में आग्यो। हाथ रै कनै पड़यो भाठै रै हथियार सू हो वा संतोस कोनी मान्यो। वीं जमीं रै तळै सूं लोह काढ निकाळयो। भाठा नै तोड़-फोड़'र सवारणै रै सरल तरीकै मे सतोस नहीं मान'र वो लोह नै गळाणै अर हथोड़ै सूं छेनर काम मे लेवण लाग्यो जिको सबसूं करड़ो अर बम में नहीं आवण वाळी चीज ही वाही उण री सबसूं कामल चीज बणगो। मिनख री या आदत है के वो नित प्रति रै काम में सफलता ही नहीं

अभी री सतह सूं उणरी गहराई में, साधन सूं छिप्योड़ै में, परजीवी होण सूं मरजी माफक बणणै में, अर वासनावां मे री थिरता मे पूगण तांई उण नै अथक मेहनत री जरूरत है। यो ही उण री विजयां रो मारग है'।

कुछेक लोग या दलील दी—भाठै रो हथियार आपणा पूजनीक बडकां री चीज ही, उणनै त्यागणो आपणी जात री वसीयत नैं छोडणो है। सो वै आपरी जातरी वसीयत नैं सम्भाळ'र राखी पण मिनखपणैं री उण घणी मोटी वसीयत रै मोल पर जिको भी वांरो ई ही। आज भी उण भांत रा लोग है जिका भाठा र जुग में रैवै पण वै जात बारै करयोड़ा सा है, अर बडकां री ज्यूं जगळां अर गुफावां मे लुकता फिरै। कुदरत रै भरोसै परजीवी बण'र जीवणिया आंख्यां रै पाटो बांध'र दुनियां रै धीमापरडै मूं जुग्योडा इसा लोग, जिका आपरै अन्तर मे हो सुराज नहीं पा सक्या, बारलो दुनियां में भी उणनै नहीं पा सकै। वांनै हाल टा नहीं के आपरै भुजबळ सूं असम्भव नैं सम्भव बणाणो ही आदमी रो साचो धरम है, अर यो भी, के आदमी जो कुछ पहलां हुयो है उण तांई ही आपणैं आपरै सीमित कोनी राख सकै, पण आई होणो चाहीजै उण दिस मे आगै बढै।

१९ तीस बरस पहलां जद अंग्रेजी पढयोड़ा भारतवासी राजनीत रा अधिकारां री भीख मांगणै में लाग्योड़ा हा, मैं म्हारा देसवासियां नै या दिस णै री कोसीस करी के अधिकार मांग्यां सूं कोनी मिलै, वांनै तो खुद बणाणा पड़ै, आदमी आपरै

न आपरी बुध अर इच्छा सगती अर करम सूं बणाएं में मदद देवै, वो ही उणरो असली घर रो देस हुवै। जगत रै विधाता में भी आपरै हाथां करयोड़ै काम मे ही सुख देखणो पड़ै।

आपां जद आपणै निज रै देस नै बणाणै री बात करां तो उणरो सही मतळब काईं हुवै? आपणो मतळब यो हुवै के आपां आपणी भीतरली भावना नै बारै रै मोटै चौड़ै राज में फैला देवां, अर उण पर आपणा विचार, काम अर सेवा लगा देवां। आदमी रै देस नै उण रै भीतरलो जीवण रो विकास अर दरपण दोनूं ही बणाणा पड़ै।

बरसां पहली, 'समाज अर राज' नांव रै अेक लेख में मैं चरचा करी ही के आपां आपणै जनम रै देस नै आपाणो आपणो किंयां बणा सकां हां। मैं इण असली बात पर जोर दियो हो के आपां नै, कोई विदेसी करनै सूं नहीं, आपणी खुदरी निस्चळता अर उदासीनता करनै सूं, आपणै देस नै जीतणो है। जद-कद आपां विदेसी राज रै दरबारै दान री भीख मांगी, तो आपां आपणी निस्चळता नै जादा गहरी ही बणाई। सारी बढोतरी भी अस राजनै है, अर इणरो फळ यो है के आपणो देस दिन पर दिन आपणै हाथां सूं निकळतो जा रैयो है। आपां जिको भौतिक मुनाफो कमावां उणरो मोल अध्यातम रा दामां में चुकावां। याज्ञवल्क्य जी कंयो है–

नवा अरेय पुत्रस्य कामाय पुत्रः प्रियो भवति,
आत्मनस्तु कामाय पुत्रः प्रियो भवति।

"बेटो आपां नै इण वास्तै प्यारो कोनी के आपां बेटो चावां, पण इण वास्तै के आपां उणमें आपणी आतमा नै देखणो चावां।"

आ ही बात आपणै देस पर भी लागू होवै। यो आपां नै इण वास्तै प्यारो लागणो पड़ै, क्यूंके यो आपणी आतमा रो ही प्रगट रूप है। जद आपां नै आ पिछाण हो जावै, तो आपां नै आपणै देस रै निर्माण री बढोतरी सारू दूजा लोगां री मरजी री बाट-जोर कोनी देखणी पड़ै।

इण विचार मे इसी कोई चीज कोनी ही जिकी आपणा देस भगता रा काना कड़कड़ाती, पण इणसूं विरोध रो जिको तूफान माच्यो उणनै मैं भूल नहीं सकूं। इण रा दो कारण हा– एक तो खाली क्रोध अर दूजो लालसा।

क्रोध नै रस्तो देणो एक तरह री भावनात्मक अैसआरामी है। उण दिनां आपणी मस्ती रै हुड़दंग नै कुण रोक सकै हो? आपां फिर फिर'र धरणो देता, कपड़ै री गाठा बाळता, अर आपणै गैम नहीं होता जाणै इण भांत फटकारता जिण भासा, चरित्र रो कोई संयम कोनी होतो। इण रै खतम होणै रै थोड़ा दिनां

पाछै ही एक आपानी मित्र मनैं पूछ्यो—"थे मोत पुरखान, धारम, अर पंको, इणरै सूं थारो काम कोनी कर सको काईं। मगती रो यो सपव्यय थांरै लक्ष्य तांई पूगण री कोसीस री कोई घणो आछो तरीको कोनी।" मनैं जवाब देणो पड्यो—"म्हारी निजरां में म्हारो लक्ष्य जे साफ होतो तो म्हे कुदरती ही संयम सूं काम लेता। पण म्हे तो खाली क्रोध री दिखावो ही कर सका हां जिण सूं उद्दण्डीण बल'र म्हारो घड़तो उन्माद, म्हारी मगती रो बुरी तरियां दुरुपयोग कर लेवै, अर आखिर वा बिल-कुल खतम हो जावै।" खैर, वै आपणा देसवासी हा जिका आपरै क्रोधरी भावनाओं रै दिखावै पर कोई रोकथाम नहीं सह सकै हा। वा सगळी बात एक अजीब सनक ही। उण मौके पर कामगो एक नयो तरीको लेर मैं सामनै आयो, पण उण सूं तो वांरो थोड़ो क्रोध उल्टो म्हारै सिर ही आ'र पड़्यो।

अब लालन री बात लेवो। दुनियां में कामगो चोखा नै नेवळ मात्र तो करडी मेहनत ही करणी पड़ै। पण आपां वानैं सीधे ढंग सूं हाथ जोड़'र मोल मांग'र नहीं, पण धमका'र लेवण री एक तरकीब ढूंढी। आपणो इण मनोखी जुगत पर सारो देस घणो राजी हुयो। यूं लाग्यो जाणैं राजनीति रै बजार रै मान रा भाव गिरग्या अर वो सस्तै भाव विकण लाग्यो। आछो कमाई वाळा लोग गिरता भावां में इमा बह जावै के वै माल री किस्म कानी भी कोई ध्यान नहीं देवै, अर जिको कोई इण में सदेह करै उण नै झट आडै हाथां लेवै।

उण दिनां आपां इण बारलै रूपमाया रै वस मे हा, उण बखत रै एक राजनीतिक नेता ठीक ही कैयो—म्हारो एक हाथ अंग्रेजी राज रै कठां पर है अर दूजो उणरै पगां पर है।" पण देस वास्तै उण रै कनैं कांई हाथ कोनी हो। वा ढग अब बदळग्यो है। अब आपणो एक दळ तो आपरा दोनूं हाथां सूं विदेसी राज रा कठ पकड़ राख्या है, अर दूजो दळ उण रा पग पकड़्यां है। पण इण दोनां सूं ही काम कोनी बणै। खाली विदेसियां सूं निपटणै सूं ही पार कोनी पड़ै।

उण दिनां हर तरफ रा लोग बंगाल कानी तकता रया हा। पैला भावना में कोई सर्जन री ताकत कानी होवै। या तो उण आग री ज्यूं है जिको सींतो ई बण नैं बाळ'र राख कर देवै। कनैं पड्या करड़ा धातुवां नैं गळा'र सचोना बणाणै, इण आग नैं काम मे लेवण सारू आदमी नैं धीरज, चतराई अर सूझ-बूझ सूं काम में लावणी पड़ै। पण आपां आपणी बौद्धिक ताकतां नैं जगा कोनी सक्या, जिण सूं उण बखत री विसाल धधकती भावना सूं कोई स्थायी महत्व री सगठन कोनी खड़्यो कर सक्या।

आपणी असफळता रो कारण आपणै भीतर ही हो। घणां दिनां तांई आपणा सगळा काम एक कानी तो मावन. रै वशीभूत हा अर दूजै कानी भ्रष्ट रै। आपणी

विचार लगतो सूनी रैयी, श्रर इण नै खुल'र खेलण देवण रो हिम्मत ग्रापां कोना कर सक्या। जद ग्रापां नैं जगा'र काम में लगाया गया, तो ग्रापां खायाई में ग्रापणी भावना नैं ही काम मे ली, ग्रर ग्रापणी बुद्धि रै जादू-मंतर सो होग्यो।

दिमाग जद यूं ठस हो जावै तो जल्दी भ्रम में पड़ै, ग्रर फेर ग्रलादीन रो चिराग देण री बात सूं लालची दिल धड़कण लाग जावै। या बात तो मानणी ही पड़सी के ग्रलादीन रो चिराग जे मिल सकै तो उण रै जोड़ री कोई दूजी चीज नहीं हो सकै। पण जिका ग्रादमी मं'तलालची ग्रर करण-घरण में माड़ा हुवै, वै इण बात नै नहीं मानै। चिराग देवण रै वादै सूं ही वै फूल उठै, ग्रर वांरी उमेदां नैं जद कोई फानतू बतावै तो वै यूं गरला उठै जाणै वांरी सगळो माल-मत्ता लूट ली होवै।

वटकारै रै दिनां जवानां री एक टोळी जोम मे ग्रा'र ग्रांति सूं हजार बरस ग्रागै रो जमानो लावण रो कोसीस करी। वै जिकी ग्राग जळाई उण में ही ग्रपणै ग्रापनैं होम दिया। इण कारण वै ग्रापणी ही नहीं ग्राखी दुनियां री सरधा रै जोग है। वांरी ग्रसफळता में भी ग्राध्यात्मिक सोभा री चमक है। महान ग्रात्म-समर्पण पर घोर श्रम सूं वै ग्राखर या बात समझ सक्या के जद ताईं देस साथ देवण सारू तैयार नहीं हुवै, तद ताईं क्रांति रो मारग कठैं ही कोनी पुगा सकै। लक्ष्य ताईं पूगण रो त्रिको सीधो मारग दीखतो हो, वा ग्रेक झूठी डाडो निकळी जिकी बठै ताईं पूगती ही कोनी ही, ग्रर उण पर चालण वाळा पग कांटां ग्रर झाड़ां सूं बिंधग्या। कोई चीज रो पूरो मोल चुकाणै सूं दाम ग्रौर चीज दोनू रो ही हाथ सूं जाणै रो डर हुवै। उण दिनां रा साहसी जवान सोचता हा के सब लोगां रै बदळै ग्रापरो जिन्दगी होम'र वै क्रांति ला सकैला। वै ग्रापरै बूतै रो ऊचै सूं ऊचो मोल चुकायो, पण वो पूरो नहीं हो। मुगतो रो भावना एक वर्ग सूं नहीं, सारै लोगां रै दिलां में सूं उछळ'र निकळै जद काम बणै। रेलगाड़ी रो पहलै दरजै रो डिब्बो कितणो ही कीमती सामान सूं सजयोड़ो हुवो, उणी गाडो रै तीसरै दरजै रै डिब्बै सूं तेज कोनी चाल सकै। म्हारो विसवास है के उण देसभगत टोळी रा बच्या-खुच्या लोग ग्रब महसूस करतो है के देस सगळै लोगां रो बणाणो बणै। वो सामूहिक दिमाग ग्रर इच्छा रा एक ठोस ग्रर प्रकट रूप हुवै, जिणरी हर ताकत रो पूरो उपयोग हुवै। ग्रापां जद दूजा राष्ट्रां री बढोतरी पर निजर गेरां तो राजनीतिक गाडो-घोड़ा प्रधान बण'र ग्रांख्यां ग्रागै ग्रावै। गाडी रो वेग पूरो इणां रै भरोसैं ही है। ग्रापां या बात भूल जावां के घोड़ै रै गैल जिको गाडी है वा चालण लायक हालत मे भी है के नहीं। इणरा पैडा बरोबर घूमणा चाहीजै, ग्रर दूजा सगळा भाग भी ठीकसिर जचायोड़ा चाहीजै। गाडी कोरै उण सामान सूं ही कोनी बणी जिण पर बरोत ग्रर हणोड़ो

वा सबदां में यूं कह सकां हां के म्हारो भारत रो एक इसो नितकरम रह्यो है जिण में दिमाग री कोई जगां कोनी। इण भांत आपणी हालत उण असहाय मालक री सी होगी जिको पूरी तरियां आपरै नौकर रै ही भरोसै रैवै। मैं या बात फेर कैवूं के असली मालक तो वो आदमी है जिको भीतर बैठ्यो है। वो जद अपणैं आपनैं बारली परिस्थिति सूं बांध लेवै तो इसा संकटां में पड जावै जिणारो न ग्रन्त न पार। इण भांत वो एक परजीवी बण जावै, एक इसी मसीन जिकी गुलामी रै कारखानै में आपूंआप चालती रैवै। जिण पड़खाऊपणैं में आपणी गुलामी री भावना पनपी है, वो न तो आंख्यां मींचर हुकम मानणैं सूं छूटै, अर न चाबी भरयोड़ी गुड्डी री ज्यूं हाथ-पग हिलायां ही।

बटवारै रै खिलाफ झगड़णवाळां री जिको आंदोलन अज जीत्यो है, वो आकार में घणो मोटो है अर आखै भारत में फैल्योड़ो है। इणसूं पहला आपणा राजनीतिक नेतावां री नजर अंगरेजी पढ्या-लिख्या लोगां सूं आगै कोनी जाती ही–अर वणां में खाली वांरी ही गिणती है। उण बखत देस अंगरेजी भासा रै झूठै घमंड सूं बण्योड़ी भ्रिगतिसना ज्यूं हो, जिण मे बर्क अर ग्लैडस्टन अर मैजिनी तथा गैरीबाल्डी री धुंधळी छाया फड़फड़ाती ही। इसै खतरनाक मौकै पर भारत रा लाखां बेघाभरै लोगांरै फळसै पर वां जिसो ही वेस धरयां अर वां जिसी ही बोली बोलता महात्मा गांधी आ ऊभ्या। या कागद पर छप्योड़ी कोई बात कोनी ही, एक साची घटणा ही। यो ही कारण है के लोग वांनैं महात्मा रो फबतो नांव दियो। दूजो कुण इसो है जिको भारत रा अणगिणत लोगां नैं बिना हिचकिचाट आपरै हाड-मांस री तरियां मान्या? साच रै स्परस होतां ही आत्मा री कैद करयोड़ी ताकतां मुगत हो जावै। भारत रै फळसै पर जद प्रेम आ ऊभ्यो, तो आतमा मुगत हो'र उड चाली। गांव री सारी कजूसी भागगी। साच सूं साच प्रगट हुयो।

राजनीत में छळ-कपट एक निरफळ चीज है। वो एक इसो पाठ हो जिकै री आपां नैं पूरी तरियां जरूरत ही। मनो हा उण महात्मा रो जिको प्राणां नैं साच री सगती दिखाई। पण कायर अर निबळा आदमी सस्ती चालां नैं बेगा अपणावै। आज भी दुनियादारी में समझदार लोग आपरै राजनीत रै खेल में, महात्मा रै नांव री ओट में चतराई री चाल चलण री बाण छोडो को है नीं। झूठ सूं दुराचारी हुयोड़ा दिमाग उण गहरै प्रेम रो मतळब नहीं समझ सकै जिको महात्मा रै प्रेम सूं लोगां रै दिलां मे जाग्यो।

यो ही असल में सुतन्त्रता रो जलम है—उण सूं किणी भांत कम नहीं। या एक चीज है जिकी देस आपरी आप करी। देस रै विदेसी राज सूं इण रो बहोत

थोड़ो सरोकार है । यो प्यार तो एक द्रिढ निश्चय है । यो मकारो ले'र तर्क में कोनी उळझै । इण में कोई भी किस्म रै तर्क री जरूरत भी कोनी ।

प्रेम रै हेलै सूं भारत रै इण मनोरी जागरण रै संगीत री थोड़ी तान समुदर पार कर म्हारै तांई भी पूगी । या बात सोच'र मनै कितणो आनंद हुयो के आपां सगळां नै उण जागरण में देसरी रो बुलावो आयो जिण में भारत रै हिरदै में दब्योड़ी वा मानदार ताकत खुल'र खेलसी म्हारो विसवास हो के वा ही साची मुगती ही । बुद्ध जद सगळा जीवता प्राणियां सारू दया रै सिद्धांत री घोसणा करी, तो उण भादर्स री प्रेरणा जीवण रै हर पख रो परस करयो, अर निर्माणकारी कळावां नै समरिद्ध करी उण जूनै जुग में भी, राजनीतिक एकता री छिटी-बीखरी कोसीसां रै होता थकां भी भारत बार-बार छिन्न-भिन्न हो रैयो हो । या प्रेरणा इतणी सजोरी ही के भारत री सींव सूं बारै भी जा पूगी भर अनेक देसां में लोगां नैं बारै भीतरी धन सारू सावचेत करया । कुण इसो मोटो विजेता या सस्त्री विणजारो हो जिको इण भांत री सफळता ल सकै हो । वै लोग तो आपरै हाथै खालो घिरणा दुख अर अनादर ही लियां फिरता हा । प्यार तो जीवण री जड़ां रो परस कर छुटकारो दिराणै रो काम करै पण लालच नैं जोर-जबरदस्ती रा औजार काम में लेणा पड़ै । या बात भावा बटवारै रो विरोध करण वाळै झगड़ै रै बखत भी देखी ही, जद आदमी प्रेम रै भीतरी आवेस मे नहीं, लालच रै बारलै दबाव सूं घणा बळिदान करया हा । लालच तुरत फळ चावै, चाहे वै टिकाऊ मत होवो, पण प्यार रो फळ तो टिकाऊ होवै अर अपणै आपमैं पूर्ण भी ।

सो, इण नई-नई सुतन्त्रता री हवा में सांस लेवणरी ओस-भरी भाम में मैं भट देस कानी भाग्यो । पण मैं जिकी चीज देखी अर अनुभव करी उणसूं मनै दुख हुयो है । लोगां री आतमा कोई बोझ सूं दब्योड़ी दीखै, एक गहरो दबाव काम कर रैयो है जिण सूं हर आदमी एक ही मैं बालै अर एकसा ही इसारा करै ।

जद मैं लोगां नैं खुद पूछ'र तय करणी चाही, तो म्हारा हितचिंतक भट दे आपरा हाथां सूं म्हारो मुह भींच लियो अर बोल्या—"मेहरबानी कर'र चुप रैवो ।" हवा मे भी एक अत्याचार हो, जिको अद्रिस्य होतां हुयां भी खुली हिंसा सूं भी बुरो हो । घोसित नीति री समझदारी में सक करणवाळो कोई भी आदमी जे कानाफूंसी मे भी आपरै मनरी बात कर लेवै, तो उण नैं अनुमासन री कारवाई रो सामनो करणो पड़ै । आपणा अखबारां मे सूं कोई विदेसी काड़ नैं बाळणै री समझदारी में जरा सो ही सक करयो हो के पाठकां री धमकियां सूं भरया घोर विरोध रा पत्र आवणा सुरू हुया । जिकी लपटां में मोलां रै कपड़ै री गांठां बळी ही, वै इण अखबार नैं भी भट बाळ'र राख कर सकै ही ।

मनै एक कानी तो इसा आदमी दीखै है जिका आपरै जिम्मै रै काम मैं

धर्मान्ध हो'र लाग्योड़ा है, अर दूजे बाजू वे जिका अचमें सूं गूंगा हुयोड़ा खड़्या है। या ही धारणा फैल री है के पूछ-ताछ बंद करदेणी चाहीजे अर आंख मींच'र 'जो हुकम' कहणें रै सिवाय और कुछ भी नही करणो चाहीजे। पण 'जो हुकम' कंवै किण सूं ? थोड़ा सा जादू-मंतर रा बोलां नैं, कोई आंधै धरम नैं ?

अर 'जो हुकम' कंवै भी क्यूं ? अठै भी वो ही लालच है—आपणो आध्यात्मिक दुसमण। देस नैं एक मोटो आस बधाई गई है — इण नै ततकाळ अपरम्पार दौलत रो खजानो मिल जासी। इण रै लोभ मे आदमी आपरी अकल पसवाड़ै नांख'र इण सब लोगां पर आळ भरै जिका वांरी देखादेखी नही करै। अफसोस तो यो है के जिका आदमी इण जाळ में नही फस्या है, वै भी इण नै काम मे लेवण सारू उतावळा है। वै कंवै—"यो चोखो काम देसी।" वै साफ तौर सू ही या बात सोचै के जिको भारत या घोसणा करी—'साच मे ही जीत है, झूठ में नहीं—सत्यमेव जयते नानृतम्" वो सुराज रै जोगो कोनी।

और भी बुरी बात तो या है के जिण लाभ री कल्पना करी ही उणरो खाली नांव ही है, पण कोई परिभासा कोनी। डर रै रूप मे भी, अस्पस्ट होवण सूं यो जादा डरावणो है, अर लालच रै रूप में भी अस्पस्टता इण नै घणो आकर्सक बणा देवै। कल्पना रै भरोसै छोडण सूं हर कोई इण नैं आपरी पसंद माफक रूप दे सकै। इण री असली किस्म री जाणकारी करणै री कोसीस सूं भी कोई फायदो कोनी, क्यूं के इण रो रूप आसानी सूं बदळ्यो जा सकै। इण भांत अनिश्चितता रै कारण लालच तो बढ्यो चढ्यो दीखै, अर उण नैं प्राप्त करण रा तरीका अर बडा बिलकुल पक्की तरियां बता दिया गया है। घणखरा आदमी यो विस्वास करै के सुराज वेगो ही फलाणै महीनै री फलाणी तारीख नै ले लियो जासी। आपरै दिमाग री आजादी छोड'र वै दूजां रा दिमागां री आजादी भी खोस लेणी चावै। यूं लागै जाणै आपां भूत निकाळणियै कोई स्याणै री बाट देख रैया हा, अर भूत ही स्याणै रो भेस धर'र आग्यो है।

महात्मा आपरै प्रेम सूं भारत रो दिल बस मे कर लियो है, अर इण कारण आपां सगळा उण नैं नमस्कार करां। वै साचरी पूरी ताकत आपणै आगै खोल'र मेल दी जिकै सूं आपां वांरो उपकार मानां। अमर सत्य री बातां आपां पोथियां मे पढां, वांरी चरचा भी करां, पण जद आपां साच रै सैंमुख होवां तो वा घड़ी घणी कल्याणकारी हुवै। इसो मौसर जिन्दगी में बिरलो ही हुवै। एक प्रदेस सूं दूजै प्रदेस मे राजनीतिक भासण देतो फिरणो घणो सारो काम है, अर रास्ट्रीय कांग्रेस बणाणी अर भंग करणो भी घणो सोरो है जिको जुगां री नींद सूं आपां नैं जगा दियो। उण घणमोली घड़ी रै मालक नैं आपणा घणा-घणा नमस्कार।

पण, इण सब रो अरथ कोई अब साथ रो मुंह देख्यां पछै भी उणमें आपणो पक्को विस्वास कोनी ? ज्यूं प्रेम रै साथ में आपणो दिल मानै, वैयां ही बुद्धि रै साथ में आपणो दिमाग में मानणो चाहीजै। आज तांई न तो कांग्रेस अर न कोई दूजी संस्था ही भारत रै दिल पर जोरदार असर कर पाई। इण में प्यार रो तरल चाहीजै हो। अब जद प्यार रो साथ आपां नै मिलग्यो, तो आपां दूजै साथ सूं—जिण रो सबंध सुराज सूं है, आपणो विस्वास पाछो मे लेवां कांई ?

इण बात रो आपनैं एक द्रिस्टांत देवूं। मनैं एक बी.ए. बजाणै वाळै जरूरत है। मैं हर जगा कोसीस करी पण सही आदमी मिल्यो नहीं। वैं सगळा जता है, अर वां री मेहनताणो भी तकड़ो है, पण वारी तारीफ करतां हुयां भी मैं दिन भींनै कोनी चाहूं। आखर मनैं एक इसो बजाणियो मिलग्यो जिणरी पहली धुन। बिना मेळ री कविता सो लागै। मैं उण नैं गुरु बणा लेवूं। फेर मैं एक बी. बणवाणो चाहूं, पण म्हारै कनै इतणो जुगाड़ ही कोनी दीखै। म्हारी हालत पर तर खा'र म्हारो गुरु कैवै—"चिंता मत कर। या लकड़ी ले, ऊपर सूं नीचै तांई इण एक तार बांध लै अर उण पर अभ्यास कर। फलाणै महीनै री फलाणी तिथि या सुहो साचली बीण घणी आवैली।" इण बात सूं कोई मदद मिल सकै ? म्हारै हालत पर तरस खा'र यूं दया दिखाणी म्हारै गुरु री गळती है। जो जा चोखो हुवै के वै मनैं साफ कह देवै के इसा काम सस्ता कोनी बणै, असली बीण एक तार सूं कोनी बणै, इण में घणी भांत रा सामान अर कारीगर री चतराई चाहीजै, अर उण में जरा सी कसर रहणै सूं भी या बेसुरी बण जावैली।

महात्मा रै प्यार री लायकी में आपणो विस्वास कम नहीं होणो चाहीजै। पण सुराज एक लकड़ी अर एक तार रो खेल तो कोनी। यो एक बणो मोटी हिम्मत रो काम है जिण में घणी उळझणां है, अर जिण रै वास्तै उतणो ही अध्ययन अर साफ सोचणै री जरूरत है जितणी जोस अर भावना री। अर्थ शास्त्रियां, शिक्षा शास्त्रियां अर कला रा इन्जीनियरां नैं इण चौमुखै प्रयत्न में आपरा विचार अर मेहनत एक जगां भेळो कर देणो चाहीजै। लोगां री बुद्धि पूरी सावचेत रहणी चाहीजै, जिकै सूं जाणकारी री भावना बणी रैवै। वांरा दिमाग भोळै या चोरै, अनिवार्यता सूं पथरा देणा या निष्क्रिय नहीं बणा देणा चाहीजै।

देस में हर कोई प्रकार रो उण्ळी नहीं मिल सकै—या बात आपां वैसईं अनुभव सूं जाणां हां। क्यूं के आज तांई कोई भी इण निर्माण रै काम में देस री ताकतां नैं एकजुट नहीं कर पायो, इण वास्तै यो आगे बधन फासतू गयो। अर आपां उण आदमी री बाट देखता रैया हां जिकै कनैं आपानैं पुकारणै रो अधिकार भी है अर सगतो भी। एकबार वनां रै आश्रमां सूं आपणा गुरु ग्यान अर बुद्धि सूं

भरपूर हुया थका, भायां नैं यूं पुकार'र बुलाया हा—

यथापः प्रवतायान्ति यथा मासा अहर्जरम्
एव मा ब्रह्मचारिनो धाता भायन्तु सर्वत स्वहा

"ज्यूं भरणा नीचै बैवै, अर ज्यूं मास बरस कानी चालै, त्यूं ही सब दिसावां सूं ब्रह्मचारी म्हारै कनै भावो।"

उण श्रुतै जुग रो साचो दिस्य आज भी जीवै है। उणरी भवाज सूं गूंजो ठेठ। फेर, भाजरो भापणो सबसूं बडो नेता वैयां ही लोगां नैं क्यूं कोनी पुकारै, र लोगां री पूरी काबलियत नैं काम मे क्यूं कोनी जुटावै? वो क्यू कोनी कैवै— हर दिसा मे मनैं सुणणवाळा लोग भावो।" लोगां रै भरखी जागरण मे ही सुतन्त्रता । परमात्मा महात्मा नैं वा भावाज दी है जिण सु वै पुकार सकै। या घड़ी ही णणो सबसूं महान घड़ी क्यूं नही बण जावै?

वांरी पुकार भा ई है, पण एक सीमित दायरै में ही। हरेक नैं वै खाली या ी बात कैयी है—"कातो भर बुणो, कातो भर बुणो।" या ही काई वा नयै जुगरी ा पुकार है जिको महान उद्यम रो बुलावो देवै है! जद कुदरत मोमाखी नैं छातै ी तग जिंदगी मे भावण रो पुकार करी, तो लाखां मोमाखियां भागी भाई भर वताई रै इण काम सारू भपणै भापनैं लिंग विहीण भी बणालो। पण पोसण रै भाव में सरीर नैं सुखाणै रै वांरै इण बळिदान सूं वै उलटी कैद में ही पड़ी। लोग ोई भी हुकम सूं भापरो ताकत ने बूझळी बणाणै मे हिचकै कोनो। वै भापरै सागै ी भापरी कंद-कोटड़ी लियां फिरै। इण भासान तरीकै री पुकार मोमाखी खातर है, मिनख खातर नहीं। मिनख भापरी पूरी ताकत मे जद ही प्रगट हुवै जद तण री भादा ूं धारा काबलियत री मांग हुवै।

स्पार्टा एक सीमित दायरै में भापरा लोगां री ताकत रो उपयोग कर'र मजबूत बणाणै री कोसीस करी, पण उण रो मनचायो नहीं हो सक्यो। दूजै कानी एथेन्स भापरै लोगां री सगळी काबलियतां नैं खुल'र बढणै रो मौको दियो, जिण में उणरी जीत हुई। उण री जीत रो झंडो भाज भी सभ्यता रै सिरै पर लहरावै। यूरोप रा कारखानां भर सिपायां रा बारकां में भादमी री पोथ एक जस्योई ढग सूं मारी जारी है। सकुचित स्वार्थ री वेदी पर मिनखपणै री बळि दी जारी है। पिच्छम में युद्ध रो भधारो बढतो जाणै रो यो कारण कोनी काई? छोटी हो या मोटी, मसीनां तो मिनख नैं बावनो ही बणावै— भारी भरकम इंजन हुवो या नान्हो सो परखलो। चरखो भापरी सही जगां हुवै जद तो फायदो ही करै। पण जद, भादमी रै दुभायरी भिन्नता रै कारण, गळत जगां चरखो रैवै, तो दिमाग री कोई न कोई

पण, इण सब री धरप कोई जद साथ री मुंह देख्यां पछै भी उणमें आपणो पक्को विस्वास कोनी ? क्यूं प्रेम रै साथ मैं आपणो दिल मानै, वैयां ही बुद्धि रै साथ मैं आपणै दिमाग नैं मानणो चाहीजै । आज ताइं न तो कांग्रेस अर न कोई दूजी संस्था ही भारत रै दिल पर जोरदार असर कर पाई । इण नैं प्यार री परख चाहीजै हो । अब जद प्यार री साथ आपां नैं मिलायो, तो आपां दूजै साच सूं-जिण री सबध सुराज सूं है, आपणो विस्वास पाछो ले लेवां कांई ?

इण बात री आपनैं एक द्रिस्टांत देवूं । मनैं एक वीणा बजाणै वाळै री जरूरत है । मैं हर जगा कोसीस करी पण सही आदमी मिल्यो नहीं । वैं सगळा उस्ताद है, अर वां री मेहनताणो भी तक्को है, पण यारी तारीफ करतां हुयां भी मैं दिल वांनैं कोनी चाहूं । आखर मनैं एक इसो बजाणियो मिलजावै जिणरी पहली धुन बिना मेळ री कविता भी लागै । मैं उण नैं गुरू बणा लेवूं । फेर मैं एक वणवाणो चाहूं, पण म्हारै कनैं इतणो जुगाड़ ही कोनी दीखै । म्हारी हालत दे... ला'र म्हारो गुरू कैवै—"चिंता मत कर । आ लकड़ी ले, ऊपर सूं नीचै ता... एक तार बांध लै अर उण पर अभ्यास कर । फलाणैं महीनै री फलाणै... आ छड़ी साचली वीणा बण जावैली ।" इण बात सूं कोई मदद मिल... हालत पर तरस खा'र यूं दया दिखाणी म्हारै गुरू री गळती है... चोखो हुवै के वै मनैं साफ कह देवै के इसा काम मस्ता कोनी बणै, ... तार सूं कोनी बणै, इण मे घणी भांत रा सामान अर कारीगर री... अर उण मे जरा सी कसर रहणै सूं भी आ बेसुरी बण जावैली ।

महात्मा रै प्यार री लायकी में आपणो विस्वास कम... पण सुराज एक लकड़ी अर एक तार री खेल सो कोनी... हिम्मत रो काम है जिण मे घणी उळझणां है, अर जिण रै ... अर साफ सोचणै री जरूरत है जितणो जोस अर भावना री... सास्त्रियां अर कला रा इंजीनियरां नैं इण चौमुखै प्रयत्न ... एक जगां भेळो कर देणी चाहीजै । लोगां री बुद्धि पूरी ... जाणकारी री भावना बणी रैवै । वांरा दिमाग नै... घबरा देणा या निस्क्रिय नहीं बणा देणा ... है ।

देस मे हर कोई पुकार ... मिल... अनुभव सूं जाणां हां । बयू के ... भी ... तारतां नैं एकजूट नहीं कर ... भो ... आपां उण आदमी री दाट ... कनैं ... भी है अर सगती भी । ...

री होळी बळरा है। एक अंधविश्वास रै सिवाय इण रा मनै कोई जरूरत कोनी दीखै। अंगरेजी कपड़ै नै बरतणो या उणरो बहिस्कार करणो एक इसो सवाल है जिण रो फैसलो अर्थसास्त्री ही कर सकै। इणरी चर्चा में अर्थ सास्त्र री भासा नै ही काम में लेणो चाहीजै। जे लोग वैग्यानिक ढंग सूं नहीं सोच सकै तो आपणी पहली लड़ाई तो दिमागरी उण रद्दी हालत सूं ही होणी चाहीजै। या अयोग्यता ही तो असली बुराई है जिण सूं दूजी सगळी बुरायां निकळै। जद आपां या घोसणा करां के विदेसी कपड़ो अपवित्र है अर बाळ देणै जोग है, तो आपां उण असली बुराई नै सहारो देवां। अर्थसास्त्र तो परै फेंक दिया जावै अर झूठ नै नैतिक आदेस मान लियो जावै।

झूठ नै इणं वास्तै परै राखणो चाहीजै के वा खुद अपवित्र है, इण वास्तै नहीं के उण सूं आपणो काम कोनी चालै। इण रा दूजा असर चाहे कुछ भी हो, या आपणं भीतरी सुभाव नै मैलो कर देवै। या एक नैतिक प्रस्तावना है जिकी अर्थ-सास्त्र अर राजनीति री सतह सूं ऊपर है। दूसरा, जे कोई खास किस्म रो कपड़ो बरतणं में कोई दोस है तो वो अर्थसास्त्र, स्वास्थ्य-विग्यान या सौन्दर्य सास्त्र रै विपरीत कोई अपराध हो सकै पण नीतिसास्त्र रै विपरीत तो हो ही नहीं सकै। इण बात पर या दलील भी दी जा सकै के जिकी बात दुःख पैदा करै वा ही नैतिक अपराध है। इण रो जपळो मैं यूं देवूं के दुख तो हरेक गळती रै गैल लाग्यो रैवै। रेखागणित री एक गळती सूं सड़क जरूरत सूं ज्यादा लांबी बण सकै, नींव कमजोर रह सकै, या पुळ खतरनाक बण सकै। पर गणित री गळतियां नीतिसास्त्र सूं कोनी सुधरै। विद्यार्थी जे रेखागणित रै सवाल में गळती करै तो कापी फाड़णं सूं थोड़ो ही काम चालै। सही तरीकै सूं आजू करणं ही सवाल निकळसी। जे स्कूल मास्टर भी यो फैसलो कर देवै के कापी फाड्यां बिनां विद्यार्थी नै आपरी गळती रो आभास कोनी होवै तो कांई हुवै? जे या बात सही है तो मैं या ही कह सकूं के लड़कै नै स्कूल रा पाठ पढाणं री बजाय सुधारणं री जरूरत ज्यादा है।

आपां नै विदेसी कपड़ो बाळणै रो हुकम मिल्यो है। पण मैं तो यो हुकम कोनी मान सकूं। पहलो कारण तो यो के मैं आंख मीच'र हुकम मानणं री आदत नैं म्हारी जिम्मेदारी समझूं। दूसरो यो के जिकै कपड़ै नै बाळणो है वो मेरो कोनी। वो वां लोगां रो है जिकां नै उणरा बुरी तरियां जरूरत है। घर बाळ'र त्याग रो दिखावो करणवाळा आपां लोग तो और कठै सूं भी कपड़ो ले सकां हां, पण जिकां पर साचाणी बीतसी वै तो नागा हुया घरां में ही बैठ्या रहसी। दिगाणं उत्तेजित करणं सूं आपणा पाप धुपै कोनी, अर न थोड़ै दीखतां कुछेक फायदां सूं उठै करणं री भावना रो घाटो ही पूरो होसी।

महात्मा वरा मसीनां रै अत्याचारां सूं लड़ाई छेड़ी है जिका दुनियां नैं दबायां जावता है। इरा बात में आपां सगळा बांरै साथै चळे हां। पण जिकी गुलामी री भावना आपणै राष्ट्रीय जीवण में सगळा दुखां अर तिरस्कारां री जड़ में बैठी है, उरानै इरा लड़ाई में आपणी सीरी किया बरा सकां। बाही तो आपणी असली बैरण है, अर इरानै हराकर ही आपां भीतर अर बाहर सुराज ले सकां।

मैं कपड़ो बाळणै वास्तै तैयार हूं, परा कोई हुकम रै दबाव सूं आंख मींच'र नहीं। अगर लोग इरा सवाल पर फुरसत सूं विचार करै अर आपरी दवानां सूं आपां नैं बता देवै कै विदेसी कपड़ो बरतणै री आत्मिक व्याधि किया आत्मिक उपचारां सूं ठीक हो सकै। जे आपां कोई खास कपड़ो बरत'र कोई आत्मिक पाप करयो है तो, मानणो जोग आंकड़ां रै अभाव में, आपां कियां इरा बात सूं इनकार कर सकां, कै कपड़ो बाळ'र आपां उरा पाप रो आधार ही मोटो कर रया हां, जिकै सूं मैनचेस्टर रो फटो मजबूत ही बरासी। मैं कोई विसेसग्य बरा'र कोनी बोल रैयो हूं, क्यूंकै मैं विसेसग्य नहीं हूं। मैं तो लाखों जाणणै री इच्छा सूं ओ एक सवाल पूछूं हूं। आ बात भी कोनी कै विसेसग्य लोग जो कुछ कह देवै उरानै ब्रह्म-वाक्य मान लेवूं। परा वै लोग भी वेदांरी भासा में थोड़ा ही बोलै। वै आपणी बुद्धि सूं बातां करै, अर बेधड़क बहस करणै री प्रेरणा देवै।

आज एक दूसरी बात पर भी विचारणै रो वखत है। भारतीय जागरण संसार री जागृति रो ही एक अंग है। महायुद्ध रै साथ ही नयै जमानै रो फाटक खुलग्यो है। मरणजारण में ही दुनियां रा लोग एक दूजै रै नेड़ै आता जारया है। परा क्यूंकै आखो मिनखजात लड़ाई रै बोझ रो अनुभव करै, इरा वास्तै एक दूजै रो आसरो लेणै री बात सूं अब इनकार नहीं करयो जा सकै। सम्यता री नींवां जे ठीक कैवां तो पिच्छम री सम्यता री, समर्थै ही डिगरी दीसै। थोड़ै दीखै कै यो भूकंप न तो स्थानीय है अर न क्षणिक ही। यो तो विस्वव्यापी है, अर तद ताईं बद नहीं हुवै जो जद ताईं न्यारा-न्यारा महाद्वीपां में बसणवाळा मिनखां रा आपसी संबंध साचै मेळ-मिलाप रै ढग पर नहीं बरा जावै।

आज सूं आगै जिको भी राष्ट्र निरवाळो रहणै री कोसीस करसी, वरा नैं बख्त री हवा सूं टकरणो पड़सी, अर सांति भी कोनी मिलसी। अब सूं आगै हर राष्ट्र रो सोचणै रो स्तर अन्तर्राष्ट्रीय हुयां सरसी। आखै विस्व रै रूप में सोचणै रो दिमाग बणाणो नयै जमानै री खास कोसीस है। थोड़ा दिनां सूं भारत रै प्रसासन री आधारभूत नीतियां कुछ बदळती मालूम देवै। भारत री समस्यावां नैं दुनिया रै ढांचै आगै मेल'र देखणै री कोसीस होरी है। जुद्ध सूं आपणी आंख्यां रै आगै रो वो पड़दो हटग्यो है जिको आपणै दिमाग नैं आगै कोनी देखण देतो।

जिको बात सगळी दुनियां रै हित में कोनी या आपणै हित में भी कोनी—या कहावत कि जिको आज ताई पोथियां में ही छपी पड़ी है, अब व्योहार में आती दीख री है। मिनखजात अब समझणी है के नाजायज ढग सूं लियोड़ा कब्जो करणै रा अधिकार वाजबी कोनी अर या के खुद असलियत वास्तै सांयत दीखता कुछ अधिकारां रो भी त्याग करणो घाटै री बजाय फायदो ही देवै। द्रिस्टिकोण रो यो घणो मोटो परिवर्तन दिमाग नै ओछेपण सूं महानता कानी ले जारयो है, अर भारत री राजनीति री काया पलट करणै मे मदद कर रैयो है। मारग मे बाधावां भी है जिकियां नै चीतणी है। हर पैंड पर स्वस्थ जाग्रत ज्ञान पर हमलो करै। पण यो सोचणो भी तो गळत है के खाली स्वारथ ही साचो है।

मेरे साठ साल रै अनुभव मे मैं या खोज करी है के पूरो पाखंडो पणो कोई सरल बात कोनी, या एक मुस्कलां सूं हाथ लागणवाळी चीज है। अव्वल दर्जे रो खोटो तो ढूंढ्यां ही मिलै। साच तो या है के हर आदमी मे कुछ न कुछ भलाई भी हुवै। पण आपणी तर्क बुद्धि दोनूं विरोधी बातां न मानण नै तैयार कोनी हांवै। जद आपां बुराई रै साथै भलाई नै देखां तो आपां उण रो यो मतळब लेवा के भलाई तो बणावटी है। अन्तर्राष्ट्रीय संबंधां में तो या दोहरी बात और भी साफ है। आपणै पुराणै अनुभव नै देखतां इण विचार रो भूत आपणै पर सवार होणो मुनासिब है। पण आगलै जमानै नै देखतां द्रिस्टिकोण रै इण परिवर्तन नै असली मान लेणो चाहीजै। आगलै जमानै री जिको मांग नै आपां आज भी महसूस करां हां वा मिनखां री ग्रैक्ता कानी है। रास्ट्रलीग री थापना अर भारतीय विधान में सुधार पिच्छम सूं आवणवाळा इसा सदेसा है जिका इण भविस्य कानी सकेत करै। पै सदेसा जे साच नै पूरी तरियां प्रगट भी नहीं करै, तो भी अै पूरी लगन सूं साच कानी जी तोड़ मेहनत तो कर ही रैया है।

ससार रै जागरण रै इण प्रभात में जे आपणी खुदरी रास्ट्रीय कोसीसां विस्व सदेस री कोई भणक नहीं सुण सकी, तो आपणी मारमारी गरीबी बुरी तरियां उघाड़ी हो जावैली। मैं या बात कोनी कवूं के आपां नै हाथ में लियोड़ा जरूरी कामां नै भुला देणा चाहीजै। पण जद द्रिनुगै पछी जागै, तो वो खाली चुगै री तलास मे ही पूरी तरियां कोनी लाग जावै, पण अकास में पांखां खोल'र उडै भी अर नवै चानणै री खुसी मे आनद रा गीत भी गावै। ससार रो मिनखपणो आपां नै एक गहरी बुलावो भेज्यो है। आपणै दिमाग नै आपरी ही भासा मे इणरो उथळो देणो चाहीजै। पहलां आपणा ससकारां रा दोस अर कमजोरियां ढूंढण अर बतावण में उळझ्योड़ा हा। अब क्यूं के आपां आपणी राजनीति नै दूसरा रै भरोसै नहीं रहण देणै पर तुल्योड़ा हां, तो फेर भी आपां नै बहिस्कार री नीति रो पेट भरण खातर आप करतो रहणै री जरूरत है काई? क्रोध री धुंध सूं आपां बाकी री

दुनियां नैं नहीं देख पावांला । अर जे दुनियां रै संदर्भ में आपां देस री लांबी चौड़ी सीमावां नैं नहीं देख सकस्यां तो आपां आपणै देस री घणी बुरी तस्वीर रो दिखावो करस्यां । या दुख री बात है के आपां आपणी नजर इतणी छोटी करली है के आपां खाली भौतिक लाभ कानी ही देखां । पण आ तो पिच्छम में भी भौतिक स्वार्थ सूं ऊंचो उठणै री साची चेस्टा साफ दीखै । बठै मैं इसा आदमियां सूं मिल्यो हूं जिकां में त्याग री या नई भावना मूरतवत होरी है । अै वै आदमी है जिका राष्ट्रवाद रा मामूली बंधणां सूं छूट'र आखी मिनखजात री एकता नैं आपरै मांय महसूस करै अर इण महान आदर्स री पूर्ति रै काम में हरेक त्याग करण सारू तैयार रैवै । इसा आदमियां नैं मैं इंगलैंड में देख्या है । ताकत रा अत्याचारां सूं गुलाम जातां मुगत करणै रै झगड़ै मे वै आपरा लोगां रै हाथां ही बेइज्जती अर चोटां सही है। फ्रांस में भी मैं इण त्याग नैं देख्यो है । द्रिस्टांत रूप में बठै रोम्यां रोलां है, जका हो लोगां में आतवारै करयोड़ो है । यूरोप रा छोटाड़ा राजां मे भी या बात देखी है दुनियांरी एकता री आस मे चमकतै मूंडै हाळा, अर आणवाळै सानदार जमानै सुपनै खातर धीरज अर हिम्मत सूं झटका झेलणिया, यूरोप रा विद्यार्थियां नैं देख्या है ।

इण सुभ प्रभात पे आपां एकला ही कांई दूजां री खोट निकाळ्यां बाल्यां आपणा निर्माणकारी काम नैं दुर्भावना पर टिकायो राखस्यां ? इण नयै प्रभात रै आपां कांई उणनैं याद नहीं करांला जिको एक है (य एकः), जिको रंग रहित (अवर्णः) अर जिको आपरी अनेक भांतरी ताकत सूं हर वर्ण री कुदरती जरूरतां रो आछो प्रबंध करै (बहुधाशक्ति योगात् वर्णाननेकान् निहितार्थोदधाति) ? उण ग्यान देवणवाळै सूं आपां सगळां नैं भली समझसूं भेळा करणै री विनती कोनी करां कांई (सनोबुद्धया सुभाय संयुनक्तु) ?

—१९२१

बरफ रो ढेर डूंगरां रो सुदरो वासो है, पण उणसूं बह'र निकळै झरणो नैं सारा दुनियां अपणावै ।

—रवीन्द्रनाथ टैगोर

स्वराज री झगड़ो

आपणा स्याणा लोग संस्कित रा गम्भीर सबदां में आपांनै समझायो है के मुंढ़ सूं चाहे जितणी बात करो, पण लिखत में कदे भी हाथ नहीं कटाणा चाहीजै। इण स्याणी सलाह रो मैं मजबूती सूं अनादर करयो है, अर इण रो पालण जद ही करयो है जद टीका टीपणी रो जवाब देवण रो मौको आयो। जदकद म्हारै कनै कुछ कहणै री बात हुई, तो मैं गद्य या पद्य में क्यूं न क्यूं लिखणै सूं कदे भी हिचक्यो नहीं। बहुत रै बखत ही मैं या कार खींची। बठै म्हारी कलम लिखतां बड़ जावै।

आपणा विसवासां री जड़ सदा ही तर्क में जम्योड़ी कोनी हुवै। वै आपणै सुभाव री चीज या उण बखत री आपणी चित्तवृत्ति हो सकै। आपणै विसवास रै कारण ही आपां तर्क री खोज करां अर वो आपा नै मिल जावै। विग्यान में ही आपणा निर्णय बिलकुल सही प्रमाण रै आधार पर टिकै। दूजी जगावां तो वै आपणी सनकां अर अन्धविसवासां सूं खींच्योड़ा आपणा निजी पक्षपातां रै चारूं मेर तैडी सूं चक्कर काटता रैवै।

इण वास्तै जद कोई खास फळ री भावना सूं विसवास पैदा हुवै तो लोगां नै उण रस्तै पर चलाणै सारू कोई तर्क देवण री भी जरूरत कोनी हुवै। या ही बहोत है के रस्तो ठीकठाक हुवै अर जल्दी काम बणणै री आस बन्धादी जावै।

थोड़ा दिनां सूं या सोच'र के स्वराज आसानी अर फुरती सूं लियो जा सकै, म्हारा देसवासियां रा दिमाग तणाव री सी हालत में है। इसै बोभळ वातावरण में कोई भी बात रै आगै-पीछै री चरचा करणै री कोसीस सूं सबदां रो एक इसो तूफान उठ्यो हो जावै जिण सूं तर्क रो जहाज आपरै ठिकाणै पूगणो असम्भव सो हो जावै। आज ताईं तो आपां सोच्यो हो के स्वराज लेणो घणो दोरो काम है। अब जद इण रै विपरीत या बात सुणी के यो घणो सोरो है, अर थोड़ै बखत रो ही काम हो सकै, तो कुण इसो है जिको इण में सन्देह प्रगट करणै री हिम्मत राखै। जिका लोग सांवै रो सोनो बणावणियै जोगी री बात सुण नाचण लागै वै सायद बेवकूफ कोनी हुवै, पण वांरी बुद्धि रै आगै लालच या खड़्यो रैवै।

लगातार आपरै खुद रै ही काम में लाग्यो रहणैं सूं करसे रो दिमाग एक खाइड्या रो-घर, उण रा-हाथ एक खास काम रै जोग बणग्या है। जमीं जोतणो खा रै वास्ते एक सबसूं कम मेहनत रो काम है। जद ताई वो खेत में रैवै वो खेती-बाड़ी रै कोई न कोई धन्धे में जुट्यो रैवै। इण काम सूं वो जद निपटै तो फालतू रैवै, पण इण कारण आपां उण पर आळस रो दोस लगावां तो ठीक कोनी। वे बारै महीना खेती हो सकती तो करसो बिना रुके ही इण में लाग्यो रैतो। खेती जिसा खेचळ रा कामां मे एक कुदरती दोस यो रैवे के इण में दिमाग रो कोई काम नहीं रहणैं सूं वो भूंठो हो जावै। पण काम मे लाग्योड़ै दिमाग सूं ही आदमी एक ढर्रे री आदत सूं दूजै ढग री आदत धार सकै। जियां रेल री लीकां पर चालण वाळी ट्रामकार आपरो रस्तो तुरन्त नहीं बदल सके, वाही हालत खेती जिसा कामां में हाथ रो काम करणैं सूं हुवै। जमीं जोतणा वाळो जे चरखो कातणो सुरू कर देवै तो उण रो दिमाग भी लीक सूं उतर जावै। थोड़ा दिनां ताईं वो घींसा-पुरड़ो मले ही कर लेवो, पण इण मे बणखरी ताकत अर मेहनत बेकार जावै।

म्हारे प्रदेस रा कम सूं कम दो जिलां रा करसां सूं तो म्हारी घणी जाण पिछाण है, अर मैं म्हारै अनुभव सूं या बात जाणूं के आदतां रा बन्धण वां रै खातर घणा करड़ा है। इणां मे सूं एक जिलै मे तो चावळ री ही खेती होवै अर करसां नैं आपरी एकमात्र फसल उगाणैं खातर करड़ी मेहनत करणी पड़ै। आपरै फालतू वखत में आपरा घरां रै आस-पास वै हरया साग जरूर उगा सकै हा। मैं वांनैं इण काम री हिम्मत बन्धाणैं री घणी चेष्टा करी, पण पार को पड़ी नीं। धान री खेती में जिका आदमी आपरी मरजी सूं पसीनो बहावता हा वै साग-सब्जी उगाणैं खातर थोड़ो भी मेहनत कोनी करणो चावै हा। दूजा जिलां में करसा बरस भर चावळ, सण, ऊख, धरसूं अर दूजी फसलां मे जुट्या रैवै। पण कई खेत जिकां मे ये फसलां नहीं उगाई जा सकै बंजड पड़्या रैवै अर इण फालतू जमीं रो भो लगाण तो देणो ही पड़ै। इण जगां ही देसरा दूजा भागां रा करसा आवै, अर बंजड जमीं नैं पट्टै पर लेकर उण बाळू रेत में अनेक भांत रा तरबूज उपजा लेवै अर खूब मुनाफो कमार वापा घरां जावै। सण उपजावणियै करसं नैं तो कोई भी हालत में आळसी नहीं कह सको। मनैं बतायो गयो है के दुनियां में दूजी कई इसी जगावां है जठै सण उपजायो जा सकै, पण अठै रा करसा इण खेती री मेहनत सू घबरावै। बगाल नैं सण रो एकाधिकार है इण बात रो जस अठै रा करसां री मेहनत नैं भी जितणो ही है जितणो उठै री जमीं नैं। पण फेर भी सण उपजावण री करड़ी मेहनत करणवाळा ऐ करसा, सालूंसाल तरबूज उगार मुनाफो कमावणियां नैं देखता हुयां भी खुद उण बालू रेत में तरबूज नहीं उगा सकै, क्यूंके इण सूं वांनै उण रस्ते पर चालणो पड़ै जिण पर वै कदे चाल्या कोनी।

जिको समस्या आपां मैं सुळझाणी है वा या है के लोगां रै दिमाग नैं पूनै रस्तै सूं निकाळ'र नयै रस्तै पर लावां। मनैं यो विसवास कोनी के कोई नीचो सो वारलो तरीको बणाणै सूं कोई फायदो होसी। दिमाग बदळणो ही इण समस्या रो इलाज है

'हिन्दू अर मुसलमान एक हो जावो' यो हुकम निकालणो घणो ही आसान है। आग्याकारी हिन्दू सायद इण हुकम सूं खिलाफत आन्दोलन में भेळा हो जावै-अर यो काम आसान भी है। वै आपरा कुछ धार्मिक लाभ भी मुसळमानां नैं भायद दे देवै। पण असल रोग तो वै आंधला अन्धविसवास है जिका दोनां न्यारा-न्यारा कर राख्या है। इण मामलै री रग बठै ही है। हिन्दू खातर तो मुसळमान अपवित्र है अर मुसळमान खातर हिन्दू काफिर। दोनूं ही स्वराज री तो घणी ही चावना करै पण इण भूत सूं पिंडो नहीं छुडा सकै। मैं एक अंग्रेजी ढंग सूं रैवणियै हिन्दू नैं जाणतो हो जिको यूरोप रै खाणै रो घणो सोखीन हो। वो मोअन री हर तैयारी नैं चाव सूं खातो, पण कइतो के होटल में मुसळमान रसोयां रा रांध्योड़ा भात उण रै होठां ही कोनी चढता। जिको अन्धविसवास बावळां रै आडै आतो, वो ही आपस रा चोखा सम्बन्धां रै आडो भी आवै। धार्मिक आदेसां सूं दिमाग रै जिको सुभाव बणग्यो वो जात-पांत री भावनावां री जुगां पुराणी गांठ है, जिको वारली भेळता सूं नहीं टूट सकै, वा चाहे खिलाफत आन्दोलन रै जरियै, अर चाहे मोकै रै गठबन्धणां रै आधार पर बणाई जावै।

इण मांतरी समस्या आंधली थिरता रै कारण सुळझणी दोरी है। इण री जड़ां आपणा दिमागां में घणी ऊंडी गयोड़ी है। अब वानैं उखाड़ फैंकणै रै कोई भी प्रस्ताव रो आपां डटकर विरोध करां। इण वास्तै वारलो कोई आसान तरीको बरदान सो लखावै। जिको आदमी ढर्रै पर चाल'र रोजी नहीं कमाणी चावै, उण नैं रात फाड़'र लखपती बणणै खातर सब कुछ दाव पर लगा देणै रो मोटो खतरो उठाणो पड़ै। जे आपणा देसवासी या बात मानैं के स्वराज लेवण सारू चरखो ही सबसूं चोखो उपाव है तो या भी मानणो पड़सी के वां रै विचार में स्वराज एक ऊपर लो लाभ है। इण कारण ही जद आपणै सुभाव अर समाज रा रीत-रिवाजां री उण कमियां नैं जिकी देस री बडोतरी मे असली बाधावां है, छिपाली जावै, अर हाथ कतै सूत पर ही सारो ध्यान कर दियो जावै, तो अचरभै री बजाय आराम सो लखावै।

लो, यो विचार आपां मान लेवां के आपणा करसा आपरै फालतू बखत नैं कोई उपजाऊ धन्धै मे लगा देवै तो स्वराज री एक बाधा दूर हो जावै। फेर आपणा नेतावां नैं वै तरीका अर उपाव ढूंढणा पड़सी जिकां सूं उण फालतू बखत रो बोर्ड सूं

चोखो उपयोग हो सकै। पर या बात चोड़ कोनी दीखै काई के यो फायदो खेती रै उण रो काम करणं सूं ही चोखो हो सकै ?

मानलो मेरे गरीबी भागी । तो मेरा भलो चावणियै श्रादमी नैं, जिको मनैं सही सलाह देणो चावै, सबसूं पहलां भर सबसूं बादा या बात सोचणी पड़सी के मैं बरसां सूं साहित्य रै काम में लाग्योड़ो रैयो हूँ। म्हारो विसवासी सलाहकार इण पैमैं ई चाहे कितणो ही घिरणा करतो हुवो, पण मनैं रोजी कमाणं रो तरीको सुझावतां बखत वो इण नैं भूला नहीं सकै। वो हिसाब लगार या बता सकै के पढणवाळा छोरां रै भास-पास चाय री दूकान करणं सूं रिविये पर बारा माना फायदो हो सकै। मिनख रै स्वभाव नैं दूर मेल'र चालण वाळा इसा आंकडा सदा ही चोखा लागै। इसैं चन्धैं सूं जे म्हारैं सत्यानास मे ही मदद मिलै तो उण रो कारण यो नहीं है के म्हारा बुद्धि चाय बेच'र कमावणियां लोगां सूं कोई हालत में घटिया है, पण सही कारण तो यो है के म्हारो दिमाग भौर ही भांत रो बण्योड़ो है।

इण वास्तै, जे म्हारो सुभचिन्तक या सलाह देवै के मनैं जासूसी कहाणियां या स्कूल री किताबां री कुञ्जियां लिखणी सुरू कर देणी चाहीजै, तो या हो सकै के हालत सूं मजबूर हो'र मैं उण सलाह नैं मान लेवूं, पण वो निस्चै ही म्हारैं दन्तैं बादा चोखो धन्धो होसी। मुनाफै रो सवाल तो फेर भी सन्देह री ही चीज रहसी, पण लेखक रै वास्तै दिमाग नैं कविता सूं कहाणी-किस्सां कानी मोड़णो घणो मुसकल नहीं होणो चाहीजै।

करसै नैं जादा सम्रिद्ध भौर सुखी बणाणैं री कोसीस करतां बखत उण री बरसां सूं बण्योड़ी झोळ भर दिमाग री भादतां नैं एक साथ ही परै कर देणो सम्भव कोनी। मैं जियां भापनैं बताई, जिका भादमी भापरै दिमाग नैं काम में नहीं लेवै, वांरी भादतां इसी थिर हो जावै के वै थोड़ो सो भी हेरफेर सह नहीं सकै। जिकी योजना मे जरूरत सूं ज्यादा खींचणं सूं मनोविग्यान रै तत्व नैं भुला दियो जावै तो उण सूं मनोविग्यान में तो कोई फरक कोनी पड़ै, पण योजना नैं ही नुकसाण पूंचै।

दूजा सैतीसड़ देसां में खेती रा तरीकां में सुधार करणं री कोसीस घणी कामयाब होती भारी है। विग्यान री मदद सूं बठै जमीं भापणैं देस सूं दूणो भर केई-केई चौगुणो निपजावै। ग्यान रो मारग सरल तो कोनी पण यो ही एक साचो मारग है। करसै नैं भापरो सारी ताकत भापरै धन्धै में ही लगा देणं री बात कहणं री बजाय चाखो कमाणं री बात कहणी, भापर कमजोरी है। भापां उण नैं

पाळमी होएं रा दोम देवां पण जिमी समाह मावां देवां वा उल्टी मापरी दिमाग रै पाळस री बात करै ।

माज ताई तो मैं मा मान'र चाल्यो हूं के हाथ सूं कात्योड़े सूत मर उण सूं बण्योड़ा कपड़ा जे घणी तादाद में बणाया जावै तो काम करणियां नैं पीसै टकै रो ज्यादा फायदो मिलै। मा सांचो म्हारी एक धारणा है। जिका लोग इसी बात नैं पोसी तरियां जाणै वै इण में घणो सन्देह करै । म्हारै जिसा गैरजाणकार लोगां खातर तो मा ही ज्यादा भली बात है के इण बहस में नहीं पड़ै। म्हारी सिकायत मा है के स्वराज मर चरखै रै बीच री गड़बड़ सूं देस में खुद स्वराज रै बारै में ही भ्रम सड़्यो होरयो है।

देस रै कल्याण सूं भापणो काई मतळब है इण बात री एक साफ मर मोटी तसबीर सूं मापणी खुद री योग्यतावां रो हा बढाव रुक जासी। दिमाग सूं जितो कम काम मापां लेस्यां उतणो ही दिमाग माळसी बणसी। देस री बढोतरी रै काम में चरखै नैं पैलपोत री जगां देणो मापणी बुद्धि रो बेइज्जती करणी है। देस रै कल्याण री मांख्यां मागै चोड़ै दीसती मोटी मूरत ही लोगां री माछी सूं माछी भावना मर बुद्धि सूं पूरयोड़ी ताकत रा बाहड़ा खींचणै में समरथ होसी। जे इण मूरत नैं मापां न्यारही सी बणा लेवां तो मापणी कोसीसां भी माड़ी ही रहसी। दुनियां रा जिका बड़ा मिनख मापरै देसां मर मिनखपणै खातर करड़ै सूं करड़ा त्याग करया है, वांरै मनां में एक मोटी मर जागती जोत रो वासो रह्यो है। मातमत्याग रा इसा कामां साऊ उण महान जोत री प्रेरणा चाईजै, जिकी सूत रा ढिगला सूं सायद कोनी पैदा करी जा सकै। हिसाबी दिमागां सूं सोच'र मांड्योड़ी भाकड़ा री पगता, उण मोटै बळ नैं नहीं जगा सकै जिकै सूं मादमी बाधावां मर मसफळतावां री परवा करयां बिना कोई भी संकट मर खुद मौत खातर भी त्यार हो जावै।

टावर बोलणो राजी-राजी यूं सीख लेवै क्यूं के वो मापरै मां-बाप री बोली में भाषा रो पहरो रात दिन देखतो रहै। भलो भांत न समझतां हुयां भी वो उण पहरै री पूर्णता सूं घणो लुभायोड़ो रवै मर पूरै कोड सूं राजी-राजी उण री नकल करै। जे इण लुभावणी बोली री जगां टावर खातर खाली व्याकरण ही होतो तो वां मापरी मात भाषा में कोई रुचि कोनी लेतो मर डण्डै री मार सूं ही उण नैं सीखणै साऊ मजबूर करयो जातो। मर इण काम में बखत भी घणो ज्यादा लागतो।

इण कारण सूं ही, मैं सोचूं हूं, के जे मापां देस नैं चावणी स्वराज रै भगड़ै में गेरणो चावां तो मापां नैं देस रै सामैं स्वराज री पूरी तसवीर राखणी चाईजै, उण री खाली एक छोटो टुकड़ो ही नहीं। मा कोई जरूरी बात कोनी के मा

तसवीर मोटी-सारी ही हूं; पण या पूरी अर असली तो होणी ही चाईजं। सारा चौतरफी आपरं विकास री हर अोस्था में सगळा अंगां सूं पूर्ण हुवं। दूध चूंघतं टाबर रै भी सारा ही अंग हुवं। या नहीं के सुरूआत में खाली अंगूठो हुवै, तिण सूं धीरै-धीरै टांग वर्णं अर १८-२० बरसां में जातो पूरो मिनख सरीर बणं। टाबर में भी पूरो मोट्यार जवान चोड़ै दीखं अर यो ही कारण है के उण नैं देख आपां राजी हुवां अर उण खुसी में ही मां-बाप उण नैं मोट्यार जवान बणानैं मे मदद देवं अर राजी-राजी सारा दुख झेलै। जे खाली एक अंग नैं ही बरसां ताईं पालणें रो बन्धण होतो तो उण नैं मिनख रूप बणानैं ताईं पालणें रो भार सहणो असम्भव होतो।

जे स्वराज खाली हाथ कतै सूत री सकल में ही आपणैं कनै आवं तो उण नैं सहणो भी बिना ही मुसकल होसी। या तो मानणं री बात है के महात्मा गांधी जिसा आदमी, जिका री व्यक्तिगत महानता में घणा लोगां रो बिसवास है, थोडा दिनां खातर कुछ लोगां नैं इसी प्रेरणाहीण बात नैं मानणैं में राजी कर लेवै। पण इण में बात रो अन्त वांरो हुकम मानणें में ही है। पण मनैं तो या दीखं के इसे दिमाग सूं स्वराज लेवण मे कोई मदद कोनी मिलै।

म्हारै बिसवास मे या बात घणी जरूरी है के सारे देस में इसा केन्द्र कायम होणा चाईजे जठै स्वराज रो पूरी जिम्मेवारी मानी जावै, खाली हाथ सूं कातणोडै सूत री बात ही नहीं। लोगां रै कल्याण में अनेक तत्वां रो मेळ है, वां में सूं एक नैं ही लेणं सूं ज्यादा भलो नीं व्है सकै। तन्दुरस्ती अर हसी-खुशी अं दोनूं सरीर अर दिमाग री क्रियावां है जिका रै मेळ सूं पूरी तसवीर बणं। इण पूरी तसवीर नैं ही आपां आख्यां रै सामैं राखणी चावां। उपदेशां सूं भी ज्यादा सीख आपां नैं इण सूं ही मिल सकै। देस रा घणा भागां में अनेक भांत रो ओछूं अगायोड़ी जिन्दगियां रा नमूना आपां रै सामनैं रैणा चाईजं। नहीं तो खाली चरखो घुमाणैं सूं अर सूत कातणैं, अर गम्भीर चरचा करणैं सूं ही आपां स्वराज नैं न तो पूरी तरां समझ सकस्यां अर न लोगां नैं बता ही सकस्यां। देस रै कोई कूणैं में आखं भारत री एक असली अर ठोस सकल सबसूं पैलां बणाई जाणी चाईजै, अर जद ही सीधैं अनुभव सूं आपां आतम निश्चय री कीमत समझणी सुरू कर सकां हां। जे भारत रै एक गांव रा लोग भी आपरै हाथां, गांव रो नव-निर्माण कर लेवं तो समस्या नैं सुळझाणैं री दिसा में पहलो लांबो डग भरयो मान लेवां।

भारत नैं आज जिण अनेक भांत रै निर्माणकारी श्रम री जरूरत है, उण में आपणी सारी ताकत नैं ज्यादा सूं ज्यादा पचणो पड़सी। एक ही ठोड़ पुराणियां

ग्यारा ग्यारा गैमों पर लागणवाळी उण ताकत सूं आपो अपणें आप नैं ही पूरस्यो। यो काम आपणें चौगिरद घणो नेड़ो ही शुरू होर धीरैं-धीरैं दूर फैलणो चाईजै। बै आपों मुळपोत रैं इण छोटैं सै काम सूं घृणा करता हुवों तो आपों नैं गीता रैं इण उपदेश नैं याद करणो चाईजै —

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ।

धरम रो थोड़ो सो धरम भी घणैं बडैं डर सूं आपणी रक्षा करैं। इण नैं यूं भी कह सकां के साच री ताकत उण री लम्बाई-चौड़ाई में नहीं, पण उण री सचाई में ही है।

इसा ठोस सकल में सहकारी आत्म-निर्णय री भावना ईं ही जिण सूं हाल घर गवं रा भीतरी अनुभव हुवैं, घर या ही स्वराज री पक्की नींव रो काम देसी। मांय घर बारैं इण भावना री कमी ही भोजन, स्वास्थ्य, सिक्षा, ज्ञान घर आनन्द रा आपणा अभावों री जड़ है। या बात सोचणी के भावना रा इण गरीबी में भी स्वराज मिल सकसी, घणी बेहूदी बात है।

या कहणो भी साचो बात कोनी के कताई निर्माणकारी है। काठ रो चरखो घुमाणैं सूं तो मिनख उण रैं साथ ही जुड़ जावैं घर खाली मशीन बण जावैं। बिन दिमाग रो मशीन अपणें आप ताईं ही सीमित है, उण सूं आगैं यो कुछ भी नहीं जाणैं। चरखो चलातैं आदमी री भी या ही हालत हुवैं। बो जिको तागो कातैं उण सूं मिनखां रा सम्बन्ध नहीं जुड़ सकैं। बो आपरैं पाड़ोसियां री भी जाणकारी करणो जरूरी कोनी समझैं। रेसम रैं कीड़ं री ज्यूं बो आपरा सारा काम खुद में ही केन्द्रित कर लेवैं। जिको आदमी खाली मशीन बण जावैं, उण नैं एकलो, निखालो घर साथ बिहूणो रहणो पड़ैं। जद कोई कांग्रेसी कताई में लाग्यो रैवैं तो बो देस खातर आर्थिक सुराज रा सपना भी सागै-सागै ले सकैं। पण इऊै सुपनैं खातर कोई न कोई दूजी प्रेरणा जरूर रहणी चाईजै।

दूजै काना जिको मिनख आपरैं गांव नैं कोई महामारी सूं बचाणैं में लाग्योड़ो है, बो एकलो होतां हुयां भी हर कदम पर अपणें आप नैं सारैं समाज में फैला देवैं। समान हित रैं आप रैं काम में बो सारैं गांव रो अनुभव अपणें आप में करैं। उण रो उद्देश्य घणैं आनन्द रो घर निर्माण रो है, जिण में स्वराज रैं झगड़ै री सारी मुळमात है। जद दूजा लोग उण रैं भेळा हो जावैं तो इण रो मतळब है के बोत पुनर्निर्माण घर पूर्णता रैं रस्तैं पर पाल पड़यो है। इण रो ही नाम है स्वराज, जिण नैं लम्ब ईं-चौड़ाई सूं नहीं, सचाई सूं नाप्यो जाणो चाईजै।

समूचै भारत में स्वराज री सुरूग्रात गांव में होसी जद लोग एक संगठित समाज रै रूप में ग्राप रै स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्राथिक ग्रर ग्रामोद-प्रमोद रै जीवण में सुधार करणै सारू जुट जासी। यो स्वराज ही ग्रपणै ग्राप री ताकत सूं ग्रागै बढसी जिको इण रै ही प्राणवान ग्रंगा रै विकास री पद्धति में छिप्योड़ी है, परखै रै निष्प्राण चक्करां में नहीं।

१६२५

मैं मेरै वा नैं प्यार कर सकूं क्यूं के वो ही उठानै न मानणै री छूट देवै।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कवि री पाठसाळा

जिका सवाल मनैं लोग अक्सर पूछै वांसू में यो अनुभव करूं के साथ पाठसाळा खोलणै बाबत म्हासूं माफी मंगवाणी चावै अर जिकी खातांई मैं मैं मांग भी ली है। या बात मान लेणी चाईजै के रेसम कातणै वाळो कीड़ो अर हवा में उडणैं वाळी तितली, ऐ दोनूं जीवण री इसी दो न्यारी-न्यारी स्थितियां रो प्रतिनिधित्व करै, जिकी एक दूसरै रै विपरीत है। कुदरत रै हिसाब विभाग में कठैन कठैं रेसम रै कीड़ै रा रिपिया उणरै काम मुजब जमा हुयोड़ा दीखैं। पण तितली तो गैर जिम्मेवार है। इणरो जे कोई महत्व है तो उणरो न मोल है और न फायदो ही, अर वो भी इणरी नाचती पांखां पर आसानी सूं ढोयो जा सकै। सायद सूरज री रोसणी में रंगां री या राणी फिरां रो मन बहलावै, पण हिसाब री बहियां सूं इण रो कोई सम्बन्ध कोनी अर बेकार री महान कळा पर इणरो पूरो कावू है।

कवि री तुलना भी उण सुरंग तितली सूं करी जा सकै। वो भी निरमाण रा ऊजळा रंगां नै छन्दां में उतारणैं री कोसीस करै। जद वो कर्तव्य में अपणं आपनै कैद क्यूं करणो चावै, वो उण लोगां रै आगै हिसाब रो देणदार क्यूं बणनो चावै जिका उणरै उत्पादन नैं मुनाफै रै पीसा सूं आंकैं।

म्हारै विचार में कवि रो जवाब यो होसी के जद सरदियां रै तावड़ै रै एक दिन सांत सुन्दरता सूं भरी डाळियां वाळा साल रा लांबा सीधा रूंखां री सुहावणी छायां में थोड़ा टाबरां नैं भेळा करया तो वो एक इसी कविता लिखणी सुरू करी जिण में शब्दां रो उपयोग कोनी हो।

मनोविज्ञान री छाणबीन रा इण आत्मचेतना रा दिनां में चतर लोग कुचळथोड़ो आजादी री कोई भूली-बिसरी पडत में अथवा दबायोड़ै स्वानुभव री लगातार चिड़चिड़ाट में कविता रो गुप्त झरणो ढूंढ निकाळयो है। इण विमान में तो वे साफ ही सही दीखै। बरसां पहली रै म्हारै टाबरपणैं री छाया सुरूपोत में इण पर मडराई। दूजा टाबरां रै जियां मैं जीवण री .या कोसीस करी अर आपरै खोगईं, सुरग नैं इसा तरबां सूं बणाणैं री कोसास करी जिणां में पीढ़ियां रो अभाव, घरथ्योड़ा नाप-तोल या निश्चित मोल कोनी हो।

इण बात सूं मनैं जूनैं भारत रै कवि काळीदास री बात याद आवै।

कालीदास आपरी अलग-भोमरो कोई सा'न-प्रमाण म.परं ग्रन्थां में कोनी छोड्यो अर इण बाबत बडै मत-भेद री घणी गुन्जायस है। इण बारै में मैं विद्वता री दम कोई करू पण मनै याद है मैं कठै-या बात पढी के वांरो जलम काश्मीर री धरती में हुयो। जद सू वांरी जलमभोम रै बाबत छपणै वाळा विवाद पढणा मैं छोड़ दिया, क्यूंके मनै डर है के कोई विद्वान री दूजो मत पढ'र म्हारी मान्यता बदळ न जावै। कुछ भी हो, या एक फबती सी बात ही है के काळीदास रो जलम काश्मीर में हुयो अर इण बात सूं म्हारो जी बर्क क्यूं के मैं कळकत्ता में जलम्यो।

पण मनोवैज्ञानिक छाणबीण करणियां नै निरास होणै री जरूरत कोनी क्यूंके उणनै मैदानां रा एक शहर में देसूं'टो दे दियो गयो, अर वांरो मेघदूत दुनरै इण सगीत सूं गूंजे जिण में मुखरा दिमा री ओळखू भरी पडी है।

या ध्यान देणै री बात है के इण काव्य मे प्रेमी री साहसी कल्पना अमर सौन्दर्य रै मुरग मे रहणै वाळी आपरी प्रेमिका रा खोज मे उण ह'र डूंगर, झरणै अर बन सूं खुशी मे लिपटी चाली जिणी पर यूं वा गुजरती गई। वा असाढ रा बळ भरया मेघां नै बधावती, अहसान भरी काळी आंख्यां वाळी गांवां री गोरड्यां नै देखती, अर बड़ रै रूंख तळै भोळा ढाळा पुरखां रै दुख-दद सूं भरी जाणी-पिछाणी प्रेम-कथा नै गार सुणातै बूढै बडेरै कनै ठहरती चाली। इण सारी कथा मे आपां या महसूस करां के आटै काळजै वाळै शहर रो कैदी एक इसी खुशी मे मतवाळो हो रह्यो है जिकी उणरी काल्पनिक यात्रा मे एक डूंगर सू दूजै डूगर ताई उणरो साथ दियो अर रस्तै रै उण हर मोड़ पर उणरी बाट देखी जठै धरती पर देसूं'टो भुगतणिया सुरगरा बिछड्या प्रेमियां री आंगळियां रा निसाण मंडयोड़ा है।

या घर जाणरी कोई शारीरिक ऊचाट कोनी ही जिकी कवि नै सतावै ही-या तो कोई घणी गहरी बात ही—आत्मा री ऊचाट। वांरा प्रायः सगळा ग्रन्थां मे उण दिनां रा राज-महला रा कठोर वातावरण रो अनुभव करां, जिण में बहुरै ठाट-बाट अर भोग विलास रै साथै-साथै एक ऊचै दरजै री सस्कृति अर घण-बधीली सभ्यता रो वातावरण भी मिलै।

राज-दरबार रो कवि खुद बनवास में रह्यो जाण पडै। बो जाणतो हो के यो बनवास उणरो ही नहीं, उण समूचै जग रो बनवास है जिण मे बो जलम्यो, उण युग री जिको धन दौलत अर सुख-सम्पत तो जरूर भेळा कर लिया पण विश्व री महानता री आपोतो खा दो। वा कुणसी भूख ही जिण मे कवितावां अर नाटकां में परणीता री वांरी अभिलासा बार-बार प्रगटी। या भूख ही तपोवन। जूनै भारत रै ऋषियां रा आश्रम। जिका लोग सस्कृत साहित्य रा भेदू है वै या बात जाणै के वे

आश्रम कोई आदिम जाति रै लोगां री बस्ती कोनी हा। वै सत्य रा खोजी हा जिण री खोज में वै पवित्रता सूं रैता, धार्मिक सम्प्रदाय बणा'र नहीं। वै सादो जीवन बिताता हा आश्रम-वैराग्य रो नहीं। वै कुंवारपणै री हिमायत कोनी करता पर इसो मिनखां रै नेड़ै रहता जिका दुनियांदारी रा धन्धा करता। वांरो उद्देश्य उपनिषद में इण भांत बतायो गयो है—

> तं सर्वं गम् सर्वतह् प्राप्या धीरा
> युक्त मनैह सर्वमेव विशन्ति

शान्त मनां रा वै लोग परमात्मा नै ओळख'र पर सब जगां उण रै साथ रै'र पूर्ण ब्रह्म में प्रवेश करै।

यो कोई त्याग रो दर्शन कोनी हो। विक्रमाजीत रै ठाट रा दिनां में उज्जैन जिसै समृद्ध शहर में रहता हुयां भी अर भौतिक चीजां सूं भाव री सुद री मोव सूं बायोड़ो मन लेकर भी काळीदास आपरै विचारां नैं तपोवन री कल्पना में आगण दियो जठै उण नैं जीवण प्रकाशन मुक्ति रा दरसण हुया।

या कोई चमार मकम करणै री बात कोनी पण एक कुदरती सोच है। आध्यात्मिक बनवास रै दुग सूं सतायोड़ो आज रै भारत रो एक कवि भी किसो ही एक दृश्य देखै है।

काळीदास रै बखत में भी लोग तपोवन रै आदर्श में पूरो विश्वास करता हा, पर इण बात में कोई सन्देह कोनी के उण जुग में भी लोगां रा इसा समाज हा जिका कुदरत रै बीचूं-बीच रहता, पण धीरै-धीरै आत्महत्या करणै वाळा सन्यासियां री ज्यूं नहीं, पण वां धीर गम्भीर विचारकां री ज्यूं, जिका जीवण रै मांयलै अर्थ नैं समझणै री कोशीश करता। काळीदास अर तपोवन रा गीत गाता सो उण रा छन्द सुणता सुणनै वाळां रै जीवै जागतै विश्वास री परस करतो। पण आज तपोवन री बात वर्तमान सूं दूर चली गई अर पुराण गाथा सी बणगी। इण वास्तै आज री कविता में या खाली साहित्यिक बात ही रहसी। एक बात और भी है के तपोवन रो विचार आज रै पम्नू जीवण में जद तांई धीरूं सूं नहीं ढाळ दियो जावै, तद तांई यो मनमोजी काम गरणा रो भ्रम ही रहसी। यो ही बड़ो कारण हो के आज रै कवि नैं आपरी रचना सांची जीवण वाळी भाषा में ढाळणी पड़ी। इण अर्थ री कथा थोड़ी विस्तार सूं बताणी पड़सी।

सभ्य आदमी आपरी साधारण जिन्दगी रैवास सूं घणो दूर आगो है। वो कोई-कोई इसो आदर्श बणायो है, जिको जड़ पकड़ भी है—वै आदर्श इसो है जिको

सहर रै छत्तै में रहणै वाळी मक्खियां री ज्यूं। आपां अक्सर देखां के आजकाल रा लोग, आज री दुनियां सूं तंग आयोड़ा दीखै है। आज री परिस्थितियां सूं विद्रोह री सी भावना वां में मालूम देवै। सामाजिक क्रान्तियां इसी घातक हिंसा सूं करी जावै जिण री जड़ में आपणो वो असन्तोष है जिको आपां मोमाख्यां रै नीरस जीवण में पावां। इण जीवण री चारदीवारी इतणी ऊंची है के आपां उण दृश्य नैं नहीं देख पावां जिको जीवण री कळा वास्तै जरूरी है। या सारो बस इण बात रो सबूत है के आदमी मोमाख्यां रै जिसै सांचै में कोनी ढळ्यो गयो, अर यो ही कारण है के जद समाज सूं ऊपर उठणै री उण री आजादी नैं आपां भुचः देवां, तो वो घोर समाज विरोधी हो जावै।

आज री आपणी घणी पेचीदा आधुनिक हालतां में मशीन री ताकतां इतणी चतुराई सूं जुटाई गई है, जिण सूं इतणो घणो सामान पैदा व्है के आदमी आपरै सुभाव अर जरूरतां रै मुजब वां में सूं चुण'र काम में भी नहीं ले पावै।

शीतोष्ण देशां में होणवाळी हरियाळी री बाढ री तरियां इसी बेहद उपज आदमी रै वास्तै कैद सी बण ज्यावै। आबो सीधो सादो है। आकाश सूं उण रो रिस्तो भी सीधो सादो है, पण पींजरो पेचीदो है अर कीमती भी। यो अपणै आप में ही समायो रैवै अर बा'र री दुनियां सूं बात नहीं करै। आज रो आदमी भी इसो ही पींजरो बणाणै में लाग्योड़ो है। वो इण री सीमावां में अपणै आप नैं सीमित राखणै में, इण रा बेजान घुमावां री अभ्यास करणै में रात दिन लाग्यो रैवे अर खुद भी उण रो एक अंग बण ज्यावै।

या बात म्हारै कुछ पाठकां नैं घणी जूनी लाग सकै। अनैं बतायो गयो है के वै लोग भौतिक चीजां री बणावटी भूल सूं लड़पो करपोड़ै जीवण रै लगातार तेज दबाव में विश्वास राखै। वांरो कहणो है के इण दबाव सूं वा ताकत अपणै आप पैदा होती अर पळती आवै जिकी सभ्यता नैं उण री अनन्त यात्रा पर हांकती रैवै। पण मैं या चरचा या बताणै वास्तै करी है के कवि एक इसै क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश क्यूं करयो जिको विशेषज्ञां अर पढाई-लिखाई री योग्यता हाळा लोगां खातर सुरक्षित है।

म्हारो जलम उण सहर में हुयो जिको उण बखत भारत रै अंग्रेजी राज री पाटथानी ही। म्हारा बडेरा ईस्ट इण्डिया कम्पनी री उपरली बढती बिरियां री दैमड़ो सहर रै सागै ही तिरता कलकत्तै आया हा। म्हारै परिवार री जीवण अंगेजा हिन्दू, मुसळमान अर अंग्रेज इण तीन संस्कृतियां सूं बणी। म्हारा दादा उण बखत

में आयो अर पोशाक, विभ्रता अर उदारता री बोळायन राणी विक्टोरिया रै बगत रै रहन-सहन रै मुजब धीरै-धीरै कटी-छटी जावण लागी। म्हारो जनम दुनियां में उण वगत हुयो जद आज री शहरां में पळी प्रगति री भावना जूनैं गांव समाज रै जीवण री गहरी हरियाळी पर विजय पाई ई ही।

म्हारै ब्याह मेर जीवण वाळी भावनां री खोजां प्राय सब कुछ कुचळ दियो ही पण फेर भी उण खण्डहरां पर कुछ पुराणी चीजां अब भी शेष ही। म्हारै टाबरपणा रै दिनां में मैं म्हारै बडा भाई सूं उण समाज री दुसमरी बात सुण्या करतो जिको प्रतिक्रिया री आवभगत करतो, दया राखतो अर जिण में सीधा-सीधा विश्वास अर जीवण रै उच्छव रो काव्य भरयो रहतो।

क्षितिज परसो चमक दमक में मैं सगळी बातां एक मिटती छाया सी ही। सबं ब्यापी तरह दो ही हा, एक तो आधुनिक शहर, जिण नैं पिच्छम रै व्यापारियां री एक कम्पनी बणायो, अर दूजी नयै जमानै री वा भावना जिकी आपणैं जीवण में समा री ही, चाहे उण नैं अणगिणत अव्यवस्थावां रो मुकाबलो करणो पड़यो। पण मनैं इण बात रो सदा अचम्मो रह्यो है के शहर रै सूखै जीवण रो ही एक मात्र दुनियांदारी रो अनुभव होणैं पर भी वनवास री कल्पना मनैं लगातार घेरया रहती।

इसो मालूम देवै के कोई आदु निवास री अर्द्ध चेतन याद-दास्त बठै म्हारा पुरखां रा मन रम्या अर अणगढ़ चट्टानां वेग सूं बहतै पाणी अर छायादार बनां री फुसफुसाट रा रहस्य खोल्या, आप री पुकार सूं लगातार म्हारै खून में उथळ-पुथळ मचा रही ही। म्हारै मायली कोई जीवित स्मृति उण खेल रै मैदान वास्तै तड़फती ही, जठै वा कदे जळ, थळ अर हवा रै अनन्त जादु सूं भरी पैलड़ी जिन्दगी में रमी ही अर तपतै सुरज रै तावड़ै सूं भरे भारतीय दोपहर में ऊचै आकाश में उडणवाळी चील रा महीन तीखो आवाज एक दिन एक एकलै बैठै छोरै नैं दूर रै गूंगै रिस्तै री पिछाण बताई। म्हारै घर रो चार दीवारी रै कनै ऊगयोड़ा थोड़ा नारेळ रा रूंख, जिका पिरथी पर हमला करणैं वाळी कोई जूनी फौज रा पकड़योड़ा कैदियां री तरियां हा, मनैं उण अमर रिस्तै री बात बताई जिको रूंखां रा मायर मिनखां सूं सदा राखती आई है। वां सूं म्हारो हिरदो जंगळ रै बुलावै पर उछळ पड़यो। इण बुलावै रो रूपवो देवण रो सोभाग मनैं मिल्यो हो जद मैं १० बरस रो हो अर देवदार रा ऊंचा रूंखां री छायां रै तळै हिमालय पर एकलो खड़यो होर जीवण री पेल-पोत अम्मी कुलीनता री गहरी शान अर उण रै मदकर तथा विनम्र अर दृढ़ साहस सूं मैं घणो प्रभावित हुयो।

जद मैं म्हारै टाबरपणं रै उण वक्त री बात सोचूं जद म्हारो मन प्रकाश घर रोशणी री एक विस्तृत भावना पर सन्तुलित हुयोड़ो तिरतो दीखतो, उण वक्त मैं यो विश्वास कोनी छोड़ सकूं के म्हारा भारतीय पुरखा मेरे प्राणां में उण दर्शन री वसीयत घणी गहरी छोड़ दी है जिको कुदरत सूं एक रस होर पूर्ण बणनै री बात कैवै। इण बात सूं आपणं मनां मे आजादी री खोज करणैं री इच्छा उपजै; मिनखां री दुनिया री आजादी नहीं, विश्व री गहराइयां में मिलण वाळी आजादी। इण बात सूं उण स्वर्गीय तत्व रै सामै माथो झुकाणैं री प्रेरणा भी हुवै जिको अगन, पाणी, पेड़ घर हर जीवती जागती चीज में मिलै। म्हारी स्कूल री थापना रो उदगम भी आजादी री भावना री उण यादगार में ही है जिकी म्हारै जनम सूं भी पैलां तक गयोड़ी दीखै।

खाली स्वाधीनता रै अर्थ में आजादी सूं कोई मतलब कोनी। पूर्ण आजादी तो विचारां री उण एक रसता में है, जिणनैं आपां ज्ञान सूं नहीं कर्म सूं अनुभव करां। ज्ञान री चीजां ग्यान रा जाणकारां सूं भौत घणो अंतरो राखै। क्यूं के ज्ञान मिनख कोनी। आजादी री दुनिया मे पूर्ण सहानुभूति सूं ही पूग्यो जा सकै

टाबर चेतना शक्ति री ताजगी रै कारण इण दुनियां सूं जल्दी घनिष्टता कर सकै। या बानैं पहलो बडी देन मिली है। इण नैं कुदरती अर सीधै-सादै रूप में स्वीकार करणी चाईजे अर तुरन्त सन्देस ग्रहन करणैं री आपरी ताकत नैं खोणी नहीं चाईजे। आपणी पूर्णता खातर आपां नैं जंगळी अर असभ्य एक साथ ही बणनो है। कुदरत सागै कुदरती अर मिनख समाज सागै मानवी बणनो चाईजै। जिकै खुद रो अनुभव मैं करयो बो उण भीड़ रै एकान्त रै कारण हो जिण रै बीच मैं शहर में रहतो बठै हर कठी मिनख ही मिनख हा पण मिनख सूं परै जिको महान कुदरत है, उण रै खातर जरा भी होड नहीं ही। शहरी जीवण रै एकान्त में 'हेबूंटी भुगतती म्हारी आत्मा, नया खितिजां री खोज में म्हारैं मांय चीख पड़ी। म्हारो हालत छन्द री उण मळगा करयोड़ो झड़ री तरियां ही जिण री दूसरी भाखर, जिण सूं इण री तुक बैठतो अर पूरो अर्थ निकळतो जाणैं स्याही फेर दी गई हो। मुक्त रहणैं री सहज ताकत जिकी दूजा टाबरां री तरियां मैं भी दुनिया में लेर आयो, जीवण री ईंट चूनें री आ व्यवस्था मशीन री सी आदतां तथा बडापण रै दकियानूसी आचार सूं रगड़ खार लगातार छीजती जारी ही।

समय पार मनैं पाठशाळा में भेज्यो गयो, पण बठै म्हारी तकलीफ दूजा टाबरां री बजाय सायद गैर मामूली तौर सूं ज्यादा ही। म्हारैं मांय रो असभ्य मिनख घणो चेतन हो अर रंग, संगीत तथा जीवण री हलचल बरसैं बो घणो

पेर्ट चालै, जियां दूर उडणनैं जाए वाळा पंछी, अगम्य प्रदेशां में वसणं वाळा इत्तोक जिनावर अर— ऊंचो जात रा जीवां रो नाम नेणं री समग्रता मैं सोनी करूं।

जीवण में प्रगति सारू मारग में बाधावां री जरूरत है। झरणैं नै कातर गतो बणाणैं वास्तै जमीं री रुकावट नहीं मिलै तो वो आपरो वेग खो देवै। लड़ाई री भावना जीवण रो प्रतिमा रो हो एक अंग है। साज नै मिला लेणं सूं संगीत रो पूरो रस लियो जा सकै। आपां नैं इण बात री खुशी होणी चाईजै के पिच्छम रै जीवण रै साज रा सगळा तार बाधावां रै मुकाबलै सूं मिलाया जा रह्या है। विश्व रै हृदय री निर्माणकारी शक्ति बाधावां नैं पूरी तरियां कदे भी दूर नहीं होवण देवै। पूर्णता रै आदर्श ताईं पूगण वास्तै ही लड़ाई री भावना महान कही जावै।

रोबिन्सन क्रूसो में कुदरत सूं मेळ री खुशी साहस री एक कांणी में प्रगट हुई है जिण में एक एकलो आदमी एकली कुदरत सूं संमुख होर उण सूं सहयोग करतो, उण रा रहस्य ढूंढतो अर उण री मदद लेवण वास्तै आपरी सगळी ताकत रो उपयोग करै। इण किताब नैं बांचणैं में मनैं जिको आनन्द आयो वो कंजूस कुदरत री बन्द मुट्ठी में सूं चीज निकालणैं री मिनख री सफलता रो गर्व अनुभव करणैं में नहीं। पण समझदारी रै ढंग सूं, कुदरत सूं समरसता राखण में ही हो। यो ही है धिरती सूं फेरा फिरण रो पिच्छम रो वीरोचित प्यार रो साहस।

मनैं याद है के कयां म्हारी जवानी में यूरोप मे बिन्डोसी सूं कलेस ताईं री रेल यात्रा में मैं चित नैं आनन्द अर अचम्भै सूं पिच्छम रै मिनखपणैं रूपी बहादुर प्रेमी री जुगां जूनी निगराणी में धन दौलत सूं जगमगातो उण महाद्वीप री धरती नैं मैं देखी। वो मिनखपणो उण धरती नैं जीती, उण नैं आपरी बणाई अर उण रै हिरदै री अमूट उदारता रा कपाट खोल्या। उण बखत मैं जाण-बूझर या मनस्या करी के पूरब री भगत आपरै मन रै एकान्त मे विश्व आत्मा रै जिण हृदय रो अन्तरावलोकन महसूस करै, उण रो नातो खेत्रा री इण भावना सूं जोड़्या जा सकै।

मनैं याद है एक दिनूगैं बंगाल रै एक गांव में एक मगतो उण वासी फूलां नैं आपरी साड़ी रै पल्लै मे भेळा कर लिया जिका मैं म्हारी मेज रै फूलदान पर सूं फैंकणैं वाळो हो। म्हारै "हिवडै रा प्यारा" इत्तो सो बोल'र मदमातै नेणां रो नजारो फैंकतो वा फूलां में आपरो मुंह छिपा लियो। इण फूलां मे जठै उण नैं आपरै प्यारै री घणो नजीक परस मिल्यो, उण रा नैण बारलै आकार री परदो चीर'र

धनतन्त रै राज ताईं पूग सकै हा। इतरी बात होता हुयां भी उण में पूजा री या सगती कोनी ही जिण सूं आमी में फळ उगै अर बबंड़ रेत में सुन्दरता रो राज हुवै। अर जिण नै विश्राम रा भोग परमात्मा री सीधी सेवा बतावै। मैं आ बात कहे हूं कोनी मानूं के पूरब अर विश्राम री दो जोड़मी भावनावां भेळी होर सात रो पूरो अनुभव नहीं करा सकै। आपणी भौतिक गरीबी अर उल्टा वक्त होता हुयां भी मैं आं दोनु आं रै मिलणै री बात धीरज सूं देखूं।

जद मैं एक इसी संस्था री बात सोचूं जठै प्यार रै जरियै ही नहीं पण सक्रिय विचारां रै व्यवहार सूं भी मिनख अर कुदरत रै सम्पूर्ण मेळ रो पहलो बडो पाठ बिना कोई बाधावां रै सीख्यो जा सकै, तो उण वक्त रोबिन्सन-क्रूसो री टापू म्हारी आंख्यां आगै आवै। आपां नै या बात ध्यान में राखणी है के प्यार अर कर्म ही वै एक मात्र जरिया है जिका सूं सम्पूर्ण जाणकारी प्राप्त करी जा सकै, क्यूं के ज्ञान रो उद्देश्य चतराई है, थोथो घमण्ड नहीं। इण भांत री संस्था सगळा लोकां वास्तै दिमाग अर अंगां नै त्यार राखणै री खाली शिक्षा ही नहीं देवै, पण जीवण अर संसार रै बीच—अनुभव सूं एक सुर कर'र वांरी समरसता रो सन्तुलन री जिण रो नाम चतराई है खोज करै। इसी जगां टाबरां खातर पैलो जरूरी पाठ सोच्यां बिना ही रचना करणां रो है। अठै तैयार माल नै दूर राख'र आपाणुकी नया काम कर गेरणै री योग्यता नै ढूंढ निकाळणै रो लगातार मोको दियो जावै। मनै या बात साफ बता देणी चाईजे के इण रो अरथ साधारण जीवण रै पाठ सूं नहीं, पण निर्माणकारी जीवण सूं है। क्यूं के जीवण घणो पेचीदो हो सकै, अर फेर भी जे इण रै बीच कोई सजीव व्यक्तित्व हुवै तो इण में निर्माण रो मेळ हो सकै अर घणी शानदार आपरी एक जगां भी हो सकै। या घणा सारा तथ्यां में खाली एक ओर भरती ही कोनी बणै, जिण सूं भीड़ भेळी करणै रो ही काम हु सकै। मैं चाहूं हूं के मैं या बात कह सकतो के म्हारी पाठशाळा में म्हे इण सुपनै नै साकार कर लियो है। म्हे तो खाली एक शुरुआत ही करी है। म्हे तो टाबरां नै एक मोको दियो है कि वे कुदरत नै प्यार करणो सीखर उण में आपरो आजादी ढूंढे। क्यूं के प्यार ही आजादी है। यो आपां नै उण घणी घणी सस्ती चीजां रो मोल आत्मा सूं चुकाणै सूं बचावै। मैं इसा मिनखां नै जाणूं जिका गरीबी रै आध्यात्मिक गुण री तारीफ कर'र आधै जीवण रै पन्थ रो प्रचार करै। जठै अभावां रो नाम ही गरीबी है बठै उण में मैं कोई खास मोल री कल्पना ही कोनी कर सकूं। उण में सचाई रो घणो ऊंडो प्रकार रै प्रति सचेतन दिमाग होणां पर ही कल्पनावां रै लोभ सूं वो दूर रह सकै। आपणै हृदय री कठोरता ही रस ग्रहण करणै री आपणी सीधी सादी ताकत नै लूट लेवै अर काठ-कबाड़ भेळो करणै रो असभ्य घमण्ड अर खर्चीली चीजां रै बेवकूफी रै बोझै री झूठो

ज्ञान में प्रार्थनें पटक देवें । पण हरख अर उन्माद री कठोरता सूं भोग विलास री कठोरता रो मुकाबलो करणो एक बुराई सूं दूसरी बुराई नें हटाणें री कोसीस बराबर है । जगळ रैं सर्व भक्षी राक्षस री जगां मदमळ रैं निर्दयी राक्षस नैं बुलाणों जिसो यो काम है ।

साहित्य रागरंग रा उत्सव अर धार्मिक उपदेश री मदद सूं मैं म्हारी पाठसाळा रा टाबरां मे कुदरत रैं वास्तै एक भावना अर प्रास पास रा मिनखां वास्तै एक चेतनता रो विकास कराणें री कोसीस करी । मैं वारैं वास्तै इण दुनियां में एक घर रो सो वातावरण तैयार करयो । रूंखां री छायां तळै खुली हवा में जिका विषय वैं सीख्या उणां में संगीत, चित्रकळा अर नाटक भी हा ।

पण इतणो ही काफी नहीं हो, अर मैं इसा मिनख अर साधन उडीकतो रह्यो जिणां नैं पाठसाळा री गतिविधियां मैं जोड़'र चरित्र निर्माण रो काम करयो जावैं । मैं विश्वम री प्रतिमा रो जरूरत महसूस करी जिकी म्हारी शिक्षा रैं आदर्श नैं असलियत री साकत देवैं अर जिकी एक व्योहारिक भलाई रो काम निश्चित रूप सूं करणो जाणें ।

बाधावां तो अणगिणत ही । अपणें आप नैं शिक्षित कहणें वाळो समाज री परम्परा मां-बाप री उम्मेदां, खुद अध्यापकां री उन्नति अर सरकारी विश्वविद्यालय रो दावो अर उण रो विधान अैं सब-जिण विचार नैं मैं पाळ राख्यो हो उण रैं घणी बुरी तरियां खिलाफ हा । दूसरा म्हे लोग देसवासियां सूं कोई चन्दो भी नहीं ले पाया, अर म्हारो कोष एक इसी संस्था रो पोषण करणें वास्तै भोत थोड़ो हो अठै टाबरां री गिणती कम होणा जरूरी ही ।

भाग जोग सूं म्हारैं एक अंग्रेज दोस्त सूं मदद मिली जिको विश्व भारती सूं जुड़ियोड़ै ग्रामीण संगठन नैं बणाणें अर चलाणें में खास भाग लियो । म्हारी तरियां उण रो भी इसी शिक्षा में विश्वास है जिकी मिनख रैं असलीपणें रो सांगोपांग पूर्णता पर बळ देवैं अर शरीर अर दिमाग री सगळी योग्यतावां रो साधारण अंतेजना री बहुत समझैं । इण विचार नैं काम मे लेणें री आजादी वास्तै म्हैं म्हारो काम उण थोड़ा सा टाबरां सूं सुरू करयो जिका या तो अनाथ हा या जिणां रा मां-बाप इतणा गरीब है के वैं कोई भांत री पाठसाळा में नहीं भेज सकै हा ।

थोड़ा ही दिना में म्हानें आ बात मालूम ही के जिका विभाग निर्मा त रैं काम में सक्रिय रूप सूं लाग्या रैवैं वा मैं ताकत री विकास पूरी सूं हुवैं जिण सूं ज्ञान री खोज री रस्तो वैं उछाह सूं ढूंढे अर प्रतिदिन काम करणें तक री तुरन्ती

ले लेवै। इण टाबरां रा दिमाग इतना सचेत होगया के एक सीधी सादी सी बात सूं वै अंग्रेजी भाषा सीखणें रो फायदो तुरन्त समझग्या, जिकी वांरी पढ़ाई में शामिल नहीं ही। यो विचार एक दिन वांनें उण वखत आयो जद वै कुछ कागद डाक में गेर रिया हा। डाक बाबू लिफाफा पर पैला सूं बणाया मैं लिख्योड़ा ठिकाणा रै अलावा अंग्रेजी में भी ठिकाणा लिख दिया हा। वै तुरन्त आपरै गुरू कनै गया अर ज्यारै घटे में अंग्रेजी सिखाणें री अरज वांसें करी इतणी जल्दी में करी गई अरज खातर वांनै कदे अफसोस कोनी हुयो। फेर भी आज भी मनैं आ बात याद है के छोटे थकां म्हारै दिमाग में उण वखत किसा सूनो विचार आया करता जद मैं म्हारै घर कानी आती गळी रै मोड पर मनैं अंग्रेजी पढ़ाणियै गुरू नै देखतो।

इण टाबरां खातर छुट्टी बेकार ही। पढ़ाई मुश्कल होता हुयां भी वां खातर कोई काम रै रूप में नहीं ही—क्यूं के वै लोग आपरी रसोई सबजी रो बाग, बुणाई अर फुटकर मरम्मत रा कामां में छुट्टी मणावणें रो सो रस ले लेता।

वां रो स्कूल रो काम वां रै रात दिन रै साधारण काम सूं न्यारो नहीं करयो गयो है अर रात दिन री चालू जिन्दगी रो ही एक अंग बण्योड़ो है। इण कारण ही वो अपणें आप आसानी सूं आगै बढतो जावै। म्हारै टाबरा मे सूं घणखरा जद वे पैलपोत पाठशाला में आया तो शरीर अर दिमाग दो दूंवा सूं कमजोर हा। मलेरिया अर दूजी शीतोषण प्रदेश री बीमारियां सूं जिको वांनै घातक व सौगत रै रूप में मिलो ही, वै घणा सतायोड़ा हा। वै आपरै साथ एक इसी दिमागी हट लाया हा जिको सहयो नहीं जा सकै हो। वां में सूं जिका ब्राह्मण हा वै घणा घमंडा हा अर जिका ब्राह्मण कोनी हा वै आपरै अपमान में ही डूबता जाणें रै कारण घणा दया रा पात्र हा। वै लोग सगळां रै फायदे रो इसो कोई काम करणें सूं घृणा करता जिण सूं वां रै अलावा दूजा लोगां नै थोड़ो भी फायदो पूग सकै। जद वांनै इसो कोई काम वां रै खुद रै लाभ रो ही करणें री बात कही जाती, जिको वांरै विचार मे कोई तनखादार नौकर नै करणो चाहजै तो वै उदासीन हो ज्याता। दान दक्षिणा पर पळण सूं वांनै कोई एतराज कोनी हो पण अपणें आपरी मदद करवा मे वा नै सरम आती।

आ बात सोची जा सकै हो के ओ ओछोपण अर नैतिक आळस वां रै सुभाव में ठेठ सूं हो हो। पण थोड़ा ही दिनां में ऐ सगळो बातां बदळगी। त्याग अर हमजोळीपणें री भावना जिकी इण टाबरां में विकसी है वा उण टाबरा में भी मौत बिरली है जिकां नैं ज्यादा चोखा मौका मिलै। सक्रिय अर स्वस्थ जीवण सूं ही इण टाबरां री सारी अच्छाई सामनैं आई अर अपवित्रतावां रो भेळो हुयोड़ो कूड़ो

भाड़'र फैंक दियो गयो ।. जिको काम रात दिन वैं करता उण सूं इसी समस्यावां खड़ी हुई जिणरो हल निकाळणैं री जरूरत पड़ी । तथ्यां रै तर्क सूं वां नैं जीवण मैं नैतिक सिद्धांतां नैं नहीं समझ पावै तो वांनैं घणो अचम्भो हुवै । वै लोग रसोई बणाणैं, बुणनैं, बागवानी करणैं, आपरैं क्याड़ मेर री जगां सुधारणैं अर दूजा टाबरां री सेवा करणैं में, आ भी घणी बार गुपचुप रूप सूं या सोच'र के या लोगां नैं बुरो नहीं मालूम दे- वैं घणो रस लैं । आज सहभोजी रसोई रा सदस्य जो कुछ वांनैं दियो जावै उण सु ज्यादा लेणैं री मांग करैं । पण अै टाबर राजी खुसी आपरी जरूरतां नैं सीधी-सादी बणाली । वां में एक जुम्मेवारी री भावना रो विकास हुयो है । कमियां पर बड़बड़ाणैं री बजाय वैं अपणैं आप सोच'र वांरो प्रबन्ध करैं । भोजन मे सुधार करणैं वास्तै साग-सब्जी री क्यारियां पर वांनैं अतिरिक्त मेहनत में स्वाद लेणो चाईजै । जे इण मेहनत रो नतीजो माड़ो भी रैवै तो कोई बात नहीं, बपू के इण कामां रो मोल, बजार रै चालू मोल सूं नहीं आंकयो जा सकै (म्हारै इण वर्णन नैं कळात्मक बणाणैं वास्तै मैं नहीं चाहूं हूं के मैं म्हारी योजना मैं इसी दुर्घटना री कोई बात कह सकतो, इसैं अणचीत्यै बेमेळ हरकरी बात जिको म्हारी व्यवस्था रैं सुडोळ ढांचै नैं खतम करणैं री कोसीस करै ।

पण मनैं या बात मानणी पड़ै इसी कोई घटना घटी कोनी । म्हारा वातावरण मे इसी सुस्त शान्ति रो कारण सायद म्हारै भोळेपण प्रदेस री आबहवा ही है । जिणसू या अपाड़ ताकत नहीं पैदा हुवै जिको चीजां नैं उथळ-पुथळ करणै रो कोड रासैं । सायद म्हे आ उम्मेद करणै मे घणी देर कोनी करी के म्हारो यो अनुभव सीधा-सादा टाबरा वास्तै सुरग रो सो आदर्श नहीं बणनैं जारियो है । म्हारो विस्वास है के कुछ इसी पेचीदा समस्यावां जल्दी ही खड़ी होसी जिकी म्हारै आदर्शं नैं, म्हारै विस्वास नैं अर म्हारै सिद्धान्तां नैं ललकारसी ।

इण बीच मैं ही यो-अनुभव कर'र के जीवण री पकरती सूं दिमाग अर सरीर रो ताळमेळ बिठाणैं रो रोजाना रो अभ्यास इण टाबरां नैं बौद्धिक रूप सूं सचेत बणा दियो है, म्हे इण योजना नैं म्हारी पाठशाळा री प्राथमिक कक्षावां में भी लागू करणैं री हिम्मत करली है । इण कक्षावां रा बाळक एक इसैं आदर्श गुरु रो काम करता हुया जिको यो विस्वास करै के पढ़ाणो भी एक प्रकार रो सीखणो ही है, आपरी पंची भू पढी बणा'र खतम करसी है जिणरो वांनैं मोन बुगो हरिदो थपड़ है । वैं चोईसाईं यो सोचणो सुरू कर दियो है के सिक्षा जीवन रै नाहूक पूणं कामा रो स्थाई अंग है । या वांरी धारणा रै असमधान रोग मैं ठीक बणनैं रा धकाउाळा रै दुखदायी उपचार रो हरियो कोनी है, पण तन्दुरस्ती री ही एक साथ है अर वा रै दिमाग री चेतनता रो कुदरती प्रगट रूप है । इण बांत रै म्हारै

सगठन रै एक छोटै गे ढूगां में औवण री नैसी ऊपर उठती पौध नै माकडो देखरी रो घणो मोटो सो भाग प्रचार-प्रचार पायो है। म्हारो विचार है के इण बेत नै बढण दी जावै पर कोई मोटै नाम रा लाल बिल्लो इणरै नहीं लगायो जावै। जद तांई वठी जावै जदतांई या उण बेबान सडै नै पूरी तरियां नहीं उठ लेवै किण रै कोई कुदरती फूल या फळ नहीं लागै पण परीक्षा री सफलता रो फळो फलै फूलै।

खतम करणै सूं पैलां म्हूं म्हारी शिक्षा रै कार्यक्रम री एक घणी महत्वपूर्ण बात रै बारै में थोड़ा घोर सब्द कह देणा चाईजै।

टाबरां रै थांरा मढै चेतन सजीव दिमाग हुवै, जिका रूखा रो तरियां आपरै च्यारूंमेर रै वातावरण सूं भोजन ग्रहण करणै री ताकत राखै। वांरै वास्तै वातावरण नियमां पर तरीका, औजार, पाठ्य पुस्तकां पर पाठां रा सगळां सूं भौत घणो महत्वपूर्ण है। धरती रो ढेर, सारो तरव धूळ पर पाणी में रैवै, पण मैं जे मलकारां री भाषा नैं काम में लेवूं तो या बात कैवूं के उणनै आपरै वातावरण सूं प्रेरणा लेवै। या प्रेरणा रंग पर सुगन्ध तथा संगीत पर गति में उणरा अनुभवां सूं उपजै. मिनख आपरै समाज में आपरै च्यारूंमेर सस्कृति रो एक छितरायोड़ वातावरण राखै। इण सूं उणरो दिमाग उणरै जातीय-उत्तराधिकार पर परम्परा सूं आवणवाळा प्रभावां री धार रै प्रति सचेत न रैवै। इण सूं उणनै जुगां जुग री एकाग्र चतराई नैं मणजाण रूप में धारण करणै में मदद मिलै। पण आपण शिक्षा सम्बन्धी सघटणा में आपां खोद'र माल निकालणिया खानां रा मजदूरां री तरियां काम करां, पर वां जमी जोतणियां रो तरां नहीं जिण रो काम कुदरत रै सागै पूरो मेळ खावै।

मैं म्हारी पाठसाला मे एक वातावरण बणाणै री कोशीस करी—यो ही मेरो खास काम हो। शिक्षा संस्थावां में आपणी योग्यतावां रो पोसण इण वास्तै होणो चाईजै जिण सूं आपणा दिमागां नैं आजादी मिलै, आपणी कल्पना कला रो दुनियां रै लायक बणै, अर आपणी सहानुभूति मिनखां रै मेलजोळ लारू खड़ी होवै। या आसरी बात विदेसां रो भूगोल सीखणै सूं भी ज्यादा जरूरी है।

आज रा टाबरां रो दिमाग भांत-भांत गे भासावां पर रीत रिवाजां वाळा लोगां नैं समझणै में करीब-करीब जाण-बूझ'र ही मणजाण बणा दिया जावै। इणरो नतीजो यो हुवै के आगै चाल'र वै आपरा अज्ञानता सूं एक दूजै रो नुकसान करै अर जुग रै आंधेरणै रै सबसूं बुरै रूप सूं दुख पावै। खुद ईसाई धर्म प्रचारक

भी विदेशी जातियाँ भर सभ्यतावाँ खातर घृण पैदा करणें मे मदद देवें। मगटा रै भाईचारै री हिमायत करता बखत साम्प्रदायिक घमड रै बस मे हुया वै लोग बरान भार्तियाँ रा कोमल बणाणै भ्रस्ट करणै सारू पाठसालावाँ री पाठ्य-पुस्तकाँ नै काम में लै। मैं म्हारै टाबराँ नैं इसा कुमार्गाँ सूं बचाणै री कोसीस करी है, पर इण काम में सहानुभूति सूं भरया हिरदा वाळा विद्वान रा मित्राँ री मदद, सगपूं बड़ै काम री चीज रह्यो है।

मिन्दर सूं बारै भाग'र टाबर धूळ में रमैं।
परमात्मा वारा खेल देखै भर पुजारी नै भुला देव॥

—१८२९

सहर अर गांव

मोमाखी पैलपोत आपरो छातो बणायो तो पेट भरणै वास्तै ही हो पण जद मोमाख्यां फूलां सूं शहद भेळो करणै वास्तै एक जुट हुई अर बुरा दिनां खातर उणनै भेळो कर'र राख्यो तो वांरै छातै में समाज री भावना शुरू हुई। इण काम में गणित री संख्यावां रो ही खेल नहीं है पण आपसी सेवा रो नैतिक पक्ष भी है।

इण भांत घणां लोगां रै आनन्द में जिण काम री मुळभाव व्है, उणरो अन्त घणां रै त्याग में हुवै। सगळां रो काम खुद रै काम री जगां लेवै, अर एक रै जीवण नै समाज रै जीवण में व्यापक क्षेत्र मिलै इण भांत मसलियत सूं भी ऊपर उठ'र आणै वाळै भविस्य रो अनुभव करयो जावै। आखी जिन्दगी में भी जिण कामां रो कोई नतीजो नहीं निकळै वै भी बेकार नहीं जावै। समाज एक इसी सामान्य मोम है जठै रिस्ता एक सूं दूजा ताईं अर वरतमान सूं भविस्य ताईं बंधै। मोजन रो भंडार आपरी भौतिक अवस्था नै पार कर'र आध्यात्मिक मोल ग्रहण करै अर इण भांत अन्न ब्रह्म री अनन्त सत्ता नै प्रगट करै।

आदकाळ में जद मिनख एकला घूमता हा तो हरेक आपरो भोजन री खोज में हो जिकी घणो मोघो हो। वांरो सुभाव मूं'सार, वांरो वातां लुटेरां री सी अर वांरो व्यौहार असामाजिक हो। ज्यूं-ज्यूं नदियां रै किनारै भोजन री बोटायत हुई, त्यों-त्यों समाज बण्या अर सभ्यतावां जलमी।

उपजाऊ धरती नै खोज'र सालूंसाल मिनख आगुमांनी फसलां निपजाई। वै लोग आ बात देखणी सुरू करी के न्यारा-न्यारा लोग एक दूजै सूं खोसण री कोसीस करणै रै बजाय एक दूसरै नै मदद दे'र ज्यादा फायदो उठा सकै। भोजन री समस्या सुळझणी पछै मिनख रै सुभाव में ठेठ सूं ही चली आती सामाजिक भावना नै प्रेरणा मिली। जद धरती मा रै खुणावै पर मिनख भेळा हो'र जीवण बिताणै री उण सहयोग रै जरिये वांरा न्यारा-न्यारा बीजणां नै साईबारै रो आधार मिल्यो।

ओ अनुभव हुयो के भेळा में बोरा फायदो ही नहीं है पण आनंद भी है। इण रै बारै एकला आदमी दुख अर मोत में भी चैन करै। धरती इण भांत धन

नै भोजन देवै जिण सूं आपणो आत्मा तृप्त हुवै अर आपणो मन खुस हुवै। अकास मैं दूर तांई फैली सूरज री सुनहरी रोसणी खेतां में दूरताई फैली सुनैरी फसलां मैं आपरी जोड़ पावै। इण सोभा नै देख'र मिनख आपरै खाणै री बात ही नहीं सोचै पण राग-रंग री बात भी सोचै।

धरती रै खजानै में भूख रै बन्दोबस्त सूं भी ऊपर आनन्द रो इमरत भरयो है। धन री देवी लिछमी फूटरी अर दयालू दोनूं है। फळ आपरो पोसण सगती रै रण ही नहीं, पण रूप, मिठास अर सोरम रै कारण भी आपां नै लुभावै। धरती फळ जियां फूटरा है वियां ही मिनखां रो भाईचारो भी है। एकला बैठ'र जिको अन आपां करां उण सूं पोसण मिल सकै पण भेळा बैठ'र जिको खाणो आपां यां उण में प्यार अर उदारता री भावना सिवाय हुवै। हिवड़ा रै इसै मेळ में सण ऊजळा, पुरसगारो सोवणो अर पकवान लज्जतदार लागै।

थमाव मिनख री आदमगत री उण भावना नै कुचळ देवै जिण पर माज री नींव पड़ी है। यो ही कारण है के गांवां नै धरती रै अन्न भडार री ऊी पसलणो पड़यो। मिनख रै पुनर्मेळ में ही उण री अमरता प्रगटी है, उणरो ाहित्य, उणरो संगीत, उणरी कळा अर भांत-भांत रा उणरा उच्छव साकार या है। इण कामां रै जरिये ही उणनै आपरी खुदरी गहराइयां रो मान हुयो ार आपरी खुदरी पूर्णता रो आदर्स उणनै साम्प्रत दीस्यो।

गांवां री बढोतरी रै सार्थ नगर रो विकास हुयो। बठै राजगी ताकतां न्द्रित हुई। सिपायां वास्तै गढ, व्यापारियां खातर दुकानां, ज्ञान री खोज करणियां द्यार्थियां अर गुरवां खातर कालेजां अर बारली दुनियां सूं व्यापार अर सम्बन्ध णाबण खातर केन्द्र हुया। बठै आतमा करड़ै भाटै री पेई में कैद है, जीवण कठिण । अर ताकत, ताकत सूं ही राजी रैवै। बठै हर आदमी दूजा रै कांधै चढ'र आगै ढणै री कोसीस करै। जद तांई इसी बात हृदयूं बारै नहीं हो जावै तद तांई तो णरो मोच है। जे मिनख रै व्यक्तित्व नै घणो दबायो जावै तो वो आपरै डीघ डौल री पूर्णता नै नहीं पूग सकै। जगळ रो छोटो सो पेड़ जे नीचै री घणी सारी साखावां सूं दाब दियो जावै तो बावनो ही रै जावै। दूजै कानी व्यक्ति री इच्छावां री ज्वाळामुखी लोगां रै समुदायां रो स्तर ऊंचो कर देवै। सफळतावां रो टावों भी ऊंचो हो जावै अर बरोबरी री भावना सूं ताकत रा जोर (उपज) बढा देवै। सान अर काम रै क्षेत्रां मे सदा ताजो निर्माण री भावना रैवै अर भांत-भांत रा लोगां अर देसां री संस्कृतियां रै प्रवेस सूं चतराई रो दायरो चौड़ो हुवै। पर इण भांत सहर में समाज रो दबाव ढीलो पड़ै बठै व्यक्ति रै दिमाग नै समुदाय रै

विभाग री नीची इकसार सतह सूं ऊंचो उठणै रो मौको मिलै। गंवार सब्द सगळै ही दिमाग री संकीर्णता रो दूजो नांव मान्यो जावै।

कुदरती रूप में जद समाज एक पसवाड़ै जरूरत सूं ज्यादा नहीं लुळै तो गांव अर सहर री अन्तर्क्रियावां में घणी समरसता रैवै। एक सूं भोजन तन्दुरस्ती अर भाईचारै रो भावना बंवै जिणरै बदळै में दूजै सूं धन, ज्ञान अर प्रेरणा री भेंट मिलै। जिण सभ्यता में ज्ञान रो जीवण ही प्रधान हुवै वा घणी दूर आगै नहीं जा सकै। बठै व्यक्ति रो कोई महत्व कोनी अर समाज ही सगळां पर छायोड़ो रैवै। बठै पांखां हाळै घोड़ै पर सवार देव सेनापति कार्तिकेय नहीं मिलै पण मटको सो पेट लियां हाथी रै सिर आळा गणेसजी मिलै। दूजै कानी जठै सहर रो असर अधिक हुवै बठै समाज नै भुला दियो जावै अर व्यक्ति ही सगळां सूं घणो ताकतवर हुवै। बठै सभ्यता आपणी आपरी आग में खुद जळै। इणरी भळ जितणो तेज हुवै उतणो ही इणरो कोयलो काळो हुवै अर आखरकार या राख री ढेरी बण ज्यावै। इण भांत घणी सभ्यतावां आपूं आप जळ'र खतम होगी। अभी यो बात कहणै री बखत नहीं आयो है के आज रै यूरोप री सभ्यता अपणै आप खतम होणै वाळी सभ्यता रै ढंगरी है या नहीं।

सहर एक इसो बिन्दु है जठै गतिविधियां केन्द्रित होगी है। आपणै सरीर री जीवणी-शक्तियां कई केन्द्रां पर भेळी हुयोड़ी है। जीवण री नीची किस्मां में ऐ केन्द्र इतना सगठित कोनी। विकास रै क्रम में दिमाग, फेफड़ा, हिरदो अर पेट आर अ.परा कामां में बढोतरी करै। इणांरी तुलना सहरां सूं करी जा सकै।

सहर राज रूपी सरीर री खास-खास जरूरतां नै पूरी करणै रा संगठित केन्द्र है। पुराणै बखत में इण जरूरतां नै पूरी करणै में मसीनां रो भोत मामूली हाथ हो। कला री परवा किया बिना ही चीज बणाणै रै आनन्द वास्तै ही चीजां बणाई जाती ही। आज रै जुग में मसीनां री हिंमार ही दुगणी को नी हुई है पण सामरी भूख और मुनाफै री दर भी दुगणी होगी है। यो ही कारण है के बठै समाज अर व्यक्ति रै स्वार्थ में सामञ्जस्य कोनी जिण सूं अन्त में लड़ाई झगड़ै री नोबत आवै। सहर अर गांव रा सम्बन्ध लोभ रै कारण टूटै। सहर गांवां सूं ग्रहण करणै रो एक नाळो सो होग्यो है अर गांवां नै देणै रो इणरी क्षमता खतम होगी है। सहरां री बणावटी रोसनियां चमाचम करै है। जिणरो संबध न सूरज अर न चांद-तारां सूं हो है, पण गांवां रा माटी रा दिया बुझग्या पड़या है। कारखानां री भीतियां आपरै समाज री मतिविदारक गोद में बैठया मिनखां नै हेलो मारर बुलावै। अर निरभै यों बादुदाळ रो दारो खंगठो आदतां कानी बावड़ग्यो है। वो दिन रो

व्यक्तिवाद एक नयें घोर राखस रै सै ग्राकार में जीवण में पाछो प्रवेस कर रह्यो है ।

सुरूपोत में मिनख ग्रापरी फायदै वास्तै चीजां बटोर'र भेळी करणै वास्तै गावां में एकठा हुया हा । ग्राज वै ज्यादा बडी तादाद में भेळा हुया है, पण हरेक ग्रापरै ही भडार ग्रर खुसी रो केन्द्र बणगोड़ो है । इण कारण ही पचायती नियमां री जगां पुलिस रा घणा करड़ा नियम बणग्या । भाईचारै री ठोस भावना री जगां पंचीदै ढग रा कानूनां रो कठोर दबाव पड़यो है । बठै ग्रपणै ग्रापरी खुसी रै वास्तै ही सारा काम करणा जावै बठै ग्रापां या तो ग्रपणै ग्रापरा गुलाम हां या दूजां रा, पण हर हालत मे गुलाम जरूर हां । जिण काम मे स्वेच्छा सूं त्याग री कोई गुजायस नहीं होवो भी एक बन्धन ही है । ज्यूं-ज्यूं रात दिन गिणती में बढता लोग ग्रापसी रिस्तै रै भीतरी बन्धणां रै बिना जरूरतां सूं एक दूजै रै नेड़ा ग्रावै, तो इरणां ग्रर द्वेस दिन पर दिन बढता जावै ।

ग्राज ग्रापणै सामनै जिको काम है वो है टूटयोड़ै सामाजिक जीवण नै पाछो खड़यो करणो, गाँव ग्रर सहर रै बीच रै भेद नै एकरस करणो ग्रर वर्गवाद तथा धन साधारण में ग्रर ताकत रै घमड तथा बन्धुत्व री भावना में सामन्जस्य स्थापित करणो । जिका लोग इण काम नै करणै वास्तै क्रान्ति री ग्रासरो लेवै वै सत्य नै सोरो बणाणै वास्तै उणनै कतरणै री कोसीस करै । जद वै लोग ग्रानन्द री गैल पड़ै तो त्याग नै दूर राखै, ग्रर जद त्याग कानी मुंह करै तो ग्रानन्द नै धरती सूं देसूंटो दे देवै, ग्रर मिनख रै मन नै कुचळ'र ग्रापरै वस में कर लेवै । विस्व भारती रा म्हे लोग या बात कैवां के जे सत्य ग्रापरी पूर्णता में सामै नहीं राख्यो जावै तो मिनख री प्रकृति री बेकदरी करी जावै । इण सूं ही उण में निरासा ग्रर दुखां रो प्रवेस हुवै ।

कारखानो घणी गळत चीजां रो साधन हो सकै पण वो एक इसी चीज कोनी जिण नै ग्रापा इन्कार कर सकां । मसीन भी ग्रापणी जीवणी सक्ति रो एक ग्रग है । जे हाथां सूं ग्रापां धाड़ा मारया है तो इण रो इलाज वांनै काट देणै में नहीं है । बासूं पाप नै धो देणै री जरूरत है । ग्रपणै ग्राप नै ग्रपग बणा'र तरक्की करणै री कोसीस एक डरपोकपणै री सलाह है । मिनखरी सगळी ताकतां विकास ग्रर विस्तार चावै । जूनै बखत सूं ही मिनख ग्रौजार बणाणै री कोसीस करी है । ज्यूं ही वो कुदरत रै कोई नयें रहस्य नै ढूंढ निकाळयो त्यूं ही कोई मसीन री मदद सूं वो उणनै पकड़'र ग्रापरो बणाणै री कोसीस करी । इणी तरीके सूं उणरी सभ्यता ग्रागै बढी है ।

जिण दिन मिनख हळ बणार जमीं रै उपजाऊपणै नै खैंच निकाळयो उण

जिन उणरी तरक्की रै मारग सूं एक बाधा दूर हुई इण सूं उण रै जीवन री थोत ही प्रकट नहीं हुवी, पण उण रै दिमाग री एक अंधेरो पख भी बण उठ्यो। अर जो पैसा रोज चारणैं घर करणैं नैं बणायो तो दोनूं उणरी नागोराण दकैं बारी री कोसीस ही नहीं हुई पण उण में सुन्दरता रा भावना भी बाकी जिकी उणरै जीवण री एक खास चीज बणानैं वाळी ही। आज जे अर्या आदमी री तन टक्योड़ो है बर्यां ही उणरो दिमाग भी। इण दोनूं मांग रा करवां पर ही मिनख री राज टिक्योड़ो है। जे कोई सन्यासी इण बात री वकालत करै के आदमी दुनियां रै साथ फंस्योड़ो यो व्यापार कम कर दियो जाणो चाईजै तो उण नैं आदमी रै दो हाथां पर अपराध थोपणो सुरू करणो चाईजै। अर पूरो सन्यासी जरूर या बात करै। वो आपरै हाथां नैं रात दिन ऊंचा उठाणं रो अभ्यास करणं में आपरी भुजावां नैं गळण देवै अर दुनियां रो अस्तित्व न मान'र या बात प्रगट करै के उणनैं मुक्ति मिलगी है, बस इण सूं आगै मत जावो, यां हुकम देर मिनख रै हाथां नैं रोकणो भी हाथ ऊंचा उठाणं रै इण पन्थ रै बरोबर ही है। किण नैं यो अधिकार है के वो परमात्मा री दियोड़ी मिनख री ताकतां नैं इण भांत रोक मेल'र अपंग बणावैं, अर या बात कवै के विधाता जिको काम करणं वास्तै उणनैं बुलावै बठै तांई वो नहीं जावै। आपणं कल्याण वास्तै आपां ताकत नैं काम में लेणं रा नियम बणा सकां पण इण रै विस्तार रा रास्ता आपां नैं कदे भी नहीं रोकणा चाईजै।

जूनै जमानै में मिनख जीवण री तरक्की खातर आपरै हथ-करघै नैं धनख अर बाण नैं अर पहिया दार गाडियां नैं काम में लेतो हो। इणी भांत आज रै जुग में मिनखपणं री जरूरतां मुजब आधुनिक मसीनां नैं काम में लेणी चाईजै। या साची बात है के मसीन रै कारण एक धनी आदमी हजारां सूं सेवा करावै, पण इण सूं तो याही बात साबित हुवै कि मसीन री मदद सूं एक आदमी भी, हजारां री ताकत पा सकै। इण भांत पायोड़ी ताकत थोड़ा सा मिनखां रै ठेकै री चीज नहीं बणनी चाईजै। सगळां रै भलै वास्तै इणनैं काम में ली जाणी चाईजै। मिनखां नैं न्यारा-न्यारा करण वास्तै ताकत रो भेळो होणो ठीक कोनी। इणनैं कदे भी गैर-जुम्मेवार नहीं बणन देणी चाईजै।

सभ्यता रो जनम मिनख रै दिमाग अर कुदरत री देण रै संयोग सूं हुयो है। अै दोनूं सदा साझेदारी में ही काम करता रेवै तो ठीक है। जद कदे बुद्धि री दौलत तिजोरियां में भेळी हो जावै तो भंडार छीजण लाग जावै। आं जुग रै भंडारां पर आपां घणां दिन नहीं जी सकां।

मिनख री या नई ताकत आपणां गांवां रै हिरदै में बसाणी चाईजै। यो काम नहीं करणं सूं ही जिण रस्तै मो आपां आवां गरीबी अर हार री तस्वीर हो

जावै। हर जगां अपणा देस रा लोग चिल्ला चिल्ला'र केवै—'आपां हार गया।' आपणो सूखा हिरदा, बंजड़ खेतां अर रात दिन सिलगती आपणी चितावां मूं या ही पुकार उठै—'आपां हार गया।' जे आपां उण विज्ञान पर भरोसो कर सकां जिको इण जुग में ताकत देवण वाळो है, तो अब भी आपां जीत सकां अर भी आपां जी सकां।

...धन री विसमता सूं जिको उलट फेर हुई है वा एक सीमित दायरै में ही ठीक है। कोई भी देस में जठै ढाळू पहाड़ां री कतार लगातार बाधा बणी रेवै, कोई बडी सभ्यता नहीं पनप सकै। क्यूं के आपसी सम्पर्क रै कुदरती भाव नै वै रोकै। घणो, सागे धन पर, ऐस आराम री जिन्दगी भी पहाड़ां री ही तरियां ऊंची भींतां बण'र मिनखां नै न्यारा-न्यारा करै। वै कुदरती बाधावां सूं भी ज्यादा वर्गभेद समाज में खड्यो करै।

कुछ लोगां रो यो विस्वास है के जायदाद री रीत ही मिटा देणै सूं इणरो इलाज हो जावै। पण आपां नै या याद राखणो चाईजै के जिण इच्छावां सूं निजी सम्पत्तियां खड़ी हुई है वांरी जड़ां मिनखां रै सुभाव में है। जे थारै मनै ताकत है तो थे निजी जायदाद तो मिटा सको हो पण मिनख रो सुभाव कोनी बदळ सको।

जायदाद तो आपणै व्यक्तित्व नै प्रकट करणै रो एक जरियो है। जे आपां व्यक्तित्व रै निषेधात्मक पक्ष नै देखां तो आपां नै वै सीमावां दीखै जिको मिनख नै एक दूजै सूं अलग करै। अर जद कुछ लोगां में न्यारैपणै री या भावना घणी गहरी होजावै तो आपां वांनै स्वारथी कैवां। पण स्वीकारात्मक पक्ष में वो ही एक जरियो है जिण सूं लोग एक दूसरै सूं सम्पर्क साध सकै। जे आपां या बात सोच'र आपणै व्यक्तित्व नै मारणै री कोसीस करां के यो स्वार्थी बण सकै, तो मिनखां रै आपसी सम्पर्क रो कोई अर्थ ही कोनी रहसी। पण जे आपां इण नै विकसित होता देखां, तो सुभाव सूं निर्माणसील होणै रै कारण आपरी दुनियां यो खुद बणासी। "घणी बार अर घणखरा लोगां वास्तै जायदाद ही निजी दुनियां बणाणै रो एकमात्र ढांचो है। इण रो अर्थ खाली धन या काठ-कबाड़ सूं ही नहीं है। या धन रै भेळो होणै री बात ही प्रकट नहीं करै, पण आपरी रुचि आपणी बहरता आपणी योग्यतावां अर आत्म-त्याग री आपणी इच्छावां नै भी प्रगट करै।

आपणै व्यक्तित्व रै इण प्रतीक रै जरियै आपां ग्रहण करां, दान करां अर अपणै आप नै प्रगट करां। आपणी सबसूं बडी सामाजिक शिक्षा या है जिण सूं आपां आपणै मांयरी थोथी सूं थोथी भावना नै आई सूं आई ढंग सूं जायदाद रूप में प्रगट करां; अर उणनै आपणै उण व्यक्तित्व री प्रतीक बणावां जिणनै

सकां आपरणैं निजी संतोस खातर आप रै अमीर पड़ोसी रै मुकाबले में खर्च नहीं कर सकां। उदार कहवाणं री कठोरता आपणो नास कर देवै ।

सुविधा अर आराम री बात पर आजकल लगातार घणो जोर दियो जा रयो है। पण जिती ताकत आपां लगावां उणरै मुजब असली फळ नहीं मिलै बल्कि मौत-सी ताकत फिजूल खर्च हुवै। पैदावार री बढोतरी रै सागै लगातार विज्ञापनां री जिकी चीख-पुकार मचै, उणसूं सामान अर जीवणो सगती दोनां रो घणो नास हुवै।

सभ्यता एक इसी दुकान बणगी है—जठै जरूरतां री चीजां मिलै। इणमें लगातार 'चोमणावारी' चालतो रैवै जठै पेटुवां री पगतां री पगता जीमती रैवै। जिको असंयम थोड़ा सा मिनखां में बरदास्त करयो जा सकै, वो हजारां में फैल गयो। इणसूं जिको विकराळ लालच उपज्यो, वो ही आज री राजनीति अर व्यापार में बरती जावण वाळी नीचता, निर्दयता अर झूठां रो कारण है जिणसूं समूची मिनख जात रो वातावरण गंदलो होग्यो है। जिण सभ्यता में मिनखां री भूख बणावटी हुवै वा पलेवां सिकारी रो भक्षण करै, अै सिकारी दुनियां रा इसा भागां में ढूंढो जावै जठै मिनखां रो मांस सस्तो मिलै। एसिया अर अफ्रीका रै सारा लोगां रो सुख इसी फैशन देवण सारू बळिदान करयो जावै, जिणनै राजी करणो घणो दोखो है अर जिणरै गैल इज्जतदारी रै कूड़ री अनन्त कतार है।

पिच्छम में जिणनै प्रजातन्त्र कहयो जावै, वो इसै समाज में कदे भी ठीक नहीं हो सकै जठै लालच बिना रोकथाम रै बढतो ही नहीं जावै पण लोग तारीफ करै जिणनै बढावो भी देवै। इसै वातावरण में मिनखां में एक इसो झगड़ो लगातार चालतो रैवै जिणसूं वै आपरै निजी मतळबां सूं जनता रै संगठणा पर कब्जो करणो चावै। इण भांत प्रजातंत्र एक इसो हाथी है, जिणरो जीवण में एक उद्देश्य चतर अर अमीर लोगां नै मौजां लुवाणी रो है।

इसी हालतां में जिण कामां सूं जनमत बणै अर उणरै सागै ही सासन-तन्त्र भी कोई या छानै कुछेक समृधीसाळी मिनखां रै हाथ में आ ज्यावै। घणा दिनां सूं वां लोगां री उपमा उण ऊंट सूं दी जावै जिको सूई रै बेज में सूं कदे भी नीं निकळ सकै। सूई रो यो बेज वा फाटक है जिको आदमी रै राज मे पुगावै। इसो समाज वां लोगां सारू निर्दयी अर घातक है, जिका आध्यात्मिक आजादी में आपरै विस्वास रो प्रचार करै। इसै समाज में लोग निरन्तर उण मादकता रै नसै में झूमै जिण नै वो प्रगति रै नाम सूं पुकारै, वा प्रगति जिणनै वै, उण आदमी री तरियां जिको भोजन री बजाय दारू पीणी चावै, समूची सभ्यता रै मोत पर अपेदण नै तैयार रैवै।

गांवां री हाल सुणायो री हरियां है । मिनख जात रो पालणो वींरी निगराणी में है । सहरां री बजाय वै कुदरत रैं घणा नैड़ा है, अर जीवण रो भ्रारणो भी वांरै घणो नैड़ो है । पाव मरणै री कुदरती ताकत भी वांरै कनै है । पुणायो रो हरियो ही गांव रो यो काम है के वै लोगां नैं वांरी पैलपोत री भरणा-पोसण अर आनन्द, जीवण रो जीवो-जागो काम्य अर सुन्दरता रा वै तत्व देवै जिका गांवां में आपूं आप ऊगै अर जिणां में सुन्दरता नैं आनन्द मिलै । पण जद उण पर लगातार बोझ बदतो जावै, जद उणरा साधन बकरत सूं ज्यादा खतम करणा जावै तो वा गुम्म हो जावै अर फेर कोई निर्माण नहीं कर सकै । ब्याहता सुगाई री जगां पावरी जगा मैं छोड़'र वा बांडी सी बण ज्यावै । सहर आपरै मणूतै दम्भ अर अहंकार में बेचैन हुयोड़ो उण चोट री आणकारी नहीं कर सकै जिकी को हणारै जीवण, सम्पूरती अर भूमी रै मूळ थोड़ पर करै ।

संस्कृत काव्य मेघदूत में आपां दूत बणी मेघ रैं गैलै चालो अर कलना मैं सोवणीं-सोवणीं नामांवाळा जूनै जुग रा सहरां पर सूं गुजरां । आपां नैं यो मालूम देवै के वै सहर सवमूं केमी मिनख रैं प्रेम अर उणरी आसावां रो परचो देवै । वांरी उणरी परमा री सोभा रो खजानो उण घरां अर मंदिरां में बठै सुणायो जित सूं मांडै, अर वांरा बजारां में भी बठै लेवा-देवी चालै, मिलै ।

आपां सोच सकां हां कि उण वगत में दिल्ली पर आपरो किसोक रह होसी । वै एक बड़ै भारी साम्राज्य रो निरमाणकारी अर मानवीय पद प्रकट करत होसी । आपरी गिरता रा दिनां में भी अै सहर मिनख री सान नैं बणायो राखो है-पण आज रा सहर रो खालो मोरा देवै, आदर्श नहीं ।

मिनख री सभ्यता में सहर सो होणा चाईजै, जियां ऊंची जात रा प्राणियां में भी दिमाग, दिल या पेट जिसा जीवण रा सगठित केन्द्र होणा चाईजै । अै अंग बदे भी सरीर री पूर्णता रैं ऊपर सूं नहीं निकळै । उल्टा सब अंगां रै कामां रो पूरो संजोग मिलार वै सरीर नैं सैंठो बणायो राखो । पण जो गूमड़ो, जिण में खून भेळो हो ज्यावै, सारै सरीर रो दुसमण है जिणनैं चूस-चूस'र यो फूल जो जावै । आज रा आपणां सहर भी इण भांत ही समाज रैं उण अंग पर पळै जिको गांवां में बसै । अै समृद्धो री कोर नकल करणै में समाज रैं जीवित तत्व नैं आत्म-सात कर लेवै अर पणो सारो बेजान तत्व कांचळी री सरियां उतार फेंकै ।

इण भांत अै सहर खून नैं साफ करणै वाळा प्राणवान दिल न बण'र, उणनैं कैद कर'र मार देवणवाळा बणां अर जहरीला केन्द्रां रो निरमाण करै । जद कुछ लोग आपरै स्वार्थ सूं ही भेळा हुवै तो वै समाज रो निरमाण न कर'र भीड़ रो ही निरमाण करै अर इण कारण ही नैतिक पतन हुवै । साची सभ्यता री बणां विच्छर्म

री प्रगति नैं रांखो जावै उणरो यो ही नतीजो हुवै। मैं प्रगति रो विरोधी नहीं हूं, पण जे इण रै बदळै में मापरी आत्मा नै बेचणनै त्यार हुवै तो मैं आदिम प्रौस्था में ही रहणो पसंद करस्यूं।

भारत में जुगां तांई आपणी पारिवारिक प्रथा ही। हर परिवार घणो मोटो अर आपस में गूंथयोड़ो होवण सूं अपणैं आप में एक छोटो-मोटो समाज हो। इण परिवार री सार्थकता रै सवाल पर मैं अठै बहस नहीं करणी चाहूं पण आज रै जमानै में जितणी तेजी सूं उण प्रथा रो पतन हुयो है उणसूं उण सर्वनासी सिद्धांत रै ढग अर कायदै रो बेरो पटै जिको नास रै काम में लाग्योड़ो है। जीवण जद सादो हो अर इणरी जरूरतां भी सादी ही, जद स्वार्थी वासनावां काबू में ही, उण वक्त आ प्रथा बिलकुल कुदरती अर घणैं आनन्द री ही। परिवार रा साधन सगळां खातर काफी होता हा अर कोई भी एक सदस्य गैर वाजबी हक कोनी मांगतो हो, पण इसो परिवार उण वक्त नहीं निभ सकै जद एक सदस्यरी निजी इच्छावां उणरी जरूरतां सूं ज्यादा चावणा लागैं, अर जद एकला खुद ही फायदो उठाणै री भावना सूं सगळां रै हित रै विपरीत चालै। उण वक्त भायां नैं न्यारा होणा पड़ै अर एक दूजै रा दुस्मण भी बणणा पड़ै।

'गेटे' री जरमनी 'बिस्मार्क' रा जरमनी सूं गरीब समझो जातो। प्लेटो रै दिमाग सूं या असोक रै जीवण सूं संचन्नण सभ्यता रो स्तर सायद आजरा घमंडी मंळकां सूं उपेक्षा सूं देख्यो जावै। पण उण वक्त जिका लोग रहता हा, वै आज रै जमानै रा छात्रां री दया रा पात्र है कांई, जिकां कनै छापाखाना तो घणा है, पण दिमाग थोड़ो।

घणी वार या कल्पना करणं री म्हारो जी चावै के जमीन सूं आकार में छोटा होणं रै कारण चांद पर पिरथी सूं पैलां प्राणी पैदा हुया। एक दिन इसो भी हो जद चांद पर भी रगां रा उच्छव होता हा, संगीत अर जीवण री हलचल होती ही, अर धन-धन सूं बठै रा भडार रात-दिन भरया रैता।

उणरै बाद चांद पर एक इसी जात पैदा हुई जिको लालच सूं आपरै आसपास री चीजां नै लावणी सरू करदी। इण बात में इसा प्राणी पैदा हुया जिण मैं पसु-भावना घणी मात्रा में ही अर बुद्धि होता हुयां भी वां मैं या अनुभव करणं री कल्पना कोनी ही के खाली जोड़तै रहणं सूं संतोस कोनी मिलै, घणी सारी चीज भेळी करणं सूं ही खुसी कोनी पैदा हुवै। मति में बेग त्यावण सूं ही प्रगति कोनी बणं अर प्रगति तद ही सार्थक हुवै जद पूर्णता रै कोई आदर्श सू जचरो मेळ हुवै। सारी लूट-पाट कुदरत री भरली रो ताकत सूं वैसी ही दायै जिवटली।

'लाभ कमावणियाँ इसी जरूरतां खड़ी करदी जिकी कुदरती कोनी ही। वै लोग कुदरत रैं भंडारां में गहरा खोद'र निर्दयता सूं उणरा सारा साधन खतम कर दिया। जद वैं आपरी मिलाऊ री रसद खतम कर चुक्या, तो सबसूं मोटा हिस्सो चेतण री आपसरी री राड़ में लागग्या। इण झगड़ै में वैं नैतिक सिद्धांतां री हत्या चढाता अर आपरी इच्छावां री पूर्ति खातर निर्दय बणनो भी आपरी जात री श्रेष्ठता रो चिन्ह समझता। वैं पाणी रा भंडार खतम कर दिया, रूंखां नैं काट गेरया अर चांद री धरती नैं खाडां खोचरां सूं भरयो रेगिस्तान बणा दियो। चांद रै आपरी हालत वैं उण धरती री सी करदी जिण री सगळी कीमती चीजां लूट ली गई हो। फळ में पड़ण वाळा कीड़ा जियां उण रै गूदै नैं पूरी तरियां खा ज्यावै बाही हालत चांदरी हुई अर आखर वो एक निस्प्राण ढांचो बणग्यो, उण पेटू प्राणियां री एक कबर जिका जिण दुनियां में पैदा हुया उणरो ही नास करयो।

मेरी काल्पनिक चन्द्रकांत मणियां ठीक बिसो ही बरताव करै जिसो आज धिरयो पर रंणिया मिनख करै। धरती मां कनै आपरा टाबरां री कुदरती भूख खातर घणो ही भोजन है अर छड़्या-बिछड़्या असाधारण टाबरां खातर थोड़ो सेवाभाव भी है। पण रात-दिन पैदा होवणवाळा बिगड़ैल अर पेटू छोरां रै समूचै संहार खातर उण कनैं पूरो भोजन कोनी।

मिनख आपरी कमाई में ही नहीं, पण आपरी जिन्दगी री भी नींवां में खाडा खोदतो आयो है, वो आपरै निजरै सरीर पर भी पळरयो है। आ भयंकर बरबादी गांवां में घणी आछी तरियां देखी जा सकै, जठै जिन्दगी री कांरणी धुंधळी हो रह्यो है, जिन्दा रहणै रो मजो मारयो जा रह्यो है अर सामाजिक मेळजोळ रा तार टूट रया है। आपणो ओ धरम होणो चाईजै के आपां समाज रा इण अणपोक्या अगां में जिन्दा खून रो दोरो पाछो सरू करां, गांवां में तन्दुरस्ती अर ज्ञान रो प्रचार करां, रहणै वास्तै भरपूर जगां अर काम, आराम अर खुशी रै वास्तै भरपूर वक्त पैदा करां, वा इज्जत देवां जिकी सूं वां री सोभा वधै, अर वा सहानुभूति देवां जिकी वांनै ओ अनुभव करावै के मिनखां री दुनियां सूं वांरो भाईचारो है अर वांरी हालत किणी भांत भी दूजां सूं हळकी नहीं है।

झरना, झीलां अर समुन्दर इण वास्तै बण्या के वैं आपरो पाणी आपरै मांय ही राखै। आपरै पाणी री भाप बणार वैं बादळ बणावै जिकै सूं दूर-दूर में पाणी रो बटवारो हुवै। सहरां में धन अर ज्ञान केन्द्रीभूत हुयोड़ो पड़यो है। सहरां नैं चाईजै के इणनैं आपरै खातर ही नहीं राखै, वां नैं विचारां रा केन्द्र बण जाणा चाईजै अर बटवारो करणै वास्तै ही उदय करयो जाणो चाईजै। आपां

आपरो ही विस्तार करणो छोड देणो चाईजै अर सर्व साधारण री बढ़ोतरी करणी चाईजै। वांनै तो चानणै रा खम्भा रै रूप में आपरो चानणो आपरी सींव सूं बारै दूर फैंकणो चाईजै। आपसरी रै फायदै रो गांव अर सहर रै बीच रो यो रातो बणाई चाल सकै, जदताई सहकार अर आत्मत्याग री भावना समाज में जीती जागती आदर्श रै रूप में रैवै। जद कोई लालच इण लालच नै हरा देवै अर स्वार्थी भावना हावी हो जावै तो एकाकार री खाई सी बण जावै जिकी चौड़ी होती जावै। इसी हालत में सहर अर गांव सोसिक अर सोसीज रै रूप में बण जावै।

म्हे लोग भारत में विस्व भारती रै सिलसिलै में गांवां रै पुनर्निर्माण रो काम छेड़यो है। इणरो लख्य जातीय आत्मघात रै क्रम नै रोकणै रो है। जो मैं म्हारै काम री बिगत बताणै री कोसीस करूं तो वा भोत मामूली दीखसी। पण मामूली दीखणै सूं म्हांनै कोई डर कोनी वरू के जीवण में म्हारो पूरो भरोसो है। म्हे आ बात जाणां के म्हारै मांयलै सांच नै जे प्रकास प्रगट करै तो विरोध नै जीत लियो जासी अर स्थान अर समय भी काबू में आ जासी। म्हारो यो मानणो है के गरीबी री बजाय दुख री समस्या सबसूं बडी है। धन तो चीजां नै पैदा करणै अर भेळी करणै रो ही एक दूसरो नांव है अर लोग इणनै बुरी तरियां काम में ले भी सकै। लोग जमीं सूं जीव नै कुचळ काढ'र पनप सकै। पण खुसी, चाहे नावां री गिणती में वा धन रो मुकाबलो नीं कर सकै, आखरी लख है अर निरमाणकारी होणै रै साथै इण रै मांय नै धन रा स्रोत छिप्या है।

म्हारो उद्देस्य गांव रै जीवण री रेतीली जमीन पर खुसी रा झरणा बहा देणै रो है। इण वास्तै विदवान कवि, सगीतज्ञ अर कळाकार–वां सगळां नै सहयोग सूं आपरा हिस्सो देणो है। नहीं तो वै भी परजीवी बण'र रहसी, लोगां री जिन्दगी सूं खून चूसता हुया अर बदळै में क्यूं भी नहीं देता हुया।

आपणै में सूं घणाखरा जिका गरीबी री समस्या नै सुळझाणी चावै वाळो पैदाइस बढाणै रो गहरी कोसीस करणै री बात ही सोचै। आपां या बात भूल जावां के इण कोसीस सूं सामान अर इस्तानियत दोनां रो ही बेगो नमेड़ आवै। या कोसीस घणा लोगां रै मोल पर गिणती रा लोगां नै लाभ रा घणा मारा मौका देवै। आपां या बात जाणां के पोसण भोजन सूं मिलै; रुपयां सूं नहीं। वयां ही जिन्दगी री पूर्णता सूं खुसी मिलै, थैलो री पूर्णता सूं नहीं। खाली भौतिक धन नै जोड़तो जाणै सूं ही उण लोगां मे विषमता घणी बढै जिकां कनै धन है अर जिकां कनै कोनी। इण सूं आपणी सामाजिक व्यवस्था पर भी इसो गहरो घाव लागै के सारो सरीर आखर रगत निकळ'र बेजान हो जावै।

(२)

जिकी बात मनैं कैणी ही बा मैं कई बार पैला भी कह दी है अर कुछ भी बाकी कोनी छोडी। उण बक्त मेरे मैं ताकत ही अर म्हारै विचारां रै प्रवाह में कोई रुकावट कोनी ही। उमर अर स्वास्थ री खराबी सूं म्हारी ताकत अब मारी गई है अर आपनै म्हारै सूं और ज्यादा घणी उम्मेद नहीं करणी चाईजै।

घणां दिनां बाद मैं अठै आयो हूं। आपमैं सूं कइयां नै मैं वक्त-वक्त पर देखतो रैवूं—अर जो कुछ मैं अब आपने दे सकूं हूं बा म्हारी मोजूदगी अर म्हारो साथ ही है। पैंसठोत जद मैं औ घर खरीदयो तो म्हारो कोई खास योजना कोनी ही। इत्ती बात मैं जरूर सोची ही के सांति-निकेतन भीड़-भाड़ सूं दूर है अर अठै विद्यार्थियां नैं परीक्षा पास करणै में मदद देणै रै साथ-साथ सिक्षा विभाग रै निर्धारित रासन सूं कुछ ज्यादा-ही दियो जावै।

पण एक दूसरो विचार म्हारै दिमाग में आयो। सियालदा अर पातीसर रै गांवां में रहतां वक्त मैं गांव रै जीवण सूं म्हारो पैलो सीधो सम्बन्ध बणायो हो। उण बखत जमींदारी म्हारो पेसो हो। कास्तकार लोग म्हारै कनै आता हा अर आपरो दुख-सुख सिकायतां अर अरज्यां म्हारै कनै ल्याता हा जिणरै मारफत मनैं गांव रो ग्यान हुयो। एक कानी तो बारलो दृस्य हो जिण में नदियां, चरागाह चावळां रो खेत अर पेड़ां री छायां में दुबक्योड़ी माटी री झोपड़ियां ही। दूजै कानी लोगां री मांयली का'णी ही। म्हारै काम-काज रै सिलसिलै में मैं बां लोगां री तकलीफां नैं समझी।

मैं सहर में जलम्योड़ो एक सहरी प्राणी हूं। म्हारा बाप-दादा कळकतै में सबसूं पैली आर बसणियां लोगां में सूं हा अर म्हारै बचपण में गांव रै जीवण रो कोई लेस ही कोनी हो। जद मैं म्हारी जायदाद री देखभाळ करणी सरू करी तो मनैं डर हो के म्हारो काम कठण होसी। इण कामरी मनैं कोई आदत कोनी ही जियां हिसाब राखणो, लगान वसूल करणो अर नांव-जमा मांडणा। म्हारै ग्यान री कमी दिमाग पर बोझ बणी रैती ही। मैं कल्पना भी कोनी कर सकतो के हिसाब-किताब रै आंकड़ां सूं बंध्यो रहणै पर भी मैं कुदरती मिनख बण्यो रह सकूं।

ज्यूं ही मैं काम में सिर दियो तो मैं उण में फंसग्यो। म्हारी आ आदत है के जद भी मैं कोई जुम्मेवारी रो काम लेऊं तो उण में अपणैं आप नैं भुला देऊं अर म्हारी तरफ सूं ज्यादा सूं ज्यादा कोसीस करूं। एक बार जद मनैं पढाणै रो काम पड़यो तो मैं पूरै दिल सूं वो काम करयो अर उण में घणो आनन्द आयो। जमींदारी रै कामरी उळझणां नैं सुळझाणै में लाग'र मैं म्हारा ईजाद करयोड़ा

नव उपायों खातर वाह-वाही कमाई। असल में तो आस-पड़ोस रा जमीदार म्हारो तौर-तरीका सीखण वास्तै म्हारै कनै आपरा आदमी भी भेजणा सरू कर दिया।

म्हारै अठै काम करणिया पुराणा आदमियां रा तो कान खड़्या होग्या। वै इण तरीकै सूं हिसाब राखता हा जिको मैं कदे भी नहीं सीख सकतो हो। वांरो विचार हो के वै लाग जितो मनै समझाणो चावै उण सूं ज्यादा मैं कुछ भी नहीं सीख सकूं। इण वास्तै वै कह्यो के तरीको बदळनै सूं गड़बड़ी फैल जासी। वै मनै आ बात बताई के मुकदमें रै वक्त आप जिण तरीकै सूं हिसाब राखयो हो उण पर अदालत सक करसी। पण मैं म्हारी जिद राखी अर ऊपर सूं नीचै तांई सारी चीजां बदळदी जिणरो नतीजो घणो संतोसजनक साबित हुयो।

काश्तकार प्रायः म्हारै सूं मिलणै आता हा। वांरै खातर म्हारो दरवाजो रात-दिन हमेसा खुलो रहतो। कई बार तो दिन भर मनै वारा मामला सुणना पड़ता हा अर खाणै रो वक्त भी निकळ जातो हो। मैं ओ सगळो काम उल्लास अर आनन्द सूं करतो हो। टाबरपणै सूं मैं एकलो रह्योड़ो हो अर गांव रो ओ म्हारो पैलो-पैलो अनुभव हो। हो'र मैं घणो सन्तुस्ट अर उत्साहित हो अर नयो मारग दिखाणै री मनै बड़ो खुसी ही।

गांव रै जीवण री छोटी सूं छोटी बातां नै जाणनै री मनै बड़ो उतावळ ही। म्हारै काम-काज सूं मैं दूर-दूर गयो—नदियां नहरां अर नाळां रै नहैं, अर अठै जीवण रा बदळता दरसां नै देखणै रो मौको मनै मिल्यो। गांव रा लोगां रा रातदिन रा काम अर कामां रै बदळतै चक्र नै देख'र मनै घणो अचम्भो हुयो। सहैर में पळ'र मैं सीधो ग्रामीण सोभा रै बीच में पूंच्यो अर उणनै आपणै मांय नै भरलो। धीरै-धीरै लोगां री गरीबी अर तकलीफां म्हारी आंख्यां आगै चोड़ै हुई अर म्हारी आ इच्छा हुई के मै वांरै खातर कुछ कर सकूं। मनै घणी सरम आती के मैं एक जमीदार हूं जिको लगान वसूल करणै में लाग्यो रेवूं अर धन रै उद्देस्य सूं ही काम करूं। यो अनुभव हुयां पछै मैं लोगां रै दिमागां नै जगाणै री कोसीस रा काम में जुटग्यो अर वांसूं आपरी जुम्मेदारी खुद उठाणै री कोसीस करवाणै में लागग्यो।

बारै बैठ'र गांव वाळां री मदद करणै री कोसीस सूं कोई मतो कोनी हो सकतो। जिन्दगी रा चिणगारी वां मे कया छोडी जावै आ ही म्हारी समस्या ही। वांरी मदद करणी घणी मुसकल ही, क्यूं के वै आपणै आपनै घणा इज्जत कोनी देता हा। वै कहता हा के म्हे लाग तो करसा हां, कोरड़ा खार ही सोवा रह सकां हां।

एक दिन पड़ोस र एक गांव में आग लागगी । लोग आग इतरा ज्यादा घबरा गया के वे कुछ भी कोनी कर सक्या । पछै पड़ोस रै एक मुसळमानां रै गांव सूं लोग भागता आया अर आग रो मुकाबलो करयो । पाणी तो हो कोनी, जिकै सूं लपटां नै आगै नहीं बढण देण री गरज सूं छानां नै गिरा देणी पड़ी । जिका लोग छानां नै गिरावण नहीं देता हा, वां नै भी पीटणा पड़्या । भलो काम करणै में भी ताकत नै काम में लेणी पड़ै । फेर वै लोग म्हारै कनै या कहता आया, या भी किसमत री बात ही के म्हारी छानां गिरा दी गई जिकै सूं अठै बच पाया । वै लोग तो खुस हा के पिटणै सूं वांरो फायदो ही हुयो, पण वांरी इण दीनता पर मनै घणी सरम आई ।

गांव रै बीचूं-बीच में वां लोगां खातर एक छोटो सो मकान बणाणै री योजना बणाई जठै दिन आथ्यां वै लोग भेळा हो सकै, अखबार पढ सकै अर रामायण-महाभारत री कथावां सुण सकै । या एक भीतरी चाव सी होती । या बात मैं इण वास्तै सोची क्यूं के मैं वांरो उदास सांझ री बात सोच'र घणो दुखी होतो । मनै यूं लागतो—जाणै कोई पद री एक ही उदास-झड़ अनन्त रूप सूं गाई जाती हुवै । समय पा'र वो मकान खड़्यो होगो पण वो कदे भी काम में कोनी आयो । मैं एक अध्यापक भी राख्यो, पण पढणवाळा भांत-भांत रा बहाना बणा'र उण सूं दूर ही रह्या ।

इणरै मुकाबलै में दूसरै गांव रा मुसळमान म्हारै कनै आया अर बोल्या—"म्हांनै भी आप कोई अध्यापक दे सको ? म्हे लोग उणरो खर्चो उठा लेस्यां ।" मैं बात मानली अर वांरै गांव में पाठशाळा चालू होगी जिकी सायद आज भी है । म्हारै गांव में तो कुछ भी नहीं करयो जा सक्यो क्यूं के अठै रा वासी आपणै आप में आपरो विस्वास खो चुक्या हा ।

आपरो मेळ री आदत घणै पुराणै वकत सूं चालती आई है । पुराणा दिनां में एक चोखा हाळो आदमी गांव रो प्रधान आगरो अर उणरो मार्ग-दर्शक होतो । स्वास्थ, सिक्षा अर दूजी सगळी बातां री जुम्मेवारी उणरी ही होती । मैं इण प्रथा री तारीफ करी है, पण या भी साची बात है के इणरै कारण ही साधारण आदमी री आत्म-निर्भरता री ताकत कमजोर पड़ी है ।

म्हारी जायदाद में नदी दूर पड़ती ही अर पाणी री कमी एक बड़ो सवाल ही । मैं म्हारा कास्तकारां सूं कह्यो के जे वे लोग कुवो खोद देवो तो मैं उणै सीमेंट सूं पक्को करा देऊं । इण रै जवाब में वै लोग कैयो के वे मछली रा तेल में ही मछली तळणी चाहै । जे म्हे ही कुवो खोद देवां तो म्हारै करयोड़ै काम पर थांनै जिकारा रै वास्तै पाणी देवण खातर सुरग मिल जासी । वांरो यो खरो विचार

ो के इण सब कामां रो हिसाब सुरग में राखयो जावै अर मैं इसो भलो काम कर'र
राखै सुरग में पोंच जास्यूं अर गांव हाळां नैं खाली पाणी ही मिलसी । आखर
में म्हारी बात पाछी लेणी पड़ी ।

मैं आपनैं एक दूसरो मिसाल देऊं । मैं म्हारै जायदाद रै दफ्तर सूं कुस्टिया
ई एक सड़क बणाई । जिका गांव हाळा इण सड़क रै नेड़ै रैता, वानैं मैं कहयो के
णरी साळ-सभाळ राखणी थारै जिम्मे है । थे लोग भेळा हो'र आसानी सूं इणरी
रम्मत कर सको । असल में तो बात या ही के चौमासे में वांरी बैलगाड़ियां रै
ा सूं सड़क खराब हो'र बेकार हो जाती । इण बात रो वै जवाब दियो के म्हे
ड़क री मरम्मत इण वास्तै करां के कुस्टियां सूं भला आदमी इण पर आराम सूं
त्या आवैं ? वै लोग या बात बरदास्त नहीं कर सकै हा के वांरी मेहनत रा
ळ दूसरा भी चाख लेवै । इसा काम करणै री बजाय वै असुविधा बरदास्त
र सकै हा ।

आपणां गांवां मे गरीब आदमी घणी बेइज्जती सई है अर ताकत वाळा
णा अन्याय करया है । दूजै कानी ताकत वाळां नैं भलाई रा काम भी करणा
ड़या है । इण भांत अत्याचार अर दान रै बीच फंस्योड़ा गांवां रा लोग आपणो
ाभिमान खो बैठया । वां लोगां रो यो मानणो है के वांरी तकलीफां रो कारण
ूरब जनम में करयोड़ा पाप है । अर वांरो यो विस्वास है के योंकी जिन्दगी साफ
वानैं ज्यादा पुण्य कमा'र दुबारा जनम लेणो पड़सी । यो विस्वास के इण तकलीफ
सूं कोनी बच्यो जा सकै—वांनै असहाय बणा देवै ।

कदे तो पोसा हाळा लोग पाणी अर पढाई रो इन्तजाम कर देणो पुण्य रो
काम समझता । वांरी सदभावना सूं गांव खुसहाल हा । पण जद नैं लोग सहरां कानी
भाग्या तद हुया तो पाणी मिलणो बंद होग्यो, मलेरिया अर हैजा री बीमारी फैलगी
अर एक एक कर'र गांवां में कुसो रा झरणा सूकग्या । आज गांवां में जिसो नीरस
वातावरण है उणरी कल्पना भी करणी दोरी है ।

म्हानैं तो कोई रास्तो कोनी सूझ्यो । जिका आदमी सदियां सूं कमजोरी
पकड़ राखी है अर आत्मनिर्भरता रो मतळब तक नहीं जाणैं, वांरै वास्तै कुछ करणो
कोई सोरो काम कोनी । फेर भी मनैं सुरुआत करणी ही । वां दिनां म्हारा एकमात्र
मददगार काळी मोहन हा । सुबह साम बुखार वांनै धर पकड़तो । म्हारी दवाई री
पेटी सूं मैं खुद वांरो इलाज करयो । पण मैं कदेई या बात कोनी सोची के मैं वांनै
सिखा सकूं ।

सास्त्रां में लिख्यो है श्रद्धया देयम्—जे थे कोई चीज देवो तो इज्जत सूं देवो ।

इण मुजब ही मैं काम पर लाग्यो। म्हारै दफ्तर में बैठ्यो मैं करतो नैं इड़'र बैठ लें'र खेतां कानी जातो प्रायः देखतो। बीरा खेत छोटा-छोटा टुकड़ा में हा—अर हर आदमी आपरी जमीं जोततो। मैं आ बात समझी के इण तरह-सू घणी सारी ताकत फिजूल जावै। इण वास्तै मैं बां लोगां कनै गयो अर बोल्यो—थे थारी सगळी जमीन मिल'र बोओ। थारी सगळां री ताकत अर माथन एक जगां भेळी करलो। इण रै बाद तो थे ट्रैक्टर भी चला सको जे थे सगळा सागै काम करो तो न्यारा-न्यारा खेतां रा छोटा-छोटा भेदभाव कोई खास बात कोनी होसी। जिसो भी मुनाफो हुवै थे बराबर उणनै बांट सको। थारी सगळी उपज गांव में एक जगां भेळी करल्यो तो व्यापारी सूं थानैं चोखा दाम मिल सकै। वै लोग या बात सुणी अर बोल्या—विचार तो चोखो है पण यो पार कयां पड़ै। जे मैं पूरी बात जाणतो अर इण काम री सिक्षा लियोड़ी होतो तो मैं कह सकतो के इण बात री जुम्मेवारी म्हारी, क्यूंके वै सब लोग मनैं जाणता हा। पण म्हारी चावणै सूं ही कोई भलो काम कोनी, करयो जा सकै। गणजाण री मदद जिसी खराब चीज कोनी। सहर रा कुछ जवान आदमी एक बार लोगां री मदद करणै वास्तै गांव में गया—पण लोग बांरी मजाक उडाता कयो—"देखो रै बबनिया बाबू आ रह्या है।" कोई अचरज री बात कोनी के ये जवान आदमी न तो गांव वाळा री बोली ही जाणता अर न बांरा दिमाग नैं ही समझता।

पण मनैं तो कुछ न कुछ करणो हो। मैं म्हारै छोरै नैं अर सन्तोष नैं खेती अर पसुपालण रो धन्धो सीखण वास्तै विदेस भेज्या। ओर भी दूजा अनेक उपायां सूं मैं सोचणो अर काम करणो चालू कर्‌यो।

इण वक्त रै आसपास ही मैं यो मकान खरीदयो। मैं या सोची के स्यातसा में जिको काम मैं सरू करयो हो उणनैं अठै चालू राखसूं। इण टूटै-फूटै मकान में भूत रो बासो बतायो जातो। इणरी मरम्मत पर मनै घणो सारो पीसो खरच करणो पड़यो। पछै थोड़ा दिना ताईं मैं सुरवाप बैठ्यो रयो। भेड्या मनै बा बेवणै री बात कही, पण मैं मन ही मन सोची के मैं इणनैं लियो है, इण में कोई न कोई सार्थकता हो सकै। म्हारै जीवण रा उद्देश्यां में सूं यो एक सायद अठै पूरो हो ज्यावै। कयां अर कद हो ज्यावै आ बात मैं कोनी सोची। जद कोई सुभ घड़ी में बजड धरती पर भी बीज बखेरयो जावै तो वै एक दिन प्राण-जुड़ो उगावै। उण वक्त इसा कोई लक्षण कोनी दीखता हा। हर चीज महंगी ही। पण धीरै-धीरै चीज फूटणा सरू हुया।

म्हारो दोस्त एमहर्स्ट मनै घणो मदद करी। बां रै पाण ही या जगां काम करणै रो एक आधार क्षेत्र बणायो अठै स्थिर प्रगति हो सकी। सांति-निकेतन सूं इणनैं जोड़णो सायद ठीक कोनी होतो।

मनैं एक बात आपनैं और कैणी है। आपां नैं यो देखणो चाईजै के लोगां री मांय सूं एक ताकत काम करणो सुरू कर देवै। यो ही विचार म्हारै मन में जद आयो जद मैं स्वदेसी समाज लिख रह्यो। उण वक्त जिकी बात मैं कैणी चावतो हो बा आ ही के आपां नैं सारा देस री बात सोचणं री जरूरत कोनी। एक दो गांवां सूं ही आपां सुरूआत कर सकां। जे आपां एक गांव नैं भी दीनता अर अग्यान रा बन्धणा सूं छुडा सकां तो सारै भारत वास्तै एक आदर्स राख्यो जा सकसी। यो विचार म्हारै मन में उण वक्त आयो जिको आज भी है। थोड़ा गांवां रो पुनर्निर्माण इण तरीकै सूं हो जावै तो मैं कह सकूं के आं में म्हारो भारतवर्ष है। असली भारतवर्ष नैं खोज निकाळणै रो यो ही तरीको है।

—१९२८

बण सकै । पण लोगां रै विचारां रा मेळ सूं आज रै सभ्य आदमी रो दिमाग बणो बणग्यो है । वयां ही मोत सा आदमियां रै मिल'र काम करणै सूं कोई नई बडी बात बण सकै । आपसी मेळ सूं धन दौलत तक पूगणै रो यो मारग यूरोप में रात दिन थोड़ो होतां में देख्यो है, अर इण मूं चोखो मारग और कठै..मो म्हारी नजर में नहीं है ।

मनै कदे कदे एक छोटै सै गांव में जाणो पड़ै । मैं एक बरामदे में खड़्यो हो जाऊं अर मीलां तक फैल्योड़ा खेत पर खेत देखूं । इण सारी जमीं नैं घणा सारा किसान जोतै जिणां में सूं कई दो बीघा, कई चार अर कई दस बीघा रा मालक है। सबसूं पैली ध्यान देणै जोग बात तो या है के मोत थोड़ा किसाना कनै ही बळद मुबब बळद है—जद के कयां कनै या तो मोत ज्यादा है या मोत थोड़ा। जुताई ठीक समय पर सरू हो ज्यावै या मोडी हुवै या बात किसान रै साधनां पर निर्भर करै है। एक बात और भी है के खेत रा सीम बांकी टेडी होणै सूं हळ नै बार-बार बाको टेडो मोड़णो पड़ै जिका सूं बळदां री मेनत फालतू जावै । जे हरेक किसान आपरा छोटा छोटा खेतां नैं एक न्यारो टुकड़ो नहीं समझै, अर आस पास रा दूजा खेतां नैं मिलार एक कर लिया जावै तो थोड़ा हळ अर थोड़ा बैलां सूं ही खेती जोती जा सकै अर बेकार जाणै वाळी घणखरी मेनत बचाई जा सकै । जे किसान लोग आपरी फसलां नैं एक जगां भेळी कर लेवै अर भेळी ही बेचै तो ताकत अर पीसै री और भी बचत हो सकै ।

जिको थोड़ै सूं थोड़ै समै में बेसी सूं बेसी काम कर सकै वो ही जीत में रैवै । यो ही कारण है के लोग औजारां नै काम में लेवै, जिका मिनख रा दो हाथां नैं पांचां-दसां रै बरोबर कर देवै । जिको जंगळी मिनख आपरा खाली हाथां सूं जमीं खुरचै, वण नै हळ वाळै मिनख सूं हार मानणी पड़ै । आपरै डील री ताकत रै पाण नहीं, पण औजारां नैं काम में लेवण सूं ही मिनख खेती, सवारी अर बुणाई तेल कढ़ाई तथा चीणी बणाणै जिसा कामां सूं जादा सूं जादा फायदो उठा सक्यो है । हळ, करघो, बैलगाडी, घोड़ागाडी अर तेलघाणी अै सगळा चीजां समै री बचत अर पैदावार में बढोतरी रो काम करयो है। इणां सूं ही तरक्की हो सकी है, अर नहीं तो मिनख अर बांदरै में थोड़ो ही फरक रैवै ।

भाप अर बिजळी सूं चालण वाळी भाजरी मसीनां सूं पैला मिनख आपरा छोटा-छोटा औजारां सूं ही काम करतो हो । जियां खाली हाथ औजारां सूं हार मानी ही, बियां ही अै छोटा-छोटा औजार बडी-बडी मसीनां सूं हार मानग्या ।

अब समै मांग्यो है-कै आपणा करसा भी इण बातां नैं सोचै, नहीं तो बांरो जीणो मुसकल है। पण खाली बातां सूं ही पार कोनी पड़ै । सही रास्तो तो काम

कर'र देख्यो लाधसी । यूरोप अर अमरीका में करसा इण दिसा में तेजी सूं चाल र्या है। वें लोग मसीनां री मदद सूं ही जोतणों, काटणों, पूळा बांधणों अर फसल नैं गोदामां में मेलणों तक रा सारा काम करैं । इण तरीकै नैं आपणै देस में अपणायां घणा फायदा होसी। जुताई सूं पैला आपां नै प्राय बरखा खातर उडीकणो पड़ै। जे एक दिन हळकी सी छांटां पड़ जावैं तो थोड़ै से खेत में हळ री मामूली सी लीकटी काढ सकां पण जे पैर कई दिनां ताईं बरखा नहीं होवैं तो बुवाई मोडी करणी पड़ै, जिकै सूं पछवको फसल मोड़ी बरखा होणै पर पाणी में एकमेक हो जावैं । कटाई रै वखत भी दिक्कत आवै । गांवां में उण वखत फालतू मिनख मिलणा घणा दोरा होवैं, अर बारै सूं भाड़ै पर मजदूर बुलाणा पड़ै। कट्योड़ी फसलां खेतां में पड़ी रैवै, उण वखत जे जोर री बरखा आ पड़ै तो घणो नुकसाण हुवै । पण जुताई अर कटाई री मसीनां सूं रुत री हर अच्छाई रो फायदो उठायो जा सकै । जोतणो अर धान काट'र भेळो करणै रो काम घणी फुरती सूं कर्यो जा सकै ।

या बात तो साची है के इण मसीनां नैं काम में लेवण सारू बड़ा बड़ा खेत चाहीजै, अर यानैं खरीदणै अर चलाणै में पीसा भी मोकळा ही चाहीजै। पण, जे इण कारण ही आपां या कह'र सारी आस छोड देवां के आपणा करसा इसी मसीनां नहीं पोसा सकै, तो यो काम सरवनास नैं नूतणै जिसो ही होसी । मसीनां रै आज रै जमानै मे तो आपणा करसां अर कारीगरां-दोनां नैं ही या तो मसीनां नैं अपणाणी पड़सी अर या पाछा पग धरतां-धरतां खतरनाक खाडां में लुढक जाणो पड़सी ।

जिकै री आस गई, उण री सोवयूं गयो । दान या दूजी मदद सूं भी उण नैं कोई नहीं बचा सकै । इण नैं या बात समझा देणी चाहीजै के जिको काम एक मिनख रै बस रो कोनी, वो पचास मिनख भेळा हुयां बस मे आ जावै । अै पचास मिनख जिका आज ताईं आप आपरा न्यारा-न्यारा खेत कनै-कनै जोतता आया है, जे आपरा सगळा साधन-जमीं, मेहनत, गोदाम भेळा करै तो मोटी पूंजी रा सगळा लाभ उठा सकै । पछै मसीनां बपराणी भी दोरी कोनी रैवै । जिकै करसै कनै छेरेक दूध ही बचै वा उण सूं कांई धंधो करै ? पण, जे सो करसा मिल'र आपरो फालतू दूध भेळो करैं, तो वै आसाण बिलोणै री मसीन खरीद'र घी बणा'र बेच सकै । यूरोप में तो या एक आम बात है । डेनमार्क अर दूजा छोटा देसां में लोग भेळा हो'र आपरै मासला, पनीर अर मळाई नैं बजारां में ठीक सिर बेच'र आपरो दलिदर धो गेर्यो है । इण रै अलावा, व्यापारी रुजगारां सूं अै करसा अर धोली दुनिया रा लोगां सूं आप री घणी समानता नै ओळखै लागा है, अर अ रा दिमाग समझ अर ज्ञान सूं भरघा पूरा बणग्या है ।

आछा लोगां रो मिल'र कमाणै रा यो तरीको यूरोप मे सहकार रै नांव सूं जाणीजै । इण तरीकै सूं ही आपणै देस नैं भूखा-भूखी गरीबी अर बेकारी सूं बचायो जा सकै ।

आपणा पढ्या गुण्या मिनख देस री सेवा खातर- घणा' उतावळा है। बीमारां री सेवा, भूखां नैं भोजन अर गरीबां नैं दान देवा रा अ' कुछ तरीका है। आग जद आखै गांव में फैल जावै तो उण नैं हवा कर'र बुझाणो री कोसीस करणो जिसी ही आ बात है। रोग रा लखणां रो इलाज करणो सूं रोग कोनी कटै। उण रै कारणां नै मिटायां ही रोग कटै। वैसी तो लोगां नै आपरी संकीर्णता छोडणी पड़सी। वांनैं आ महसूस करणी पड़सी के वै एक विश्व-समाज रा ही अंग है। दूसरा, पीसै-टकै रै मामलै में वां री कोसीसां रो दूजी जगावां पर काम करणियां दूजा लोगां री कोसीसां सूं मेळ बिठाणो पड़सी। दूजा सबदां में, वांनैं लांबा बिरछां ज्यूं आपरी जड़ां जमीं में घर खाणी हुवा अर रोसणी में फैलाणी साह लांबी-चौड़ी जगां चाहीजै। जद ही पळ सोरा अर घणा सारा लागसी, अर उण बाबत कोई नैं ही चिन्ता करणो री जरूरत कोनी पड़सी।

सभ्यता री एक खास अवस्था में सहर गांव सूं घणो महत्वपूर्ण हो जावै। आ बात कोनी के गांव रो जीवण सहर में कोई जादा गहरै ढंग सूं प्रगट हो सकै, पण गांव री ताकत सहर मे एकठी हो जावै, जिकै सूं सहर री एक नई प्रतिष्ठा बणै।

बंगाल रै गांव रो सामाजिक सुभाव सहर रै जीवण में एक हद ताईं अगणै आपनै दुहरातो रैयो। बारै सूं देखण में तो सहर गांव सूं न्यारो लागै है, पण कुछेक बातां में दोनां रा लखण मिलता-जुलता है। बडा सहरां में भी या ही बात ही। आपरै गरब गुमान रै होतां थकां भी वै गांव सूं आपरो नातो मानता हा। दोनूं एक तरै सूं घर रा बारला अर मांयला होवै ज्यूं हा। धन-दौलत अर सान-सौकत तो बारला ठांवां मे मिलता अर फुरसत अर आराम मांयलां में। दोनूं नेड़ सूं नेड़ै रै रिस्तै में एक दूजै सू जुड़्योड़ा हा।

पण अबार या बात कोनी। लारलै आर्थे-सईके मे सहर बहोत, जादा सहरी बणग्यो; पर गांव लारलै ... सूं भी उण नैं पूग नहीं सकै। यो ही अरथ इण कैवत रो है—

"थारो निजू आंगण ही परभोम है।" गांव सहरां रै ज्यारूमेर बस्योड़ा है, पण फे' भी यूं लागै ज्यूं दोनूं एक दूजै सूं सैंकड़ां कोसां दूर है।

इण कुदरत रै खिलाफ अळगाव सूं कोई फायदो कोनी हो सकै। या बात नहीं के या हालत भ्रम पणै देस में ही है, या तो आज रै जमानै रो एक निसाणो है। पिच्छम रो हुवा सामाजिक बेसुरैपणै रा बीज सारी दुनियां में बखेर दिया है, जिण सूं सुख-सांति रो ही नास कोनी हुयो जीवण री आत्मा रो भी नास होग्यो है। या एक इसी समस्या है जिण पर हर जगां रा लोगां नैं मनन करणो चाहीजै।

यूरोप में जिण नै सभ्यता कैवें, वा एक खास किसम री ताकत बणाणै खातर, जनता रो जीवण चूस लेवै। या बास रैं फूल लागणै री श्रोपमा सी है जिण में बांस रो फूल सारै पोधै रो जीवण खींच लेवै। अंग्रेजी में इण नैं सोसण कैवें। छोटो भाग बड़ै भाग नैं इकार'र बडो बणणै री कोसीस करै, छोटो तो सूख जावै अर बड़ै री पोसण सगती सूत ली जावै। इण रो फळ हुवै असामाजिक अर अळगाव वादी व्यक्तित्व रो सघणता मे बढोतरी।

मैं पहलां भी या बात सुझाई है के देस री ताकत सहरां में है, भले ही गावां में देस रैं जीवण रो केन्द्र हुवो। सहरां मे ही आर्थिक, राजनीतिक अर प्रजातान्त्रिक ताकत रैं विकास रा तरीका सोच्या जावै। अै तरीका सदा ही सामाजिक ढंग रा कोनी हुवै। इण काम मे मिनख रा गुणां सू ज्यादा महत्व मसीनां रो है। जिका मसीन नैं वस में राखै वी कनैं ही ताकत रैवै। इण वास्तै सहर तो खास तौर सूं होड़ रा दगल है, जठै आपसी मदद री माग नैं ठीक सिर बढावो कोनी मिलै।

व्यक्तिवाद अर होड ताकत पैदा करणै वास्तै तो जरूरी है, पण जद अै वाता आपरी हद सूं बारै चली जावै तो खतरो हो जावै। आज री सभ्यता साचांणी आपरी हद सूं बारै निकळगी। इण रा अनेक मग होणै सू इण नैं प्रगट करणै अर बणाई राखणै रा उपकरण भी कई गुणा चाहीजै। जीवण रैं इण ढंग में, जिणनैं चलाणै सारू अनेक भांत रा घणा सारा पदारथ चाहीजै, अधूरा साधन होणा तो एक पाप सो हो है। सिक्षा, स्वास्थ्य, कानून अर न्याय, संचार साधन, सवारी, खाणो, निवास, फोजां सौंति अर व्यवस्था कायम राखणी—आं सब कामां मे ढेर सारा रिपिया लागै। गरीबी आपरै साथै तिरस्कार लावै, क्यूं के गरीबी इण सभ्यता री तरक्की नैं रोकण वाळो धींसोड़ो है।'

आज रिपियो सगळो ताकतां री जड़ है अर इण री मानता भी सगळां सू ऊपर है। आज राज री नीति भी राजसत्ता रो विस्तार करणै रो कोनी, पण ज्यादा लुमावणो तो बिणज-ब्योपार रो विस्तार है, जिण सूं नई दौलत आवै। जिण दिनां सभ्यता रा अनेक अंग कोनी हा, उण दिनां विद्वान, सन्त, वीर अर दानी मिनखां रा आदर-भावनां सूं बेसो होतो। वा लोगां नैं जिको आदर दियो जातो उण सूं मिनखपणै नैं ही आदर मिलतो। कोरा पीसा कमावणियां नैं लोग घिरणा करता। पण आज ता आखो सभ्यता ही दौलत री गिडगू है। रिपियो कमाणो हो नहीं, रिपियै रो पूजा हावी होरी है। ओ झूठो देवता मिनख रैं मलैपण रो नास कर देवै। इण सूं पैला कदे भी मिनख मिनख रो इतणो बडो दुसमण कोनी हो, क्यूं के सोनैं री भूख सू बेसी निर्दयी अर अन्यायी दूजी कोई चीज कोनी। या सबमळी भूख आज री सभ्यता री उपज है, अर इण नैं सान्त करणै रा उपाय दूजा सगळा उपाया नैं मात कर देवै।

लोभ सूं पाप पैदा होवै अर पाप सूं सत्यानास। लोभ एक असामाजिक प्रेरणा है। जिकी चीज मिनख री सामाजिक भावना नैं कमजोर करै, वा हर पैंडै अर मांयलो संघर्ष पैदा करै, अर असन्तोष री अगन नैं तद ताईं बुझण नहीं देवै जद ताईं मिनख रो सामाजिक अस्तित्व ही झटकै सूं छिन्न भिन्न हो'र आखर खतम नहीं हो जावै।

पच्छम री दुनियां में एक अनन्त संघर्ष चालै, वां लोगां में जिका अनाप-सनाप धन कमावै अर वां में जिका खाली वांरी कमाई रा औजार बण्योड़ा है। इण झगड़ै नैं तय करणै रो साश्वत कोई रास्तो कोनी दीसै, क्यूंके मजदूरां रो लोभ भी भागवानां रै लोभ सूं घटकर कोनी। सभ्यता रै आनन्द नैं पूरी तरियां भोगण खातर हर आदमी जैसो सूं जैसो धन चावै। आ उमेद करणी के कदे तो ओ झगड़ो खतम होसी, फालतू सी बात दीखै।

जद लोभ अर ताकत री पूजा सामाजिक जीवण में बेरोक-टोक बढ़ जावै, तो आपरै मिनखपणै रै विकास में ध्यान लगाणो सागी खातर असम्भव बण जावै। आत्मा री पूर्णता री जगाय आदमी ताकत री चावना करण लागै। इसी हालत में सहर सबसूं ऊंचो चढ़ जावै अर गांव नैं बिसरा दियो जावै। सब मौजां, सब फायदा अर जीवण रै भोग री सगळी जरूरतां तो सहर में खिंच भाग जावै। गांव तो गुमाव री ज्यूं नाज पैदा करै अर जियां-कियां जीणै रो जुगाड़ करै। समाज रा दो टुकड़ा हो जावै–एक कानी चानणो अर दूजै कानी घोर अंधेरो। इण भांत ही यूरोप री सहरी सभ्यता मिनख जात री अखण्डता रा छोतरा कर गेरया। पुराणै यूनान रा केन्द्र सहरां में हा अठै मालिक अर गुलाम रा दायरा बिलकुल न्यारा-न्यारा हा। पण एक दिन समृद्धि रै सागै ही यूनान भी खतम होग्यो। जूनी इटली रो ढांचो भी सहरां रै ऊपर ही हो, अर थोड़ा दिनां ताईं वा घणी बडी ताकत भी रायो। ताकत मुख रूप में समाज बिगाड़ी है। इण सूं मालिक अर गुलाम रै बीच एक वर्गभेद पैदा होवै। थोड़ा सा मालिक अणगिणत गुलामां नैं चूसता रैवै। इण भोसण सूं सारै मिनखपणै रो आधार ही खतम हो जावै। पिच्छम रा देस आपरै अठै ही नहीं, आखी दुनियां नैं सोसणी अर दम्पैरै रा न्यारा-न्यारा भाग बणा दिया। इण री भांत बहोत घणी हाणै सूं इण री भूख री सीवां में पूरी कोनी हो सकै। ब्रिटेन रा लोगां नैं आपरै काम जीवण खातर घणा जरूरी धन कमावण में, अर इण नैं बणायो राखण नैं भारत पर आपरो कबजो राखणो पड़ै। वे जे भारत नैं छोड़ देवै तो आपरै भोग विलास रो ऊंचो दरजो घटाणै रै अलावा वां कनै कोई चारो कोनी। आपरी ताकत रै औजार रूप में वांनै गुलाम लोगां नैं राखणा पड़ै। इण कारण ही आखो अंगरेज राज भारत में चरकोड़ो दलार बैठो है। ओ ही कारण है के यूरोप री मोटी ताकतां एशिया अर

धरतीकां नैं आपरी जरूरतां रै मुजब घड़णै री चेष्टा करै, नहीं तो मौज मजै पर जीवण हाळी वांरी सभ्यता धपभूली रह जावै।

अनन्त उपभोग खातर जितणा साधन जरूरी होवै वै सगळां नै बरोबर कोनी बांट्या जा सकै। गिण्या-चुण्या लोग आपरी जमा पूंजी में जोड़ता रह सकै, इण वास्तै *मरणकरी रो हुक मारणो पड़ै। आ समस्या पिच्छम रा लोगां वास्तै सबसूं कठण है।* आंरा खुद रा देसां में भी लालच गरीबां अर भागवानां रै वाही खाई पटकदी है जिकी गुलाम जातां अर वांरा परदेसी मालकां रै बीच है। यो परलै सिरै रो बेसुरोपणो *विस्व-मानवता रै धरम रो दुसमण है। अठै-कठै मिनख री एकता खतरै में पड़ै, चौड़ै* पा छानै, उखाड़-पछाड़ री ताकतां खडी होवै। मालक चौडै-धाडै गुलाम पर चोट करै, पण गुलाम लुक-छिप'र उण सूं भी बेसी चोट करै, क्यूं के वो आपरै मालक री *चारित्रिक भावना रो ही नास कर देवै। या बडी खतरनाक बात है, क्यूं के जिनावर* तो भूख मरता ही मरै, पण मिनख चारित्रिक भावना रै अभाव सूं भी मरै।

ईसप री कथावां में एक काणै हिरण री कथा आवै जिको काणी आंख कानी सूं चलायोड़ै तीर सूं मरग्यो गयो। मिनख री आज री सभ्यता रो कोरो भौतिक पक्ष उण *काणी आंख कानी री जगां री ज्यूं है। आज रै यूरोप में ग्यान प्राप्ति रै क्षेत्र में* घणो बडो अर अनेक भांत रो सहकार मिलै, पण धन प्राप्ति में करड़ी सूं करड़ी होड है। यूरोप में ग्यान रो अेकलो चिराग हजारां चिराग जगा देवै, अर वां सगळां रो धानणो आज रै जमानै नैं संचन्नण कर देवै। इण भांत यूरोप दूजा सगळा महाद्वीपां सूं ऊंचो निकळ जावै। ग्यान रै जग्य री परीत बण'र वो होम री अगन नैं सरजीवण राखण सारू अनेक वर्गां सूं घणा सारी समिधा भेळी कर ली है, जिकै सूं वा अगन कदे भी बुझै कोनी। मिनखां री ख्यात में ग्यान रै क्षेत्र में सहकार रा सिद्धान्त इतणा जादा कदे भी कोनी काम में लिया गया।

पुराणैं जमानै में हर देस आपरै ग्यान री विरासत दूजा देसां सूं निरवाळी रह'र खुदमखुद करतो। यूनान री ग्यान खास तौर सूं यूनान रो ही अर रोम रो ही हो, अर भारत तथा चीन मे भी या ही हालत ही। या सुणो री बात है के यूरोप रै महाद्वीप रा देस अर क्षेत्र बहोत नेड़ा-नेड़ा बस्योड़ा है अर वां रै बीच री सींवां, लांघणी इतणी मुसकल कोनी। अठै लांबा-चौड़ा रेगिस्तान या ऊंची पहाड़ां री कतारां री रोक कोनी। वांरो धरम भी एक ही है, अर घणा बरसां ताईं उण रो केन्द्र रोम में ही रैयो।

घणी सदियां ताईं, जद ताईं यूरोप में एक ही भासा लेटिन रै जरियै सिक्षा दी जाती ही, तो एक ही धरम होणै सूं आपसी एकता भी बणती। इण धरम रो मूळ सिद्धान्त एकीकरण रो है, क्यूं के इण रो केन्द्र ईसा रो प्रेम है अर इण री हिदायतां

मिनख जात री सेवा। मर्म रै मार्थ हुर देस त्रिको लेटिन री पोमाळ सूं बारै आवो, आपरी भासा रै जरिये आपरै ग्यान नै बढाएं में लागायो। पण, म्हारो ग्यान एक ही रस्तै सूं आयो पर एक ही खजानै में भेळो करतो गयो। इण ग्यान सूं पिच्छम री सम्यता बणगी, जिण री बड़ी सहकार में रुप्योड़ी ही। आपां पूरब री सम्यता री बात करां, पण आ तो एक नकारात्मक संग्या है, जिण रो खालो यो ही मतळब है के वा यूरोप री कोनी। चीण अर भारत रा मनां में कोई ताळमेळ ही कोनी। घणी बातां में तो वै अेक दूसरै रै विपरीत भी है। भारत रा हिन्दुवां अर पच्छिमी एसिया री सामी' जातां री संस्कृति बिलकुल न्यारी न्यारी है। एसियाई राष्ट्रां रै ग्यान मे सहकार न होणै सूं वांरो जूनो इतिहास अनेक वरगां में खिंडग्यो। इतिहास री मजबूरियां सूं कुछेक खेत्रां में संस्कृति रो आदान-प्रदान भले ही हुयो होवै, पण एसिया रो मन कदे भी एक इकाई कोनी बण्यो। इण वास्तै जद आपां पूरब री सम्यता री बात करां तो आपां आपणी राष्ट्रीय सम्यता री बात ही सोचां। यो ही कारण है के एसिया, यूरोप री तरियां, आज रै जमानै पर गहरो प्रभाव छोड नहीं पायो।

पण, यूरोप री सम्यता में वा ठौड़ कठै बठै इण रै नास रो बीज बोयोड़ो है। वा ठौड़ भौतिक तरक्की रै क्षेत्र में सहयोग न कर सकणै री असफळता में है। इण बात में यूरोप रा देस न्यारा-न्यारा अर एक दूजै रै बेहद खिलाफ है। ज्यूं ज्यूं विग्यान री मदद सूं भौतिक तरक्की अनेक भांत री हुवै अर परिमाण में भी बढै, त्यूं-त्यूं अद्भुत विरोध पैदा होवै। एक कानी जीवण बचावण वाळै ग्यान रा पग तेजा सू बढै, आज सूं पहला कदे भी मिनख आपरै सरीर री तन्दुरस्ती, जमीं रो पैदावार अर जीवण री सगळी भौतिक मुसकला पर इतणी हकूमत कोनी कर सक्यो। यूं जाण पड़ै के मिनख सुरग सूं इमरत खोसणै री कोसीस करै, जिण सूं अमरता मिलै। दूजै कानी आपां नैं बिलकुल विपरीत चीज ही मिलै। मौत सूं लड़णै री इतणी गहरी लगन कदै ही कोनी होई। यूरोप रो हर देस इण लगन में अन्त घणै उछाह सूं लाग्योड़ो है। ग्यान रै एकीकरण सूं यूरोप ताकतवर बण्यो, अर आज उणी ताकत नैं आपरै नास में लगाणै नै त्यार है। ग्यान री खोज में तो यूरोप जीवण नैं बचाणै रै मारग पर आगै बढै, पण भौतिक दौलत री खोज में यो जीवण नैं नष्ट करणै रै मारग पर चालै। आखर कुणसी ताकत जीतसी या भविस्यवाणी करणी दोरी है। कई लोग कवै के सर्वनास नैं बचावण खातर अवार मिनखां सूं बरती जाणी मसीनां नै तोड़ दी जावै। या एक बेहूदी बात है। चौपायां रै चार पग तो हावै पण हाथ कोनी होवै। वै जियां-तियां जिन्दा रहणै वास्तै जरूरी काम पार घालै। आखो जीतो रहणै रो मतळब है गरीबी अर हार। पण मिनख नैं दो हाथ मिल्या है वा उण री खुसकिस्मती है। हाथां सूं उण रै काम में घनराई आवै अर वांनुं ही हुआ

जीता जागता प्राणियां पर हकूमत करणें रो फायदो भी उण नैं मिलै। जद मसीनां री मदद सूं वो आपरी चतराई और बढा ली, तो वो एक पग आगैं और मेल दियो। इण वास्तैं या बात सुभाणी घणी बेहूदो है के मिनख री इण ताकत नैं कुचळ देणी चाहीजै। जिका रास्ट्र मसीनां पर काबू कोनी पा सक्या वां नैं हार मानणी पड़सी, बियां ही जियां बिनाचर मिनख सूं हार मानी।

समस्या तो तद खड़ी होवै, जद एक मिनख या लोगां रो एक समूह, कोई मोकै रो फायदो उठा'र ताकत रा उपायां अर साधनां पर कब्जो कर लेवै। एक समै हो, जद हर देस मे सारी राजनीतिक ताकत एक आदमी री मुट्ठी में रहती, अर उण री मरजी सू ही काम चालतो। उण नैं आपरी ताकत रै दुरुपयोग सूं रोकण ताईं उण रै विवेक नैं अरज करणें रो ही एकमात्र मारग हो। पण लूंठां रा कान इसी अरज्यां खातर सदां ही को खुला रहता हानीं। इण कारण ही कुछ देसां मे लोग इसा राजावां सूं जबरदस्ती हकूमत खोसली। वै बोल्या—"राजा री ताकत तो म्हारी सगळां री भेळी ताकत ही है। एक हाथ में या ताकत आ जाणें सूं म्हे कमजोर बणग्या। यो बेरो पट जावै के म्हारै में सूं हरेक इण ताकत नैं कियां काम में ले सकै तो म्हारी सगळी ताकत नैं एकठी कर'र म्हे संयुक्त राज कायम कर सका। इंगलैंड नैं यो मोको मिल्यो। दूजा देसां में या बात नहीं हो पाई, उण रो कारण तो यो है के सगळां कनैं न तो बितणी सिक्षा है अर न दिमागी ताकत ही, जिकै सूं वै एकठी ताकत नैं बांट सकै, अर उण नैं नये सिरै सूं काम में लेवण सारू पाछी एकठी भी कर सकै।

याही बात पीसै री ताकत पर भी लागू होवै, जिकी एक खास जात में ही समायोड़ी है। घणा सारा लोगां रै काम करणें री काबलियत नैं, आपरा हाथां में ही भेळी कर लेणें सूं भागवान लोग आज इण हालत में पूग्या है। घणा सारा लोगां री भेळी महनत ही वांरी पूंजी है, जिकी धन रो ठोस रूप धारण कर लियो। महनत री या ताकत ही असली पूंजी है जिकी हर मजदूर में छिपी बैठी है। जे वैं सगळा या बात कह सकै के "म्हे म्हारी ताकत एकठी करस्यां", तो वांरी असली पूंजी वांरा खुद रा हाथां में होवै। जिकां में भेळा होणें री योग्यता नहीं होवै, वां नैं तो दुख जरूर भोगणो पड़ै। दूजां नैं गाळ काढणें या लूट मार करणें सूं वानैं कोई टिकाऊ फायदो नहीं मिल सकै।

दुनियादारी रा मामलां में मिनख घणा दिनां ताईं आपरै मिनखपणें नैं भुलायो राख्यो है, अर खाली लालच बढाणें में ही आपरी ताकत लगाई है। अणगिणत गुलाम दौलत रै रथ में जुतग्या है अर कोरड़ा री मार सूं हांक्या जारया है। पण सतायोड़ा लोग आखर आपणें आपनैं कहसी, "आपणो खिन्डयोड़ो ताकतां ही मूठां रा हाथां में भेळी हो वांनैं ताकत दी है। आपां हमलो कर'र उण ताकत नैं खोस तो

सकां, पण उणमें पाछो भेळी नहीं कर सकां, जिकै सूं बा आपणां कोई काम री कोनी हो सकै। इण वास्तै आपां नैं आपणी सगळी मेहनत री ताकत नैं भेळी करणै री कोसीस करणी चाहीजै, अर उण सूं आर्थिक लाभ उठाणा चाहीजै, जिकां नैं आपां सगळा बांट सकां।"

यो ही सहकार रो सिद्धान्त है। यो सिद्धान्त ही मिनख नैं ध्यान में बडो बणायो, अर उण रा व्यावहारिक कामां नैं नैतिकता रो आधार दियो। जठै इण री कमी है, बठै दुख, द्वेस, झूठ, क्रूरता अर फूट है।

ताकत सूं ताकत री भिड़त में धाकधेर आग उपड़री है। अखितयार लालच री वेदी पर मिनख री बळि चढाई जावै है। जे इण नैं नहीं रोकी गई तो इतिहास री सबसूं भयकर तबाही आय जासी। भौतिक मामलां री दुनियां में ताकतवर अर कमजोर रै बीच री खाई आज रो सबसूं गम्भीर खतरो है। भेद तो गुणियां अर अणजाणां में भी है, पण लाग ध्यान रै अधिकार पर न्यारी-न्यारी भींतां कोनी खड़ी करै। पढ्या लिख्या लोग भेळा होर ताकत बढाणै री बात कोनी सोचै। पण दौलत रै बेहद लालच सूं इसी भींतां खड़ी होरी है, जिको हर देस अर हर घर में लोगां नैं एक दूजै सूं न्यारा-न्यारा करै। पहलां रै जमानै में भी लोगां में भेद-भाव रहता हा, पण बीच री भींतां इतणी ऊंची कदे ही कोनी होती। लालच आखै साहित्य, कळावां, राजनीति अर गिरस्ती पर हावी हो'र उण नैं भ्रस्ट कोनी कर सकतो। दौलत रा दायरा सूं परै दूजा जादा लांबा-चौड़ा दायरा भी हा जठै मिनख भेळा हो सकता हा।

समाज नैं अन्तघणी दालत रै किचरतै बोझ रै तळै सूं निकाळणै रो काम भागवानां रो नहीं, गरीबां रो है। मजबूती सूं रूं दृयोड़ै आर्थिक क्षेत्र रो प्रवेस-द्वार बणाणै रो काम बांरै ही हाथां सूं होणो चाहीजै। गरीबां री कमजोरी सूं ही आज ताईं सभ्यता कमजोर अर अधूरी रहती आई है। अब ताकत नैं जोत'र वै इण री पूर्ति करै।

यूरोप रा देसां में सहकारी सिद्धान्त तरक्की करतो जावै है। बां कनै आपणै सूं जादा अनुभव अर जादा एकै री भावना है। आपां भारतवासी, खास तौर सूं हिन्दू लोग, इण बात में घणा पिछड़योड़ा हां। पण या उमेद करी जा सकै के आपणी अणसही गरीबी अर चोखी जिन्दगी री चावना सूं उकतायोड़ा, आपां लोग भी कदे न कदे सहकारी मारग नैं पकड़ लेस्यां। पण जे आपां असफळ हो जावां, तो दुखां सूं बचणै रो आपां कनै कोई मारग कोनी, अर उण रो दोष भी किण नैं ही नहीं दियो जा सकै।

या बात कही जावै के जे पहलां री तरियां मांपां आपणी जरूरतां नै कम सूं कम कर लेवां तो गरीबी रो अन्त हो सकै। इण रो यो ही मतळब होयो के जिको बिलकुल पीदें में पड़्यो है, और ऊण्डो कोनी पड़ सकै। यो कठै रो तरीको है।

मिनख री ख्यात या नहीं बतावै के वो कदे पाछा पगां चालसी। जुग-जुग में उण री बुद्धि नया निर्माणां में ही आपणै आपनै प्रगट करसी। नया जमानां री नई जरूरतां होसी। जिका वैं जरूरत पूरी नहीं कर सकै, वैं हट जासी। आप री खोजी ताकत सूं मिनख आपरै वास्तै नया औसर बणातो जावै, अर उण री जरूरतां बढ़ती जावै। हळ रै आणै सूं पहलां मो मिनख जगळां सूं कन्दमूळ अर फळ भेळा कर'र आपरो गुजारो करतो। उण वखत कुण सोचतो हो के उण नैं कोई चीज री कमी ही। जद हळ री खोज होई तो खेती सरू होई, अर फेर ब्योपार, धन्धा, कानून अर कायदा बण्या। इण रै साथै ही दुख भी आया—हिंसा, चोरी धाड़ा, कपट, ठगी अर झूठ। पण या बात कहणी के इण कारण हळ नैं फेंक देणो चाहीजै, इसी ही बात है, *जिसी आगै चालणै री कोसीस करणियै नै गेलनै मुंह करणै री सलाह देणी।* इतिहास आपां नै कई इसी जातां री बात बतावै, जिकी नई चीजां रै रस्तै पर चालणै री बजाय आपरा मुंह आपरी पुराणी धरोड़ां कानी ही करयां राख्या, अर बठै री बठै ही *बैठी रैगी। वै तो मुड़दां सूं भी बुरी ही, क्यूं के वै जीवती हो मरै समान ही।* या बात तो माननी.हो पड़सी के मुड़दां नै खरचण खातर दाम कोनी चाहीजै। पण आ तो कोई दलील कोनी के गरीबी रो सबसूं चोखो उपाय मौत है। गयै जमानै री चीजां लियां जियां-कियां जीतो रहणो मिनख रो काम कोनी। मिनख री जरूरतां अनेक भांत री है, अणगिणत है, पण आज री जरूरतां पूरी करणै री योग्यता भी उण में है।

ऐस-आराम काई चीज है। अरण्डी रै तेल रै दीवै री जगां किरासणी तेल री लालटेण, अर लालटेण री जगां बिजळी री रोसणी बपराणी ही ऐस-आराम है काई? आंख्यां वास्तै बणावटी चानणै री कोई फायदो ही न होवै जद तो बात दूसरी है, नहीं तो दिन छिप्यां पछै आपां बिजळी री रोसणी नैं छोड़णै री बात ही नहीं सोच सकां। या रोसणी तो आपणी उण जरूरत नैं पूरी करणै रो एक जादा चोखो तरीको है, जिकी नैं अन्धेरो हुया पछै तेल रो दीवो चासता वखत आपां महसूस करी। आज बिजळी री रोसणी नैं बरतणो कोई ऐस-आराम कोनी है। पण इण नैं नहीं बरतणो गरीबां रो लखण जरूर है। जद पैलपोत बैलगाडी चलाई गई तो वा दौलत री निसाणी जरूर ही, पण इण में ही मोटरगाडी रो रूप लुक्यो पड़्यो हो। आज जे बैलगाडी नैं बरतणियो वो आदमी मोटरगाडी में नहीं बढ़ै तो इण सूं उण री गरीबी रो ही वेरो पटै। एक समै री दौलत पछै आवण वाळै समै री गरीबी ही है।

बदळतो जमानो

कोई जादा घणा दिन कोनी हुया, ग्रापणै गांवां रा लोग ग्रापरै फुरसत रै वखत में, मदर रा चूंतरां पर छोटी-छोटी टोळियां में बैठया, गप्पां मारता ग्रर तास खेलता बिताता, ग्रर रात-दिन रै गांव रै जीवण रै घेरै सूं बारै सोचणै ग्रर बात करणै रै वास्तै वां कनै कोई खास चीज कोनी ही। वांरी सांस्कृतिक जरूरतां प्रायकर देसी ख्याल करण वाळी घूमती-फिरती नाटक मंडळियां सूं, पुराण महाकाव्यां रै पाठ सूं, ग्रर कवियां रै कविता रचणै रा दंगलां सूं पूरी होता। उणांरी विसय-वस्तु पक्काई ही पौराणिक साहित्य रै भंडार सूं ली जाती। बा सांकडी सींवां री एक जायी-पिछाणी दुनियां ही, जिकी ग्रापरी ही धुरी पर घूमती रहती। सालूं-साल, पीढी दर पीढी इणरो सार-तत्व बिना बदळया ही फेरा करतो रहतो। इण सूं परै, बडी दुनियां मे, लगातार इतिहास री रचना चालती रहती, जिणरो तेज पवित्र ग्रादर्सां ग्रर करड़ा रीत-रिवाजां सूं मंदो कोनी पड़तो। इतिहास, एक भाग सू दूजै भाग रै संघर्स ग्रर ग्रापस री क्रिया सूं, निरन्तर ग्रापरी सामग्री बदळतो रैयो, जिण सू नित नयी समस्यावां पैदा हुई। पण वै सब प्रक्रियावां ग्रापणी मानसिक द्रिस्टि सू घणी ग्रळगी ही।

देस पर मुसळमानां रो कब्जो होतां ही ग्रापणै ग्रातमसुख रै चौभींतै पर पहलो हमलो हुयो। पण मुसळमान भी उणी पूरब रा हा जिको कदै बदळै नहीं, ग्रर वै भी ग्रापरै ग्रतीत रा कैदी हा। हथियारां री ताकत सूं वै एक बडो सारो राज तो कायम कर लियो, पण वांरा दिमाग मे निर्माणकारी सम्पन्नता कोनी ही। ग्रापणो सींवां में बम्यां पछै ग्रनेक बार वांनु ग्रापांरो तीखो मतभेद रैयो। पण ग्रो मतभेद भी बारै रो ही हो। बो घणा करडा रहतां रो, जिका एक दूजै रा विरोधी हा। वांरो प्रभाव ग्रापणै राज काज रै ढांचै में तो गहरो उतर गयो, पण दिमाग रै क्षेत्र तांई कोनी पूग सक्यो। ऊंची जातां रा लोग जोर-सोर सूं फारसी बोलै लागा, ग्रर उणरा थोड़ा सा सबद बंगला भासा में भी खपग्या। फेर भी, फारसी रो ग्यान उण समै रै बंगला साहित्य पर बहोत थोड़ा दीखणा जोग निसाण छोड़या। बंगला रा कथानकां ग्रर ग्रन्तर्द्रिस्टियां में मुसळमानी साहित्यिक परम्परा रो कोई खोज कोना। इण बात रो एकमात्र ग्रपवाद भरतचन्द्र रो विद्या

सुन्दर है । इणरी बणावटी सैली अर टिकाऊ लय में फारसी पद्धाई रै हळकै व्यग्य री नकल है । इण भांत, भारत री धरती पर ही, आप आपरा पक्का विसवासां में बद हुयोड़ी दो सम्यतावां, कनैं-कनैं एक दूजै सुं मुंह मोड़्यां खड़ी ही । या कोनी कह्यो जा सकै के एक दूजै पर बांरी प्रतिक्रिया कोनी हुयी, पण बा बहोत थोड़ी मात्रा में ही हुयी । मुसळमानां री सारीरिक ताकत भयंकर जोर सू जमीं सू टकराई, पण या लोगां रै विचारां नै या बांरा निर्माणकारी उद्य'ह नै कोनी जगा सकी । एक और बात ध्यान देणं जोग या है के मुसळमान एक न्यारी ही दुनियां सुं हिन्दुस्तान मे जोर सुं आ घुसणं पर भी, आपरी उण दुनियां कानी आपणो ध्यान नहीं पुगा सक्या । आपरी बस्तियां बसा'र बै आपरै आणं रो मारग बंद कर दियो । जे कदे कदास, उण मारग सुं नया हुमला हो भी जाता तो भी इसो कोई बात कोनी हाती जिण सु आपणो ध्यान बारली दुनियां कानी मुड़तो । यो ही कारण हो के आपां, गांवां में मदरां रा चूंतरां पर बैठ्यां, बै ही रात-दिन री गप्पां अर तासां रा खेलां में मस्त हुयोड़ा, सांकड़ी सीवां ही देखता रहता । अर फेर आया अंगरेज । वं खाली मिनख ही नहीं हा, पण यूरोप री नई भावना रा प्रतीक भी हा । अंग्रेजां रो आणो आपणं इतिहास रो एक विचित्र कथा है । ब्यक्ति रै रूप मे वं नया आवणिया आपणं सु मुसळमानां सु भी ज्यादा दूर रहता, पण यूरोप री चेतना रा दूता रै रूप में, बै आपां सुं इतणो गहरा अर सांथो-चोखो सम्बन्ध बणा लिया, जितणो बां सुं पैला आवणिया सगळां मिल'र भी कोनी बणायो हो । यूरोप रो गतिवाद आपणा मूत्या दिमागां पर एक जोरदार थाबो बोल्यो अर मेह री बां फाफां रो सो काम करयो, जिको नीचै री सूखी धरती पर मार करती, उण नै जानदार झटका देवै, अर नयो जोबण सरसावै । इण भांत रो ही गतिवाद उण पुनर्जागरण री हिलोरा में हो जिको इटली नै पसालतो थको महाद्वीप रै ऊपर सुं निकळगी । इणरा कीमती अर अनेक भांत रा प्रभाव अठै भी राष्ट्रीय प्रतिष्ठा वास्तै बाधक कोनी मान्या गया । ग्रहणसील दिमागां मैं कीमती नया विचारां नैं पचा लेणा चाहीजै । देवै अर ग्रहण करणं री विपरीत धारा उण ज्यादा पर बणी तेज वेवै अठै बुद्धि कोनी आपरी रवै ।

आज रै जमानै री चेतना विस्तृत रै क्षितिज सुं आपरी चमक फेंके है जिण सुं दुनिया री ज्यात रो आसो विस्तार सैकन्नण होग्यो है । कोई महान प्रेरणा रै वसीभूत हो, यूरोप रो दिमाग, जमीं रै हर कूणं मे अपणं आप नै पसार दियो है । अठै बठै भी यो पुग्यो बठै ही इण नै जोत मिली । इण री ताकत रो रहस्य काई है ? इण रो जवाब साच री पैल पकड़नै री वणरी ईमानदारी मैं है । बौद्धिक मुस्ती, आपक कहाना, ब्यर्थ री समझणता, या दूजी दूजै ज्यान री भूत मुं या चोसे मे कोनी आई । सुभाव सुं मिनख मैं जिण बात रो विसवास करण री प्रेरणा

ई कलक लागे । ताकतवर लोग आपरी ताकत नैं और बढ़ावण सारू जिण निर्दयतो सूं काम लियो, वांही देवी-देवतावां खातर यो एक हथियार हो, और आपरी कोमल मोहणी बात सूं ही मौकौ जातो के वै कितणो आतंक पैदा कर सकै । कानूनां अर रीति-रिवाजां नैं बांधण रो काम जन साधारण रो ही हो, जिकां साधारण लोगां सूं ऊंचा बैठ्या हा, वां नैं हर कानून नैं तोड़ण रो पूरो हक हो । इण बेमुर्यादे तौर रै धांधु अर मद सूं लोग वांनैं देवरूप कर मानता । वां दिनां एक कहावत कैवतां हा, "दिल्लो रो मालक जहान रै मालक ज्यूं है ।" लोगां रा हुकम इणकेसार है—तुरत न्याय कर देणं रा ही नहीं मरजी मुजब ताकत नैं बरतण रा भी । बामण भू देव—धरती रा देवता—बाजता हा । वै तो और सूं बड़ा बामण रो ही आपरो हक मानता, देवता जिसी महानता वां में कठै ही । बड़ै धरम करम री कोई जगा कोनी ही । शुद्रां पर अत्याचार करण रै बामणां रै जनमसिद्ध अधिकार नैं हिंदू धर्मशास्त्रां में धरम मान्यो है ।

पाछै अंगरेजां रो राज मुगलां सूं कितणो ही ज्यादा ताकतवर भले ही होवो, पण कोई महा मूरख भी लार्ड विलिंगडन नैं दुनियां रै मालक परमात्मा रै बरोबर मानणे रो दावो नहीं कर सके । हवाई बमां सूं सगळा गांवां नैं बरबाद कर देणं री भयंकर ताकत भी वांरै देवरूप नैं प्रकट नहीं कर सकी । अर अंगरेजां रै राज में दुनियादारी आपी लोग भी सगळां पर लागू साधारण मानवता री तरीके सूं इणनैं देख्यो । ताकतवर सूं भी ठीकसिर बरताव करणो री मांग में हिचकी कोनी । असल बात तो या है के सही अर गळत रै इण साधारण सिद्धांत नैं साव लेणं सूं एक चीज में तो अंगरेजी राज अपणैं आपनैं निबळ सूं निबळ गुलाम रै बरोबर ही नैतिक धरातळ पर मेल दियो है ।

जद आपां अंगरेजी साहित्य नैं पलटो जाण्यो, तो इण सूं भावना री फिकर नई दौलत ही नीं मिली, पण मिनख पर मिनख रै अत्याचार नैं मिटाणं री इच्छा भी मिली । राजनीतिक गुलामी री सांकळां तोड़ बगाणे री, मोसरां सूं आपणां कान गूंज उठ्या । मिनख री महनत नैं एक मायिक चीज में बदळ देणं री कोसीस नैं एक ठोसी ललकार मिली । यो ही एक नयो द्रिस्टिकोण हो । आपां या बात मान'र बैठ्या हां के जनम-जनमांतर रै करमां रा भोग पूरब जनमां रा फळ है, जिणां नैं आपां टाळ नहीं सकां, के नीची जात रा दुख अर अपमान चुपचाप सहणा पड़े, अर मोड़ो जनम लियां केर ही आपणी किसमत पळट सकै । आज भी आपणां सिक्षित लोगां में इसा मिनख मिलेगा जिकां राजनीतिक बातां री विरोध करण में तो बिसवास करै पण सामाजिक अर धार्मिक अपंगता रै अपमान नैं सहणं री बात कैवे । वै लोग या बात भूल जावे के आदमी जिसी हालत में जनम लेवै, उणनैं ही करमफेन-लिख्योड़ो अर अचूक मानणं री आदत आपणी राजनीतिक गुलामी री

मोकळ में मवसूं मजबूत कड़ी है। पण, यूरोप सूं सम्बन्ध रै कारण, मापां कारण मर कार्य रा विश्वव्यापी कानूनां नै समझवा लाग्या हां, मर इणसूं मापां नै इसा गुण मिलग्या है जिकां नै धरमग्रन्थ मर जुगां जूना रीतरिवाज फालतू ही बिसरावण री कोसीस करै। इण कारण ही मापां, सगळी कमजोरियां होतां थकां भी, मापणी राजनीतिक स्थिति नै सुधारणै रा जतन करां। माज मापां मापणा साकड़ां रै सामैं मापणी मांगां राख'र वानैं ललकारां, वो मांगां नै मुगल बादसाह रै सामैं राखणै री सुपनो भी सायद नहीं ले सकैं हा। इण री कारण वो मादरसं ही है जिण नैं कवि मापरी कविता में यूं कयो है—"मिनख मापर मिनख ही है।"

मैं मब सत्तर साल पार कर लिया है। १६वीं सदी रै बीचलै'क मैं इण नयैं जमानैं मे पग धरयो हो, जिण नैं यूरोप रो जमानो कैयो जावै तो ठीक रैवै, पण जिण नैं माजकल रा जवान मजाक में विक्टोरिया रो जमानो कैवै। उण समैं मापां नैं यूरोप रो ध्यान करावणियो ब्रिटेन मापरी ताकत मर धन दौलत री चोटी पर हो। उण बखत कोई भी या बात सोच ही नहीं सकै हो के इण रै मालीसान महल में भी कदे तरेड़ पान सकै जिण में सूं दुरमा बड़ सकै। इयातां रा पाठ चाये क्यूं भी बतावो पण कठैं भी इसा चिन्ह दीखता कोनी हा, जिणां सूं उण बखत री विच्छमी सभ्यता रै सामीं चालण वाळी हवा रो ठा पड़ सकै हो। जिण मादसां खातर सुधार मर फांसीसी क्रांति री लड़ायां लड़ी गई ही, बां— बोलणैं री छूट, मर व्यक्ति री माजादी रा मादसां री मोल गिराणै वाळी इसी कोई घटना कोनी घटी ही। विक्टोरिया रै जमानैं में संयुक्त राष्ट्र ममेरिका हबसी गुलामां री माजादी खातर घरू लड़ाई में टुकड़ों-टुकड़ां हो रयो हो। वो जमानो मैजिनी मर गैरीबाल्डी रा संदेसां सूं गूंजतो हो। ग्लैडस्टन तुरकां रा मत्याचारां री गरज-गरज'र बुराई करतो हो। वो ही वो समैं भी हो जद भारत में मापां लोग देसरी माजादी री मास पाळवा लागग्या। या साची बात है के उण माव में मंग्रेज बिजेता सूं बैर री भावना भी ही, पण साथ ही मंग्रेजां रै चरित्र मे घणो मोटो विसवास भी हो। जे या बात नहीं होती तो मापां इण नतीजैं पर कयां पूगता के मिनखाचार रै कारण मापां भारत रै सासन में बरोबरी रो हिस्सो मांग सकां हां।

पुराणैं जमानैं सूं एक नया मरथां मर नया मोलां रै नयैं जमानैं में मापां चाणचूकी ही पग धरया। मापणैं खुद रै घर में, मापणैं बास मर बिरादरी में मिनख रै मधिकार, उणरी सान मर सगळी जातां री बरोबरी री कोई गहरी चेतना कोनी ही। उण बखत री प्रगतियां में विग्यान रै प्रति मापणी मसराट बल भी हो। विग्यान रैं मापणैं दरूजो खटखटाता बखत भी, पतड़ा रा मड़गोबरी री मानता रही। फेर भी विच्छम रै तर्कवाद री छाप मापणैं पर पड़ी।

इण सूं, या साफ बात है के विक्टोरिया रो जमानो यूरोप सूं मापणैं बणै

गहरै सहकार रो जमानो हो। असल में तो बात या है के जठै-जठै आपणै दिमाग रा यूरोप रै दिमाग सूं मेळ नहीं हो, पर जठै-जठै आपणी सिक्षा यूरोप रै ढग रो नहीं ही, बठै-बठै नुकसाण आपणो ही हो। यो सहकार तदताई घणो आसान रैयो जद ताई यूरोप खातर आपणी मानता रै ठेस नहीं पूगी। मैं जिया पैला कैयो हो इण जमानै रो जनम यूरोप खातर आपणी मानता रै कारण ही हुयो। जे आपां या नहीं देखतां के कियां बुद्धि रै राज में, यूरोप छळ-बायरै तर्क री पूजा करै, अर कियां राजनीतिक मामलां में मिनख रै अधिकार री बात कैवै, तो यो जमानो कोनी आतो। इण भांत ही, सगळा विरोधां रै होतां हुयां भी, आपणै में स्वाभिमान जाग्यो अर उण रै सार्थ ही आपणा लोगां खातर नई उमेदां भी जागी। आपां ताकतवाळां नै वां रै ही परगास में जांचणा सरू करया। या बात भी मानणी पडसी के आपणा *पैनड़ा सासका ताईं पूगण रा इमा आधार कदे ही कोनी रैया, क्यूं के वां री उदारता* रै बखत दो मौकै-टोकै मेहरबानियां मिल सकती ही, पण साधारण सीलाचार रै भरोसै वांसूं कांई मांग नहीं करी जा सकै ही, अर न मिनख मिनख सूं चावै जिकी समझ हो बठै ही।

तदमूं इतिहास आपरै मारग आग्यो आयो है। एसिया आपरी लांबी नींद री रात सूं जागणै रा चिन्ह दरसाया है। पिच्छम सूं आपरै सम्बन्ध अर संघर्स रै कारण जापान दुनिया री ताकतां रै बरोबर रो दरजो जीत लियो है। वो या बात साबित करदी है के वो आज रै जमानै मे जोवै है, बीत्यै जुग रै झिळमिळ चानणै में नहीं। दूजा पूरब रा देस भी जमानै में पग धर दिया है। आपां भी इतणां दिना या उमेद करता हा, के दुनियां रै इतिहास रै इण पख सूं आपां नै भी राग मे राग मिलाणी चाहीजै, के आत्मनिर्णय रो आपणो रथ भी प्रगति कानी *गुडसी, अर खुद अंगरेज हो उण नै आगै चलाणं में मदद करसो।* पण इतणै लाबै अरसै तांई उडीक'र आपां नैं अब ठा पड़ी के नण रथ रा पैंडा गुड़ण खातर बण्या ही कोनी, अंगरेज लोग तो भारत में कानून अर व्यवस्था, *नियम अर कायदा* वणाणै में हा बिसवास करै। सिक्षा अर स्वास्थ्य री बढोतरी रा उपाय रो देसरी जरूरतां सूं कोई रिस्तो कोनी। नई दौलत पैदा करण सारू लोगां खातर कुछेक धन्धा है। आगै कोई उमेद को है नी। कानून अर व्यवस्था रै काम में ही आपणा सारा साधन सूंत लिया जावै। या कितणी अजीब बात है के यूरोप सूं भारत रै सम्बन्ध रै कारण ही आज रै बखत रा मोटा वरदान भारत नैं नहीं मिल सकै। नयै जमानै रै सूरज री चकाचूंध में भारत नैं एक काळो दाग बण'र ही रहणो पड़ै।

इंगलैंड, फ्रांस अर जर्मनी-तीनूं संयुक्त राष्ट्र अमरीका रा घणा मोटा करजदार है। पण, करजा तो जे इण सूं दुणा भी होता तो चूक सकता हा, जे

करज लेवणवाळा देस म्हारो कानून अर व्यवस्था बणाई राख'र लोगां रो जीवण-स्तर बिलकुल नीचो कर देता अर साधारण जरूरत तू' म्हांरो भोजन, तिण कुर्ळ जिणो पाणी रो विवेक भ्रम, सैंकड़ं गैल पांच सात लोगां नैं मिळा, अर हाडां में गहरी उतरयोड़ो नामरदी नैं मुणक्यां हो तू' छू सकै इसी इलाज री सवा ही देता । पण ऊं बातां सभ्य जीवण रै खिलाफ पड़ै । इण वास्तै करजदार धोरै मूं' कह देवै- "म्हे म्हारी जुम्मेंवारी कोनी निभावां।" भारत भी जीवण रै मामूली विस्टाचार रै मातै या ही बात कह सकै हो-"म्हे बहोत घणां खरचीलै सामन रै तरीकैं मूं' लादयोड़ो उण कोथळी में घोर भाडा नहीं रह सकां, जिको भगूतं मोटं माळं रो ज्यूं म्हारै पर पड़ी है, अर म्हां'नै आदिम काळ री जिसी हालत में पटक राख्या है।" आखर यूरोप वाळा जीत्योड़ा लोगां नैं जीवण रो बो' दरजो क्यूं नहीं देवै'जिको वै खुद बणाया है ? आखी दुनिया रै प्रति वांरी कोई जुम्मेवारी कोनी कांई ?

या बात धीरै-धीरै साफ होती जारी है कै यूरोप रो सींव यूं नारं, सभ्यता रो मसाल चानणो दिखाणै खातर कोनी हो, आग लगाणै खातर हो । अर या ही बात होई भी, जद अमल री गोळियां रै गैल-गैल तोपारा गोळा चीण रै छाती पर चलाया गया । यो एक इसो जुलम हो जिण रो बरोबरी इतिहास में ढूंढ्यां ही नहीं मिलै, अर मिलै भी तो सायद उण बखत रै अमरीका में, जद यूरोप री ताकत सोनै रै लालच में घोर्ले अर हिंसा मूं बठै री सानदार जात 'मय' नैं खतम करणै रो काम करयो । पिछलै जमानै में खूंखार तातारो लोग जिण देसां नैं जीतता बठै मिनखा री खोपड़ियां रा ढेर लगा'र यादगारां चिणता । वारा करयोड़ा घाव तो भरग्या, पण सभ्य यूरोप रा लोग जिको जहर प्रलेखां चीणियां रा गळां म ठूंस्यो, बो घाव आज भी कोनी भर पायो । जद ईरान में जवान लोगां रोळो कर'र सदियां री ऊंघ सूं देस नैं जगाणै री कोसीस करी तो यूरोप रा सभ्य लोग उणं साहस नैं दबा दियो । या दरद भरी कथा 'सुस्टर' नांव रो लेखक आपरी 'फारस रो दमन' नांवरी पोथी में लिखी है । अफ्रीका रै 'कोंगो' नांव रै प्रदेस में यूरोप वाळां रै राज रा आतंकां नैं कुण कोनी जाणै ! आज भी संयुक्त राष्ट्र अमरीका रा हबसियां नैं समाज रा घणा तिरस्कार महणा पड़ै ।

महाजुद्ध रै आतां ही यूरोप रै इतिहास मंच पर चाणचुको एक पड़दो उठयो । उण बखत यूं जाण पड़यो जाणै कोई मदहोस बावळो आपरी पूरी जिद पर चढयोड़ो हो । इसी बुरी निर्दयता हजारां बरसां पहलां रै अंधकार जुग में भले कदे होई हो, पण इसै राखसी ढंग सूं तो कदे भी नहीं होई होसी । पुराणै जमानै में बर्बरता आपरी ही धूळ रै बादळ में समायोड़ै भंभूळियै री तरियां होती । पण, आज रै जमानै रो यो बिस्फोट तो ज्वालामुखी रो सो बिस्फोट हो । यां बा दबो

पड़ी निर्दयता हो, जिको ढकणों नैं उछाळ फेंकतो, 'लावा' री ज्यूं निकळती अर आपरी चकाचौंध में आभै नैं रातो करतो, जमीं री हरियाळी नैं भसम कर गेरतो। उण बखत सूं ही यूरोप रो आपरी खुदरी स्याणप में ही बिसवास कोनी रैयो, अर आपरी बदतमीजी सूं यो मिनख री भलाई रै आदर्स री ही मजाक उडाणी सरू करदी। ब्रिटेन सूं आपणै सम्बन्ध रै मारफत जिण यूरोप नैं म्हां जाणता हा, बो भूंडी चीजां पर खामोस रहतो। पण अब बो उणी सालीनता रो ढोंग कोनी रचै।

पिच्छम री सभ्यता अब कोई इज्जत री चीज कोनी रैयी। उण रै खुलै घमंड में जिनावरां री सी निर्दयता री पकड़ भरी पड़ी है। एसिया में भी आपरां यूरोप रै पट्ट चेलै—जापान नैं, कोरिया अर चीण में आपरै गुरू री तरियां ताकत रै घमंड री नकल करतां देखां। आयरलैंड में काळा-भूरां री बावळी क्रूरता सुपनैं में भी सोचणै री चीज कोनी। भारत में भी आपां लोग जलियांवाळा बाग री भयंकर घटना देखी है। बोही यूरोप जिको एक बार तुर्कां नैं बुरी-भली कहतो हो, आज अधिनायकवाद नै भी मात करै। मनरी बात बोलणै री आजादी, जिणनैं आपां कदे यूरोप री बहोत बडी देण मानता हा, आज बुरी तरियां दबाई जावै है। कदे यूरोप रा आसणां सूं मिनखरी आत्मा रो आदर करणै री बात रो प्रचार करयो जावै हो, पण ईसा रा उपदेसां में बिसवास करणियां बां लोगां रै अब काई होग्यो जिकां नैं दुसमणां सूं भी प्यार करणै रो आदेस दियो गयो है। इटली आपरा राजनैतिक विरोधियां नैं काळै पाणी री सजा देवै, अर सगळा या बात मनोमान जाणै के बठै किसो नरक भुगतणो पड़ै। अर जरमनी, जठै यूरोप री सम्यता रो चानणो सगळां सूं तेज हो, सभ्यता रा सारा मोल दूर बगाया। सारै देस में बठै राखसपणो बड़ै मजै सूं फैलग्यो है।

मैं आपनैं बै लोकोक्तियां सुणाऊं जिकी फ्रांस रो सांतिवादी जवान लेखक रेवेरमंड लिखी है—

"लड़ाई रै पीछै मनैं जिनी में भेज्यो गयो—पढ़रा बरता रो काळो पाणी। मैं कस्टा रै प्याले री आखरी घूंट ताईं पीई है। पण काळै पाणी री सजा पूरी करयां फेर तो एक ही सजा बाकी बचै अर बा है जीवण भर रो देसनिकाळो। जिनी में आवतां बखत बतानी, जोम अर स्वास्थ्य सो क्यूं रैवै, पण अठै सूं जाती बखत (जे कोई जावण पावै) कमजोरी, बुढ़ापो अर बिमारी हो ले जावै। जिनी में आवै जद तो आदमी ईमानदार हुवै, पण थोड़ा ही महीनां में बो भ्रस्ट हो जावै। काळो पाणी भुगतणियां लोग अठै रा दुःखां—बुखार, पेचिस, टीबी अर मच्छरां सूं बणी भयंकर कोढ़ रा सिकार भट हो जावै।"

ज्यूं-ज्यूं महाजुद्ध रै बाद रै यूरोप री निर्दयता सारी दुनियां में फैलती जावै, म्हांनै म्हारै आप नै पूछ्यो–"मिनख री बा सबसूं ऊंची कचेड़ी कठै, जठै अत्याचार रा सिकार आपरी आपरी फरियाद कर सकै? तो फेर कांई म्हांनै मिनखपणै में आपणो बिसवास छोड़ देणो? बर्बरता री जवाब बर्बरता सूं ही देणो?"

पण, इण निरासा रै वखत भी म्हांनै या बात याद राखणी चाहीजै, के आज भी अधोगति चाहे जितणी भयंकर होवो, म्हां अब भी, आपणो माथो ऊंचो करणां, इण पर फतवो देवण जोगा हां। म्हां या घोसणा कर सकां हां के या मिनख रै ही जोग चीज है। म्हां इण री निन्दा करता हुआ कह सका हां–"मरो-खपो", इण बुरा दिनां में भी इसा आदमी है, जिका इण ललकार रै खातर आपरी जिन्दगी खतरै में गेर देवै, या बात, इण सगळै डर अर दुख सूं भी बाधा अरथ भरी है। अत्याचारियां रा डडा चाहे वांरी हाडी-हाडी तोड़ गेरै, पण फेर भी, वै हाथ जोड़'र पुराणै वखत री तरियां, या नहीं कैवै के–"दिल्ली रो राजा नगरी रै राजा रै बरोबर है।" अर न वै या बात मानै के ताकतवर क्यूं भी कोनी बिगाड़ सकै। इणरो बजाय वै या बात कहसी के ताकतवर नै जादा सूं जादा जुम्मेवारी लेणी चाहीजै, अर उणरा करयोड़ा बुरा कामां री उणरी कसौटी मुजब, जादा सूं जादा निंदा करी जाणी चाहीजै, जे कदे बो दिन आवै, जद दुखियां री अवाज अत्याचारियां री क्रोध भरी गुर्राहट नै–"लानत है"–यूं कह'र दाब देणै री ताकत खो देवै, जद ही म्हां जाणस्यां के नयै जमानै में अब कोई दम कोनी रैयो अर यो सदीं-सदीं खातर दिवाळियो बणग्यो।

—१९३४

म्हारो प्यार थारै पर बोझ नहीं बणै,
म्हारा मानता,
मैं जाणूं, यो आपारो मोल खुद चुका देवै।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सभ्यता रो संकट

आज मैं म्हारा अस्सी बरस पूरा कर लिया है। अब मैं म्हारा लारला बरसां कानी मुड़'र ध्यान सूं देखूं तो मनैं म्हारैं दुख अर म्हारा देसवासियां रैं सोचणैं-विचारणैं रैं तरीकै मे एक घणो बडो अर दुखदायी फरक आयोड़ो देख'र अचम्भो होवै।

आपणैं इतिहास मे अंगरेज जात सूं आपणा जिको सम्बन्ध हुयो उण सूं ही दुनिया रा मिनखां सागै आपणो सीधो सम्बन्ध कायम हुयो। वैं लोग साहित्य री एक मोटी परम्परा ले'र आपणैं कनैं पूग्या अर उण में आपरी असलियत प्रगट करी। वीं दिनां आपां जिको ग्यान प्राप्त करयो वो बहोत थोड़ो अर अनेकता सूं घणो दूर हो। जद भी विग्यान आपणी पूंच सूं बारै हो। आपां अंगरेजी साहित्य री घणी पढाई करी। इण री प्रससा सभ्यता रो चिन्ह बणगी। आपां बर्क री भासण कळा अर मैकाले रा भतकारां में घणी बातां करी। घणैं उछाह सूं आपां सेक्सपियर अर बायरन री अर वां रैं बखत रैं मानवतावादी राजनैतिक दर्सन री चर्चा करी। आ बात साची है के आपां आपणी रास्ट्रीय सुतन्त्रता नैं लेवण री प्रतिग्या पैलां सूं ही कर राखी ही, पण आपणां मांयला मनां में अंगरेजां री उदारता पर घणो विस्वास हो। हारयोड़ा लोग जीतण वाळा सूं सुतन्त्रता रो गेलो पकड़ावण री पक्की उमेद कर राखी ही। देस रैं खातर मरणियां अर नुकसाण उठावणियां, खास तौर सूं राजनीतिक सरणार्थियां खातर इंगलैंड एक सरण रो जगां कोनी ही काईं। अंग्रेजां री इण मानवता रो आपां साची कदर करता हा। इण सिलसिले में मैं आपनैं बताऊं के म्हारी जवानी में जद मैं पैलपोत इंगलैंड गयो तो मनैं पार्लियामेन्ट रैं मांय अर बारै दानूं जगां ही जॉन ब्राइट नैं सुणनै रो मौको मिल्यो हो। वांरै मामूळ सुधारवाद सूं जिकै, सगळा रास्ट्रवादी झुकावां सूं बहोत ऊंचो हो, म्हारै मन पर इसी गहरी छाप पड़ी के आज ताईं मामा-बाळ सूं दूर हुयां पाछै भी, उण री थोड़ी झलक सी आवै।

आ बात नहीं समझणी चाहीजै के आपणा सासकां री उदारता रो आसरो लेणो कोई घमण्ड री बात ही। पण आ बात तो तारीफ री हो ही के एक विदेसी जात में भलाई रो इसारो देखण री मांस्यां आपणैं मनैं ही, अर उण खातर आपां वांनैं

ज्यूं-ज्यूं महाजुद्ध रै बाद रै यूरोप री निर्दयता सारी दुनियां में फैंनती जावै, आपां आपणै आप नै पूछां—"मिनख री बा सबसूं ऊंची कचैड़ी कठै, जठै अत्याचार रा सिकार आपरी आखरी फरियाद कर सकै? तो फेर कांई आपां मिनखपणै में आपणो बिसवास छोड़ देवां? बर्बरता रो जवाब बर्बरता सूं ही देवां?"

पण, इण निरासा रै बखत भी आपां नै आ बात याद राखणी चाहीजै, के आज भी अधोगति चाहे जितणी भयंकर होवो, आपां अब भी, आपणो माथो ऊंचो करपां, इण पर फतवो देवण जोगा हां। आपां आ घोसणा कर सकां हां के आ घिरणा रै ही जोग चीज है। आपां इण री निन्दा करता हुया कह सकां हां—"मरो-खपो", इण बुरा दिनां में भी इसा आदमी है, जिका इण ललकार रै खातर आपरी जिन्दगी खतरै में गेर देवै, आ बात, इण सगळै डर अर दुख सूं भी वाधा अरथ भरी है। अत्याचारियां रा डंडा चाहे वांरी हाडी-हाडी तोड़ गेरै, पण फेर भी, वै हाथ जोड़'र पुराणै बखत री तरियां, आ नहीं कैवै के—"दिल्ली रो राजा नगरी रै राजा रै बरोबर है।" अर न वै आ बात मानै के ताकतवर क्यूं भी कोनी बिगाड़ सकै। इण री बजाय वै आ बात कहसी के ताकतवर नै जादा सूं जादा जुम्मेवारी लेणी चाहीजै, अर उणारा करयोड़ा बुरा कामां री वणरी कमोटी मुजब, जादा सूं जादा निंदा करी जाणी चाहीजै, जे कदे वो दिन आवै, जद दुखियां री अवाज अत्याचारियां री क्रोध भरी गुर्राहट नै—"लानत है"—यूं कह'र दाब देवणै री ताकत लो देवै, जद ही आपां आगल्यां के नयं जमानै मे अब कोई दम कोनी रैयो अर वो सदां-सदां खातर दिवाळियो बणग्यो।

—१९१४

म्हारो प्यार थारै पर बोझ नहीं बणै,
म्हारा मानखा,
मैं चाहूं, वो आपारो मोल खुद चुका देवै।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सभ्यता रो संकट

आज मैं म्हारा असी बरस पूरा कर लिया है। अब मैं म्हारा लारला बरसां कानी मुड़'र ध्यान सूं देखूं तो मनै म्हारै खुद अर म्हारा देसवासियां रै सोचणै-विचारणै रै तरीकै में एक घणो बडो अर दुखदायी फरक आयोड़ो देख'र अचरज होवै।

आपणै इतिहास में अंगरेजां आवण सूं आपणो जिको सम्बन्ध हुयो उण सूं ही दुनिया रा मिनखां सागै आपणो सीधो सम्बन्ध कायम हुयो। वै लोग साहित्य री एक मोटी परम्परा ले'र आपणै कनै पूग्या अर उण में आपरी असलियत प्रगट करी। वां दिनां आपां जिको ग्यान प्राप्त करयो वो बहोत थोड़ो अर अनेकता सूं घणो दूर हो। अठै भी विग्यान आपणी पूंच सूं बारै हो। आपां अंगरेजी साहित्य री घणी पढ़ाई करी। इण री प्रसंसा सभ्यता रो चिन्ह बणगी। आपां बर्क री भासण कळा अर मैकाले रा अलंकारां में घणी बातां करी। घणै उछाह सूं आपां सेक्सपियर अर बायरन री अर वां रै बखत रै मानवतावादी राजनैतिक दर्सन री चर्चा करी। या बात साची है के आपां आपणी राष्ट्रीय मुक्ति नैं लेवण री प्रतिग्या पैलां सूं ही कर राखी ही, पण आपणा भीतरला मनां में अंगरेजां री उदारता पर घणो विस्वास हो। हारयोड़ा लोग जीतण वाळां सूं सुतन्त्रता रो गेलो पकड़ावण री पक्की उमेद कर राखी ही। देस रै खातर मरणियां अर मुकताण पठावणियां, खास तौर सूं राजनीतिक सरणार्थियां खातर इंगलैंड एक सरण री जगां कोनी ही काईं। अंगरेजां री इण मानवता री आपां साची कदर करता हा। इण सिलसिलै में मैं आपनै बताऊं के म्हारी जवानी में जद मैं पैलपोत इंगलैंड गयो तो मनै पार्लियामेन्ट रै मांय अर बारै दोनूं जगां ही जॉन ब्राइट नैं सुणनै रो मोको मिल्यो हो। वांरै आमूळ सुधारवाद सूं जिकै, सगळा राष्ट्रवादी झुकावां सूं बहोत ऊंचो हो, म्हारै मन पर इसी गहरी छाप पड़ी के आज तांई माया-जाळ सूं दूर हुयां पाछै भी, उण री थोड़ी झलक सी आवै।

या बात नहीं समझणी चाहीजै के आपणा सासकां री उदारता रो आसरो लेणो कोई घमण्ड री बात ही। पण या बात तो तारीफ री ही ही के एक विदेसी जात में भलाई रो इसारो देखण री आंख्यां आपणी कनै ही, अर उण खातर आपां वांनैं

साबासी देणी मुस्या कोनी। मिनख जात री भाषीजी री कीमती सूं कीमती चीजां भी कोई एक देस या जात रै ठेकै री ही चीजां बण'र कोनी रैयी, अर न वां सूं कंजूस रो सो गुप्त खजानो ई आज ताईं कठै बण्यो जिको कदे छीजै नहीं।

आज भी आ बात है के अंग्रेजी साहित जिकै सूं आपां नै असली पोखण मिल्यो है, आपणां मनां में बणी ऊंडी चेतना जगावै।

अंग्रेजी सब्द 'सभ्यता' खातर बगला रो कोई बिलकुल सही पर्याय हूंढणो कठण है। म्हारणै पुराणै जमानै री सभ्यता नै मनु महाराज सदाचार रो नांव दियो। इण में समाज री वै परम्परावां सामिल ही जिको समाज री आचार-संहिता बणगी। विचारां री सुतन्त्रता री जगां लोग-दिखावो पनप्यो, जिको जादातर अन्यायपूर्ण अर अत्याचारी होतो। आधार रा जिका नियम मनु बणाया वै बखत पा'र सदीव सूं चलो आती परम्परावां रै रूप में बदळ'र जड़ बणग्या।

म्हारै टाबरपणै में अंग्रेजी पढ्योड़ा लोग समाज रा कठोर नियमां रै प्रति विद्रोह री भावना महसूस करता हा। उण विद्रोह रा चित्र उण बखत रै बंगला साहित में मिलै है। उण जमी-जमाई संहिता री बजाय आपां 'सभ्यता' रै उण आदर्स नै मानण लाग्या जिको अंग्रेजी रै 'सिविलिजेसन' सब्द सूं सामनै आयो अर जिण रो खुलासो अंग्रेजां रै 'चरित्र' सूं दीखतो।

म्हारै खुद रै घर में ही इण सकारण परिवर्तन री घणी अगवाणी करी गई अर उण रो असर विचारां में अर कामां में दोनूं तरियां ही लखायो। इसै वातावरण में जनम ले'र, अर साहित खातर म्हारै कुदरती झुकाव सूं प्रेरित हो'र, मैं अंग्रेजां नै काळजै रै ऊंचै आसण पर बैठ्या देख्या।

म्हारी जिन्दगी रै उण सरूआत रै बखत री अन्त जादू रो असर हट्यां फेर री मानसिक पीड़ा मैं हुयो। मैं आ बात खोजणै री घणी-घणी कोसीसां करी के जिका लोग सभ्यता रा ऊंचा सूं ऊंचा गुणां रा दावेदार बणै, वै ही, अवसर राष्ट्रीय हितां री बाजी लागै जद-जद कियां वां गुणां नै इतणी आसानी सूं न्यारा फेंक देवै।

एक इसो वखत आयो जद मनै म्हारी साहित साधना सूं न्यारो हटणो पड़ग्यो, क्यूं के भारत रा अणगिणत लोगां री भयंकर गरीबी म्हारी आंख्यां सूं अळगी कोनी हो सकी। मैं आ बात महसूस करी के सायद ही कोई राज आज रै बखत में इसो होसी जठै जिन्दगी री मूळ जरूरतां—खाणो, कपड़ो सिखा अर स्वास्थ्य-सेवा रो इतणो घाप'र तोड़ो हुवै। अर फेर भी इण देस रा चूस्योड़ा साधनां सूं ही अंग्रेज जात री दौलत साल-साल बढती जारी ही।

अंग्रेजी सभ्यता री सान सोकत में खोयोड़ो मैं या बात कदै भी कोनी सोची हो के इण सभ्यता सूं बरसां री अमीरी सूं पाळपोड़ा जुगां रो इसो भूंडो रूप-आपणा अणगिणत मिनखां रै प्रति वां री घिरणा अर कट्टरता री एक पिछाण हो।

आपणो असहाय देस नै अमीरी कदे ही कोनी सम्भळाई गई, जिण रै कारण ही अंग्रेज दुनियां में एक ताकत रै रूप में अकड़ री चाल चाले। इण बीच में जापान आपरी आर्थिक ताकत नै तेजी सूं बढाणै सारू मसीना नै जादा सूं जादा काम में लेतो आयो है। जापान री समृद्धि अर राष्ट्रीय तरक्की रो विस्तार मैं म्हारी आंख्यां देख्यो है बाद में, मास्को में भी, मैं रसिया री वा अथक ताकत देखी है जिण सूं वै आपरै देस सूं बीमारी, अशिक्षा, अग्यान, कंगाली अर सरम री हर बारली निसाणी नै एक दम मेट देणं री कोसीस करी है। जात-पांत रै दुराग्रह सूं छूट'र सोवियत लोग आपरै आखै राज में मिनखां रै भाई चारै री ताकत नै साकार कर दी है। जिकी फुरती सूं अर जितणी चाणचुकी वै लोग तरक्की करी है उण सूं मनै खुसी अर ईर्सा दोनूं एक साथै हुवै।

एक अजीब बात जिकी मास्को में सोवियत लोगां रै जीवण में मनै चोखी लागी बा या ही के वै लोग आपसरी रा स्वार्थां सूं एकजूट हो'र घणो मोटो काम करयो अर जात-पांत रा भेदां सूं राजनीत रा झगड़ा मे फसणं सूं बच्या। आज दुनिया में दो मोटी ताकतां है-अंग्रेज अर रूसी, जिका घणखरा देसां पर हावी है। अंग्रेज लोग आपरै राज में गुलाम जाता नैं मरयोड़ी सी हालत में राखर वां रै *मिनखपणै नैं कुचळ दियो है। पण रूस में हालत दूसरी ही है।* वां रै राज में अनेक मुसळमान जातां सूं राजनीत रा सम्बन्ध ही है। बठै री राज वां लोगां रै भले रै खातर लगातार करड़ी महनत करी है अर सगळां रा स्वार्थां नैं एकजीव करणे री कोसीस करी है। मैं ईरान भी देख्यो है, जिको घणा दिनां ताईं दो यूरोप री ताकतां रै बीच, चाकी रा पाटां री ज्यूं, दळयो गयो, अर अचार आजाद हो'र आपरी किस्मत *बणाणै में जुटयोड़ो है। मैं अबार जद बठै गयो तो मनै या जाण'र घणी खुसी होई* के जिका जोरास्टरी लोग पहला बड़ी जात वाळां री दया पर जीवै हा, अब वां पर कोई दबाव कोनी हो। ईरान री नई जिन्दगी उण बखत सूं ही सरू होई जद वो यूरोप री चालां रै पजं सू आपरो पिण्डो छुडवायो। मैं साचै मन सूं ईरान रो भलो चावूं।

आपणो एक पड़ोसी, अफगानिस्तान री बात करां तो या मालूम देवै के बठै शिक्षा अर सामाजिक विकास रा क्षेत्रां में तो हाल घणो काम करणो बाकी है, पण बठै लगातार उन्नति करणं रा आसार चोखा है। इण री कारण यो है के हाल यूरोप री कोई ताकत अफगानां रै इण देस नैं आपरी गळघोटू पकड़ में ले कोनी सकी।

पण भारत, अंग्रेजी राज रै अणतोलै भार नैं ढोतो ढोतो निस्क्रिय अर सुस्त पड़ग्यो। जूनी अर मोटी सभ्यता हाळै एक दूजै देस–चीण रो दुख भरयो इतिहास मनैं याद आवै। अंग्रेज चीणियां नैं अमल रो नसो सिखायो अर फेर वांरी भोम खोसणी सरू करी। इसी घटनावां री याद मन्दी भी को पडी ही नी के दूजो अत्याचार हुयो। जापान उत्तरार्ध चीण नैं हड़पणो सरू कर दियो, अर इण डकैती नैं अंग्रेज राजनीतिग्यां बेईमानी री घटणा कह'र टाळ दी। बाद में अंग्रेजी राजनीतिग्य स्पेन रै प्रजातन्त्र नैं खतम करणं में चतराई सूं सा'रो लगायो।

दूजै कानी मैं इसा बहादर अंग्रेजां री टोळी भी देखी जिका स्पेन री सुतन्त्रता खातर लड़ता आपरी जानां देदी। आ भी साची बात है के जद एसिया रै एक देस–चीण पर इसो सकट आयो तो इसी उदार भावना अंग्रेजां रा दिलां में कोनी ऊगी। कुछ भी हो, यूरोप रै एक प्रजातन्त्र खातर बहादरी री जिको त्याग करयो गयो उण सूं वा साची अंग्रेज भावना साबित होई, जिण नैं म्हारी पैलड़ी उमर में मैं घणो आदर दियो हो। इण भेद री घणो तकड़ो असर म्हारै पर पड़यो, जिण सूं पिच्छम री सभ्यता मे दिन पर दिन घटतै म्हारै बिसवास री आ दुख भरी कथा मनैं कहणी पड़ री है। अठै भारत में सभ्य लोगां रै सासण री दुख जिन्दगी री मूळ जरूरतां— भोजन, कपड़ो, सिक्षा अर इलाज री सुविधावां री घाव'र कमी में ही चोड़ै कोनी दीखै है, पण इण सूं भी बुरी तरियां उण रूप में निजर आवै जिण में अै देस रा लोगां नैं एक दूजै रै खिलाफ कर'र देस रा टुकड़ा-टुकड़ा कर गेरया है। अठै पर फूट छिड़कावण री तरियां अै इण बिगाड़ खातर आपणी सामाजिक हालतां नैं ही दोस देवै। पण जे राज रा सबसूं ऊंचा अफसर मुंह छिप'र इण मैं बढ़ावो नहीं देता तो आ बुराई इण रूप में कदे ही कोनी प्रगटती।

मैं आ बात कदे ही कोनी मान सकूं के आपा भारतवासी दिमागी कामां मैं किणी भी जातानियां सूं हेठा हां। पूरब रा यां दो देसां री किस्मतां में सबसूं मोटो अन्तर इण बात मैं है के भारत तो सदा अंग्रेजां री दया पर रैयो, अर जापान कदे भी विदेसियां रै नीचै कोनी आयो। आपां जाणां हां के आपणी कुणसी चीज मूसी गई है। सभ्य शासण हाळा राज आपां नैं जो कुछ दियो है वो 'कानून अर व्यवस्था' अर पुलिस राज रा औजार है। सुतन्त्रता री भावना आगो ताकत रै आगै हार मान ली है। मिनखां रा सम्बन्धां मे जिको सबसूं महंगो चोजां हुवै वांनै रोक देणै सूं आपणी तरक्की रो रास्तो रुकग्यो है। पण फेर भी म्हारो आ खुसकिस्मती रैयी है के मैं इसा मोटा मना रा अंग्रेजां सूं मिलयो हूं, जिका हर वरगै रा सखा मित्र हा, अर वां रै कारण ही मैं उण बात में विस्वास नहीं खो पायो जिण मैं वै जनम्या। जिसा मोट्यार हा। वांरै रूप मैं मनैं एक घणो प्यारो अंग्रेज दोस्त, एक सन्नी ईसाई अर एक सचो मिनख मिल्यो। आज चौग री झिरी में वांरी पूरी निस्वार्थता अर वांरी

कोरां रो सो उदार हिरदो और भी घणा ऊजळा दीसै। प्यार अर भगती रा घणा सारा कामां खातर, भारत रा घणा लोग अंग्रेज रा अहसाणमन्द हा। पण निजू ढग सूं कैवूं तो मैं वां रो अहसाणमन्द खास तौर सूं इण कारण हूं के वै म्हारै बुढापै मे उण आदर री भावना रो कुछेक अस भोजूं जगावण में मदद करी जिकी मैं साचै मन सूं म्हारी जवानी रा दिना में, अंग्रेजी रो साहित पढ'र वांरै प्रति बणाई ही। अंग्रेज री याद सूं मनै अंग्रेजां रै दिल में अमर उदारता दीसै। मैं किसा मिनखां नै म्हारा सबसूं प्यारा मित्र मान्या है, अर वै लोग तो म्हारी मिनख जात रा ही मित्र है। इसा मिनखां सूं मेरी ओळख-पिछांण होई यो म्हारो जिन्दगी रो एक सोभाग हो। मैं ही वै मिनख है जिका अंग्रेजां री इज्जत रै जहाज नैं डूबणै सूं बचावैला कुछ भी हो, जे मैं वां सूं नहीं मिलतो तो पिच्छम रा लोगां रै बारै में म्हारो बुरो धारणा ज्यूं री त्यूं बणी रहती।

इण बीच में, एक नई बर्बरता रो राखस यूरोप मे पग मेल दियो है, जिको दांत काढ्यां अर पजा फैलाया आपरै विकराळ रूप सूं डरातो चालै है। महाद्वीप रै एक कूणै सूं दूजै कूणै ताई अत्याचार रै धुंआ सूं सारो वातावरण जहरीलो होरयो है। पिच्छम रा लोगां मे हिंसा री जिकी भावना दबी पडी ही, वा जाग उठी है अर मिनख री आतमा नैं भ्रस्ट कर री है।

किस्मत रो पहियो घूमतो ही एक दिन अंग्रेजां नैं भारत रो राज छोड़'र जाणो पड़सी पण वै भारत नैं किसोक छोड'र जासी, किसोक धाप'र दुखी ? जद दो सदियां ताई बहतो वां रै राज रो नाळो आखर सूकसी तो किसोक कादो अर बास री गन्दगी सामैं आसी, जिकी बारै मन री धाप'र व्यर्थता री कथा कहसी। एक इसो भी बखत हो जद मैं यो विसवास करया करतो के साचो सभ्यता रा भरणा यूरोप रै हिरदै सूं ही फूटसी, पण आज जद मैं दुनिया नैं छोडण जारयो हू तो म्हारै उण विसवास रो दिवाळो निकळग्यो है।

मैं आज इण आस में ही जीवूं हूं के आपणो तारक आ रैयो है, अर वो आपणै बीच में ही, गरीबी सूं लाजां मरतो 'भारत' नांव रो झूंपड़ो में ही जनमसी। मैं वो सनेसो सुणणै री बाट देखूं जिको वो लेकर आसी, आस रा उण सबसूं आछा सब्दां नैं सुणनै री बाट, जिका नैं पूरब रै असमान सूं बोलतो वो, सुणणवाळा मिनखां नैं विसवास अर ताकत देसी।

मैं बीत्या बरसां कानी देखूं तो एक घमण्डी सभ्यता रा खण्डहर इतिहास सूं बारै कूड़ै रै ढिगलै ज्यूं पड़्या दीसै, पण फेर भी मैं मिनख री मौजूदा हार नैं ही आखरी मान'र उण में म्हारो विसवास खोवण रो भयंकर पाप कोनी करूं। मैं इतिहास रै उण मोड़ री बाट देखूं जद परलै खतम हुयां पछै असमान फेरूं साफ अर सांत हो

जासी। संपद नयो तड़को पूरब रै इण क्षितिज सूं ही ऊगसी, अठै सूरज उगै, उण रै बाद सब बाधावां रै होतां हुयां भी कदे भी नीं हारणवाळो मिनख बापरी खोई बापोती नै पोजूं जीतण सारू, जीत रै मारग पर पग देसी।

वा घड़ी नजीक ही है जद या बात समझ में आसी के ताकत री बदतमीजी में घणा खतरा है। वा घड़ी उण बात रै साच नै साबित कर देसी जिको जूना रिसियां इण भांत कह्यो—

अधर्मे नैधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति॥

मिनख बेईमानी सूं फळै-फूलै, मन चाही चीजां पावै, पर दुसमणां नै हरावै, पण जड़ामूळ सूं खतम हो जावै।

परिसिष्ट १

टैगोर स्मृति ग्रंथ समिति
न्यासी (ट्रस्टी) मंडल

१. श्री हुमायुन् कोबिर (सभापति)
२. श्रीमती शांति कबिर
३. " निर्मल कुमारी महालानोबिस
४. श्री पी० सी० महालानोबिस
५. " अनिल के चन्दा (कोषाध्यक्ष
६. " ए० के० घोष
७. श्रीमती मल्लिका घोष
८. डा० भवानी भट्टाचार्य (सचिव)

सदस्य

९. श्री अबू सैय्यद अय्यूब
१०. " बुद्ध देव बोस
११. श्रीमती रानी चन्दा
१२. श्री के० सी० चौधरी
१३. " डा० जे० सी० चौधरी
१४. " अमल होम
१५. " बी० एस० केसवन्
१६. " प्रभात कुमार मुकर्जी
१७. " सोमनाथ मैत्रा
१८. ' क्षितीश राय
१९. " पुलिन बिहारी सेन
२०. " तारकनाथ सेन
२१. " प्रबोध चन्द्र सेन
२२. " काजी अब्दुल बदूद

परिसिस्ट २

१ सिक्षा रा हेर फेर
२. विद्यासागर : एक एक कुरबो तस्वीर
३. भारत रै इतिहास रो सदेसो
४. कुमसी समाज
५. विद्यार्थियां नैं दियो गयो भासण
६. भिखारी समस्या
७. पढ़ंवाई ?
८. सभापति रो भासण
९. लक्ष्य अर उपाय
१०. पूरब अर पिच्छम
११. धरम रो मतलब
१२. हिन्दू विस्वविद्यालय
१३. धार्मिक सिक्षा
१४. खुद रो परिचय
१५. विदाई सूं पैली
१६. सिक्षा रो माध्यम
१७. धणीरो मरबो ही पूरी हुवै
१८. भारतीय सभ्यता रो केन्द्र
१९. सिक्षा रो मेल
२०. गांव रो पुकार
२१. सुराज साधन
२२. कविरी पाठसाला
२३. सहर अर गाव
२४ सहकार
२५. इस सूं लिखी चिट्ठियां मैं फेरूं बराबरा समाचार -
२६. सिक्षा रो विस्तार
२७. बदलतो जमानो
२८. राम मोहनराय, भारतरो एक तीर्थ यात्री'
२९, सुधाई
३०. सभ्यता रो सकट ।

परिसिस्ट ३

जिका लोग मरूपोत रै चुनाव में मदद करी वां रा नांव

१. श्री मबू सैय्यद मय्यूब
२. श्री चारुचन्द्र भट्टाचार्य
३. श्री ए० एन० बसु
४. श्री बुद्धदेव बोस
५. श्री राग शेखर बोस
६. डा० श्री कुमार बनर्जी
७. डा० भवानी भट्टाचार्य
८. राय हुरेन्द्रनाथ चौधरी
९. श्री मनिम के० चन्दा
१० डा० सुनीति कुमार चटर्जी
११. श्री सुधाकान्त राय चौधरी
१२. " निशीकान्त राय चौधरी
१३. " केदारनाथ चटर्जी
१४. " के० सी० चौधरी
१५. " ए० सी० गुहा
१६. " जे० सी० घोष
१७. " बी० एन० गांगुली
१८. " ममल होम
१९. " हुमायूं कोबिर
२०. " बी० एम० केशवद्
२१. " प्रभात के० मुकर्जी
२२. " हीरेन्द्रनाथ मुकर्जी

२३. श्री भूपति मजूमदार

२४ " पी० सी० महालानोबिस

२५ " कालिदास नाग

२६ " अन्ना शंकर राय

२७ " क्षितीश राय

२८. " नीहार रञ्जन राय

२९. " पुलिन बिहारी सेन

३०. डा० सचीन सेन

३१. श्री के० सी० सेन

३२. " प्रबोध चन्द्र सेन

३३. " एन० के० सिद्धान्त

३४. " तारकनाथ सेन

३५. " सौमेन्द्रनाथ टैगोर

३६. श्री काज़ी अब्दुल वदूद

परिसिस्ट ४

अनुवादकां री विगत

१. श्री बुद्धदेव बोस

२. " भवानी भट्टाचार्य

३. ' अपूर्व चन्दा

४ " चिदानन्ददास गुप्ता

५. डा० जे० सी० घोष

६ श्र हुमायुन् कोबिर

७. श्री सोमनाथ मैत्रा

८. श्रीमती लीला मजूमदार

९. श्रीमती तारकनाथ सेन

१०. श्री पञ्चल सरकार

टिप्पणियां सांतिनिकेतन रै रवीन्द्र सदन रा श्री क्षितीश राय लिखी है।

परिशिष्ट ५

भारत, यूरोप और अमरीका के विद्वान जिन्होंने सामग्री चुनाव में मदद की–

१. होरेस अलेक्जेण्डर एस्क्वायर, क्वेकर सेन्टर, नई दिल्ली।

२. सर इजाइयाह बर्लिन, आल सोल्स कालेज, आक्सफोर्ड।

३. श्री मिल्टन ब्रांड, २१ ईस्ट ११वीं स्ट्रीट, न्यूयोर्क ३, एन० वाई।

४. नोरमन कजिन्स, एस्क्वायर, सम्पादक 'सैटरडे रिव्यू' २५ वेस्ट ४५वीं स्ट्रीट, न्यूयोर्क ३६ एन० वाई।

५. प्रो० नोसवल कोगहिल, मर्टन कालेज, आक्सफोर्ड।

६ लियोनार्ड के० एल्महर्स्ट एस्क्वायर, डार्टिंगटन हाल, टोटेनीज, डेवोन (इंगलैण्ड)

७. डा० डगलस एनसिंगर भारत में फोर्ड फाउन्डेशन के प्रतिनिधि, ३२ फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली।

८. श्री क्लारेंस फौस्ट, दी फण्ड फार दी एडवांसमेंट आफ एजूकेशन, ४७७ मेडीसन एवेन्यू, न्यूयोर्क २२, एन० वाई।

९. डा० बी गफुरोव, डाइरेक्टर, इन्स्टीट्यूट आफ ओरिएंटल स्टडीज, एकेडेमी आफ साइन्सेज आफ दी यू० एस० एस० आर०।

१०. दी राइट आन रेबुल लार्ड हेलशाम, मिनिस्टर आफ साइंस, ३२ स्मिथस्क्वायर, वेस्ट मिन्स्टर, एस० डब्ल्यू० आई०।

११. श्री राबर्ट एम हचिन्स, प्रेसिडेन्ट, दी फण्ड फार दी रिपब्लिक इन्क, ६० ईस्ट ४२वीं स्ट्रीट, न्यूयोर्क १७, एन० वाई०।

१२. सुश्री मिस जीन जोसफ फोर्ड फाउन्डेशन, नई दिल्ली।

१३. डाक्टर मर्दिक बाकमन प्रेसिडेन्ट, हावर्ड यूनिवर्सिटी, वाशिंगटन १ डी० सी०।

१४ श्री वी०टी० कृष्णमाचारी, उप सभापति, योजना कमीशन, १ जनपथ, नई दिल्ली।

१५ प्रो० रिचार्ड पी० मेकिऑन, प्रोफेसर आफ फिलासाफी, यूनिवर्सिटी आफ शिकागो, डिपार्टमेन्ट आफ फिलासाफी, १०५० ईस्ट ४२वीं स्ट्रीट शिकागो।

१६. दी राइट आनरेबुल मालकम मैकडानेल्ड, हाइ कमिश्नर फार दी यूनाइटेड किंगडम इन इण्डिया, २, किंग जार्ज एवेन्यू, नई दिल्ली।

१७ हर एक्सेलेंसी मिसेज अल्वा मिरडाल भारत में स्वीडेन की राजदूत नई दिल्ली।

१८. श्रीमती लक्ष्मी मेनन, विदेशी मामलों की उप मन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली।

१९. हिज एक्सेलेंसी श्री एरहार्ड रेइट, एम्बेसेडर आफ इण्डिया टू दी फेडरल रिपब्लिक आफ जरमनी, बान।

टिप्पणियां

सिक्षा रो हेर फेर

सिक्षा री समस्या पर टैगोर रो पैलो निबन्ध सन् १८९२ में 'राजासाही' री एक आम सभा में पढ्यो गयो, 'साधना' (दिसम्बर १८९२) नांव रै मासिक पत्र में छाप्यो गयो, अर 'सिक्षा' (१९०८) नांव री पोथी रै भेळो करयो गयो।

बंगला नै प्रायमिक कक्षावां सूं लेर विस्वविद्यालय स्तर ताईं सिक्षा री सगळी कक्षावां मे सिक्षा रै माध्यम रूप में मानणै खातर इण निबन्ध मे एक जोरदार मांग करी है।

इण रा अंग्रेजी अनुवाद 'टोप्सी टर्वी एजूकेसन' रै नांव सूं विस्वभारती क्वार्टर्ली (नवम्बर-जनवरी १९४७) मे निकळयो।

पृष्ठ २९ 'बंगदर्सण'—बंगला में छपण वाळो पैलो साहित्यिक मासिक पत्र। नामी बंगला उपन्यासकार बंकिमचन्द्र चटर्जी इणनै १८७२ में सरू कर्‌यो, अर १८७५ में इण रै बन्द हुवण ताईं वै इण रा सम्पादक बण्या रैया। अप्रेल १९०१ में टैगोर इण नै फेरूं सरू कर्‌यो अर अप्रेल १९०६ ताईं वै इण रा सम्पादक बण्या रैया।

पृष्ठ ३० सूर्यमुखी अर कमलिनी, चन्द्रसेखर अर प्रताप—बंकिमचन्द्र रा उपन्यासां रा पात्र।

७

सुदेसी समाज (स्वदेशी समाज)

जुलाई १९०४ में कलकत्ते री एक आम सभा मे पढ्‌यो गयो। 'बंगदर्सण' (अगस्त, १९०४) मे छप्यो। 'आत्म सक्ति' (१९०५) नांव री पोथी रै भेळो कर्‌यो गयो।

इण लेख री तुरत प्रतिक्रिया बंगाल में गांवां रै समाज री समस्या पर रचनात्मक प्रयास रूप में हुई।

सुरेन्द्रनाथ टैगोर रो कियोड़ो इण रो अंग्रेजी अनुवाद 'आवर स्वदेशी समाज' नांव सूं 'माडर्न रिव्यू' (अप्रेल १९२१) में अर 'ऐटर इंडिया' (अवसनाम्प्टाम १९२१)

नांव री पोथी में भी छप्यो। लीला मजूमदार रो कियोड़ो एक दूजो अंग्रेजी अनुवाद 'सोसाइटी एण्ड स्टेट' रै नांव सूं 'हिंदुस्तान स्टेण्डर्ड' पूजा एल्बम १९४९ में छप्यो।

पृष्ठ ३३ 'समाज अर राज'—भासण रै बाद टैगोर निबन्ध में बतायोड़ा तरीका पर एक सभा बणाणै री कोसीस करी अर इण रा सदस्या रै मार्गदर्सण सारू नियम भी बणाया।

पृष्ठ ३५ 'प्रादेसिक परिसद'—परिसद् १८८८ में सरू हुई अर इण रो पैलो अधिवेसन कलकत्ते में हुयो। नाटोट (१८९७) अर ढाका (१८९९) में हुया इण रा दो अधिवेसनां में टैगोर घणो जोर सूं हिमायत करी के परिसद री कारवाई अंग्रेजी री बजाय बंगला में हुवणी चाहीजै। १९०८ में, जद वै पावना अधिवेसन रो सभापतित्व करयो, वै आपरो भासण बंगला में ही देवण रो स्यान राख्यो।

पृष्ठ ३८ 'राष्ट्रीय कांग्रेस—पैली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस बम्बई में, १८८५ रै किसमस हफ्ते में, डब्ल्यू० सी० बोनर्जी नाव रै एक बंगाली बैरिस्टर रै सभापतित्व में हुई।

पृष्ठ ४० 'बंगाल रो विभाजन'—१९०५ में लार्ड कर्जन बंगाल रो विभाजन करयो। इण सूं बंगाली राष्ट्रवाद भड़क उठ्यो, अर टैगोर इण आन्दोलन रा अगुवा बण्या। एक कानी तो वै बंगाल री सांस्कृतिक एकता री हिमायत करी, अर दूजै कानी, स्वावलम्बन रै आधार पर बंगाल रा गांवां रै पुनर्गठण सारू एक सांगोपांग योजना री वकालत करी।

पृष्ठ ४२ 'नानक अर कबीर'—वैसणव नानक अर कबीर विचलै युग (१५वीं सदी) रा सन्त हा। वै प्रेम धर्म रा उपदेस दिया अर सगळा वर्गां अर धर्मां री एकता री बात कैयी। बंगाल में चैतन्य रै चलायोड़ै 'वैसणव' पंथ रा भी इसा ही आदर्स हा।

पृष्ठ ४३ रिसी—मन्त्रद्रस्ट गुरू।

८

सिक्षा री समस्या (शिक्षा-समस्या)

६ जून, १९०६ रै दिन कलकत्ते री एक आम सभा में पढ्यो गयो। 'बंगदर्सन' (जून, १९०६) में छप्यो, अर 'सिक्षा' (१९०८) नांव री पोथी रै भेळो करयो गयो।

१९०५ में बंगभंग रै कारण जिको 'आन्दोलन छिड़यो इण रो सीधो नतीजो इण कोसीस रै रूप में हुयो जिकी कई राष्ट्रवादी तरह सिक्षा रै 'राष्ट्रीयकरण' सारू इण भावना सूं करी के सिक्षा भारतीय विचारां रै मुजब होणी चाहीजै। इणी कारण

१९०६ में शिक्षा री राष्ट्रीय समिति संगठण हुयो   मरूपोत टैगोर इण रैं घणा नजीक हा समिति रैं प्रधीन पाठसाला विभाग सारू एक विधान बणा देणैं री गरज पर यो निबन्ध लिख्यो गयो ।

पृष्ठ ४८ 'विज्ञान समाज' – १८७६ में कलकत्ते में डाक्टर महेन्द्रलाल सरकार री प्रेरणा सूं विज्ञान रैं प्रचार सारू इण भारतीय समाज री थापना हुई ।

पृष्ठ ४९ 'ब्रह्मचर्य'—पुराणा हिन्दुप्रां रा बणायोड़ा जीवण रा चार प्राश्रमां में सूं पैलो । ब्रह्मचर्य प्रागै रा प्राश्रमां सारू तैयारी रो एक अनुशासन रो मर्म समझ्यो जातो ।

पृष्ठ ५१ भारतीय बरस ६ : रितुग्रां मे बाट्योड़ो छै—ग्रीस्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त ग्रर वसन्त ।

पृष्ठ ५४ 'याज्ञवल्क्य'—प्राचीन भारत रा रिसियां मे सूं एक घणो जाणकार रिसी । बृहदारण्यक उपनिसद २ ग्रर ४ देखो ।

पृष्ठ ५७ 'बाबुग्रां'—हिन्दू, खासतौर सूं बंगाली में भलैं मिनख नैं बतलावण रो एक श्रोछो सब्द ।

Ø

पढ़ं काईं ? ततः किम्)

१९०६ में कलकत्ते में एक गोस्ठी मे पढ़्यो गयो । 'बंगदर्सन' (नवम्बर १९०६) में छप्यो ग्रर धर्म' (१९०९) नांव री पोथी रैं भेळो कर्‌यो गयो ।

'दी कोर फोल्ड वे ग्राफ इण्डिया' नांव सूं एक अंग्रेजी अनुवाद माडर्न रिव्यू (ग्रगस्त, १९२४) में छप्यो । एक दूजो अंग्रेजी अनुवाद 'व्हाट देन ? विश्वभारती क्वार्टर्ली' (अप्रेल १९२४) में निकळ्यो ।

पृष्ठ ५८ महाभारत, ग्रादिपर्वः ११५ ३८, ३९ ।

पृष्ठ ६० छठी सदी में घर रैं दुख सूं भरयोड़ो संसार नै त्याग दियो भर्तृहरि । 'वैराग्य शतक' (त्याग पर सौ कवितावां) नांव री पोथी में बणाई जिण में सूं ग्रो उद्धरण लियोड़ो है ।

पृष्ठ ६२ श्वेताश्वतर उपनिषद्–२।१७ ।

उपनिषद वेदान्त दर्सण रा ग्राधार है । करीब तीन हजार बरसां ताईं ए भारतीय दर्सण ग्रर धार्मिक विचारां नैं प्रभावित करया है । 'उपनिषद' सब्द 'उप'–नीचै–'नि'–नीचै–षद्–बैठणैं सू बण्यो है । इण रो ग्रर्थ ऊंचै सू ऊंचै ध्यान लगार गुरु रा चरणां मे बैठणैं री पुराणी भारतीय

परंपरा री है। उपनिसदां री परंपरागत संख्या १०८ मानी जावै। इणां में दस मुख्य मान्या जावै—ईश, केन, कठ प्रश्न, मुण्डक माण्डूक्य, तैत्तिरीय ऐतरेय, छान्दोग्य अर बृहदारण्यक। वेदान्त दरसण रा मोटा आचारज 'संकर' दसूं उपनिसदां पर भाष्य बणाया।

पृष्ठ ६३ ईश उपनिसद: ९ ११ यो उपनिसद बुद्ध रै पहलां बण्योड़ो बतायो जावै। इण रो समै ईसा पूर्व री आठवीं सदी धारयो गयो है। इण रा घणा पोअत्यो सु ब इण रिसियां रा मुखां सूं निकळयोड़ा बताया जावै जिका अलौकिक ध्यान रै आवेस में बोलता। यो उपनिसदां में सबसूं छोटो गिण्यो जावै। इण में कुल १८ मोटा-छोटा छन्द है। इण रै सरुआत रै छन्द 'ईशावास्यम्' सूं टैगोर रा बाप देवेन्द्रनाथ रै मन में एक आध्यात्मिक क्रान्ति उपजी। उपनिसदां रो प्रभाव टैगोर पर आपरा बाप री तरियां ही हुयो। वारै 'हिबर्ट भासणां'—'दी रिलीजन आफ मैन' (मिनख रो धरम) सूं इण रो बेरो पटै।

पृष्ठ ६६ मनु—मनुस्मृति : २।१९।

पृष्ठ ६८ अमरता—बृहदारण्यक उपनिसद, ११, ४, २, ३ अर ४, ५ ३, ४

याज्ञवल्क्य रिसी संसार सूं त्याग कर सन्यास लेवण वाळा हा। वै चायो के वारी लुगाई मैत्रेयी धन-दौलत रो आपरो हिस्सो ले लेवै। वा पूछी के भौतिक दौलत लेवण सूं उण नै अमरता मिल सकसी काई? जो आखी दुनियां री आखी दौलत भी उण नै मिल जावै, तो उण सूं वा अमर बण सकै काई? इण रो जवाब रिसी नै 'ना' में देणो पड़यो। इण पर मैत्रेयी बोली, 'जिकी चीज मनै अमर नहीं बणा सकै उणनै लेर मैं काई करूं?'

(७)

सभापति रो भासण (सभापति का अभिभाषण)

सभापति रो भासण १९०८ में बंगाल प्रादेसिक परिसद रै पाबना अधिवेसन में पढ्यो गयो। या ही एकमात्र राजनीतिक परिसद ही जिण री अध्यक्षता टैगोर करी। यो ही पैलो मौको भी हो जद परिसद में इण रा सभापति बणता में भासण दियो।

'प्रवासी (फरवरी, १९०८) नांव रै मासिक छापै में छप्यो अर 'समूह' (१९०८) नांव री पोथी रै भेळो करयो गयो।

सुरेन्द्रनाथ टैगोर रो करयोड़ो अंग्रेजी उळथो (सायद टैगोर रा लेखां मे सूं इण रो हववरू पैलो अनुवाद) १९०८ मे छप्यो, अर 'वन नेशनलिस्ट पार्टी'—एक राष्ट्रवादी दल-रै नांव सूं 'ग्रेटर इण्डिया मे दुबारा छप्यो ।

पृष्ठ ७१ 'आखरी अधिवेसन'—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रै सूरत अधिवेसन (१९०७) मे कांग्रेस रा उग्र अर नरम दळां रै नेतृत्व रो मतभेद थोड़ो दिखाई दियो ।

पृष्ठ ७३ सन १९०६ म ढाके रो नबाब सलीमुल्ला मुस्लिम लीग नांव सू मुसलमानां मे एक पुख्ता राजनीतिक संगठण री सरूआत करी, जिको, बंग-भंग रो समर्थन करयो अर विलायती माल रै बाईकाट रो विरोध करयो ।

पृष्ठ ७४ न्यारा चुणाव क्षेत्र अर प्रतिनिधित्व री जिकी अनोखी तरकीब लार्ड मिंटो (जिको कर्जन रै पछै वाइसराय बण्यो) निकाळी वा मुसलमानां ने आप कानी मिलाणे अर वांने कांग्रेस आंदोलन रै खिलाफ करणे खातर ही ।

पृष्ठ ७५ लार्ड मार्ले—महान अर उदार राजनीतिज्ञ जिको १९०५ मे भारतीय मांमलां रो राज्य सचिव बणायो । बंग भंग रै बाद हुवण वाळै बंगाल रै रास्ट्रीय आन्दोलन रो यो विरोध करयो ।

पृष्ठ ७६ 'रास्ट्रीय पाठसाळा'—सिक्षा री रास्ट्रीय परिसद सूं टैगोर रो सम्बन्ध घणो दिख्यात हो । इण परिसद री तरफ सूं १९०६ में कलकत्ते मे एक रास्ट्रीय पाठसाळा री थापना करी गई ।

पृष्ठ ८० 'रास्ट्रीय कोस'—विभाजन विरोधी आन्दोलन में टैगोर देस-भगती रा गीत बणाया अर कलकत्ते री गळियां मे मोटा जुलूसां रै आगै हुया । एक विसाल आम सभा में रास्ट्रीय कोस बाबत वांरी अपील रा तुरन्त असर हुयो । अर सभा मे ही पचास हजार रिपिया भेळा हुयग्या ।

पृष्ठ ८१ 'काळी देवी'—विनास री देवी ।

पृष्ठ ८२ 'विद्यार्थी'—पहलै क्रान्तिकारी विद्रोह रै पछै, जिण मे खुदीराम बोस नाव रो एक छोटो टाबर फांसी चायो गयो । (मार्च, १९०८) पाठसाळा रा विद्यार्थियां री बाकायदा जाँच हुई । अर कइयां सूं अपराध कबूल करणे वास्तै निर्दयता रो व्योहार करयो गयो ।

पृष्ठ ८३ 'सुदेसी आन्दोलन'—बंगभंग (१९०५) रै बाद जिको सुदेसी आन्दोलन छिड़्यो इण सूं खीज'र अंग्रेज सासक दण्ड री नीति अपणायी ।

पृष्ठ ८५ 'जगद्दल'—भीमकाय पौराणिक भाटो, जिको धरती नै कुचळ देणै री खिमता राखै बतावै ।

पृष्ठ ८७ 'भागीरथ'—पौराणिक राजा, जिको लांबी तपस्या सूं सुरग री नदी गंगा (भागीरथी नाव सूं भी सरनाम) नैं भारत भोम पर उतार ल्यायो। उण रै पवित्र जळ सूं भागीरथ रा बडका पाछा सरजीवण हुया, जिका रिसी रै स्राप सूं भसम हो गया हा।

पृष्ठ ८८ अर्धोदय—पतड़ा में कढै-कदास मिलणियो एक सुभ अवसर जिण में उच्छब सूं स्नान अर भोज करयो जावै। इसो ही एक अवसर उण बरस भी हो जद यो भासण दियो गयो।

①

पूरब और पिच्छम (पूर्व अो पश्चिम)

जुलाई १९०६ में साधारण ब्रह्मसमाज रै सभा भवन में विद्यार्थियां री एक बैठक में यो निबन्ध पढ़यो गयो। इण भासण रो सार 'बंगदर्सन' (अगस्त, १९०८) में छप्यो। पूरो भासण 'प्रवासी' में पूर्व अो पश्चिम' नाव सूं छप्या। 'समाज'(१९०८) नांव री पोथी रै भेळो करया गयो।

'दी यूनिटी ओफ इण्डिया'—भारत री अखिरथ-नांव सूं इण रो अंग्रेजी अनुवाद एस० डी० वर्मा रो करयोड़ो 'माडर्न रिव्यू' (मार्च, १९११) में निकळयो। दूजो अंग्रेजी अनुवाद 'ईस्ट एण्ड वेस्ट इन ग्रेटर इण्डया'—महान भारत में पूरब अर पिच्छम—नांव सू सुरेन्द्रनाथ टैगोर रो करयोड़ो उणी छापै में जून १९२१ में निकळयो।

पृष्ठ ९१ २००० ईसा पूर्व।

पृष्ठ ९१ 'बुद्धकाल'—ईसा पूर्व री चोथी सदी सूं ईसा रै बाद री दसवीं सदी तांई।

पृष्ठ ९१ भारत'—राजपूत राजा प्रिथीराज पर सन् ११९२ में मुहम्मद गोरी री जीत सूं भारत में मुसममानां रै राज री नींव पड़ी।

पृष्ठ ९४ 'राममोहन राय'—ब्रह्म समाज रो संस्थापक अर पैलो मोटो हिन्दू सुधारक। भारतीय जागरण रो जनक समझयो जावै।

पृष्ठ ९४ 'रानाडे'—महादेव गोविन्द रानाडे (१८४२-१९०१) जण आन्दोलन रो मुखिया जिण सूं महाराष्ट्र में घणा मोटा सामाजिक धार्मिक सुधारां री सरूआत हुई।

पृष्ठ ९४ 'विवेकानन्द'—विवेकानन्द (१८६३-१९०२) रामाकृष्ण रा मुख चेला हा। वै आपरै गुरु रो सन्देस आखै भारत में सुणायो, अर पिच्छम रा लोगां नैं वेदान्त दर्सन रा उपदेस घणा सरूपा सूं दिया। 'रामकृष्ण मिशन' री थापना भी करी।

पृष्ठ ९५ 'बंकिमचन्द्र चटर्जी'—बंकिमचन्द्र (१८३८–९४) कलकत्ता विश्वविद्यालय रा पहला बंगाली स्नातक हा । वै बंगला भासा रा पैला बडा लेखक अर बंगला में आधुनिक किस्म रा उपन्यासां री सुरूआत करणिया हा ।

पृष्ठ ९५ 'रावण'—रामायण री जग विख्यात कहाणी रै रावण सूं मतळब है । लंका रो यो राक्षस राजा भगवान रै अवतार रूप राजा राम री लुगाई सीता नैं हर लेग्यो जिकै कारण राम सूं उण रो जुद्ध हुयो ।

पृष्ठ ९७ 'डेविड हेयर'—डेविड हेयर (१७७५–१८४२) स्काटलैण्ड रै एक घडीसाज रो लड़को हो । वो किस्मत आजमाणै सारू कलकत्तै आयो अर बंगाली टाबरां री सिक्षा में बढ़ोतरी सारू आप री घणखरी कमाई दान कर दी । वो हिन्दू कालेज री थापना में, जिको आगै चाल'र प्रेसिडेन्सी कालेज बणगो, राममोहनराय रै सागै हो ।

*

हिन्दू विश्वविद्यालय

१६ अक्टूबर १९११ रै दिन कलकत्तै री एक सभा में पढ्यो गयो । 'तत्वबोधिनी पत्रिका' (नवम्बर, १९११) में छप्यो, अर 'परिचय' (१९१६) नांव री पोथी रै भेळो करयो गयो ।

पृष्ठ १०० 'बादसाही परिसद'—बादसाही (उपनिवेसादि) परिसदां में सूं पांचवीं जिकी १९११ में लन्दन में हुई । परिसद रै सामैं आवण वाळा में सूं एक बादसाही पालियामेन्ट (लोकसभा) रो गठण हो, जिण में डोमीनियमां रो प्रतिनिधित्व हुवै । प्रधानमन्त्री एस्कवैथ इण प्रस्ताव रो विरोध करयो ।

पृष्ठ १०२ 'गुजराती, मराठी अर दूजी'—बंगला, हिन्दी, गुजराती, मराठी—ऐ सगळी सास्त्रीय संस्कृत सूं बणीडी अपभ्रंस भासावां सूं निकळयोडी एक वर्ग री भासावां है ।

पृष्ठ १०७ भारतीय मुसळमानां रा नेता कोई खाई यो डर प्रगट करयो के राष्ट्रवादी हिन्दू जिकै प्रजातन्त्र रो आदर्स बणायो है, उण में बडो भाग छोटी जात रा हितां में ध्यान देसी ।

पृष्ठ १०७ 'सिक्षा'—अठै इण कोसीसां सूं मतळब है जिकी इण सदी रै प्रारम्भ में सिक्षा रै भारतीय करण वास्तै करी गई । अर जिणां में १९०७ में सिक्षा री राष्ट्रीय समिति री थापना भी सामिल है ।

पृष्ठ १०८ अठै राम अर बुद्ध रो हवालो है ।

आपरो आदर्श बणा लेवें, पर उण री लगन इतरी तकडी ही के बो धनुष विद्या में अर्जुन सूं भी आगें निकळग्यो। आपरैं लाडलैं चेलें राजकुमार अर्जुन नैं खुश करण खातर द्रोण एकलव्य रैं जीवणैं हाथ रो अंगूठो गुरु दक्षिणा में मांग लियो।

पृष्ठ १३६ सन् १८६० में बद सूं टैगोर आपरैं परिवार री जायदाद री सार सम्भाळ रो काम हाथ में लियो, वै स्वावलम्बन अर स्वाभिमान रा सिद्धान्ता रैं आधार पर गांवां री भलाई में पूरी रुचि लेवण लाग्या।

पृष्ठ १४० 'शूद्र'—हिन्दुआं रा चार वर्णां में सबसूं नीची ऊपरला वर्ण ब्राह्मण (बुद्धिवादी), क्षत्रिय (शासक अर लड़ाका) अर वैश्य (ब्योपारी) है।

पृष्ठ १४२ 'नेहुला काव्य'—नागां री देवी मनसा री तारीफ में लिखयोड़ै मध्य काव्य री नायिका नेहुला।

पृष्ठ १४२ एक ग्राम प्रार्थना री कढायोड़ी नकल।

पृष्ठ १४३ 'स्वल्पमाप्यस्य'—अर्थात् गीता: २।४०

पृष्ठ १४५ 'दीवाळी'—इण उच्छव मे घरां पर रोसनी करी जावै।

पृष्ठ १४७ 'श्रावण'—बरसाळत रा दो महीनां मे सूं दूसरो, जिको १५ जुलाई स्‌ १५ अगस्त रैं आस पास पड़ै।

भारतीय संस्कृति रो केन्द्र

सन् १६१६ में दिखण भारत री यात्रा में टैगोर रो दियोड़ो एक भाषण सबसूं पैलां मद्रास मे अडयार री राष्ट्रीय सिक्षा री बढोतरी करण वाळी सभा(१६१६) री तरफ सूं छाप्यो गयो।

पृष्ठ १४८ प्रयोग—टैगोर री खुद री सस्था, विश्व भारती, री थापना १६१८ मे हुई, पण इण रो बाकायदा उद्घाटन तीन साल बाद १६२१ में हुयो।

पृष्ठ १६१ पाठसाळावां—स्कूलां।

पृष्ठ १६३ सिंधु घाटी रो अेक भाग ब्रह्म वैवर्त नांव सूं पुकारयो जातो। पुराणैं बखत रा आर्य-बहुल क्षेत्रों मे घणैं ऊंचे दरजै रो सम्यता ही, जिसी जनक रैं बखत (रामायण रैं समकालीन) में उत्तर पूरबी बिहार में मिथिला में ही, अर विक्रमाजीत रैं राज में (ईसा रैं पछै री चौथी सदी) उज्जैण में ही।

पृष्ठ १६४ 'पौराणिक'—वेदां रैं बाद रा हिन्दु सास्त्र।

पृष्ठ १६७ 'तपोवन'—प्राचीन भारत रा गुरुकुल।

पृष्ठ १६६ 'शान्तम्, शिवम्, अद्वैतम्'—विश्वभारती रो उद्देश्य सांतिनिकेतन में सरकृती रो एक इसो केन्द्र बणाणौ रो बतायो गयो जठै हिन्दू, बौद्ध जैन इस्लाम, सिक्ख, ईसाई अर दूजी सभ्यतावां रा धर्मां, साहित्य, इतिहास, विग्यान अर कळावां रै साथै पिच्छम री संस्कृति रै अध्ययन में भी उण बारली सादगी सूं खोज करी जावै, जिको देस, राष्ट्रीयता, धर्म या जात रा सगळा विरोधां सूं परै, पूरब अर पिच्छम रा देसां रा विचारकां अर विद्वानां रै दोस्ती भाई चारै अर सहकार में, अर उण परमात्मा रै नांव में भी, जिण नै 'शान्तम्' कंवै, साचो आध्यात्मिक ज्ञान ढूंढण सारू जरूरी है।

पृष्ठ १६६ ईश उपनिषद : ६

⑥

सिक्सा रो मेळ (शिक्षा र मिलन)

१० अगस्त १९२१ रै दिन सांतिनिकेतन रा विद्यार्थियां अर, गुरुवां री एक सभा में पढ्यो गयो। छोटी पोथी रै रूप में भी छाप्यो गयो अर प्रवासी (सितंबर, १९२१) में दुबारा छप्यो। सिक्षा (१९३५ रो सस्करण) नांव री पोथी रै मेळो करयो गयो।

ओ निबंध १५ अर १८ अगस्त रा दो दिनां कलकत्ते री दो आम सभावां में पढ्यो गयो। इण में असहयोग आंदोलन जिकी साचा आलोचना करी गई, उण सूं एक खास वर्ग रा लोगां में विरोध भड़क उठ्यो। ('सांच री पुकार' री टिप्पणियां देखो)

इण रो अंग्रेजी अनुवाद (दी यूनियन आफ कल्चर्स)—संस्कृतियां रो मेळ—नावसूं (अनुवादक—सुरेन्द्रनाथ टैगोर) 'माडर्न रिव्यू' (नवम्बर, १९२१) में निकळ्यो।

पृष्ठ १७६ 'हाउस बोट' बगाल रै नदियां इलाकै में, जठै टैगोर परिवार री जायदाद हो, बन्दोबस्त रै सिलसिलै में टगोर प्राय हाउस बोट में ठहरता।

पृष्ठ १७६ जापानी सभ्यता'—१९१६ में पैली बार टैगोर जापान गया। बांरा जापान रा अनुभव 'जापान जात्री' (१९१९) नांव री पोथी में मांड्योड़ा है।

पृष्ठ १७६ ईश उपनिषद : १।

पृष्ठ १८१ ईश उपनिषद : १।

पृष्ठ १८२ 'चीणी'—आ एक मजेदार बात है के टैगोर री पैली रचना, जिको 'भारती' (मई, १८८१) में छपी, इण विषय री ज ही। इण निबंध मूल बगला रूप 'चाइना मरणेर व्यावसा' रो अंग्रेजी अनुवाद 'माडर्न रिव्यू' (मई, १९२५) में 'दी डेथ ट्रैफिक'—मरण व्यवसाय—रै नांव सूं छप्यो।

आपरो आदर्श बणा लेवै, अर उण री लगन इतरी तकडी ही के वो धनुष विद्या में अर्जुन सूं भी आगै निकळग्यो। आपरै लाडलै चेलै राजकुमार अर्जुन नै खुस करण खातर द्रोण एकलव्य रै जीवणै हाथ रो अंगुठो गुरु दक्षिणा में मांग लियो।

पृष्ठ १३९ सन् १८९० में जद सूं टैगोर आपरै परिवार री जायदाद री सार सम्भाळ रो काम हाथ में लियो, वै स्वावलम्बन अर स्वाभिमान रा सिद्धान्तां रै आधार पर गांवां री भलाई में पूरी रुचि लेवण लाग्या।

पृष्ठ १४० 'सूद्र'—हिन्दुआं रा चार वर्णां में सबसूं नीची ऊपरला वर्ण ब्राह्मण (बुद्धिवादी), क्षत्रिय (शासक अर लड़ाका) अर वैश्य (ब्योपारी) है।

पृष्ठ १४२ 'बेहुला काव्य'—नागां री देवी मनसा री तारीफ में लिखयोड़ै मंगल काव्य री नायिका बेहुला।

पृष्ठ १४२ एक आम प्रार्थना री कढायोड़ी नकल।

पृष्ठ १४३ 'स्वल्पमाप्यस्य'—भगवद् गीता: २।४०

पृष्ठ १४५ 'दीवाळी'—इण उच्छब में घरां पर रोसनी करी जावै।

पृष्ठ १४७ 'स्रावण'—बरसाळत रा दो महीना में सूं दूसरो, जिको १५ जुलाई सूं १५ अगस्त रै आस पास पड़ै।

७

भारतीय संस्कृति रो केन्द्र

सन् १९१९ में दक्षिण भारत री यात्रा में टैगोर रो दियोड़ो एक भाषण। सबसूं पैली मद्रास में मदनापल्ली री राष्ट्रीय शिक्षा री बढ़ोतरी करण वाळी सभा (१९१९) री तरफ सूं छाप्यो गयो।

पृष्ठ १४८ प्रयोग—टैगोर री खुद री संस्था, विश्व भारती, री थापना १९१८ में हुई, पण इण रो बाकायदा उद्घाटन तीन साल बाद १९२१ में हुयो।

पृष्ठ १५१ पाठशाळावां—स्कूलां।

पृष्ठ १५३ सिंधु घाटी री एक भाग बहुत बेबल नांव सूं पुकारयो जातो। पुराणी बगत रा घार्य-बहुल खेत्रां में वर्णां ऊंचे दरजै री सभ्यता ही, जिकी भारत रै बगत (रामायण रै समकालीन) में उत्तर पूरबी बिहार में मिथिला में ही, अर विक्रमादीत रै राज में (ईसा रै वर्षं री चौथी सदी) उज्जैणी में ही।

पृष्ठ १५४ 'पौराणिक'—वेदां रै बाद रा हिन्दू सास्त्र।

पृष्ठ १६७ 'तपोवन'—प्राचीन भारत रा गुरुकुल ।

पृष्ठ १६९ 'शान्तम्, शिवम्, अद्वैतम्'—विश्वभारती रो उद्देश्य शांतिनिकेतन में संस्कृती रो एक इसो केन्द्र बणाणं रो बतायो गयो जठै हिन्दू, बौद्ध जैन इस्लाम, सिक्ख, ईसाई अर दूजी सभ्यतावां रा धर्मां, साहित्य, इतिहास, विज्ञान अर कळावां रै साथै पिच्छम री संस्कृति रै अध्ययन में भी उण बारलो सादगी सूं खोज करी जावै, जिकी देस, राष्ट्रीयता, धर्म या जात रा सगळा विरोधां सूं परै, पूरब अर पिच्छम रा देसां रा विचारकां अर विद्वानां रै दोस्ती भाई चारै अर सहकार में, अर उण परमात्मा रै नांव में भी, जिण नै 'शान्तम्' कैवै. साचो आध्यात्मिक ज्ञान ढूंढण सारू जरूरी है ।

पृष्ठ १६९ ईश उपनिषद : ६

सिक्षा री गो मेळ (शिक्षा र मिलन)

१० अगस्त १९२१ रै दिन शांतिनिकेतन रा विद्यार्थियां अर गुरुवां री एक

सभा में पढ्यो गयो । छोटी पोथा रै रूप में भी छाप्यो गयो अर प्रवासी (सितंबर,

१९२१) में दुबारा छप्यो । सिक्षा (१९३५ रो संस्करण) नांव री पोथी रै भेळो करयो

गयो ।

ओ निबंध १५ अर १८ अगस्त रा दो दिनां कलकत्ते री दो आम सभावां में

पढ्यो गयो । इण में असहयोग आंदोलन जिकी साथा आलोचना करी गई, उण सूं एक

खास वर्ग रा लोगां में विरोध भड़क उठ्यो । ('साच री पुकार' री टिप्पणियां देखो)

इण रो अंग्रेजी अनुवाद (दी यूनियन आफ कल्चर्स)—संस्कृतियां रो मेळ—नावसूं

(अनुवादक—सुरेन्द्रनाथ टैगोर) 'माडर्न रिव्यू' (नवम्बर, १९२१) में निकळ्यो ।

पृष्ठ १७६ 'हाउस बोट' बंगाल रै नदिया इलाकै में, जठै टैगोर परिवार री जायदाद

हो, बन्दोबस्त रै सिलसिलै में टैगोर प्राय हाउस बोट में ठहरता ।

पृष्ठ १७९ जापानी सभ्यता'—१९१६ में पैली बार टैगोर जापान गया । वांरा जापान

रा अनुभव 'जापान यात्री' (१९१९) नांव री पोथी में मांड्योड़ा है ।

पृष्ठ १७९ ईश उपनिषद : १ ।

पृष्ठ १८१ ईश उपनिषद : १ ।

पृष्ठ १८२ 'चीणी'—आ एक मजेदार बात है कै टैगोर री पैली रचना, जिकी 'भारती'

(मई, १८८१) में छपी, इण विषय री ज हो । इण निबंध मूल बंगला

रूप 'चाइना मरणेर व्यवसा' रो अंग्रेजी अनुवाद 'माडर्न रिव्यू' (मई,

१९२५) में 'दी डेथ ट्रैफिक'—अरथात् मौत रो व्यापार—रै नांव सूं छप्यो ।

पृस्ठ १८१ 'राष्ट्रवाद'–देखो 'नेशनेलिज्म'–राष्ट्रवाद (मैकमिलन एण्ड कम्पनी, १९१७) जिणमें टैगोर रा म्रय राष्ट्रवाद 'नेशनिज्म' भासण छप्या है। ऐ भासण मई १९१६ सूं मार्च १९१७ रै बीच जापान भर ग्रमरीका में दिया गया।

पृस्ठ १८३ ईश उपनिषद् : ७।

पृस्ठ १८४ 'पूरब भर पिच्छम'–विस्वभारती विद्यालय रो एक उद्देस्य 'मिले जुले अध्ययन रै मारफत पूरब भर पिच्छम रो मेल करावणै री कोसीस करणौ' है।

पृस्ठ १८५ 'मैक्समूलर'—जर्मन प्राच्य विद्याविद (१८२३-१९००) 'हिस्ट्री ग्राफ एंशेंट संस्कृत लिटरेचर'—प्राचीन संस्कृत साहित्यरो इतिहास,—'सैक्रेड बुक्स ग्राफ दी ईस्ट' पूरबरी पवित्र पोथियाँ—ग्रादि रा लेखक।

७

साचरी पुकार (सत्येर आह्वान)

२९ अगस्त, १९२१ रै दिन कलकत्ते री एक ग्राम सभा में पढ्यो गयो। 'प्रवासी' (अक्टूबर १९२१) मे छप्यो भर 'कालान्तर' (१९३७) नावरी पोथी रै भेळो कर्यो गयो।

असहयोग आन्दोलन रा जिको ग्रालोचना टैगोर करी उण सूं एक विसेस रा लोगां मे विरोध भडक उठ्यो। २९ ग्रगस्त १९२१ रै दिन टैगोर ग्रांसू वाही सला एक घोर ग्रामभापण (मौदूदा) में दी। ६ सितम्बर १९२१ रै दिन गांधी असहः ग्रांदोलन पर एक निजी चर्चा सातर कलकत्ते में टैगोर सूं मिल्या। या जाणकारी दी कै वां दोनां रा सुभावां में इतणो घणो ग्रांतरो हो के एक दूजैरी बात नै समझणो घ मुसकल हो, पण फेर भी वांरी दोस्ती रा नैतिक बंधण तो पूरी तरियां हा जुड़्या रैव 'साचरी पुकार' रो जिको उथळो गांधीजी दियो वो 'दी ग्रेट सेन्टिनेल'—मोटो सर नांवसूं यंग इंडिया, (अक्टूबर १३, १९२१) में छप्यो।

'दी काल ग्राफ ट्रूथ'—साचरी पुकार—नीर सूं अंग्रेजी अनुवाद माडर्न रि अक्टूबर, १९२१) में निकल्यो।

पृस्ठ १८८ 'माया'—दुनियां रो नकली या मायावी पख, हिंदू दर्सन री एक मान्यता

पृस्ठ १८८ 'सास्त्र'—धर्मग्रंथ।

पृस्ठ १८८ 'रक्तबीज'—नामी राखस। पुराणां में लिख्यो है के उणरै वगतरी एक-एक बूंद सूं उण रै जिसा ही राखस खड़्या होता हा।

पृस्ठ १८९ 'याज्ञवल्क्य'—बृहदारण्यक उपनिषद : ४-२-६।

पृस्ठ १९१ बरीन्द्रकुमार घोष नै कलकत्ते रै माणक तल्लै में बमां रो कारखानो चलाए वास्तै मोतरी सजा दी गयी। बाद में वांरी जिंदगी तो बचगी पण वांरे साथियां रै सागै कालैपाणी भेज दियो गयो।'

पृष्ठ १६२ 'मनु'—प्राचीन भारतीय आचारसंहिता रो लेखक।

पृष्ठ १६३ 'आंदोलन'— असहयोग आंदोलन जिको अगस्त, १९२० में गांधी शुरू करयो।

पृष्ठ १६३ यूरोप अर अमरीका रा टैगोर रो यात्रा (मई १९२०–जुलाई १९२१) रो
हवालो है।

पृष्ठ १६४ 'विलायती कपड़ा री होळी'—असहयोग आंदोलन रा दिनां में लकाशायर
री मीलां में बण्योड़ा कपड़ा नैं बळाणो एक देसभगती रो काम मान्यो
जावण लाग्यो।

पृष्ठ १६६ 'सत्यमेव जयते नामृतम्'—मुंडक उपनिषद : ३-१-६।

पृष्ठ १६६ भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस रै नागपुर अधिवेसन (१९२०) पर गांधी नेतावां
रै आगै आपरै असहयोग आंदोलन री योजना मेली अर यो वादो करयो के
इण पर मजबूती सूं काम करतां ५-६ बरस में ही स्वराज मिल सकसी यंग
इंडिया' (फरवरी २३, १९२१) मे गांधी जा लिख्यो, 'जे कुछेक सीधीसादी
सर्तां पूरी हो सकै तो आगलै अक्टूबर ताई स्वराज आसानी सूं मिल सकै।
आगलै सितंबर में ही मैं एक साल री बात कैवण री हिम्मत इण वास्तै
करी क्यूंकि मैं जाणूं हो के सर्तां साव सीधी है अर देस में वातावरण भी
अनुकूल मालूम देवे।'

पृष्ठ १६९ 'वीणा' भारतीय संगीत रो एक पैंचोदो तारवाद।

पृष्ठ १६८ 'माता'—भारत माता जिण नै कपड़ै री दरकार ही।

पृष्ठ २०० 'संविधान रा सुधार'—१९१९ रा मॉंटेग्यू–चेम्सफोर्ड सुधार जिका भारतीय
राष्ट्रवादियां री आसावां सूं कम रैया।

पृष्ठ २०२ श्वेताश्वर उपनिषद : ४–१।

७

स्वराज रो झगड़ो

सितबर १९२५ में लिख्यो गयो, 'सबुज पत्र' (सितंबर) १९२५ में छप्यो, अर
कालान्तर (१९३७) नांव री पोथी रै भेलो करयो गयो।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस आप रै बेलगांव अधिवेसन (१९२४) में हाथां सूं
कात्योड़ै सूत नै अंग्रेजां सूं लड़णै रै हथियार रूप में ग्रहण करयो। २९ मई १९२५ रै
दिन गांधी चरखै रै सिद्धांत री चरचा करणै खातर सांतिनिकेतन मे टैगोर कनै आया।
कवि वां रै विचार सूं एक मत नहीं हो सकया अर आपरा विचार इण लेख में प्रगट
करया गांधीजी रा जवाब 'दी पोइट एण्ड दी चरखा'—कवि अर रटनो 'यंग इंडिया'
(नवम्बर १९२५) मे छाप्यो। २७ दिसम्बर १९२५ रै दिन टैगोर गांधी नैं लिख्यो

'जिण चोज नै थाप सांच मानो उण रै खातर माप दैवी करहो सु करडी 'आलोचना करो' तो भी एक दूजै रै खातर आदर भाव राखण वाळो आपणो जिको रिस्तो उण नै सह सकसो ।

स्टारविंग कोर स्वराज साधन रै नांव सूं एक अंग्रेजी अनुवाद 'आइनै रिव्यू' (दिसम्बर १९२५ में छप्यो ।

पृष्ठ २०३ 'स्वराज'— सबदार्थ है 'खुद रो राज' । स्वतंत्रता आंदोलन रा सुरू पोत रा दिना में इण सबद रो अर्थ 'स्वतंत्रता' सुण लियो जावण लाग्यो ।

पृष्ठ २०४ चरखो—कांग्रेस रै नागपुर अधिवेसन (१९२०) में गांधी एक बरस में स्वराज लेवण री जिको योजना राखी उण में घर-घर में चरखै रो चलण अर अकरत रो सारो कपड़ो गांवां रा जुलाहां सूं बणवाणो भी सामिल हो ।

पृष्ठ २०५ पूर्वी खेत्र में रेवण वाळा लोगां खास बिहार अर उत्तर प्रदेस 'उतरतो देस' समझ्या जावै ।

पृष्ठ २०६ खिलाफत आंदोलन—खिलाफत एक अरबी सबद है । पहलै महायुद्ध में तुर्की हारग्यो तो इस्लाम रो पाक धरती खलीफै सूं खोस कर अंग्रेज कठपुतळियां रै नीचै देदी गई । भारत रा मुसळमान इण रो विरोध करयो । कांग्रेस रै अमरतसर अधिवेशन (१९१९ में सांव री बातां बदळवाणै खातर खिलाफत आंदोलन में सक्रिय भाग लेवण रो फैसलो करयो गयो । कमाल पाशा रै अधीन जद तुर्की एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र बणग्यो तो १९२३ रै आस पास ओ आंदोलन खतम हो गयो ।

पृष्ठ २०८ महात्मा सबदार्थ है महान आत्मा । आ एक उपाधि ही जिण सूं १९१९ रै आस-पास गांधी उपनाम हुया ।

8

कवि री पाठसाळा

'विश्वभारती क्वार्टर्ली (ओल्ड सीरीज, जिल्द ९, संख्या ३) में अक्टूबर १९३१ में निबन्ध रूप में छाप्यो गयो, अर 'विश्वभारती बुलेटिन रै रूप में दिसम्बर १९३० में निकळयो ।

पृष्ठ २१२ सांति निकेतन री पाठसाळा २२ दिसम्बर, १९०१ में सुरू होई ।
पृष्ठ २१२ 'काळीदास'—प्राचीन भारत रा सबसूं मोटा कवि, अनुमान, पैंचवीं सदी रा लेखक ।

पृष्ठ २११ 'मंदाक'—परंपरा रै मुजब कालीदास विक्रमादीत (चौथीसदी) रा दरबारी कवि हा, जिणरी राजधानी मध्यभारत रा मैंदाना में 'उजीण' में ही।

पृष्ठ २११ 'मेघदूत'—शब्दार्थ है 'दूत रूप में बादळ'। देस निकाळो दियोड़ै प्रेमी रै विरह री एक मोठी कविता, जिको उतरादा पहाड़ां में रैवणवाळी आपरी प्यारी कनैं सदेसो भेजावणरी अरज बादळ सूं करै।

पृष्ठ २१४ मुण्डक उपनिषद् : १ २ ५।

पृष्ठ २१८ कळकत्तो—सतरवीं सदी रै आखर में, जद ब्रिटिस ईस्ट इंडिया कंपनी कळकत्ते में एक कारखानो मंडायो हो हो, पचानन कुसारी नांवरो अेक आदमी बंगाल रै आपरो घर छोड़'र कळकत्ते में रैवण आयो। ब्राह्मण होणें रै कारण लोग उणनैं 'ठाकुर' कहता, जिको बाद में अंग्रेजीकरण होणें सूं 'टैगोर' बणग्यो। उण रो पोतो नीलमणि घणो पीसो कमायो अर कळकत्ते में मोटा मोठो मोवरो बणा 'टैगोर हाउस' बणवायो। नीलमणि रा पोता द्वारकानाथ आपरै वेला भारतीय हा जिका अंग्रेजां रैं साझै में व्योपार रो धन्धो सरू करयो। द्वारकानाथ (१७९४-१८४६) रवीन्द्रनाथ रा दादा हा।

पृष्ठ २२१ 'म्हारो बचपण'—टैगोर रा दिनां री पूरी हाल जाणनैं वास्तै वांरा आत्म-कथा मतयो लेख पढ़ो, खासतौर सूं 'माइ रेमिनिसेंसेज'(मैकमिलन,१९१७) म्हारा सस्मरण अर 'माइ बॉयहुड डेज' (विस्वभारती, १९४०) म्हारा बचपणरा दिन।

ॐ

सहर अरगाव (पल्ली प्रवृत्ति)
"We may yet live"

पहलैं भाग रा "We may yet live" ९ पृष्ठ 'पल्ली-प्रवृत्ति' सूं अनुवाद करयोड़ा है। यो एक भासण हो जिको फरवरी, १९२८ में श्री निकेतन री ग्रामीण पुनर्निर्माण सस्था री सातवीं बरसगांठ पर दियो गयो। इण री अंग्रेजी अनुवाद 'इण्डिया' (जुलाई, १९२८) में 'दी स्पिरिट आफ दी कम्युनिटी'—सामुदायिक भावना रै नांव सूं छप्यो। बाकी रो भाग 'विस्व भारती क्वार्टरली (अक्टूबर, १९२४) में 'सिटी एण्ड विलेज'—सहर अर गांव—रै नांव सूं छप्यो। दोनूं भाग दिसम्बर १९५८ में 'विस्वभारती बुलेटिन' में निकळ्या।

दूजो भाग 'श्री निकेतन रै इतिहास अोर आदर्श' सूं अनुवाद करयोड़ो है। यो एक भासण हो जिको टैगोर श्री निकेतन री ग्रामीण पुनर्निर्माण सस्था रा कार्यकर्तावां रा अेक अनौपचारिक बैठक में, सन १९३९ में वै वठै आखरी बार गया जद दियो। इण रो अंगरेजी अनुवाद 'मारजोरी साइक्स 'रोकरओडो' 'माडर्नरिव्यू (नवम्बर, १९४१) में छप्यो।

पृष्ठ २३० 'मन्नबह्ल' पोषण री भावना री तुलना उण बह्ल सूं करी गई है जिको जिन सिष्टि री रचना करै उण री पालण भी करै।

पृष्ठ २३० 'सन्यासी' आध्यात्मिक उत्थान सारू दुनिया नै छोड़'र सरीर नै तपाणै वाळो साधू।

पृष्ठ २३५ 'असोक'—प्राचीन भारत रो सबसूं उदार राजा (ईसा पूर्व री तीसरी सदी)।

पृष्ठ २३८ 'सुकुल कुटी' अर उण रै आसपास री जमीं, अक्टूबर, १९१२ में रायपुर रा सिनहां सूं खरीद करी गई।

पृष्ठ २३८ 'स्यालदा अर पतीसर' बंगाल में एक भाग में, जिको अब पूर्वी पाकिस्तान मे है, टैगोर परिवार री लाम्बी चोड़ी जायदाद री मदर मुकाम। १८९० सूं १९१० ताई परिवार री जायदाद री देखभाल टैगोर करता हा, जिण रै पछै वांरा पुत्र 'रथीन्द्रनाथ' काम देखण लाग्या।

पृष्ठ २३९ 'गांव रो जीवण'—पारिवारिक जायदाद री देखभाळ रै दूरै बरसं में वै आपरी भतीजी इन्दिरादेवी (१८७३-१९६०) सूं लगातार कागद पत्रां रो ब्योहार राख्यो। अै पत्र, जिका उण बात रो परमुख सुनामो है कै किया 'जीवण रा बदलता द्रिस्य' गांव में कवि रै जीवण पर असर गेरयो, १९१२ में छिन्न पत्र' नाव सूं भेळा करार छाप्या गया।' अंग्रेजी अनुवाद १९२१ में 'ग्लिम्पसेज आफ बंगाल' बंगाल री झांकियां—रै नांव सूं निकळयो।

पृष्ठ २४१ 'कास्टिया' सबसूं नजीक, रेल को ठेसण अर नदी रो मुख्य बन्दरगाह।

पृष्ठ २४१ 'कालीमोहन'—कालीमोहन घोस (१८८४-१९४०) शान्ति निकेतन में एक अध्यापक हा जिका गांवां रै काम सारू टैगोर नै आपरी सेवावां दी। जद ग्रामीण पुनर्निर्माण री संस्था सरू हुई, तो वै उण रा एक मुख्य कार्यकर्ता बण्या।

पृष्ठ २४१ 'अद्वयाद्वैतम्'—तैत्तिरीय उपनिषद। १ ११

पृष्ठ २४२ 'म्हारो बेटो अर भतीज'—रथीन्द्रनाथ टैगोर (जन्म १८८८) अर नागेन्द्र मजूमदार (१८८८-१९२६) शान्ति निकेतन रा पहलै साल रा विद्यार्थियां में सूं हा। ज्यूं ही वै कालेज प्रवेस परीक्षा पास करी, वांनै खेती री पढ़ाई सारू 'इलिनोइस विश्वविद्यालय' में भेज दिया गया (१९०६)

पृष्ठ २४२ 'एन्ड्रूज'—चार्ल्स फ्रीयर एन्ड्रूज १८७१-१९४०) १९१२ में टैगोर सूं परिचय होवण सूं मौत आपरा आखरी दिनां ताईं एन्ड्रूज वांरा पक्का दोस्त रैया। बी० चतुर्वेदी अर मारजोरी साइक्स री 'चार्ल्स फ्रीयर एन्ड्रूज' (एलेन एण्ड अनविन) देखो।

पृष्ठ २४३ 'स्वदेसी समाज'—'लीमाइटी एण्ड स्टेट'—स्वदेसी समाज देखो।

सहकार (समवाय)

सर डेनियल हैमिल्टन री अध्यक्षता में बर्दमान जिले री पहली सहकारी परिषद् रो सयोजन करवा बाबत ६ फरवरी १६२६ नैं भासण रूप में पढ्यो गयो। भासण री छप्योड़ी प्रतियाँ प्रतिनिधियां नैं बांटी गई।

पृष्ठ २४६ बीघा'—एक एकड़ र एक तिहाई रै लगभग री बंगाली माप।

पृष्ठ २४६ छोटा-छोटा टुकड़ां रै कारण बंगाल में धान रा खेत जादातर बांको टेढ़ा है।

पृष्ठ २४७ सेर —करीब दो अंग्रेजी पौंडां र बरोबर बंगाली वजन।

पृष्ठ २४७ 'घी' —तपायोड़ो माखण, जिको भारतीय रसोईघर में घणी जरूरी चीज समझी जावै।

पृष्ठ २४८ एक बंगला-कहावत।

पृष्ठ २४६ 'खासतौर सुं हिन्दू —जात प्रथा रै कारण।

बदलतो जमानो (कालांतर)

'परिचय' (जुलाई, १६३३) नांव री पत्रिका में छप्यो। कालांतर (१६३७) नांव री हो पोथी रै भेळो करयो गयो।

'दी चेन्जिंग एज' बदलतो जमानो—नांव सूं अंग्रेजी अनुवाद 'विश्वभारती क्वार्टरली' (जिल्द १, सख्या २, नई सीरीज) में छप्यो।

पृष्ठ २५८ 'विद्यासुन्दर'—भारतचन्द्र (१६१२–६०) री लिखी विद्या अर सुन्दर री पद्यबद्ध, प्रेम कथा।

पृष्ठ २६० 'पंचांग —एक इसो बखत हो जद पुराण पन्थी हिन्दुआं रो जीवण अर वांरा निजी, पारिवारिक अर समूचो जात रा सगळा महत्वपूर्ण कामां पर पचांग हावी हो।

पृष्ठ २६० १६३२ रै पूना समझौते रै बाद गांधी हिन्दू समाज में सूं अस्पृश्यता दूर करणै रा काम उठायो हरिजनां वास्तै जिका अधिकार वै लेणा चाया वां में मन्दिर प्रवेश रो अधिकार भी हो।

पृष्ठ २६१ *'लार्डविलिंगडन'—भारत रो वाइसराय (१६३१–३४)*

पृष्ठ २६१ 'हवाई बमबाजी'—उत्तरी-पश्चिमी सीव रै इलाकै में कबाइली गांवां में अंग्रेज जिको कठोर दण्ड आयै दिन देता, उण रो हवालो है। उद्दण्ड पठाणां नैं ब्रिटिश राज रो हुकूमत मनावण सारू डर पैदा करणै वास्तै या अपराधी री रोकथाम सारू ऐ उपाय काम मे लिया जाता।

पृष्ठ २६१ 'पूर्व जन्म' –कर्म रो सिद्धान्त हिन्दुवां रै जीवण दर्शन रो एक खास अंग है।

पृष्ठ २६१ 'नक्षत्र नगरी'—हिन्दू पंचांग अर ज्योतिस रै मुजब, ग्रह नक्षत्र आद री प्रत्येक मास री चाली अर स्थानां रै कारण, मिनखां रै भाग्य पर तकड़ो प्रभाव गेरै।

पृष्ठ २६५ चीण रो हिरदो'- चीण में अफीम रै प्रचार' सूं मतलब है।

पृष्ठ २६५ 'जलियां वाला बाग रो घातक'—१३ अप्रैल, १९१९ रै दिन जनरल डायर अमरसर रै एक बन्द बाग में निहत्था मोट्यार-लुगायां री सांत आम सभा में, बिना चेतावनी दियै ही गोळी चला दी। दस मिनट में ही ३७९ मरग्या अर ११३७ घायल होग्या। सारा देसवासियां रै विरोध नैं आवाज देवण खातर टैगोर ३० मई, १९१९ नें 'नाइटहुड'–'सर' रो खिताब छोड़ दियो।

७

सभ्यता रो संकट (सभ्यतार संकट)

टैगोर री अस्सीवीं जनमगांठ (१४ अप्रैल, १९४१) पर शांतिनिकेतन में बांरी मौजूदगी मे पढ्यो गयो। भासण री छप्योड़ी प्रतियां दर्संकां में बांटी गई।

दूसरो अंग्रेजी अनुवाद (अनुवादक क्षितीशराय, कृष्ण कृपलानी कर लेखक दुबारा जोच्योड़ो) एक छोटी सी पोथी रै रूप में निकळ्यो, जिण रो नांव हो क्राइसिस इन सिविलीजेशन, ए मैसेज आन कम्पलीटिंग हिज एटी ईयर्स इन मे, १९४१ मई, १९४१ मे आपरा अस्सी बरस पूरा करणै पर दियोड़ो एक सन्देस, सभ्य रो सकट।